Sri Pratap College
SRINAGAR
LIBRARY

Class No. 891.433
Book No. A23S
Accession No. 26054.

सेहरे के फूल

Sharai kai . Phool

सेहरे के फूल

[redacted]

...rary, ... College
Srinagar.

आदिल रशीद
Adil Rashid

Sh. Ghulam ... & Sons
Bo... ...ers
...
SRINAGAR.

नव साहित्य प्रकाशन, दिल्ली-७

Library Sri Pratap College
Srinagar

26054 : [redacted]

891.433
A23S

Accession Number ....

Book .... Class No. ....

मूल्य : छः रुपये

प्रकाशक : नव साहित्य प्रकाशन, बंगलो रोड, दिल्ली-७
मुद्रक : हरिहर प्रेस, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

SEHRE KE PHUL : ADIL RASHID : Rs.6.00

एक

जनवरी का आरम्भ।

सर्दियाँ शुरू हो चुकी थीं। शाम के साढ़े पाँच बज चुके थे। सूर्य की अन्तिम किरणें हवेली के सामने वाले सबसे ऊँचे नीम के पेड़ की फुनगियों पर नाच रही थीं। सूर्य का रंग सुनहरा हो चुका था। कुहरे की एक लम्बी और हल्की सी रेखा दूर तक फैलती हुई मालूम हो रही थी।

चिड़ियों ने बसेरों की तलाश में उछलना, कूदना और शोर मचाना शुरू कर दिया था। गाँव के सारे ढोर और डंगर अपने-अपने स्थान पर वापिस आ रहे थे। गाँव के छपरों से धुआँ उठना शुरू हो गया था। मुर्गियाँ डरबों के पास आ जमा होने लगी थीं और कुड़कुड़ा रही थीं।

साँझ अत्यधिक शान्त और सुन्दर थी। सूरज देखते ही देखते डूब गया था। सर्दी ज्यादा बढ़ चली थी। गाँव वालों के मकानों के सामने अलाव चमकने लगे थे।

लेकिन वह अभी तक गुम-सुम, उदास हवेली की छत पर सरदरी के नीचे स्तून से लगी खड़ी न जाने क्या सोच रही थी! उसके गिर्द सर्द हवाओं की लहरें तड़पना शुरू हो गई थीं। उसके कपड़े हवा से सरसरा रहे थे। बालों की एक लट बार-बार उसके तमतमाते हुए गालों की बलायें ले रही थी, लेकिन उसे किसी बात का होश न था। सर्दी बढ़ गई थी। सर्द हवाएँ जिस्म को चीरने लगी थीं।

लेकिन वह! उसे उस सर्दी की खबर न थी। उसके दिल-

दिमाग में एक नहीं, बल्कि कई अलाव रोशन थे, जल रहे थे और दहक रहे थे—और वह उन दहकते हुए अलावों में जली जा रही थी।

अंत में वह एक कठोर तथा विष-बुझी आवाज़ सुनकर चौंक उठी—

"अभागी! खुदा गारत करे तेरी इस सुलगती जवानी को! यहाँ खड़ी-खड़ी क्या कर रही है?"

सहसा ही सहम कर वह सामने देखने लगी।

"बड़ी बेगैरत और बेहया हो तुम।" किसी ने उसे झंझोड़ कर रख दिया—"गजब खुदा का। जवान-जहान लड़की और किस बेबाकी से छत पर मुँह उठाए खड़ी है। झाड़ मुँह पहाड़। इसे यह भी होश नहीं कि बेपर्दगी हो रही होगी।"

वह अब पूरी तरह होश में आ चुकी थी। अत्यधिक बेचारगी के साथ आहिस्ता से बोली—

"मैं ज़रा यों ही···जी घबरा रहा था तो···।"

"चुप!" उसके गाल पर एक थप्पड़ पड़ा—"बड़ी आई ज़रा यों ही की बच्ची। लगता है कि सारे खानदान की नाक कटा कर ही तू चैन लेगी।"

उसकी पीठ पर दोहत्थड़ मारकर उसे आगे की तरफ धक्का दिया गया—"चल, उतर नीचे। लाख बार समझाया होगा कि कोठा अटारी न किया करो, मगर मेरी सुनी जाय, जब न।"

वह मरी हुई चाल से शानदार हवेली की छत पार कर जीने तक आई। ज़ीने पर पहुँच उसे पीछे से एक और धक्का दिया गया—"कमीनी! खुदाई ख्वार! निगोड़ी! अभी से पर पुर्ज़े निकालने लगी है।"

बड़ी मुश्किल से उसने अपने आपको सम्हाला, वरना शायद सारे ज़ीने वह एक साथ तै करके नीचे औंधे मुँह आकर गिर जाती।

आहिस्ता-आहिस्ता वह जीना तै करने लगी। वह एक-एक जीना तै कर के नीचे आ रही थी और पीछे से उसे एक की जगह कई-कई सलवातें एक साथ सुनाई जा रही थीं। गर्मी और गुस्से का पारा ऊपर चढ़ता जा रहा था।

नीचे हवेली के सहन में आकर उसकी पीठ पर एक घूंसा और पड़ा—"मैं कहती हूँ, नोज कोई तुझ जैसी बैल लड़की का वास्ता

किसी से डाले। खुदाए ख्वार न जाने कहां-किधर मरती रहती है?"

आवाज में और कठोरता आ गई—"मैं कहती हूँ तौबा-तौबा! नोज कोई तुझ जैसा हो! आखिर तू मुझे समझती क्या है?"

वह चुप रही।

"बोल! जवाब दे…!"

"माफ कर दीजिए, मामीजान!" वह झिझकती हुई रुक-रुक कर बोली—"मैं अब कभी छत पर न जाऊँगी।"

"जहन्नुम में जाओ तुम—चूल्हे में पड़ो मेरी तरफ से।" उसके बाल नोच डाले गये—"लेकिन खुदा रसूल का वास्ता, इतने बड़े खानदान की नाक न कटवाओ। पूरे का पूरा खानदान चुल्लू भर पानी में डूब मरेगा। निगोड़ा मरकर भी बदनामी का दाग न धुलेगा यह समझ लो अच्छी तरह।"

"जी!"

"क्या जी?"

"अब मैं छत पर कभी न जाऊँगी।"

"नहीं-नहीं, यह नहीं!!" वह दांत पीसकर बोली—"इतनी बड़ी बदनामी का दाग मरकर भी न छूटेगा—समझी!"

"जी हाँ।"

"जी हाँ की सगी।" उसके नर्म व नाजुक बाजू में इतने जोर की चुटकी काटी गई कि नाखून अन्दर धंस गया। एक ज़ोर की 'सी' उसके लबों से तड़प कर बाहर आ गई। उस जगह आस्तीन में खून जम गया।

"मुर्दार के तन-बदन में भट्टी सुलग रही है।" दांत भींच कर नफरत से कहा गया। कई तीर एक साथ छोड़ दिए गए—

"आवारा कहीं की…बदचलन…छिनाल!"

और वह जिसकी उम्र अभी केवल ग्यारहव र्ष की थी, उन तुन्द-तेज और घिनौने शब्दों का अर्थ न समझते हुए भी सहम गई।

"दुल्हिन!" उधर बड़े कमरे से आवाज आई—"क्या बात है? किस पर बिगड़ रही हो, किसने क्या किया?"

वह उसका हाथ पकड़ घसीटती हुई उस कमरे में ले आई। उसे एक जोर का धक्का दे मसहरी पर गिरा कर बोली—

"इससे पूछ लीजिए—अपनी इस कमीनी लाड़ली से ।"

"तौबा है, दुल्हिन !" ज़ाकिरा बीबी अपनी रजाई गुस्से से झटक कर मसहरी पर से उठकर खड़ी हो गई ।

"आखिर क्या बिगाड़ा है तुम्हारा इस नन्ही सी जान ने ?" उन्होंने उसे लिपटा लिया ।

वह उसे पुचकारने लगी—"मेरी सईदा···मेरी बच्ची ।"

मासूम सईदा अपनी नानी अम्मा की हमदर्दी पर रो पड़ी । उसकी खूबसूरत आँखों से गंगा-यमुना एक साथ उमड़ पड़ीं । बलपूर्वक किए गए सब्र का बाँध एक हल्के से इशारे से टूट गया । वह हिचकियों से रोते हुए—फँसते हुए शब्दों के साथ भर्राई हुए आवाज़ में अपनी सफाई के तौर पर बोली—

"हम एक इत्ता-सा कोठे पर चले गए थे । रज़िया बहिन ने—हमारी अप्पी ने हमें खूब घूँस-घूँस कर मारा था । जी बहुत डूब रहा था—बहुत रंज हो रहा था । हमें—बस हम जरा ऊपर चले गए थे, ममानी जान ने···!"

और वह अपना गम बर्दाश्त न कर फूट-फूट कर रोने लगी । बड़ी बेकसी और बेचारगी के साथ वह रो रही थी ।

ज़ाकिरा बीबी का दिल फटने लगा । अनवरी बेगम—सईदा की ममानी का जी जलकर कबाब हो गया । वह जोर से गर्जी—"अरी वाह री छत्तीसा···!" मारे गुस्से के उसकी आँखें उबल पड़ीं । बहुत बुरा सा मुँह बनाकर चीखी—

"मारे जूतों के अल्लाह जानता है कि अभी मैं फर्श कर दूँगी तुझे ! टेसुए बहाकर समझती है कि जीत जायगी । क्यों री, कब मेरी बच्ची रज़िया ने तुझे मारा ? खबरदार, जो उस बच्ची का नाम लिया तूने !"

वह अपनी सास की ओर घूम अत्यधिक चिल्लाते हुए नथुने फुला कर बोली—"देखिए खाला अम्मा ! मैं आपसे यह बताए देती हूँ कि इस नाशदनी के बारे में अब अगर आपने अपनी चलाई तो मैं इसके भले-बुरे में फिर कभी न बोलूँगी । देख लीजिएगा कि एक दिन यह सारे खानदान की नाक कटाकर ही चैन लेगी । इसके तौर बहुत बिगड़ते जा रहे हैं ।"

"क्या कहती हो तुम, दुल्हिन !" जाकिरा बेगम आश्चर्यजनक नजरों से अपनी बहू की ओर देखते हुए जैसे चीख पड़ीं—"कुछ तो अल्लाह रसूल का खौफ़ खाओ। इस मासूम के बारे में तुम यह सब कुछ कह क्या रही हो ?"

उन्होंने अपनी गर्दन ज़ोर से झटकी।

"छिः ! शर्म करो दुल्हिन, शर्म ! क्यों इस मासूम बे-माँ की बच्ची का सब्र समेट रही हो ?"

"अच्छा !" अनवरी चिढ़ गई—"मेरी जूती से। आज से मैं आपकी इस लाड़ली बे-माँ की बच्ची से बात तक न करूँगी। जो इसका जी चाहे, करे। कोठे पर बस जाए मेरी तरफ से जाकर।"

"दुल्हिन !"

बूढ़ी जाकिरा बीबी का सर्द खून उनकी बूढ़ी रगों में लावे की तरह खौल गया। वे चीख पड़ीं—"इतनी बड़ी ज़बान तुम्हारे माँ-बाप ने तुम्हारे मुँह में डाल दी है। जो जी में आता है, बेखौफ बक देती हो। शर्म नहीं आती तुम्हें !" वे रंज और गुस्से से पागल हो गई—"अल्लाह जानता है कि तुमने इस वक्त बड़े जोर का घूँसा मेरे कलेजे पर मारा है। मेरी रूह तक तुमने ज़ख्मी कर दी है। अल्लाह न करे कि कोई तुम जैसा भी मुँहफट हो। बकवाद की इंतहा कर दी तुमने।"

वे एक सर्द आह भरकर बोलीं—"काश ! मैं इतनी मजबूर न हो गई होती।"

"तो क्या करतीं आप ?"

अनवरी अपनी सास से भी बदतमीज़ी पर उतर आई। उसकी आँखें शोले बरसा रही थीं। वह गर्जकर बोली—

"हाँ-हाँ, कहिए न, कि अगर आप मजबूर न होतीं, तो क्या कर लेतीं मेरा ?"

"!" वे बड़ी बेचारगी से दाँत पीसकर बोलीं—"खड़े-खड़े मैं तुम्हें इस घर से निकाल देती।"

"तो अब निकाल दीजिए।" वह आग बबूला हो गई—"मैं भी तो देखूँ, आपके मुँह में कितने दाँत हैं।"

"अब तुम मुझ निगोड़ी के मुँह के दाँत भी गिनने लगी हो,

दुल्हिन ! शाबाश ! जीती रहो । बड़ी अच्छी शिक्षा तुम्हारे माँ-बाप ने तुम्हें दी है । सुब्हान अल्लाह !"

"आपकी शिक्षा से अच्छी शिक्षा है, मेरे माँ-बाप के पास ।"

"मुबारक हो ।"

"वह तो है ही ।" अनवरी बड़े रूआब से बोली—"खुदा का शुक्र है कि मैं गई-गुजरी नहीं हूँ ।"

जाकिरा बीबी के दिल से एक सर्द आह निकल गई—

"काश ! कि वे ज़िन्दा होते आज के दिन···या मेरा बेटा मेरे कहे में होता । काश ! मैंने अपनी सारी जायदाद अपनी अदूर-दर्शिता से उसके नाम न लिख दी होती ।"

"तो क्या होता ? अनवरी अब बिल्कुल बदतमीज़ी पर उतर आई थी—"मेरे माँ-बाप भी नंगे भूखे नहीं हैं ।"

"वह तो मुझे मालूम है, दुल्हिन !" ज़ाकिरा बीबी पूरी संजीदगी के साथ बोली—' गरीब घर की बेटी इसीलिए तो मैं अपने घर ब्याह कर लाई थी कि आज के दिन उसकी इमारत के ताहने उससे सुनूं ।"

"गरीब घर ! गरीब घर ! क्या रट लगा रखी है, आपने ? आप कौन से बड़े घर से ब्याह कर आई थीं ? मेरी माँ तो फिर भी आपके माँ-बाप से बड़े घर की बेटी थी । वह तो कहिए कि आपका ब्याह यहाँ हो गया और आपने घूंघट उठाकर यह हवेली देख ली, वरना······।"

"बस दुल्हिन !" ज़ाकिरा ने अनवरी की बात काट दी..."मुझे न मालूम था कि तुम्हारे मुँह में कई गज़ की ज़बान है ।"

"तो आज मालूम हो गया न !"

"हाँ, मालूम हो गया ।" वे बहुत आहिस्ता से बोलीं ।

वह पाँव पटककर बोली—"यह तो गुम्बद की आवाज़ है ।" यह कहकर वह वहाँ से बड़े झुंझलाए हुए अन्दाज में चली गई । जाकिरा बीबी ने अपने सफ़ेद दुपट्टे के आँचल से अपनी नाक ज़ोर से रगड़ी ।

"मेरी बच्ची !" उन्होंने मासूम सईदा को अपने कलेजे से लगा लिया । वे बुदबुदाई—

"काश ! अल्लाह मियाँ को तुझ पर तरस आ जाता, बेटी !

तेरी माँ न मरती।"

"आप मुझे मेरे अब्बाजी के पास भेज दीजिए, नानी अम्मा !"

"बेटी !" ज़ाकिरा की आवाज़ भर्रा गई।

"तुम्हारी नई माँ भी तो तुम्हारी इस ममानी से कुछ कम नहीं है······और तुम्हारे अब्बाजी।"

उनके दिल पर जैसे कि बड़े जोर का घूँसा पड़ा। वे बड़े दुःख के साथ बोलीं—

"वे तो जैसे कि तुम्हें पैदा करके भूल ही बैठे हैं।"

सईदा ने बड़ी मासूमियत से अपनी नानी अम्मा की तरफ देखा—"क्या अब्बाजी मुझे कभी याद न करते होंगे, नानी माँ ?"

सईदा की इस मासूमियत पर ज़ाकिरा का दिल रो पड़ा। वे दर्द के साथ बोलीं—

"याद करता होता तो कभी याद न कर लेता।"

"मैं कल अब्बाजी को एक खत लिखूँ ?"

"क्या लिखोगी, बेटी ?"

"लिखूँगी कि मैं आपकी बेटी, आपको बहुत याद करती हूँ। ममानी जान और उनके बच्चे मुझे बहुत मारते हैं। आप आकर मुझे अपनी बेटी को ले जाएँ।"

नानी अम्मा ने दिल में सोचा—"उसे आकर ले जाना होता, तो वह यहाँ भेजता ही क्यों ?"

"मैं अपने अब्बाजी को यह दिखाऊँगी।" सईदा ने अपना दाहिना बाज़ू खोला।

"अरे !" नानी अम्मा ने उसे बेअख्तियार लिपटा लिया। उनकी आँखों से आँसू बह निकले। सईदा का बाज़ू जख्मी था। नीला हो गया था वह। खून का एक चकत्ता उस पर जमकर सूख गया था।

रात के खाने पर ताहिर मियाँ, सईदा के मामूजान जब जनानखाने मे तशरीफ़ लाए, तो उन्हें घर की फिजा कुछ बदली-बदलीलगी।

जब वे हाथ मुँह धोकर खाना खाने के लिए तख्त पर बैठे तो उन्होंने देखा कि दस्तरख्वान पर उनके बच्चे बैठे है। उनकी बीबी अनवरी नहीं है। उन्हें बड़ी हैरत हुई। उन्होंने अपनी बड़ी बेटी रज़िया से पूछा—

"ये और सब लोग कहाँ हैं ?"

रज़िया अभी उनके सवाल का जवाब देने भी न पाई थी कि उनका बेटा अकबर, जो रज़िया से छोटा था, बोला—

"अम्मी जान को बड़े जोर का गुस्सा चढ़ा हुआ है।"

"क्यों ?"

"दादी बीवी से लड़ाई हुई है।" उनकी सबसे छोटी बेटी नज़मा बोली—"दादी अम्मा ने हमारी अम्मी को डांटा है अब्बूजान ! दादी बहुत बुरी हो गई हैं।"

यह उनकी सबसे छोटी बेटी नज़मा कह रही थी जो अभी सिर्फ छः साल की थी।

"क्या हुआ था ?" ताहिर ने रज़िया से वसाहत चाही।

रज़िया ने भीगी बिल्ली बनते हुए कहा—

"सईदा को छोटा समझ कर मैंने पढ़ने पर एक ज़रा-सा मार दिया था, बस, उस पर वह मुझे बुरा-भला कहने लगी और···।"

ताहिर साहिब यकबारगी अपनी बेटी रज़िया की बात काट कर बोले—

"और इस पर तुम्हारी दादी अम्मा को गुस्सा आ गया होगा ?" एकाएक वे अपने आगे वाली प्लेट खिसका कर बोले—"ब-खुदा, मैं तो तंग आ गया हूँ इस सईदा की बच्ची से ! बाप के होते हुए यह ग़ैर की औलाद न जाने कब तक मेरे सिर पर सवार रहेगी ? जैसे कि हमारी ही हवेली दुनिया जहान का यतीमखाना बन कर रह गई हो।" वे गर्दन झटककर बेज़ारी से बोले—"लाहौल बिला कुव्वत।"

वे अपनी जान से आजिज़ आते जा रहे थे।

"न जाने यह हमारी अम्मीजान साहिबा को भी क्या सूझती है, जब देखो, उसी अभागी लौण्डिया के पीछे हंगामा ! बहिन थी एक, ब्याह दी गई। अब अगर वह मर गई है तो इसमें हमारा क्या कसूर कि उसकी बेटी को भी हमीं पालें। बाप ज़िन्दा है उसका। मर नहीं गया।" वे दस्तरख्वान से उठकर खड़े हो गए।

"हमारी अम्मीजान साहिबा भी अच्छी-खासी मुसीबत हैं, हमारे लिए।" वे बुदबुदाए।

"मरती भी नहीं हैं।"

"आप उन्हें कुछ न कहें।" अनवरी अपने दुपट्टे के आँचल से अपने मगरमच्छ के आँसू पोंछती हुई अपने शौहर के सामने आकर खड़ी हो गई।

"मैं ही सब पर भारी हूँ इस इतनी बड़ी हवेली में! मुझे तो अल्लाह के वास्ते आप मेरे मायके भिजवा दीजिए। मैं निगोड़ी कहीं भी रह कर और रूखी-सूखी खाकर जी लूँगी।"

वह सिसकियाँ भरने लगी। ताहिर साहिब अपनी चहेती बेगम की इन चरित्र बाज़ियों पर बेताब होकर अपनी उस माँ को भूल गए, जिन्होंने उन्हें जन्म दिया था। अपना दूध पिलाया था और पाल-पोस कर इतना बड़ा किया था।

वे अपनी माँ के अधिकार को भूलकर बीवी के नखरेबाज़ियों में लग कर एकाएक बोले—

"क़सम अल्लाह पाक की, मैं इस पूरी हवेली को आग लगा दूँगा।"

"हवेली को खुदा न करे कि आप आग लगाएँ। मुझी को जहन्नुम रसीद कर दीजिए।"

"कहा क्या अम्मी ने तुम्हें?"

"छोड़िए।" अनवरी बोली—"आखिर को वह माँ हैं। उनका दर्जा बहुत ऊँचा है। मैं तो उनकी जूतियाँ तक सीधी कर लूँगी। लेकिन इस बालिश्त भर की छोकरियों की चिड़-चिड़ करती हुई जबान मुझसे अब बरदाश्त नहीं होती।

"क्या?" ताहिर साहिब के तन बदन में आग लग गई।

"जबान चलाना सीख गई है, वह नामुराद सईदा।" वे आस्तीनें चढ़ाकर दहाड़े—"कसम कुरान पाक की, मैं खून कर दूँगा, उस नामुराद का।" और यह कह कर वे अपनी माँ के कमरे की ओर लपके।

'नहीं—नहीं···खुदा के लिए जाने दीजिए···आपको मेरी कसम!" कहती हुई अनवरी उसके पीछे दौड़ी। उसके पीछे उसके तीनों बच्चे थे, महज़ यह दिलचस्प तमाशा देखने के लिए।

कमरे के दरवाज़े पर पहुँच वह गला फाड़ कर चिल्लाए—

"कहाँ है वह बदबख्त की बच्ची? कहाँ है सईदा?"

और यहाँ उस मासूम, बेकसूर, मज़लूम सईदा का दम निकला जा रहा था। उसकी नानी बेचारी उसे गोद में भरे बैठी थी। मारे डर के सईदा की कँपकँपी छूट रही थी।

"अकल की बातें करो, ताहिर !" उसकी माँ ने अपनी दोहती (नातिन) को और अधिक समेटते हुए अपने बेटे से कहा—"यह सताई हुई तुम्हारी मरने वाली बहिन की बेटी है—निशानी है। उसके जिगर का टुकड़ा है। उस निरपराध पर जुल्म कर के अल्लाह का अजाब न समेटो अपने लिए।"

"यह अभी से ज़बान चलाना सीख गई है। बड़ों का अदब-लिहाज इसने सब-कुछ भुला दिया है।"

'किसने कह दिया है यह तुम से ?"

"मैं कोई दूध पीता बच्चा नहीं हूँ कि कहने-सुनने में आजाऊँ।"

"नहीं, मामू साहिब !" सईदा अपनी नानी की गोद से हाथ जोड़कर बोली—"सच मामू साहिब ! हमने किसी से ज़बान नहीं चलाई।" वह चिचियाती हुई, सहमी सी बोली—

"मुमानी जान तो हमारी माँ है। हम तो मामाओं और नौकरानियों तक से ज़बान नहीं चलाते। यह हमारा अल्लाह जानता है। हमने तो आज तक अपने भाई और बहिनों तक की किसी बात का जवाब उन्हें उलट कर नहीं दिया।"

ताहिर साहिब का दिल अभी अपनी अभागी भाँजी की इस सफाई पर पसीजने भी न पाया था कि अनवरी अपना मुँह बिगाड़ते हुए बोली—

"अरी वाह री चलित्तरबाज। गज़ भर की ज़बान की जगह जैसे कि अब तो बेचारी के मुँह में ज़बान ही न हो।" वह ज़ोर से गर्जी—"क्यों री. क्या मैं छोटी हूँ ?"

"बस-बस !" ज़ाकिरा बीबी बोली। उनके ढंग में नर्मी थी—'अब छोड़ो यह सब, दुल्हिन ! शरीफ़ घर की औरतें मर्दों को नाहक जोश नहीं दिलाया करती बल्कि उनके जोश को खत्म कर देने की कोशिश करती हैं।"

"सुन लीजिए !" अनवरी ने ताहिर को मुखातिब किया—"मैं आपको जोश दिला रही हूँ।" उसने फिर पूरा अभिनय किया—"तभी

तो कहती हूँ कि आप मुझे अपने साथ न रखिए।"

वह रोने लगी। उसके इस तरह रोने पर ताहिर का गुस्सा भी भड़क उठा। उसने जनूनियों की तरह झपट कर बेकसूर और पीड़ित सईदा को अपनी माँ की सुरक्षा की छाया से छीन लिया।

उसने मासूम बच्ची को बालों से पकड़ कर उठा लिया। वह गरीब डर के कारण इतनी सहमी कि बेहोश हो गई। ताहिर ने उस बेहोश बच्ची को, जोकि मासूम थी, बे-माँ की थी, जिसका बाप उसे भुला चुका था और जो अपने बाप के होते हुए भी यतीम हो गई थी, जिसका तनिक भी कसूर नहीं था, उठाकर उसी जगह फर्श पर दे मारा। बच्ची ने हरकत न की। इसलिए कि वह बेहोश हो चुकी थी।

उसकी उसी बेहोशी के आलम में एक बेरहम इनसान ने गुस्से और जनून में उसे पीटना शुरू कर दिया। वह उसे पीट रहा था और एक बेबस और बेकस बूढ़ी औरत ज़ाकिरा बेगम गुम-सुम बैठी उसे फटी आँखों से ताक रही थी। आखिर उसने अपना चेहरा दोनों हाथों से ढाँप लिया।

मार खाते-खाते तकलीफ की शिद्दत से मासूम सईदा को होश आ गया। वह बेअख्तयार चीख उठी—वह बिलबिला रही थी।

"मामू साहिब! खुदा के लिए मामू साहिब! रहम कीजिए। तरस खाइये···मामू साहिब! मैं मर जाऊँगी।"

'काश, तू मर जाती, बेटी!" बे-अख्तयार ज़ाकिरा बीबी के मुँह से चीख के रूप में यह वाक्य निकला और वह पागलों की तरह अपनी मासूम पीड़ित, बेकसूर नातिन से लिपट गई। वह ढाल बन गई अपनी बच्ची के लिए। उनके होनहार और लायक बेटे ताहिर के एक दो हाथ उन पर भी पड़ गए।

लेकिन उन्होंने अपनी सईदा को बचा लिया। उनके मुँह से बे-अख्तयार निकला—

"तुझे खुदा कभी भी माफ न करेगा ताहिर! अल्लाह करे, तेरा यह जुल्म तेरे और तेरे बीबी-बच्चों के आगे आए।" और यह कहकर वे भूखी शेरनी की तरह उठकर खड़ी हो गई। उन्होंने अपनी पूरी शक्ति से ताहिर को एक धक्का दिया। वे चिल्ला कर बोलीं—

"कसम अल्लाह की ! मैं तेरा दूध कभी न बख्शूंगी।" वे ताहिर के आगे तनकर खड़ी हो गईं—

"अब तू मुझे मार—अपने बीबी-बच्चों की कसम है तुझे। तू मेरा कलेजा निकाल कर बाहर फेंक दे।" वह ज़ारो-कतार रो रही थीं और सईदा उसी जगह फर्श पर बेसुध पड़ी कराह रही थी। ताहिर और उसके बीवी-बच्चे कमरे से बाहर जा चुके थे।

ज़ाकिरा बीबी ने अभागी सईदा को उठाया। उसे मसहरी पर लिटा दिया। उसे लिपटा कर वे फूट-फूट कर रोने लगीं।

रात के दो बजे का वक्त था।

गरीब सईदा, बेकस-मजबूर और लाचार सईदा, बे-माँ की मासूम बच्ची अभी-अभी गहरी नींद सोई थी। उसकी चोटों पर हल्दी और चूना जगह-जगह लेप की शक्ल में लगा हुआ था। उसकी नानी अँगीठी पास रखे हुए बैठी थी और कपड़ा गर्म कर-कर के सेंक रही थी।

बच्ची सो रही थी और ज़ाकिरा बीबी ठण्डी-ठण्डी आहों के बीच उसे लगातार ताक रही थीं। फिर जैसे कि वह सपना देखने लगी हो—

उसके पति खान बहादुर डिप्टी अकराम अली साहिब का जमाना था। वह दौर था उनकी ज़िन्दगी का, जबकि डिप्टी साहिब के नाम के डंके बजते थे। उनके पति की यहाँ से लेकर वहाँ तक तूती बोलती थी। वह महारानियों से भी अधिक शानो-शौकत का जीवन बिताया करती थीं।

डिप्टी साहिब उन पर अपनी जान कुर्बान किया करते थे। उन्हें हरदम दुल्हिनों की तरह बना-संवार कर रखते। उनके एक हल्के से इशारे पर ज़मीन-आसमान के कुलाबे मिला कर रख देते।

उनकी सेवा के लिए हवेली में—छः-छः सेविकाएँ थीं। तीन छोकरियाँ थीं और एक मुगलानी बी भी थी, जो उन बान्दियों पर रखी गई थी। वह उन बान्दियों से बेगम साहिबा के लिए खिदमत लेती थी और खुद भी बेगम साहिबा की खिदमत करती थी। यह मुगलानी बी बेगम साहिबा की खास सलाहकार थी।

रोज़ सुबह-सुबह गाँव की नाईन आकर बेगम साहिबा को नहाने में मदत करती थी। उनके सारे शरीर पर सुगन्धित उबटन मलती

थी। फिर उन्हें पानी में पड़े अर्क गुलाब और केवड़ा से नहलाती थी।

चार-चार सेविकाएँ नहाने के बाद बेगम साहिबा का शृंगार करती थीं। उन्हें कीमती पोशाकों से संवारती थीं। जेवरात से सजाती थीं और फूलों से शृंगारती थीं। दोपहर के समय से शाम ढले तक चार-चार लौण्डियाँ बेगम साहिबा को सुलाती थीं, उनका सिर सहलाती थीं, तलवों पर मालिश करती थीं, हाथ-पाँव दबातीं और लगातार पंखा झलती रहतीं।

डिप्टी साहिब जब दौरे पर जाते थे, तो रोज़ाना बेगम साहिबा की खैरियत की खबर हरकारे आकर दिया करते थे। कभी-कभार बेगम साहिबा भी उनके साथ दौरे पर होती थीं।

डिप्टी साहिब अपने सजे-संवरे घोड़े पर सवार होते थे और बेगम साहिबा का दुल्हिनों के समान सजा रथ घोड़े के साथ-साथ होता था। रथ के पीछे सेविकाओं और नौकरानियों की बहेलियाँ होती थीं। बाकी सामान होता था। हर दौरे पर बेगम साहिबा की आवभगत डिप्टी साहिब से कम नहीं, बल्कि ज्यादा ही होती थी।

उनकी खिदमत में जागीर के रहने वाले नज़राने पेश करके श्रद्धा के फूल चढ़ाते। पूरे इलाके के निवासी उनकी सेवा में नत मस्तक रहते।

अक्सर बेगम साहिबा डिप्टी साहिब के शिकार के समय पर भी उनके साथ रहतीं। खेमे और छोलदारियाँ लगा दी जातीं। खेमे में मसहरी, गद्दे और तकिए बिछाए जाते और जंगल में भी बेगम साहिबा की हकूमत चलने लगती। वही शान, वही आन और वही ठाठ-बाट, जो कि हवेली पर उन्हें प्राप्त थे, यहाँ भी प्राप्त हो जाते।

जाकिरा बीबी को याद आया, एक अवसर पर वे अपने पति के साथ शिकार को गई हुई थीं। उनकी नज़र हिरण के एक बच्चे पर पड़ी। उस मासूम, खूबसूरत बच्चे को देखकर उनके दिल में एक अरमान मचला—"क्यों न इसे जिन्दा पकड़ लिया जाय?" उन्होंने अपनी इस इच्छा को मुगलानी बी के द्वारा डिप्टी साहिब तक पहुँचवा दिया। मुगलानी बड़े अदब से बोली—

"हुजूर, हमारी बेगम साहिबा की इच्छा है कि हिरण के इस बच्चे को जिन्दा पकड़ लिया जाय!"

"अच्छा !" डिप्टी साहिब मुस्कराए—"बात तो नामुमकिन-सी है, लेकिन इसे मुमकिन बनाने की कोशिश की जायगी।"

उन्होंने अपने आदमियों को हुक्म सुना दिया—

"जिस तरह भी हो, हिरण के उस बच्चे को पकड़ लिया जाय।" वे मुस्कराए—"यह हमारी बेगम का हुक्म और इच्छा है।"

"अभी लीजिए, सरकार !" शिकार के माहिर, उनके गुलाम रणजीतसिंह ठाकुर ने कहा—"हुजूर, बेगम साहिबा की इस खुशी के लिए हर नामुमकिन बात मुमकिन बना दी जायगी, मालिक !"

"शाबाश, रणजीतसिंह !" डिप्टी साहिब खुश होकर बोले—"हम तुम्हें मुँहमाँगा इनाम देंगे।"

"आप ही का दिया खाता हूँ, मालिक !" और उसने हिरण के उस बच्चे को जिन्दा पकड़वा लेने के अपने परीक्षित उपाय शुरू कर दिए।

बेगम साहिबा की इस बच्चगाना ख्वाहिश की पूर्ति के लिए लगभग चालीस पासियों ने हिस्सा लिया जिनमें से दो को शदीद किस्म की चोटें आईं, लेकिन हिरण का वह बच्चा जिन्दा पकड़ लिया गया।

बेगम साहिबा खुश हो गईं और डिप्टी साहिब ने रणजीतसिंह ठाकुर को बीस रुपये इनाम में दिए। दो-दो रुपये हर पासी को दिए गए। अपनी बेगम की एक ज़रा-सी इच्छा पर डिप्टी साहिब ने सौ रुपये कुर्बान कर दिए।

खान बहादुर डिप्टी अकराम अली साहिब एक बहुत बड़े जागीरदार थे। उनकी यह जागीर उनके बाप-दादा के वक्त से चली आ रही थी। उनके खानदान में उनसे पहले कभी किसी ने सरकारी नौकरी नहीं की थी और न किसी ने अंग्रेजी शिक्षा अपनाने की इच्छा ही प्रगट की थी। उनका खानदान अंग्रेजों से सख्त नफरत करता चला आ रहा था। जंगे-आज़ादी सन् १८५७ में हिन्दोस्तान की आजादी के लिए उनके खानदान ने बड़ी जद्दो-जहद की थी। बड़ी-बड़ी कुर्बानियाँ दी थीं। सन् १८५७ की इस जंगे-आज़ादी की असफलता के बाद यह खानदान लगभग आधी सदी तक अंग्रेजों की नज़रों का काँटा रहा। अंग्रेज कौम ने और इस हकूमत ने इस खानदान को बहुत अधिक नुकसान पहुँचाए थे।

लेकिन अकराम अली साहिब ने अपनी खानदानी परम्परा के विरुद्ध अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की थी। वे बी० ए० थे, डिप्टी थे और सरकारे-बरतानिया की तरफ से उन्हें खान बहादुर का खिताब दिया गया था। वे आनरेरी मैजिस्ट्रेट भी थे।

उन्होंने अपने वक्त में बेशुमार दौलत कमाई थी और जमा की थी। उनका दौरा मशहूर था। उनका रूआब, उनका दबदबा और उनका बड़प्पन दूर-दूर तक मशहूर था।

वे अपनी प्रजा में सभी के प्रिय थे। वे कभी किसी पर इस तरह बोझ न डालते थे, कि वह उसे सहन न कर सके। वे हज़ार के आसामी से हज़ार लेते थे और पाँच हज़ार के आसामी से पाँच हज़ार। वे यह कभी न करते थे कि पाँच हज़ार माँग बैठें, चाहे उस आदमी की हैसियत पाँच हज़ार देने की न हो।

वे हमेशा रुपया रुपये वालों से लेते थे और बेझिझक लेते थे। ग़रीबों को वे बेझिझक देते भी थे। उनकी उदारता प्रसिद्ध थी। वे अपने इलाके के बाहर भी दूसरे इलाकों में सखी हातिम के नाम से पुकारे और याद किए जाते थे। प्रजा उन्हें जी-जान से चाहती थी।

वे जब भी दौरे पर जाते थे, तो गाँव वाले उन्हें जी-जान से रोकते थे और अपना मेहमान बनाने की दिली कोशिश करते थे। एक दफा वे दौरे पर थे। एक गाँव में वे चन्द घण्टों से अधिक रुकना न चाहते थे। लोगों का अत्यधिक ज़ोर था कि वे आज की रात रुक जायँ और वे रुक नहीं रहे थे। उन्हें इसके अगले क़स्बे में पहुँचना था।

वे जब अपने घोड़े पर बैठ गए तो गाँव वालों ने उनके घोड़े के आगे एक-दो नहीं, बल्कि पूरे-के-पूरे छः बकरे जिबह करके डाल दिए। उन्हें उसके बाद मजबूरी से रुक जाना पड़ा।

अहमदपुर, ज़िला इलाहाबाद का बहुत बड़ा गाँव था। यह गाँव डिप्टी अकराम अली साहिब के परदादा के दादा का बसाया हुआ था। उनका नाम अहमद मियाँ था, उन्हीं के नाम पर इस गाँव का नाम अहमदपुर पड़ा।

डिप्टी साहब इसी गाँव में रहते थे। उनकी आलीशान हवेली, जो पूरी तरह एक किला मालूम होती थी, इसी गाँव में थी। यह हवेली डिप्टी साहब के दादा ने बड़े प्राचीन ढंग से बनवाई थी।

ज़ाकिरा बीबी सोच रही थीं—वह इसी हवेली में दुल्हिन बन कर उतरी थीं। यहीं उनका यह लम्बा-सा घूंघट उतरा था। यहीं, इसी कोठी में उनकी 'हाथ बरताई' हुई थी। वे अपनी शादी से आठवें दिन बावर्चीखाने में गई थीं। घूंघट की ओट से उन्होंने खौलते हुए कड़ाह में पहली पूरी बेल कर डाली थी। घर के बड़े से पतीले में कलछल चलाई थी।

फिर हर तरफ से मुबारक-सलामत की आवाज़ें आने लगी थीं। उनके ससुर साहिब ने उन्हें अपना गाँव सती चौरा इनाम में दे डाला था। उनकी सास साहिबा ने उनका हाथ पकड़ कर उठाते हुए कहा था—"बस, क़ैसर दुल्हिन, बस, रस्म पूरी हो चुकी। चलो, उठो। गर्मी और धुएँ से तुम्हारी तबियत बिगड़ जायगी।"

और फिर उस रोज़ और उसके बाद दो रोज़ तक पूरे गाँव की दावत होती रही थी। दूर-पास के मेहमानों की मेहमानदारी तथा सेवा-सुश्रूषा का काम चलता रहा था। पूरी कोठी और साथ लगे मैदान में खेमे और छोलदारियों में मेहमान भरे हुए थे।

हिन्दू, मुसलमान सभी तो थे। बड़े-बड़े सरकारी अफ़सर भी थे। नवाब, रायबहादुर, जागीरदार, तालुकेदार और छोटे-बड़े सब थे। और जब शादी के दो साल बाद उनके घर यह पहला बच्चा ताहिर पैदा हुआ था, खुशी की कोई सीमा न रही थी। पूरे एक सप्ताह तक दावतों का सिलसिला जारी रहा। ग़रीबों-मुहताजों को रुपये और पैसे बाँटे गए। इस बच्चे के जन्म पर दिल खोलकर रुपया और खुशी खर्च हुई।

डिप्टी साहिब ने अपनी बेगम से खुश होकर कहा—

"तुम जल्दी नहा लो, बेगम। फिर देखो, मैं तुम्हें क्या इनाम देता हूँ!"

"इनाम तो मुझे मिल चुका आपकी तरफ से।"

ज़ाकिरा बीबी, उनकी बेगम साहिबा ने प्यार के अथाह सागर में डूब कर अपने पास ही लेटे हुए नवजात ताहिर की ओर देखते हुए कहा।

"यह तो तुम्हारा इनाम है, जो तुमने हमें दिया है, बेगम।"

"यह हम दोनों की मुहब्बत का इनाम है, जो हमारे अल्लाह ने

हमें अता फ़रमाया है ।" उनकी बेगम ने प्यार तथा श्रद्धा से कहा—"मैं सोचती हूँ, अल्लाह मियाँ मुझ नाचीज़ पर कितने मेहरबान हैं ।"

फिर ज़ाकिरा बेगम सवा महीने के बाद नहाकर जब प्रसूतिगृह से बाहर निकलीं तो उनके चाहने वाले पति ने उन्हें कागजात का एक पुलिंदा देते हुए कहा—

"यह हमारी तरफ से आपका इनाम है, बेग़म ।"

"क्या है यह ?"

"हमारा इनाम ।" डिप्टी साहिब मुस्कराए—"हमने हबीबगंज का पूरा गाँव आपके नाम कर दिया है ।"

"अरे !" उनकी बेगम के मुँह से निकला—"यह क्या किया आपने ? क्या आपकी नजरों में मैं ग़ैर हूँ ?"

"खुदा न करे, लेकिन इसकी अहमियत कभी तुम्हें बाद में मालूम होगी ।" और यह कहकर उन्होंने अपनी चहेती बेगम की खूबसूरत गर्दन जवाहिरात के कीमती हार से सजा दी ।

"यह क्या ?"

"कीमती हार—हमारा भेंट—श्रद्धा ।"

"अल्लाह ! तेरी कितनी कृपा है मुझ पर ।" ज़ाकिरा बेगम के मुँह से बेअख़्तियार निकला—"पति की मुहब्बत जैसी कितनी अजीम दौलत उसने मुझे बख़्शी है !"

अकराम अली साहिब ने अपनी बीबी की ठोड़ी ऊपर उठाई और उनके हसीन चेहरे को गौर से देखते हुए कहा—"बुरी नज़र न लगे । कितनी खूबसूरत हैं आप ! कसम खुदा की, मैं जन्नत की हूर भी न लूं ।"

"हटिये भी !" वह शर्मा गई । "बनाना तो कोई आपसे सीखे ।" उनकी घनी और लम्बी पलकें अपने-आप नीचे झुक गईं और डिप्टी साहिब हज़ार जान से अपनी बेगम पर कुर्बान हो गए ।

दो

सईदा ने सोते में तनिक-सी हरकत की, एक दर्दीली कराह उसके होंठों से फिसल कर बाहर आ गई। ज़ाकिरा बीबी की कल्पना का सिलसिला टूट गया। वे अपने होश-हवास की दुनिया में वापिस आ गईं। अपनी पीड़ित नातिन को आहिस्ता-आहिस्ता थपकने लगीं। सईदा बड़बड़ा रही थी—वह अत्यधिक टीस और पीड़ा के साथ कह रही थी—

"नहीं, मामू साहिब, मैंने बिल्कुल ज़बान नहीं चलाई। मुझे न मारिए। अम्मी हमारी अगर न मर गई होतीं, तो हम काहे को आप पर बोझ बनते। हमारे अब्बा भी हमें नहीं बुलाते अपने पास। काश, अल्लाह मियाँ ही हमें अपने पास बुला लें।"

वह बड़बड़ा रही थी और ज़ाकिरा बीबी उसे आहिस्ता-आहिस्ता थपक रही थीं। थोड़ी देर बाद वह फिर गाफ़िल हो गई—खो गई। ज़ाकिरा बीबी फिर अपने अतीत में पहुँच गईं। उनके रूपहले सपनों का सिलसिला फिर आरम्भ हो गया—

"कल हमारे बेटे ताहिर की पहली सालगिरह है।" अकराम अली साहिब अपनी बेगम से कह रहे थे—"आप देखिएगा, यह सालगिरह हम कितनी धूमधाम से मनाते हैं।

और उनके पहले बेटे ताहिर की सालगिरह वास्तव में इतने शानदार तरीके से मनाई गई कि लोग एक दूसरे का मुँह ताकते रह गए। कम-से-कम पाँच सौ गरीबों—मुहताजों और लावारिसों को दावत दी गई। उन्हें नक़दी और कपड़ों से नवाजा गया। दोस्तों को इतनी शानदार और बेलाग दावत दी गई कि आज तक किसी बड़े

रईस की बेटी या बेटा भी इस शान के साथ ब्याहा तक न गया होगा।

मन्दिरों और मस्जिदों में दीप जलाए गए। दिल खोलकर मिठाई बाँटी गई। यह सिलसिला दो दिनों तक जारी रहा। फिर ताहिर की हर सालगिरहपर यही कुछ होता रहा। यहाँ तक कि ताहिर छ: बरस का हो गया। उसकी 'रस्म-बिस्मिल्लाह' इतनी धूमधाम से मनाई गई कि बड़े-बड़े सेठों, साहूकारों, जागीरदारों और तालुकदारों की आँखें खुली की खुली रह गईं।

'रस्म-बिस्मिल्लाह' की इस खुशी में डिप्टी अकराम अली साहिब ने गाँव में एक आलीशान मस्जिद और मदरसा (स्कूल) बनवा दिया। एक कुआँ खुदवा दिया। दस गरीब किसानों का लगान हमेशा-हमेशा के लिए माफ़ कर दिया। गरीब बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध मुफ्त कर दिया।

और फिर? पूरे सात साल बाद ज़ाकिरा बीबी की गोद फिर से हरी हो गई। उनके घर एक चाँद-सी बच्ची पैदा हुई। उसका नाम रखा गया—रुखसाना।

अकराम अली साहिब को बेटी का बड़ा अरमान था। वे अपनी बेगम से कहा करते थे—

"बेगम, इस दफ़ा तुम मुझे एक बेटी लेकर देना।"

"यह भी कोई मेरे बस की बात है!" ज़ाकिरा बेगम मुस्कराईं—"अल्लाह जो देगा, हाज़िर कर दूँगी।"

"मुझे बेटी का बड़ा अरमान है, बेगम! पाजेब की झंकार घर की चारदीवारियों में अमृत-रस घोल देती है।"

वे अत्यधिक अरमान के साथ बोले—"बेटियाँ तो अल्लाह पाक का दिया हुआ इनाम हुआ करती हैं। काश कि वह हमें इस नेक इनाम के योग्य समझ ले।" वे जैसे कि बिखर गए—"देखो बेगम, हम तो बेटी ही लेंगे—कहे देते हैं—हाँ! नहीं तो हम आपसे रूठ जायेंगे।"

"अच्छा—" ज़ाकिरा बेगम मुस्कराईं—"अल्लाह ने चाहा, तो हम बेटी ही आप को देंगे।"

"और अगर न दी तो—?"

"तो फिर अल्लाह मालिक है।" ज़ाकिरा बीबी शोखी से बोलीं—

"फिर देखेंगे कभी।"

"हाँ—अरे वाह !" अकराम अली साहिब ने बीबी की पेशानी चूम ली। वे शर्मा गईं—भावना में डूब गईं।

वे भी भावना में डूबते बोले—

"भाई के लिए एक बहिन का होना बहुत जरूरी है। वरना भाई बहिन की मुहब्बत की रस्म झूठी हो जायगी। एक भाई बगैर बहिन के और बहिन बगैर भाई के ऐसी ही है, जैसे कि पानी के बगैर खेती या तारों के बगैर आसमान। जैसे कि एक मस्जिद, जो कि गुम्बद के बगैर खड़ी कर दी गई हो। या एक मन्दिर, जो मूर्ति और कलश के बगैर सूना लगे। चाँद अपने हाले और आसमान चाँद के बगैर सूना लगता है, बेगम !"

"सच कहा आपने।" ज़ाकिरा बीबी बड़े अरमान के साथ बोलीं—'आज तक मैं भाई के लिए तड़पती हूँ।काश, हमारा कोई भाई होता।"

"यही हाल मेरा भी है, बेगम ! हम भी एक बहिन की सच्ची और बेलौस, एक अमिट मुहब्बत के लिए तरस गए हैं।"

वे एक हल्की-सी सर्द आह के दरम्यान बोले—

"बगैर बहिन के हमारा बेटा ताहिर भी हमारी ही तरह यह कमी हमेशा महसूस करेगा।"

"अल्लाह न करे।"

"तो आप दे रही हैं हमें एक बेटी ?"

"अल्लाह दे रहा है।"

"सच !"

ज़ाकिरा ने बड़े विश्वास के साथ अपना सिर हिला दिया।

"ओह ! हमारी बेगम !!" अकराम अली साहिब ने बे-अख्त्यार अपनी बेगम को लिपटा लिया।

"अरे अरे !" वे मुस्कराईं—"खुदा के लिए। मुग़लानी बी ने देख लिया तो—?"

और फिर गाँव की मानी हुई दाई ने अकराम अली साहिब की गोद में गालीचे में लपेटी हुई एक मासूम-सी कली लाकर रख दी, तो वे मारे खुशी के पागल हो गए। बेअख्त्यार उन्होंने अपनी इस बच्ची

को अपने कलेजे से लगा लिया। वे होंठों ही होंठों में बुदबुदाए—

"अल्लाह, तेरा लाख-लाख शुक्रियो-अहसान है। आखिर पाजेब की झंकार का रस तूने मेरे कानों में घोल ही दिया। इसकी उमर-दराज़ फ़रमा रब-हज़ूर! हमारा ताहिर अब यह न कह सकेगा कि वह बहिन के प्यार जैसी अलौकिक वस्तु से महरूम है।"

"हम तुम्हारा मुँह मोतियों से भर देंगे, राधा!" और यह कह-कर सौ-सौ के मुट्ठी भर नोट उन्होंने गांव की सबसे चतुर और पुरानी दाई राधा की झोली में डाल दिए।

"मैं अपने डिप्टी साहिब से और कुछ लूंगी···मैं?"

राधा का वाक्य अभी पूरा भी न हुआ था कि वे चीख पड़े—

"बोलो, राधा बहिन। बोलो, कि तुम्हें इनाम में और क्या चाहिए?"

"लक्ष्मी दी है मैंने आपकी गोद में, डिप्टी साहिब!" राधा बोली—"मैं तो हुजूर से इनाम में उस कलमी बाग के पीछे वाले चारों खेत लूंगी।"

"कसम खुदा की—" डिप्टी साहिब झूमकर बोले—"मैंने वे चारों खेत तुम्हें दे डाले। कहो, और क्या चाहिए तुम्हें?"

"बहुत मिल गया मुझे, डिप्टी साहिब!" राधा खुशी से बौखला कर बोली—"मेरा दामन आपकी बख्शीशों से भर गया, मेरे सरकार।"

डिप्टी साहब ने नवजात बच्ची का मस्तक चूम लिया। वे बड़ी हसरत के साथ एक लम्बी आह के साथ बुदबुदाए—

"काश! अब्बा ज़िन्दा होते···माँ ज़िन्दा होतीं हमारी—उन्हें पोती का कितना बड़ा अरमान था।"

उन्होंने राधा से बेअख्तयार पूछा—

"बेगम कैसी हैं हमारी?"

"खुदा उन्हें हमेशा तन्दुरुस्त और जीता रखे सरकार! हमारी सरकार बिल्कुल ठीक हैं।"

"हमारी तरफ से उन्हें बेटी के जन्म पर मुबारकबाद दो।" उन्होंने बच्ची को दाई की गोद में देते हुए जैसे खुद से कहा—"उन्हें भी बेटी का बहुत अरमान था।"

फिर बेटी के जन्म के इस अवसर पर डिप्टी साहिब ने बेटे के जन्म से भी बढ़कर खुशी मनाई। इस खुशी में उन्होंने शहर इलाहाबाद में अपनी ख़रीदी हुई जमीन पर अपनी तरफ़ से 'रुखसाना हाईस्कूल' के नाम से एक खूबसूरत हाई स्कूल बनवाया। कानपुर में 'रुखसाना आर्फनेज' के नाम से एक यतीमखाना खुलवाया जिसमें हर मजहब और मिल्लत की यतीम लड़कियों के रहने-सहने और शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया गया। यह अपने ढंग का पहला लड़कियों का यतीमखाना था जिसमें मज़हबी भेद-भाव न रखा गया था।

यतीमखाने के खर्च के लिए अपनी जागीर का एक पूरा गांव उन्होंने उसके नाम कर दिया। पचास हज़ार रुपये अलग से जमा करवा दिए।

ज़ाकिरा बीबी की सोच का दायरा विस्तृत होता गया। वह जागते रहने पर भी अपने अतीत के हसीन सपने दूर तक देखती चली गई।

छः वर्ष का ज़माना और बीत गया।

ताहिर अब तेरह वर्ष का था और रुख़साना, उनकी प्यारी-प्यारी बच्ची छः बरस की थी। उसकी 'बिस्मिल्लाह' हुई तो उसने शुरू होते ही पढ़ने-लिखने में इतना ध्यान दिया कि अपनी उस्तानी बीबी से 'अलिफ़-बे' का कायदा उसने एक हफ्ते में ही खत्म कर डाला। उसकी बुद्धिमत्ता और शौक़ पर सारा घर हैरान और खुश था। ताहिर का दिल लिखने-पढ़ने में अलबत्ता नहीं लगता था। वह रुख़साना के बिल्कुल उलट था। पढ़ने से अधिक खेलने-कूदने और गांव के लड़कों के साथ खेत-खलिहान और बाग़ में उसका जी लगता था। वह गाँव के किसानों और चमार-पासी लड़कों के साथ रहकर ज्यादा खुश होता था।

हाफ़िज़ जी उसे कुरान शरीफ पढ़ाने बैठे। उन्होंने उसे शुरू कराया—

और वह 'बिस्मिल्लाह उलरहमानुलरहीम' के बजाए बोला—

"लाओ कुल्हाड़ी, काटें नीम।"

हाफ़िज़ साहिब ने उसे घूरा—

"बुरी बात मियाँ! तौबा करो, तौबा!" और वे खुद अपना

...rary Sri ... Pratap College
Srinagar.

दाहिना हाथ अपने दोनों गालों पर मारने लगे—"तौबा ! तौबा !! तौबा !!!"

वह खिलखिलाकर हँस दिया।

"बुरी बात !" हाफ़िज़ जी ने उसे फिर समझाने की कोशिश की—"कहो मियाँ, बिस्मिल्लाह उलरहमानुलरहीम !"

और वह झट बोला—

"तुम गंजे, हम हकीम !"

हाफ़िज़ जी तंग आ गए बेचारे और वह खिलखिलाकर इन्तहाई बदतमीज़ी के साथ हँसने लगा। वे शर्मसार होकर प्यार से बोले—

"आप बहुत बड़े खानदान के चश्मे-चिराग़ हैं !" उन्होंने उसे समझाने की कोशिश की—

"आपको ये बातें शोभा नहीं देतीं। पढ़िए, शाबाश !"

"तो फिर पढ़ाइए न !" वह ठनकने वाले ढंग से बोला।

"पढ़ते तो हैं नहीं आप !"

"आप पढ़ाते कहाँ हैं ?" और फिर वह खिलखिलाकर हँस दिया।

"आपको पढ़ाना नहीं आता।"

और यह कहकर वह हँसता हुआ पढ़ाई छोड़कर भाग गया। मौलवी साहिब बेचारे अपना-सा मुँह लेकर रह गए। क्या कर सकते थे बेचारे ! वह डिप्टी साहिब का बेटा था। डिप्टी साहिब के इस बेटे को पढ़ाना कोई हँसी-ठट्ठा तो था नहीं।

उन्होंने दूसरे दिन दबी जबान में डिप्टी साहिब से कहा—

"साहिबजादे साहिब पढ़ने में ध्यान नहीं देते अच्छी तरह।"

"अच्छा !"

"जी हाँ !"

"फिर ?"

और हाफ़िज़ साहिब इस फिर के आगे गड़बड़ा गए। हिम्मत करके बोले—

"उनके सुधार की सख्त जरूरत है।"

"तो फिर आप किसलिए हैं ?" डिप्टी साहिब ने कहा—"सुधार करने के लिए ही तो आपको रखा गया है।"

"करता हूँ हुजूरे वाला !"

"किस बात से ?"

"मेरा सुधार अगर हुज़ूर को अच्छा न लगा तो ?"

"हर्गिज़ नहीं, हाफ़िज़ साहिब !" डिप्टी साहिब ने बात बिल्कुल साफ़ कर दी—"पढ़ाने-लिखाने के मामले में आप हर बात के मुख्तयार हैं। ताहिर अगर प्यार-मुहब्बत से नहीं पढ़ता, तो उसकी हड्डी-पसली एक कर दीजिए। पढ़ना तो उसे है ही। इससे तो छुटकारा मिल नहीं सकता उसे।"

"बहुत अच्छा, हुज़ूर !'

और फिर दूसरे दिन जब हाफ़िज़ साहिब ताहिर को पढ़ाने आए तो उनके इरादे कुछ और ही थे। उन्होंने शुरू किया—

"ख़ालिक बारी सरजनहार—"

और ताहिर, जो कि हद्द दर्जे का निडर और गुस्ताख था, झट से बोल पड़ा—

"गधे का बच्चा थानेदार !"

हाफ़िज़ साहिब ने उसे ज़ोर से डांटा।

"खबरदार ! बदतमीज़ी की तो मुझसे बुरा कोई न होगा।"

ताहिर हँस दिया—"आपको अच्छा कौन कहता है ?"

"बे-अदबी गुनाह है।" हाफ़िज़ साहिब उसे एक अवसर और देना चाहते थे—"पढ़ो—मियाँजी, मियांजी, कुजाबूदई।"

वह झट से बोल पड़ा—

"कबूतर को बिल्ली किधर ले गई।"

एक झन्नाटेदार तमाचा ताहिर के मुँह पर इतनी ज़ोर से पड़ा, कि उसका मुँह घूम गया। वह बिलबिलाकर रोने लगा और उसने गुस्से में आकर अपनी किताब फाड़ डाली। उसने हाफ़िज़ जी के मुँह पर थूक भी दिया।

हाफ़िज जी सन्नाटे में आ गए। वह रोता हुआ अन्दर भाग गया। वह जाते ही अपनी मां से लिपट गया। वह ज़ारो-क़तार रो रहा था।

"हाफ़िज़ जी के बच्चे ने मुझे मारा—मुझे मारा। उसे नौकरी से निकाल दो। मैं उससे न पढूंगा। मैं जूते मार-मारकर हाफ़िज़ जी की हड्डी तोड़ दूंगा। मैं मार डालूंगा, हाफ़िज़ जी को…!"

"अरे ! अरे !" उसकी मां समझाने लगी—"कोई बच्चा हाफ़िज़

साहिब के लिए ऐसी बात कहता है ? बुरी बात ।"

"नहीं-नहीं ! मुझे हाफ़िज़ जी के बच्चे ने मारा है । यह देखिए ।"

उसने अपना गाल दिखाया । अपने बेटे के गाल पर बड़ी-बड़ी, मोटी-मोटी पाँचों उँगलियों के निशान देखकर वह भी आपे से बाहर हो गई । तन-बदन में आग लग गई । वह आग-बबूला होकर चीख उठी—

"यह मुआ उस्ताद है कि कसाई !" उसने अपने बेटे को अपने कलेजे से लगा लिया । वह मारे रंज और गुस्से के बोले ही जा रही थी । वह ज़ोर से चीख़ी—

"मुग़लानी बी !"

और जब मुग़लानी बी हाँफती-काँपती उसके सामने आकर खड़ी हो गई, तो उसने बड़े झुंझलाये हुए अन्दाज़ में चीखकर कहा—

"ज़रा किसी से दिखवाओ तो, कि वह मौलवी का बच्चा है कि चला गया ?"

"क्या हुआ, बेगम हुज़ूर ?"

"कमबख्त ने इस तरह मारा मेरे लाल को !"

मुग़लानी बी ने ग़ौर से ताहिर की तरफ देखा । उन्होंने पागलों की तरह बड़ी बदहवासी की हालत में उसे खींचकर अपने कलेजे से लगा लिया । वह ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगी—

"हाथ टूटें इस निगोड़े मुल्ला के ! गज़ब खुदा का, कोई ऐसे मारता है बच्चे को ! सत्यानाश जाए उसका, दाढ़ी में आग लगे जहन्नुमी के । खुदा करे, क़ब्र तक में उसके कीड़े पड़ें । जहन्नुम का कीड़ा बने अल्लाह करे वह !"

"अब तुम बड़-बड़ करती रहोगी, मुगलानी बी, या जाकर मालूम भी करोगी कि वह बदबख्त हाफ़िज़ का बच्चा है भी कि चला गया ।" उन्होंने चिढ़कर मुगलानी बी को झंझोड़ा । वह मुल्ला जी को गालियाँ सुनाती हुई हवेली के मरदाने की तरफ लपकी । उन्होंने जनाने दहलीज में खड़े होकर आवाज़ दी—

"रसूल ! अरे रसूल के बच्चे ! कहाँ मर गया तू ?"

"आया मुगलानी बी !" रसूल, जो कि मरदाने में था, भागता हुआ दहलीज की ओट में आकर खड़ा हो गया ।

"क्या हुक्म है, मुगलानी बी ?"

"देखना, वह हाफ़िज़ जी निगोड़ा है कि मर गया।"

और उधर हाफ़िज़ जी, जोकि बेसुध से बैठे सब सुन रहे थे, दहलीज के निकट आकर खड़े हो गए। हाथ बांधकर बड़े अदब से डरते-डरते बोले—

"हो सकता है कि छोटे सरकार की सिखलाई मेरी कमबख्ती रही हो, लेकिन गुलाम ने हुजूर डिप्टी साहिब से बखुदा इस चीज़ की इजाज़त ले ली थी।"

"दिमाग तो तुम्हारा नहीं चला गया कहीं ?"

हाफ़िज़ साहिब गड़बड़ा कर घिघियाते हुए बोले—

"नहीं, हुजूर मुगलानी साहिबा, खुदा के मेहर से गुलाम के होश-हवास कायम हैं।"

"पूछो उनसे—" वह, जो खुद भी ड्योढ़ी तक आ गई थी, आहिस्ता से बोली—"होश हवास में रह कर भी तुमने मासूम बच्चे को इस बेरहमी के साथ मारा है कि उसके गाल का भुर्ता बना दिया है ?"

और मुगलानी साहिबा ने पूछा—

"हुजूर बेगम साहिबा फ़रमाती हैं कि तुमने होश-हवास में होकर भी छोटे सरकार को इस तरह मारा है, कि उनका गाल, खुदा न करे, भुर्ता बन गया है !"

हाफ़िज़ साहिब लगभग ज़मीन तक झुक गए। हकलाते हुए बोले—

"खुदा को गवाह करके अर्ज़ करता हूँ, बेगम हुजूर, मेरी नीयत ठीक थी, लेकिन छोटे सरकार पढ़ने में मजाक फरमा रहे थे। मैंने हुजूर डिप्टी साहिब से इसकी इजाज़त ले ली थी कि—"

वह एकबारगी झुँझला गई। गुस्से में उसे इस बात का भी खयाल न रहा कि उसकी आवाज़ बाहर तक पहुँच जाएगी। वह अत्यधिक कठोर आवाज़ में बोली—

"—कि तुम हमारे बेटे को मार डालो, क्यों, यही तुम कहना चाहते हो न ?"

हाफ़िज़ साहिब का पेशाब निकलते-निकलते बचा। बहुत ही खुशामद से हाथ जोड़ कर, थूक निगलते हुए बोले—

"गुलाम शर्मिन्दा है, हुजूर बेगम साहिबा ? लेकिन बात दरअसल

यह थी कि छोटे मियाँ साहिब···यानि यह कि···यानि···वह···।"

"बको मत !" वह इस बार अपने पर काबू करती हुई आहिस्ता से बोलीं—"दफ़ा हो जाओ यहाँ से, वरना मुझसे बुरा कोई न होगा। अगर आप हाफ़िज़-कुरान न होते, तो मैं आपकी खाल ही खिंचवा लेती।"

मुगलानी बी ने बात दुहराई—

"हुजूर बेगम साहिबा फरमाती हैं कि अगर आप हाफ़िज़-कुरान न होते तो वे आपकी खाल खिंचवा लेतीं। आप दफा हो जाइए यहाँ से।"

"बहुत अच्छा हुजूर ! बड़ी मेहरबानी सरकार।" हाफ़िज़ साहिब हकलाते हुए बोले और उन्होंने वहाँ से अपनी जान बचाकर भाग जाने में ही खैरियत समझी। वे अपना रूमाल और पगड़ी सम्हालते रफूचक्कर हो गए।

"कमीना···मादर···!" तेरह साला ताहिर ने अपने उस्ताद हाफ़िज साहिब को बड़ी शान के साथ झन्नाटेदार माँ की गाली देकर गुस्से से कहा—"आपने उस सूअर के बच्चे की खाल क्यों न खिंचवाई। मैं उसके मुँह में जरूर पेशाब करूँगा।"

उसने अपने बेटे को क्रोध भरी नज़रों से देखा। वह उसकी जबान से इतनी मोटी गाली सुनकर हैरान रह गई। उसने अपने बेटे को डाँटा—

"क्या बकते हो तुम, ताहिर ! तुम गाली देना सीख गए हो ? गाली बकने लगे हो तुम ! किससे ये गालियाँ तुमने सीखी हैं ? खबरदार जो इतनी लम्बी जबान तुमने चलाई। मैं तुम्हारे मुँह में अंगारे रख दूँगी। यह तुम समझ लो अच्छी तरह।"

"लेकिन उसने मुझे मारा क्यों ?"

"खबरदार ! क्या मालूम, हाफ़िज साहिब को भी गाली दी हो ! अब मैं तुम्हारी तरफदारी बिल्कुल न करूँगी।"

वह बहुत रंज और मलाल के साथ वहाँ से मुड़ी। उसने मुगलानी बी से कहा—"तुम उसका मुँह धोकर गाल सेंक दो।"

वह अपने कमरे में आई और अपना मुँह लपेट कर पड़ गई। अपने बेटे के मुँह से इतनी फ़ाहश गाली सुनकर उसका दिल डूबने

लगा था। बहुत ही ज्यादा सदमा और मलाल हुआ था उसे।

ज़ाकिरा बीबी ने एक जोर की झुरझुरी ली। उन्हें एक जरा-सा होश आया। सईदा को उन्होंने ग़ौर से देखा। वह बड़ी गहरी नींद सो रही थी। वह फिर अपने अतीत के सपनों में खो गई—

डिप्टी साहिब बड़े झुंझलाए हुए अन्दाज़ में अन्दर आए। वे बड़े उदास और ग़मग़ीन दिखाई दे रहे थे। जैसे कि वे किसी बहुत बड़ी उलझन में गिरफ्तार हों।

"क्या बात है ?" ज़ाकिरा बीबी ने पति से बड़ी मीठी ज़बान में पूछा।

"कुछ नहीं।" वे आहिस्ता से बोले और बेंत के मोढ़े पर बैठ गए। अपने दोनों हाथों से उन्होंने अपना सिर पकड़ लिया।

"आखिर बात क्या है ?" वह बड़ी हमदर्दी से बोली—"किस बात से आप उलझ रहे हैं ?"

"कुछ नहीं।" वे एक सर्द आह के साथ सीधे होकर बैठ गए—"बड़ा अरमान था हमें बेटे का !"

"तो क्या किया हमारे इस बेटे ने ?"

"जैसे कि आप उसे जानती ही नहीं हैं।"

"फिर भी ?"

"अब वह कोई दूध पीता बच्चा तो नहीं। अठारह साल की उमर उसकी हो गई है और बातें वह इस अन्दाज़ से करता है, जैसे कि मुंह से दूध टपक रहा हो।"

"अभी क्या हुआ ?"

"मेरे दोस्त कमिश्नर श्यामसुन्दर मुझसे मिलने आये थे। कमबख्त गत की एक बात भी उनसे नहीं कह सका। उसी अपने ढंग में हकला-हकला कर अधकटे वाक्य उनसे बोल रहा था, जो कि न सुने जा सकें, न समझे जा सकें। मारे शर्म और रंज के मेरा तो बुरा हाल हो गया। यह कमबख्त मुझे कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रखता। किस-किस से मैं क्या-क्या बातें बनाता रहूँ उसके लिए ? लाख दफा समझाया कि अल्लाह के बन्दे, साफ-साफ बोलना सीख, ठीक तरीके से बात कर, लेकिन वह उस अन्दाज़ में बात करता है, जैसे कि उसका सांस फूला जा रहा हो। या जैसे कि उसके गले में

कोई चीज फंस रही हो। बोलने और बात करने में शर्माता ऐसा है, जैसे कि कोई नई-नवेली दुल्हिन अपने ससुराल वालों से बात कर रही हो। न जाने कैसे बात करता है। किसी बात की तमीज़ खुदा ने उसे नहीं दी।"

वे एक लम्बी साँस लेकर बड़े रंज के साथ बोले—

"आखिर कह ही दिया कमिश्नर साहिब ने—आखिर आपके साहिबजादे साहिब इस कदर घबराए-घबराए और झेंपे-झेंपे से क्यों रहते हैं? अब आप ही बताइए कि इसका जवाब उन्हें मैं क्या देता? इधर-उधर की ख्वाहमख्वाह की बातें बना कर रह गया।"

"होगा—जाने दीजिए! वह तो है ही खब्ती।" ज़ाकिरा बेगम पति का दिल रखने के लिए बोलीं—"वक्त के साथ-साथ खुद-बखुद सुधर जायगा।"

"कैसी बातें करती हैं आप भी।" वे झुंझलाए—

"अब कौन-सी उम्र होगी उसकी इन्सान बनने की?"

एक माँ का दिल अपने बेटे के लिए ये बातें सुनकर डूबने लगा। लेकिन वह अपने पति की तसल्ली के लिए बोलीं—

"न जाने इस लड़के को क्या हो गया है? लेकिन ठीक हो जायगा जरूर! देख लीजिएगा आप।"

वह यह सब कुछ यों ही जबान से कहे जा रही थीं। हालाँकि उनका दिल और उनका दिमाग खुद बुरी तरह उलझ रहा था अपने बेटे की उस नालायकी पर।

डिप्टी साहिब बोले। उनके अलफाज दर्द और कर्ब में डूबे हुए थे—

"न उसे कपड़ा पहनने की तमीज है और न उसे खाना खाने का सलीका है। न उसे ठीक तरीके से हँसना आता है और न रोना। न बोलना और न बात करना। दस्तरख्वान पर बैठ कर वह खाना कभी नहीं खाता। जब मैं देखता हूँ, बावर्चीखाने में घुसा नौकरों-चाकरों के साथ खाना खा रहा है। पढ़ता-लिखता वह नहीं है। अठारह साल का वह हो गया है, कुरान-पाक अभी तक खत्म नहीं [illegible]। उर्दू भी कोई खास नहीं आती, फारसी के लिए दर्जनों उस्ताद [illegible], लेकिन उस कमबख्त ने फारसी पढ़ कर न दी। सोचा था, फारसी

पढ़ लेता तो उर्दू खुद-बखुद आ जायगी, लेकिन वह अपनी जगह से टस से मस न हुआ।"

वे कुछ देर रुक कर बोले—

"अजीब मुसीबत में मेरी जान इस लड़के की वजह से फँसी हुई है।"

वे बहुत अधिक उदास, निराश और गमगीन दिखाई दे रहे थे। ज़ाकिरा ने फिर उन्हें तसल्ली देने की कोशिश की—

"छोड़िए! खामखाह के लिए आप अपनी जान हल्कान क्यों किए डाल रहे हैं। भाड़ में डालिए कमबख्त को।"

"भाड़ में कैसे डालूँ! नाम तो मेरा बदनाम होगा। जूते तो हमेशा मेरे नाम के साथ लगेंगे। काश, यह कमबख्त पैदा ही न हुआ होता! और अगर पैदा हुआ ही था, तो मर जाता। या अब मर जाय कमबख्त। मैं बहुत बड़ी बुराई और बदनामी से बच जाऊँगा।"

वे जैसे कि रोने लगे हों।

"यह सन् देखिए उसका और उसकी तालीम के बारे में सोचिए। अभी तक छटी जमाअत में भुगत रहा है और वह भी ऊँट होकर। क्लास में सब लड़कों के मुकाबिले में सिफर है, कमजोर है, बेचारा पढ़ाई में। काश कि उसे हैज़ा, प्लेग या कोई और बीमारी पसन्द कर ले।"

सचमुच उनकी आँखों में आँसू आ गए और उनकी आवाज़ भर्रा गई। ज़ाकिरा बहुत ज्यादा गमगीन होकर बौखला गईं।

"मैं कहती हूँ अब जिक्र भी छोड़िए उस नसूढ़िए का। अपने आप भुगतेगा।" वह अपने आँचल से डिप्टी साहिब के आँसू साफ करने लगीं।

"अपना दिल कुढ़ाएँ आपके दुश्मन?"

उन्होंने अपने पति का सिर अपनी गोद में भर लिया। बहुत तसल्ली देने के ढंग में कहने लगीं—

"सच तो है, यह पागल-दीवाना लड़का न जाने कहाँ से मेरी कोख से पैदा हो गया! इससे तो अच्छा था कि मैं बाँझ होती।" वे कुछ क्षण रुक कर बोलीं, 'लेकिन मैं इतना ज़रूर कहूँगी कि वह एक दिन ज़रूर ठीक हो जायगा। आखिर को वह आपका बेटा है। आगे चलकर वह ज़रूर सुधर जायगा।"

"मैं कहता हूँ, वह मरकर भी न सुधरेगा।"

"तो जहन्नुम में डाल दीजिए कमबख्त को।"

"मेरा तो दिल चाहता है कि मैं खुदकशी कर लूँ।"

"खुदकशी करें आपके दुश्मन।" ज़ाकिरा बहुत ज्यादा परेशान हो कर बोलीं—"खुदा के लिए आप उसका जिक्र छोड़ दीजिए।"

"हाँ, जिक्र तो उसका छोड़ दूँ, लेकिन इस रिश्तए-कमबख्त का क्या करूँ ?"

"समझ लीजिए कि वह आपका बेटा नहीं है।"

"मेरे ऐसा समझ लेने से दुनिया कब ऐसा समझेगी।"

वह बड़ी बेचारगी के साथ बोले और मोढ़े से उठकर अपनी मसहरी पर जाकर गिर पड़े। ज़ाकिरा बीबी इन्तहाई परेशानी की हालत में अपने हाथ मलने लगीं।

चार साल और गुज़र गए।

ताहिर अब बाईस साल का था। पढ़ना-लिखना उसने सब छोड़ दिया था। उसके बाप डिप्टी साहिब उसकी तरफ से अब कतई मायूस हो चुके थे।

ताहिर अब अपनी जागीर में काश्तकारों के पास लगान की वसूली तहसील के लिए आने-जाने लगा था। एक दिन वह सुबह-ही-सुबह अपनी घोड़ी पर सवार होकर हवेली से निकला। वह मौजा सुजानगंज जा रहा था। मौजा सुजानगंज उसकी जागीर का एक खूबसूरत गाँव था।

वह अभी मौजा सुजानगंज में दाखिल हो ही रहा था कि जवार की खड़ी फसल के दो खेतों के दरम्यान वाले डाँड पर उसे अपने सामने से एक जवान लड़की आती हुई दिखाई दी। लड़की जवान थी और खूबसूरत थी। उसके सिर पर चरी का एक गट्ठा रखा हुआ था। वह गरीब सामने ताहिर को घोड़ी पर सवार आता देखकर मेंड से दाईं तरफ हट गई। जल्दी से उसने अपना लम्बा घूंघट गिरा लिया। वह अपने जागीरदार डिप्टी अकराम अली साहिब के बेटे को अच्छी तरह पहचानती थी। उसने मालिक को गुजर जाने का रास्ता दे दिया था।

"ओह !" ताहिर ने उसके बराबर में आकर अपनी घोड़ी की

लगाम खींच ली। घोड़ी मालिक का इशारा पाते ही उसी जगह ठिठक-कर खड़ी हो गई।

"गोरा-गोरा चाँद आखिर हमें देखकर नारंगी रंग के बादलों की ओट में क्यों छिप गया ?"

उसने बड़ी बेबाकी के साथ लड़की का नारंगी घूँघट अपने बेंत की नोक से ऊपर उठाया। लड़की सहम कर दो कदम पीछे हट गई। उसके घूँघट ने उसके चाँद से मुखड़े को दोबारा ढक लिया।

"बड़ी जालिम हो जी तुम।" ताहिर शरारतन मुस्कराया—"हम जान देने पर तुले हैं और तुम नीम बिस्मिल बनाकर छोड़ देना चाहती हो !" और यह कह कर वह घोड़ी की पुश्त पर से नीचे आ गया। मारे खौफ के गरीब लड़की का दम निकल गया। उसे ऐसा लगा, जैसे कि खून उसकी रगों में यकबारगी जम गया हो। वह दो-चार कदम और पीछे हटते हुए बड़ी घबराई हुई आवाज में बोली—

"हम का जाए देव, सरकार ! रस्तवा हमार छोड़ देव, मालिक !"

वह एक कदम आगे बढ़ा।

'हम वह रास्ता कभी नहीं छोड़ते गोरी, जिस पर कि हम एक बार चल पड़े हों।" और यह कहकर उसने उस लड़की का हाथ पकड़ लेने की कोशिश की। वह बहुत अधिक बौखलाकर खड़ी जवार के खेत पर गिर पड़ी। पक्की फसल के कुछ पौधे टूट कर गिर पड़े। उसके सिर पर रखा चरी का गट्ठा उस जगह गिर गया। उसने झुक कर उस जवान और खूबसूरत लड़की की गोरी कलाई थाम ली।

"दिल पर छुरियाँ चलाकर और हमारे जिगर में भाला उतार-कर अब हमसे रास्ता कतराती हो !" उसने एक झटके के साथ लड़की को ऊपर उठा लिया।

"इससे अच्छा मौका हमारी प्यास बुझाने के लिए तुम्हें और कब मिलेगा ?" उसने उसे खींचकर अपने सीने से लगा लेना चाहा—"हम तेरे दीवाने हो चुके हैं।"

लड़की ने अपनी पूरी कुव्वत के साथ जागीरदारज़ादे को एक ज़ोर का झटका दिया और वह फिसलकर मेंड पर गिर पड़ा। और जब तक वह दुबारा उठे वह अपना गट्ठा उस जगह छोड़कर, उलटे पाँव गाँव की ओर बेतहाशा भागी। उस सिम्त से, जिस सिम्त से कि ताहिर

बाया था, दो-चार आदमी आते हुए दिखाई दिए। वह जल्दी से उठ कर अपनी ब्रिजिस पर लगी हुई नर्म-नर्म मिट्टी को साफ करता हुआ अपनी घोड़ी की पुश्त पर आ गया।

उसने घोड़ी को एक जोर की एड़ लगाई और अब वह उस सिम्त को भाग रहा था, जिस सिम्त से कि वह लड़की आकर वापिस लौट गई थी।

वह खेतों से गुजरकर खुली जगह पर आ गया। उसने देखा, वह लड़की हिरणी की तरह, जोकि शिकारी की ज़द से बचकर भाग रही हो, बुरी तरह भागी चली जा रही थी। वह अपनी घोड़ी को भगा-कर उसके बराबर आ गया। लड़की सहमकर फिर खड़ी हो गई। वह बोला—

"देखो, इसका जिक्र किसी से न हो, वरना तुम्हें जान से मार दूँगा।"

और यह कहकर वह अपनी घोड़ी को एड़ लगाकर उससे आगे निकल जाना चाहता था कि वह बागैरत और दिलेर लड़की अपनी इज्जत की खातिर उसके आड़े आ गई। उसने बड़ी दिलेरी से उसकी घोड़ी की लगाम पकड़ ली। एक ज़ोर का झटका उसने लगाम को दिया। घोड़ी यकबारगी अलफ हुई और ताहिर घोड़ी की पुश्त से नीचे आ रहा। इतनी-सी देर में वे पीछे से आते हुए आदमी भी आ गए। उन लोगों ने आते हुए दूर से बहुत कुछ देख लिया था। उन्होंने जवार के खेत पर पड़ा हुआ चरी का वह गट्ठा और जवार के खेत के टूटे हुए पौधे भी देखे थे।

बहादुर और अपनी इज़्ज़त की खातिर मर मिटने वाली लड़की ने एक झटका देकर घोड़ी की लगाम छोड़ दी। पास पड़ा बेंत उठा-कर उसने घोड़ी के जिस्म पर कई ज़र्बें लगा दीं। घोड़ी हिनहिनाती हुई तीर की तेज़ी के साथ अपने गाँव अहमदपुर की तरफ भागी और कब्ल इसके कि ताहिर अपनी कमर सहलाते हुए उठे, उसने कमाल हिम्मत से काम लेते हुए उसकी बेंत से उसे दीवानावार पीटना शुरू कर दिया। वह लड़की अपनी आबरू की इतनी बड़ी आबरूरेजी पर जैसे कि दीवानी हो गई हो। वह जनून और गुस्से में यह भूल बैठी थी कि वह एक बहुत बड़ी जुर्रत का इकदाम कर रही है। वह अपने

आका को पीट रही है, वह उसकी बेइज़्ज़ती कर रही है, जो उसका और उसके खानदान का और उसके पूरे गाँव का अन्नदाता है। जो अगर चाहे तो उस पूरे गाँव को आग लगा सकता है।

ताहिर उठकर खड़ा हो गया। उसने उस लड़की को झंझोड़ कर रख दिया। उसने अपना बेंत उस लड़की के हाथ से छीन लिया। इतने में वे देहाती भी उस जगह पर आ गए। ताहिर उन्हें देखते ही दहाड़ा—

"यह लड़की पागल है। इसे रोक लो। वरना मैं इसका खून कर दूँगा!"

"इज़्ज़त चीज़ ही ऐसी है, मालिक!" एक देहाती बोला। उसके लहज़ में नफरत थी, दुःख और गुस्सा था—"अपनी इज़्ज़त पर मर मिटने के लिए हमारी क्वाँरियाँ अपनी जान पर खेल जाती हैं, सरकार! आप तो खाली पागल होने की बात कर रहे हैं।"

"दिमाग खराब हो गया है तेरा?" उसने उन सब पर रोब डाला—

"तुम लोग जानते हो, हम कौन हैं? हम पूरे गाँव को आग लगा देंगे।"

"हमारे दिल में तो आपने आग लगा ही दी है, मालिक! गाँव की आग की बात तो बाद की है।"

"आ बदजात हमरी इज्ज़त लूट ले चाहत रहा।" वह लड़की बड़े गर्व के साथ बोली और फूट-फूटकर रोने लगी।

और फिर उसी समय गाँव के बड़े बूढ़े और कई नौजवान उस लड़की को साथ लेकर डिप्टी साहब के पास इस इतने बड़े वाकया की रिपोर्ट करने के लिए चल पड़े। ताहिर से उन लोगों ने कुछ नहीं कहा था।

"सरकार!" गाँव का मुखिया बोला—"आज के दिन तक आपकी जागीर में ऐसा नहीं हुआ, मालिक! एका आप फैसला करो। नाहिं तो हम सब अफीम चाट कर मर जाब, मालिक!"

बात बिल्कुल साफ थी। हर मामला साफ था। आईने की तरह हर चीज़ अयाँ थी। डिप्टी साहब की गर्दन ज़िन्दगी में पहली मर्तबा शर्म से और मजामत से मुज़रिमों की तरह नीचे झुक गई। वे अपनी

गर्दन नीचे किए-किए बोले—वे अपनी रिआया के सामने आँखें चार नहीं कर सकते थे। उनकी आवाज़ भर्राई हुई थी—

"मैं तुम सबसे बहुत ज्यादा शर्मिन्दा हूँ। अगर हो सके तो तुम लोग हमें माफ कर दो और अगर माफ न कर सको तो मैं तुम्हारी तजवीज की हुई हर सजा का स्वागत दिल से करने के लिए तैयार हूँ।"

उनकी आंखें बरस पड़ीं—

"इस नालायक औलाद की वजह से हमें आज के दिन यह शर्मसारी उठानी पड़ रही है। तुम लोग उसे जो सजा दोगे, वह उसे भुगतनी पड़ेगी। तुम लोग उसे खुद सजा दो। इस सजा को पूरा करने में हम तुम्हारा साथ देंगे।"

उन्होंने उस दिलेर और नेक लड़की को सम्बोधित किया—

'बेटी! तुम यकीनन तारीफ और इनाम की हकदार हो। तुमने वह बड़ा और अहम काम किया है, जिसकी मिसाल आज के हमारे इस समाज में नहीं मिल सकती। मैं तुम्हें तुम्हारे इस साहस पर दिली मुबारकबाद पेश करता हूँ। खुश किस्मत है वह बाप, जिसकी तुम बेटी हो। और पवित्र है वह कोख, जिसने तुम्हारे जैसी साहस और नैतिकता की महान लड़की को जन्म दिया है।"

उन्होंने उस लड़की के सिर पर प्यार से हाथ फेरा।

"हम तुम्हें वे सारे खेत इनाम में देते हैं, जो तुम्हारा बाप जोतता है। किसकी बेटी हो तुम? कौन है वह खुशनसीब बाप?"

"हुजूर माई-बाप!" वह लड़की डिप्टी साहिब के पाँव छूकर बोली—"आपके गाँव की गुण्टरीत हमारा बाप है, सरकार।"

"कौन! जगदेव! तुम जगदेव की बेटी हो?"

"हाँ हुजूर! माई बाप!" जगदेव बोला—"आ हमरी बेटी है, मालिक!"

"मुबारक हो, भाई।" डिप्टी साहिब बड़ी हसरत के साथ बोले—"यह तुम्हारी बेटी है और यह हमारा बेटा है।"

उन्होंने कहर आलूद नज़रों से बड़े दुःख के साथ अपने बदइतवार बेटे ताहिर को देखा और फिर उनकी गर्दन शर्म से एक बार फिर नीचे झुक गई। वह उसी तरह सिर झुकाए-झुकाए बोले—

"हाँ। तो तुम लोग इस मेरे बदमाश और कमीने बेटे के लिए

क्या सजा तजवीज करते हो !"

"आप महान हैं, सरकार ! आप साक्षात् देवता हैं। बहुत बड़ा दर्जा है आपका, मालिक !" गाँव का चौधरी बोला।

"हमको सब कुछ मिल गया, मालिक ! छोटे सरकार हमारा मालिक हैं, माई-बाप ! हम प्रजा लोग छोटे सरकार को क्या सजा देंगे। पहली भूल उनसे हुई है ! हम सब उनकी पहली भूल को भूल गए हैं, मालिक ! दिल से भूल गए हैं, सरकार !"

"नहीं। तुम इस बदकार को उसकी कमीनगी की सज़ा ज़रूर दो। यह मेरी दिली ख्वाहिश है।"

"बस सरकार ! अब बहुत शर्मिन्दा न करें, सरकार !"

और फिर वे सब के सब अपने जागीरदार साहिब की इस शराफत और इन्साफ परवरी का गहरा नक्श लेकर वहाँ से वापिस लौटे।

डिप्टी साहिब को अपनी इस बेइज़्ज़ती पर इतना बड़ा सदमा पहुँचा कि वे हवेली के अन्दर आकर बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगे। वे बार-बार कहते थे—

"मैं अब अपनी जागीर में किसी को मुंह नहीं दिखा सकता। मेरी सारी इज़्ज़त, मेरा सारा वकार और मेरी ज़िन्दगी भर की आन इस कमीने लड़के ने गन्दगी में लिथेड़ दी है। मेरी सारी ज़िन्दगी की नेकनामी मिट्टी में मिल गई है।"

वे बार-बार अपने मुँह पर तमाचे मार रहे थे। अपने बाल नोच रहे थे। वे 'अब मैं ज़िन्दा न रहूँ। मेरी ज़िन्दगी अब एक कर्बनाम मौत है, मेरे लिए।'

उनकी बेगम साहिबा ने उन्हें बहुतेरा सम्हालने और समझाने-बहलाने, फुसलाने की कोशिश की, लेकिन उनका सदमा कम न हुआ। किसी बात का असर न हुआ उन पर। और वे बीमार हो गए। दिल के दौरे उनके ऊपर पड़ने लगे। हकीमों और डाक्टरों की समझ से बात बाहर हो गई।

उन्होंने खाना-पीना यकलख़्त छोड़ दिया। एक बड़ी अजीब और भयानक किस्म की चुप लग गई उन्हें। और एक दिन ऐसा आया कि वे इस दुनिया से रुखसत हो गए।

इस वाकया के एक हफ्ते के अन्दर ही उनका हार्ट फेल हो गया।

दिल की हरकत बन्द हो गई और वे अल्लाह को प्यारे हो गए।

उन्होंने सच ही कहा था। वे दुनिया को इस वाकया के बाद फिर मुंह न दिखा सके। ज़ाकिरा बेगम की दुनिया लुट गई। उनकी जीती-जागती दुनिया तारीक हो चुकी थी।

ज़ाकिरा बेगम के दिल से एक सर्द आह खिंचकर बाहर आ गई। वे बेसाख्ता पुकार उठीं—

"मेरे अल्लाह।"

उनके दिल से खिचकर यह मुकद्दस नाम बाहर आया और वे अपने होश में आ गईं। उन्होंने देखा, उनका दामन उनके गर्म-गर्म आंसुओं से भीग चुका था। वे न जाने कब से रो रही थीं।

"नानी अम्मा!"

मासूम सईदा चौंक पड़ी। उन्होंने "मेरी बच्ची" कह कर उसे बेअख्तयार अपने कलेजे से लगा लिया और उसे फिर से थपक-थपक कर सुलाने की कोशिश की।

तीन

ज़ाकिरा बीबी की सोच और उनके खयालात का सिलसिला अभी खत्म नहीं हुआ था। आज जबकि वे अपनी नातिन सईदा के ग़म में बुरी तरह निढाल थीं, उन्हें एक-एक बात बड़ी तफसील के साथ याद आती जा रही थी।

उनके शौहर के मरते ही उनके नालायक बेटे ने अपनी कमीनगी और शरारत का मज़ाहिरा बड़ी शिद्दत के साथ शुरू कर दिया था।

माँ के होते हुए इस बात का कोई हक़ न था उसे कि वह बाप की जायदाद अपने नाम लिखवाले, लेकिन वह अपनी माँ की ज़िन्दगी में ही सारी जायदाद अपने नाम करा लेने के ख्वाब देखने लगा। साथ-ही-साथ उसे अपनी शादी की फिक्र बड़े ज़ोर-शोर के साथ लाहक़ हो गई थी।

"अम्मी!" एक दिन वह अपनी माँ से कह रहा था—"आखिर आप मेरी शादी कब करेंगी?"

"घर में बहू आए, इसकी ख्वाहिश किस माँ के दिल में न होगी, बेटा!" वे मुलामियत से बोलीं—"लेकिन अभी तुम्हारे अब्बाजान को मरे हुए दिन ही कितने हुए हैं। दुनिया क्या कहेगी आखिर! कम-से-कम उनका चालीसवाँ तो हो जाने दो!"

"ये अब बेकार की बातें हैं अम्मी! बेकार के ढकोसले। चालीसवाँ-चालीसवाँ से क्या होता है। अब्बाजान अगर मर गए तो क्या मैं उनके सोग में सारी उम्र क्वाँरा ही बैठा रहूँगा?"

ज़ाकिरा बीबी ने इन्तहाई मलाल के साथ अपने इकलौते बेटे को देखा। वे बड़े दुःख के साथ बोलीं—

"बड़े नालायक हो तुम, ताहिर ! बेहूदा और इन्तहाई बदतमीज़ किस्म के ।"

"अरे वाह ?" वह अपनी माँ की बात पर गुस्से में आ गया । कठोरता से बोला—"मेरी जात में तो हमेशा ही अब्बाजान मरहूम को और आपको कीड़े ही नज़र आए हैं । अगर आप लोगों की नज़रों में कसूर है, तो इससे मेरी जात में क्या फ़र्क पड़ता है ।"

"कैसी बातें करते हैं आप, भाई मियाँ !" रुखसाना, उसकी सोलह साला बहिन बीच में बोल पड़ी—"किसी वक़्त तो आप अम्मीजान का दिल देखकर बात किया कीजिए ।"

'अरे वाह !" उसने अपनी माँ की तरफ मुस्कराकर देखते हुए अपनी छोटी बहिन रुख़साना के सिर पर एक धप् लगाई—"बड़ी आई मुझे नसीहत करने वाली चुड़ैल कहीं की···बदतमीज़···।"

"नहीं भाई मियाँ !" रुख़साना पूरी संजीदगी के साथ बोली—"आपकी इन बातों से अम्मी जान तो क्या, मुझे भी बड़ा दुःख होता है ।"

"बस-बस !" उसकी पेशानी पर शिकन उभर आई—"बड़ी आई मुझे रोकने-टोकने वाली ! छोटा मुँह, बड़ी बात ! खबरदार जो फिर कभी तूने मेरे आड़े आने की कोशिश की तो ! जूते लगाकर हवेली से बाहर निकाल दूंगा !"

"ताहिरा !" ज़ाकिरा बीबी तेज़ होकर बोलीं—"यह तेरी बहिन है । तुम किसी लौंडी, बान्दी या छोकरी से बात नहीं कर रहे हो ! और फिर उसने कहा भी क्या है तुम्हें ? खबरदार ! आइन्दा से सोच-समझकर ज़बान चलाना, वरना मुझसे बुरा कोई न होगा । मैं कहे दे रही हूँ—हाँ !"

"क्या कर लेंगी आप मेरा ?" वह इन्तहाई बेरहमी और गुस्ताखी से बफरकर बोला—"मैं अब दूध पीता बच्चा नहीं हूँ । इतनी बड़ी हवेली और इतनी बड़ी जागीर का मालिक हूँ । मेरी भी इज़्ज़त है, मेरी भी आन है और मेरी इज़्ज़त, मेरी आन का आपको हर वक़्त खयाल रखना होगा । वरना···!"

ज़ाकिरा बीबी को बेटे की इस गुस्ताखी पर बड़े ज़ोर का गुस्सा आ गया । वे तेज़ होकर बोलीं—

"वरना क्या ? वरना क्या करेगा तू मेरा ?"

"मैं···मैं···!" ताहिर बकते-बकते रुक गया। चुलबुलाकर बोला—"वरना मैं तुम्हारा घर छोड़कर कहीं चला जाऊँगा।" उसने एक्टिङ्ग की। भर्राती हुई आवाज़ में बोला—"मैं कहीं नदी-नाले में जाकर डूब मरूँगा।"

वह झूठ-मूठ के आंसू अपने कुर्ते के दामन से पोंछने लगा। बड़े मरे दिल से बोला—

"काश ! मैं पैदा होते ही मर जाता।"

वह हवेली से बाहर जाते हुए रुककर बोला—

"मैं अभी जाकर खुदकशी कर लेता हूँ। गाँव में खुद मेरे बाप के खुदवाए हुए बहुत से कुएँ हैं। उनमें से किसी एक का पानी खुश्क नहीं हुआ।"

"अरे-अरे ! खुदा न करे !"

एक माँ का दिल भर आया। माँ का दिल···फिर भी माँ का दिल ही होता है। वे अपने ताहिर के पीछे बदहवास होकर भागीं। उन्होंने अपने बेटे का बाजू थाम लिया। उधर से उसकी बहिन रुखसाना भी भागकर आ गई और आते ही अपने भाई से लिपट गई। आखिर को वह बहिन थी। भर्राई आवाज़ में बोली—

"अल्लाह न करे, आपके दुश्मनों को कुछ हो, भाई मियाँ ! मैं आप पर से वारी—कुर्बान ! आपके ऊपर से मैं सदके उतर जाऊँगी—मेरे बीरन ! मेरे भाई मियाँ !"

वह फूट-फूटकर रोने लगी।

ज़ाकिरा ने भी बेटे को गले से लगा लिया। भर्राए स्वर में कहा—

'खुदा न करे कि नसीबे-अल्लाह, तू मेरी नज़रों से ओझल हो। तुम्हारे सिवाय हमारा अब कौन सहारा है, बेटे !"

आँसू ज़ाकिरा की आंखों से भी टपाटप गिरने लगे। ताहिर के दिल का कमल यकबारगी खिल उठा। यह अपनी गैरइरादवी किस्म की एक्टिंग जो उसे निशाने पर दिखाई दी, तो वह खुशी से दीवाना हो गया। मज़ीद एक्टिंग करते हुए माँ से लिपट गया। अपनी बहिन को खींचकर अपने गले से लगा लिया। भर्राई हुई आवाज़ में

बोला—

"मेरा इस इतने बड़े जहान में सिवाय माँ और बहिन के और कौन है ? अब्बाजान की बेवक्त मौत ने मेरा दिमाग खराब करके रख दिया है। गमों का पहाड़ टूट पड़ा है मेरे ऊपर। इसलिए बगैर सोचे-समझे मेरे मुँह से न जाने क्या कुछ निकलने लगता है। बखुदा मेरी किसी बात का मेरे दिल से ताल्लुक नहीं होता। मैं तो गमों के बोझ तले दबकर पागल हो गया हूँ।" वह रोने लगा।

"कसम खुदा की, हबीबगंज कल गया था। मेरा वसूली तहसील में जी बिल्कुल नहीं लगा। हर लम्हा मैं इसी रंज और अफसोस में डूबा रहता हूँ कि मौज़ा सुजानगंज की उस बेहया लौंडिया ने मेरे ऊपर बिल्कुल झूठा इलजाम लगाया था। अब्बाजान ने उन दो टके के देहातियों के मुकाबिले में मुझे झूठा समझा और मेरी इतनी ज्यादा बेइज्ज़ती की कि खुदा की पनाह! बेचारे खुद भी उन हरामजादे गाँव वालों के इस तोहमत पर गमों से निढाल होकर मुझे यतीम बना गए। मुझे अकेला छोड़ गए इस इतनी बड़ी दुनिया में।"

और इतना कहकर वह फूं-फूं कर रोने लगा। ज़ाकिरा और रुखसाना दोनों उसे घबरा-घबराकर पुचकारने और सम्हालने लगीं।

"गम न करो मेरे बेटे!" ज़ाकिरा ने कहा—"अगर वे गाँव वाले झूठे हैं, तो अल्लाहपाक उन्हें ज़रूर इस इतने बड़े इलज़ाम की सज़ा देगा।

"मेरा ईमान है। तुम गम न करो, ताहिर।"

"हाँ, और नहीं तो क्या—" रुखसाना मासूमियत से बोली—"उन बदबख्तों ने हमारे खानदान पर बहुत बड़ा जुल्म किया है।"

"खुदा सब कुछ देखता और खामोश रहता है, अम्मीजान!" ताहिर हिचकियों के दरम्यान बोला—

"इस दुनिया में हमेशा झूठों का ही बोलबाला है। सच्चे और नेक बन्दे तो रो-रोकर मर जाते हैं। खुदा किसी की बेगुनाही का सबूत देने के लिए कभी नहीं आता।"

"ऐसा न कहो, बेटे! यह कुफ्र है।" ज़ाकिरा बीबी ने कहा—"खुदा के यहाँ देर ज़रूर है, लेकिन अन्धेर नहीं है।" वे ज़ोर देकर बोलीं—

"इस पर यकीन रखो, बेटे कि हर बात में अल्लाहपाक की कोई-न-कोई मसलहत ज़रूर होती है और वह नेक होती है। बन्दे के लिए उसमें भलाई होती है।"

"होती रही होगी कभी भलाई।" ताहिर बज़ाहिर बड़े कर्ब के साथ बोला—"लेकिन उसकी इस भलाई में तो अपना सब कुछ तबाह हो गया। अब्बाजान के रखवाले साए से महरूम हो गया। यतीम बना दिया मुझे उसकी इस मसलहत ने।"

और यह कहकर वह फिर हिचकियों से रोने लगा। वह बच्चों की तरह फूट-फूट और बिलख-बिलख कर रो रहा था। और ये दोनों ज़ाकिरा और रुख़साना उसे घबरा-घबरा कर तसल्ली दे रही थीं। और परेशान हुई जा रही थीं बेचारियाँ। रुख़साना बोली—

"अब और ज्यादा गम न कीजिए, भाई मियाँ। अल्लाह न करे, अगर आपके दुश्मनों को कुछ हो गया तो हम क्या करेंगे?"

"हाँ, बेटे।" ज़ाकिरा ने उसका सिर अपनी गोद में भर लिया—"सब्र करो। सब्र का फल हमेशा मीठा होता है।"

"मीठे ही फल तो हम खा रहे हैं।" ताहिर बोला—"देखिए न, खा रहे हैं न हम मीठे फल! और अभी आपको तो और भी मीठे-मीठे फल खाने को मिलने वाले हैं।" वह तनकर बोला—

"इंशा अल्लाह!"

फिर माँ की ओर मुखातिब हुआ—

"कहिए न अम्मी, इंशा अल्लाह।"

"इंशा अल्लाह।" ज़ाकिरा ने इन्तहाई अक़ीदत के साथ कहा—"सब्र के फल हमेशा मीठे होते हैं।"

"यही हमारा ईमान है, भाई मियाँ!" रुख़साना बोली—"और यह ईमान रखने वाले कभी घाटे में नहीं रहते। हो सकता है कि दुनिया वालों की नज़र में वे घाटे में रहते हों। इस दुनिया में न सही, तो अगली दुनिया में अल्लाह पर भरोसा रखने वालों को नेक अज़र ज़रूर मिलता है।"

"ये सब दिल बहलावे की बातें हैं।" ताहिर हिकारत से बोला।

"तौबा करो बेटे, तौबा!" ज़ाकिरा ने तौबा की—"ऐसा कहना क्या, ऐसा सोचना भी कुफ्र है और सिर्फ उन्हें अल्लाहपाक कभी न

बख्शेगा, जो काफिर हों।"

"काफिर किसे कहते हैं ?" ताहिर ने सवाल किया।

"काफिर वह है, भाई मियाँ—"रुख़साना बोली—"जो खुदा को न मानता हो। और बस, उनमें से एक भी काफिर नहीं है जो खुदा को मानते, जानते और समझते हैं।"

"बड़ी समझदार हो गई हो तुम !"

"इल्म की रोशनी से हर समझ अता होती है, भाई मियाँ !" रुख़साना ने फखरिया कहा—"मैंने उस्तादनी बीबी से पढ़ने के बाद हाफ़िज साहिब से भी पर्दे में बैठकर दीनी तालीम हासिल की है। और फिर अदीब कामिल का इम्तहान भी तो मैंने पास किया है।"

"अच्छा-अच्छा ! बस रहने दे।" ताहिर मुस्कराया—"बड़ी आई पढ़-फाजिल बनकर। मुझे सब कुछ मालूम है।"

और फिर उसने अपनी माँ से कहा—

"यह बात मैं कहे देता हूँ, अम्मी जान ! मैं मौजा सुजानगंज के सरकश असामियों से उनकी इस कमीनगी का बदला ज़रूर लूँगा।"

'नहीं बेटे।" ज़ाकिरा ने उसके जज़बात को ठण्डा करने की कोशिश की—"काश्तकारों की मुखालफ़त ठीक नहीं होती। और फ़िर बदला लेना इन्सान का काम नहीं, रहमान का काम है।"

"अच्छा अम्मी" वह अब हद दर्जा सआदतमन्द बनने की कोशिश कर रहा था। उसने समझ लिया था कि उसकी यह सआदतमन्दी की एक्टिङ्ग सबसे ज़्यादा ज़ोरदार और कामयाब हो सकती है। इसके ज़रिये वह सब कुछ बड़ी आसानी के साथ हासिल कर लेगा, जो कि उसे गुस्से और सरकशी में शायद कभी न मिले और जिसे हासिल करने के लिए उसे अपनी माँ को जान से मार देना पड़ेगा। माँ की मौत का इन्तज़ार ! खुदा की पनाह ! कितना सब्र आज़मा होगा उसके लिए। न जाने वह अपनी मौत से कब मरे।

लिहाज़ा वह बड़े शर्माते हुए अन्दाज़ में बोला—

"मैं अपनी उस बदतमीज़ी की आपसे माफी चाहता हूँ, अम्मी!"

"कौन-सी बात, बेटे ?"

"वही, जो मैं अपनी शादी की बात आपसे कर रहा था। वह बात दरअसल यह है, अम्मी, कि अब्बाजान की अचानक मौत की

वजह से अपना दिमागी तवाज़न खो बैठा हूँ। न जाने क्या अण्ट-शण्ट मैं बकने लगा हूँ।"

उसने अपनी बहिन रुख़साना की तरफ मुस्कराकर देखा—

"पहले तो मुझे अपनी इस गुड़िया का ब्याह करना है।"

और यह सुनकर रुख़साना शर्मा गई। शर्मा कर उसने अपनी गर्दन नीचे झुका ली। वह अपना सिर अपने दोनों घुटनों में दिए बैठी थी। शर्म से उसका चेहरा गुलनार बन गया।

ज़ाकिरा बीबी बोलीं—

"नहीं! मैं तुम दोनों के फिक्र में हूँ, बेटे! मैं तुम दोनों की शादी एक साथ करने की सोच रही हूँ।" उसकी आँखों में आँसू फिर से छलक आए।

"काश कि वो जिन्दा होते।"

ज़ाकिरा बीबी का दिल उनके पहलू में ज़ख़्मी परिन्दे के मानिन्द फड़फड़ाने लगा। वे फूट-फूटकर हिचकियों में रोने लगीं।

ताहिर और रुख़साना दोनों उनसे लिपटकर रोने लगे। वे दोनों उन्हें समझाने-बुझाने और फुलसाने लगे। रुख़साना की आँखें भी सावन-भादों की तरह बरसने लगीं।

ज़ाकिरा बीबी की एक खालाज़ाद बहिन थी अफ़रोज़ बेगम! उनकी शादी इलाहाबाद के अब्दुल इलाही साहिब से हुई थी। ये इलाहाबाद के एक मशहूर वकील के मुंशी थे। अफ़रोज़ बेगम के माँ-बाप भी कोई बहुत बड़े आदमी न थे। बस ऐसे थे, कि भली-बुरी इज़्ज़त के साथ गुजर-बसर हो रही थी। लिहाज़ा अफ़रोज़ बेगम की शादी अब्दुल इलाही साहिब से हो गई।

अलबत्ता उनकी खुद की शादी बहुत बड़े घराने में हुई थी। माँ-बाप उनके भी गरीब थे, लेकिन वह खुद किस्मत वाली थी जो उनका विवाह डिप्टी अकराम अली साहिब से हो गया था। घूँघट उठाकर उन्होंने अपने ससुराल में दौलत की रेल-पेल देखी, हवेली देखी, और दर्जन भर नौकर-चाकर, आयाएँ, ख़ादिमाएँ और बान्दियाँ देखीं। हद से ज़्यादा मुहब्बत करने वाला उन्हें शौहर मिला।

और शौहर की उस दारफ़ता मुहब्बत में उनकी बला की खूब-सूरती, उनके मलकूती हुस्न, उनकी सलीका शुआरी और उनके

मिज़ाज को बहुत बड़ा दख़ल था। वे हद से ज़्यादा खुशमिजाज, हँसमुख और समझदार किस्म की लड़की थीं, जो उस घर में बहू बनकर आई थीं।

अपनी सास और ससुर को उन्होंने हमेशा अपने माँ-बाप की तरह चाहा और प्यार किया। वह उनका अदब और उनका लिहाज़ हद से ज़्यादा करती थीं। वह तो खैर फिर भी उसके सास-ससुर थे, वह हवेली के नौकरों-चाकरों तक से मुरव्वत, शराफ़त और मुहब्बत से पेश आती थीं। इसलिए वह इस हवेली में बेहद हरदिल अज़ीज़ थीं और हरेक की आँख का तारा बनी हुई थीं।

ज़ाकिरा बीबी अपनी ख़ालाज़ाद बहिन अफ़रोज़ बेगम से हमेशा मिलती-जुलती रहती थीं। उन्हें अपने यहाँ बुलवाती थीं। प्यार-मुहब्बत से पेश आती थीं और उनका बड़ा ख़याल करती थीं। उन्हें, उनके शौहर को और उनके बच्चों को सर-आँखों पर जगह देती थीं। वे अपनी ख़ालाज़ाद बहिन के साथ अच्छा सलूक भी करती थीं।

वह अक्सर खुद भी अफ़रोज़ बेगम के यहाँ जाती थीं और बहुत कुछ दे-दिवाकर आती थीं। अफ़रोज़ बेगम की यह दिली ख्वाहिश थी कि वह अपनी बेटी अनवरी को इस घर की बहू बनाने में कामयाब हो जायँ। उन्होंने दिल-ही-दिल में ताहिर को अपनी बेटी अनवरी के लिए पसन्द कर लिया था।

एक दफा जबकि वह अनवरी को साथ लेकर आई हुई थीं, उन्होंने बातों-बातों में बात निकाली—

"आपा!" वह ज़ाकिरा बीबी को आपा कहा करती थीं—"मुझे आपका बेटा ताहिर बहुत अच्छा लगता है।"

"क्यों नहीं!" ज़ाकिरा बीबी बोलीं—"आख़िर को तुम्हारा भांजा है। अपना बेटा किसे अच्छा नहीं लगता? देखो न, तुम्हारी बेटी अनवरी मुझे कितनी अच्छी लगती है। आख़िर को मेरी बेटी है न, इसलिए।"

"तो आपा, तुम उसे अपनी बेटी बना ही लो न!"

"वह तो है ही मेरी बेटी।"

"नहीं, मैं रिश्ते की बात कर रही हूँ। अगर अनवरी और ताहिर मियाँ का…!"

ज़ाकिरा बीबी ने बात काट दी—

"अभी से क्या ! अभी तो दोनों बच्चे हैं। जब वक्त आएगा, तो मैं···।"

अफ़रोज़ बेगम ने कई पहलू बदले। झट से बोल पड़ीं—

"बच्चे ही जवान होते हैं। अगर यह रिश्ता अभी से—"

"यह बात भी इंशा अल्लाह हो जायगी।" ज़ाकिरा बीबी ने कहा—"वक्त आने दो। मैं डिप्टी साहिब से बात निकालूंगी।"

"लेकिन अभी से बात पक्की कर लेने में—मेरा मतलब है कि—"

"हाँ-हाँ !" ज़ाकिरा बीबी बोलीं—"सब कुछ वक्त आने पर खुद-ब-खुद हो जायगा।"

"आप टाल रही हैं, आपा !"

"खुदा न करे।"

"फिर ?"

"मैंने कहा कि वक्त आने दो।"

"अच्छा आपा !" अफरोज़ बेगम ने कहा—"लेकिन यह याद रखिएगा कि यह मेरा बहुत बड़ा अरमान है।"

"इंशा अल्लाह, ज़रूर पूरा होगा।"

"और अगर···!"

ज़ाकिरा बीबी ने अफ़रोज़ बेगम की बात काटी—

"तुम यह क्यों भूलती हो, अफ़रोज़ कि रिश्ता आसमान से उतर कर आता है।" वह मुस्कराईं—"किस्मत में होगा, तो ज़रूर यह शादी होकर रहेगी।"

"अल्लाह करे, आपा !" अफ़रोज़ बेगम बड़े अरमानों के साथ बोलीं—"मैं ज़िन्दगी भर तुम्हारा अहसान न भूलूंगी।"

"अहसान काहे का बहिन ! आखिर को तुम हमारा ही खून तो हो।"

"तभी तो मैंने खुद ही बे-ग़ैरत बनकर यह बात, जोकि दिल में थी, निकाल ही दी।"

"अच्छा किया तुमने।"

"मेरी बिटिया अनवरी बड़ी सीधी और नेक है। तुम्हारे पाँवों को

धो-धोकर न पिए, तो मुझसे कहना। क़सम अल्लाह की, अनवरी तुम्हें कभी शिकायत का मौका न देगी।"

"मुझे अहसास है, अफ़रोज़! आखिर खून तो अपना ही है न ?"

और फिर इस गुफ्तगू के बाद एक दिन, जबकि ताहिर चौदह साल का था, इस वाक़्या के पूरे चार साल बाद ज़ाकिरा बीबी ने डिप्टी साहिब से बात निकाली—

"अनवरी कैसी लड़की है!"

"क्यों ?"

"मैं उसके बारे में एक बात सोच रही हूँ।"

"वह क्या ?"

"अगर हम उसे अपनी बहू बना लें—तो ?"

"मेरा ख़याल तो यह नहीं है।" डिप्टी साहिब बोले—"मेरा ख़याल तो किसी और तरफ जाता है।"

"किसी और तरफ ?"

"हाँ!" डिप्टी साहिब ने अपनी बेगम को बताया—"वह कमिश्नर वसीमुलद्दीन हैं न, उसकी बेटी फ़रज़ाना मुझे बहुत अच्छी लगती है। बड़ी खूबसूरत है, जहीन है और पढ़ने-लिखने में नम्बर एक है और फिर वसीमुलद्दीन साहिब मेरे जिगरी यार हैं और फ़रज़ाना उनकी इकलौती बेटी है। बहुत बड़े आदमी भी हैं वसीम साहिब! ताहिर के लिए फ़रज़ाना से अच्छी दुल्हिन चिराग लेकर ढूंढ़ने पर भी न मिलेगी।"

"गरीब घर की लड़कियाँ अच्छी बहुएँ बन सकती हैं और बड़े घर की बेटियाँ तो—"

"नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं। फ़रज़ाना बड़ी नेक तबीयत बच्ची है, सलीकामन्द और बाशुआर है और फिर हम कहाँ कुछ कम हैं। अल्लाह का दिया हुआ क्या कुछ अपने यहाँ नहीं।"

"लेकिन!" ज़ाकिरा बीबी रुककर बोलीं—"मुझे अनवरी बहुत पसन्द है।"

"तो फिर देख लेंगे बाद में। अभी कौन ताहिर का ब्याह होने जा रहा है। और फिर मैं तो अपनी बेगम की पसन्द का हमेशा खैर-मुकद्दम करने को तैयार रहता हूँ। आपको अगर वह लड़की पसन्द

है तो हम उसी को अपनी बहू बना लेंगे।"

"सच !" ज़ाकिरा बेगम खुश होकर बोलीं।

"आपकी कसम।"

"तो फिर मुझे तो अनवरी पसन्द है। गरीब घर की लड़की है, हमेशा नज़रें झुका कर चलेगी। और फिर मेरी ख़ालाज़ाद बहिन की बेटी है, बेज़बान भी है बेचारी। हमेशा मेरे कहने पर चलेगी।"

"अच्छा-अच्छा भई।" डिप्टी साहब बोले—"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। लेकिन अभी इस बात का वक्त कौन सा है ?"

"मैं तो आपकी राय मालूम करना चाहती थी।"

"मेरी राय हमेशा आपकी मर्ज़ी की मुहताज रहेगी।" उन्होंने शरारत आमेज़ नज़रों से अपनी बेगम की तरफ देखा। ज़ाकिरा बीबी की नज़रें खुद-ब-खुद नीचे झुक गईं।

ज़ाकिरा बीबी का ज़हन माज़ी के तानों-बानों में बहुत बुरी तरह उलझा हुआ था। उस वक्त रह-रहकर उन्हें अहदे-रफ्ता की एक-एक बात याद आ रही थी।

रुख़साना ने मुँशी फ़ाज़िल का इम्तहान बड़े शानदार तरीके से अव्वल नम्बर में पास कर लिया था। और उसकी इस अज़ीमुलशान कामयाबी के सिलसिले में डिप्टी साहब ने एक शानदार तकरीब मनाने का प्रोग्राम बनाया था।

सहभोज भी था और नृत्य तथा संगीत का कार्यक्रम भी। दूर-नज़दीक हर क़िस्म के रिश्तेदारों को दावती-कार्ड भिजवाए गए थे। दोस्त और अहबाब भी जमा किए गए थे।

डिप्टी साहब ने इस तकरीब की खुशी में दो दिन की दावत का शानदार प्रोग्राम बनाया था। बड़े आदमी थे, दिल वाले थे और तकरीबात (उत्सव) मनाने का शौक था उन्हें। वे तो दावतों की तरतीब का बहाना ही ढूँढा करते थे। लिहाजा यह बहाना उन्हें हाथ आ गया था और वे अपने दिल का शौक पूरा कर रहे थे।

उन्होंने यह भी लिखवाया था दावती-कार्ड में कि आने वालों की आमदो-रफ्त का खर्चा वह खुद अदा करेंगे। न जाने क्यों, वे अपनी चहेती बेटी की यह तकरीब इस अन्दाज़ में मना रहे थे, जसे कि वह उसका ब्याह रचा रहे हों। तकरीब में अभी आठ दिन बाकी थे,

लेकिन प्रबन्ध उन्होंने अभी से शुरू कर दिए थे।

उन्होंने तहसीलदार साहब को बुलवा कर कहा—

"जानते हो, बाबू मथुराप्रसाद कि मैंने तुम्हें किसलिए तकलीफ दी है?"

"आप हुक्म दीजिए, हुजूर! आपका काम मेरे लिए तकलीफ नहीं, राहत है।"

"तुम्हारी भतीजी मुँशी फ़ाज़िल हो गई है।"

"अच्छा।" बाबू मथुराप्रसाद ने खुश होकर कहा—"मुबारक हो।"

"और जानते हो, मथुराप्रसाद।" डिप्टी साहब जैसे कि झूम गए, "मुंशी फाज़िल का इम्तहान उसने अव्वल दर्जे में पास किया है।"

"अरे वाह साहिब।" मथुराप्रसाद पुरजोश अन्दाज में बोले—"बड़ी ज़हीन है, हमारी रुख़साना बिटिया! भगवान उसकी उमर में बरकत दें।"

"ख्याल है कि उसकी इस शानदार कामयाबी पर एक शानदार किस्म की दावत हो जाय। एक ऐसी तकरीब, कि लोग बरसों याद रखें।"

"ज़रूर, साहिब, ज़रूर। दावत तो होनी ही चाहिए।" मथुराप्रसाद ने कहा—"हुक्म दीजिए, मेरे जिम्मे आप क्या काम सौंप रहे हैं? मैं इस तकरीब के लिए दिल खोलकर काम करूँगा।"

"आपको उम्दा किस्म की मिठाइयों और पकवानों के लिए दस मन घी का इन्तज़ाम करना है, मथुराप्रसाद जी! हमारे हिन्दू दोस्त और उनके घरवाले भी इस खुशी में शरीक हो रहे हैं। और हाँ, किसी माकूल किस्म के हलवाई का इन्तज़ाम भी आपको करना है। बल्कि मैं तो इस महकमे का काम ही आपको सौंप रहा हूँ। जो चाहिए और जैसा चाहिए पकवाइए। लेकिन यह ख़याल रहे कि हर चीज़ क्लास वन हो और उम्दा हो।"

"बड़ी खुशी से साहिब! अगर शिकायत का मौका मिले, तो गर्दन उड़ा दीजिएगा।"

"और हाँ, ताजा और उम्दा किस्म की सब्जियों का इन्तज़ाम भी आप ही करेंगे।"

"वह तो करना ही है !"

"और कोई उम्दा किस्म की गाने वाली—" डिप्टी साहिब ने मुस्कराकर कहा—"इसमें तो आपको खास तजुर्बा है ।"

"जर्रानवाजी है, हुजूर की ।" मथुराप्रसाद मुस्कराए—"यह इन्तज़ाम भी हो जायगा ।"

"और कव्वाल ?"

"वह आप जानिए, साहिब । इसमें बन्दे का दख़ल ज़रा कम है।"

"अच्छा ! यह इन्तज़ाम हम कर लेंगे ।" डिप्टी साहिब सोचने लगे । बोले—"वह हबीब कव्वाल कैसा रहेगा ?"

"बहुत उम्दा ! लेकिन वह आएगा देहली से ? मसरूफ़ ज़्यादा रहता है ।"

"उसका बाप भी आएगा, मथुराप्रसाद !" डिप्टी साहिब पूरे जौक के साथ बोले—"इस पर हमें पूरा भरोसा और शक्ति है ।"

"यह बात तो सच है, डिप्टी साहिब !" मथुराप्रसाद ने कहा—"मेरी राय में उसके पास दिल्ली किसी को भिजवा दीजिए ।"

"कल ही सत्तार को एक हज़ार नकद देकर दिल्ली भेजता हूँ ।"

"बस ठीक है ।" मथुराप्रसाद ने कहा—"एक हज़ार तो बहुत ज़्यादा है । पाँच सौ में तो पाँच कव्वाल आ जायेंगे ।"

"यही तो मैं कह रहा हूँ । लेकिन वह चूँकि बहुत मसरूफ रहता है, लिहाजा मैं तो उसे हर कीमत पर बुलाने के लिए तैयार हूँ ।"

"बहुत शानदार प्रोग्राम हो जायगा ।" मथुराप्रसाद ने कहा ।

"हाँ ! एक दिन तो सबसे पहले मिलाद शरीफ होगा । दूसरे दिन दो-चार घण्टे नाच और फिर सुबह तक कव्वाली ।"

"बड़ा मज़ा आएगा ।" मथुराप्रसाद ने ताईद के साथ-ही-साथ पूछा—"मेहमान कहाँ-कहाँ से आ रहे हैं ?"

"देहली, लखनऊ, कानपुर, इलाहाबाद, बरेली, प्रतापगढ़, बनारस और आस-पास की दूसरी जगहों से ।"

"यह तो अच्छी-ख़ासी शादी हो गई ।"

"हाँ, भई मथुराप्रसाद जी ।" डिप्टी साहिब बोले—"मेरी नज़रों में तो दौलत का सही प्रयोग यही है कि खाओ-खिलाओ, खर्च करो और फिर कमाओ ।"

Library Sri Pratap College
Srinagar.

और फिर थोड़ी देर और बैठकर मथुराप्रसाद चले गए। और जब मथुराप्रसाद जी जा चुके तो डिप्टी साहिब उठकर जनानखाने में आ गए।

"मैंने कहा—बेगम, सुनती हैं आप?" वह सीधे बावर्चीखाने में आ गए। बीबी को देखकर बोले—

"आखिर यहाँ क्या करती हैं गर्मी और धूएँ में? कितनी दफ़ा कहा कि यह जगह आपके लिए नहीं है!"

"फिर कहाँ है मेरी जगह?"

"छपरखाट पर—और—और—"

"अच्छा-अच्छा!" ज़ाकिरा बीबी मुस्कराईं। उन्होंने आँखों से मुगलानी बी को इशारा किया—"बस-बस, मैं समझ गई।"

"फिर सब-कुछ समझते हुए भी आप यहाँ क्यों घुसी रहती हैं?" वह आहिस्ता से बोले—

"जबकि आप यह समझती हैं कि आपकी जगह मेरे दिल में है।"

"हाँ-हाँ, ठीक है।" वह बोलीं—"मुर्ग पुलाव पकाने आ गई थी ज़रा। आप चलिए, मैं आती हूँ।"

और फिर थोड़ी-सी देर बाद वह आ गईं।

"फरमाइये!"

"अपनी बेटी रुख़साना की कामयाबी की खुशी में एक शानदार तकरीब मनाने जा रहा हूँ।"

"मुबारक हो।"

फिर इस तकरीब की पूरी तफ़सील बताकर वह कहने लगे—

"आज रात खाने के बाद हम बैठकर मेहमानों की फेहरिस्त बनाएँगे। ख्याल रखिएगा, कोई न रह जाय।"

ज़ाकिरा बीबी मुस्कराने लगीं। वह बोले—

"यह आप मुस्करा क्यों रही हैं?"

"इसलिए कि यह सब-कुछ हो चुका है। फेहरिस्त तरतीब देकर कार्ड भिजवाए जा चुके हैं।" वह हँस दीं।

"और आप मुझे इस तरह बता रहे हैं, जैसे कि—"

"लाहौल विला···!" डिप्टी साहिब खुद भी हँस दिए—"यह मेरे दिमाग को क्या होता जा रहा है, बेगम! मैं इतनी बड़ी बात

यकदम से भूल कैसे गया ?"

"वल्लाह ! हैरत है !"

"आपने बादाम का हरीरा पीना और हलवा खाना छोड़ जो रखा है।" वह मुस्कराईं—"फिर शुरू कर दीजिए।"

"लेकिन एक शर्त पर।"

"वह क्या ?"

"वह यह कि आप हर लम्हा मेरे दिल-दिमाग में इस अन्दाज़ से न घुसी रहा कीजिए कि आपके सिवाए मैं हर बात भूल जाऊँ।"

"अच्छा-अच्छा !"

ज़ाकिरा बीबी खुशमगीं अन्दाज़ से उनकी तरफ देखकर बोलीं—

"बहुत ज्यादा न बनाया कीजिए !"

"मैं बना रहा हूँ आपको ?"

"तो मज़ाक कर रहे होंगे आप !"

"कसम ले लीजिए।"

और फिर यह तकरीब बड़ी धूम-धाम से मनाई गई। इस तकरीब में कस्बा करीमगंज के ताल्लुकेदार और उनके घर वाले भी शामिल थे। कस्बा करीमगंज के ताल्लुकेदार साहिब पोतड़ों के रईस थे। कई मुसम्मल गाँवों के और कस्बों के वे मालिक थे। उनकी बेगम का इन्तकाल हो चुका था। बीवी के मरने के बाद उन्होंने दूसरी शादी नहीं की थी। वे थे और उनकी दो बेटियाँ थीं और उनका एक बेटा था—जलील अहमद ! और ये सब-के-सब इस तकरीब में शामिल थे। ताल्लुकेदार साहिब और डिप्टी साहिब में पुरानी दोस्ती थी और यह दोस्ती उनके बाप-दादा के वक्त से चली आ रही थी। उनके बाद उनके बाप भी एक दूसरे के दोस्त थे।

जलील अहमद की उमर कोई बीस बरस की रही होगी। डिप्टी साहिब को यह लड़का जलील बेहद पसन्द आया और जलील की बड़ी बहिन राबिया को, जिसकी शादी हो चुकी थी, रुखसाना बेहद पसन्द आई। रुखसाना की उमर पन्द्रह साल की थी। उसने दिल-ही-दिल में अपने छोटे भाई के लिए रुखसाना को पसन्द कर लिया।

उसने ज़ाकिरा बेगम से इस तकरीब के दूसरे दिन कहा—

"एक बात अर्ज़ करूँ, चची जान !"

"जरूर कहो, बेटी !"

"मान जायँगी आप ?"

"बात क्या है ?"

"पहले वायदा कीजिए कि आप मान जाएँगी !"

"मानने वाली बात तो तुम शायद कहोगी नहीं !"

"बिल्कुल !"

"फिर कहो !"

"लेकिन वायदा मैं पहले ले लेना चाहती हूँ ।"

"अच्छा वायदा !"

"अपनी बेटी रुखसाना को हमारी भाभी बना दीजिए ।

और अभी ज़ाकिरा बीबी कुछ कहने भी न पाई थीं कि वह फौरन बोल पड़ी—

"जलील, मेरा छोटा भाई बड़ा होशमन्द है । बासलीका, खूबसूरत और मिजाज का नेक है । वह भी आया हुआ है । अगर चाहें तो खुद भी देख लीजिए । मैं किसी बहाने से अन्दर बुलवा लूँगी । आप छिप कर पर्दे से देख लीजिएगा ।"

"मैं रुखसाना के अब्बाजान से बात करूँगी ।"

"वे मान जाएँगे न ?"

राबिया उमंगों और ख्वाहिशों के दरम्यान बोली ।

"उन्हीं के मानने या न मानने का तो सवाल है, बेटी !" जाकिरा बीबी बोलीं—"लड़की का मामला है और······।"

"आपको तो मेरी इस तजवीज़ से इत्तिफाक है न !" राबिया झट से बोल पड़ी ।

"हो भी सकता है लेकिन जब तक कि मैं लड़के को न देख लूँगी मैं कोई—" वह फिर बेकरारी से बोली—

"जलील को मैं आपको अभी दिखाए देती हूँ ।"

"मैं डिप्टी साहिब से बात करूँगी ।"

और फिर इस बातचीत के थोड़ा ही अर्सा बाद जाकिरा बीबी डिप्टी साहिब से बातचीत कर रही थीं—

"आपकी बेटी के लिए एक रिश्ता आया है ।"

"रुखसाना के लिए !"

"और क्या आपकी रुखसाना से अलहदा भी कोई बेटी है ?" वह मुस्करा दीं—"उसी की बात मैं कर रही हूँ।"

"अच्छा !"

"हाँ !"

"लेकिन मेरे दिल ने तो रुखसाना के लिए किसी और को पसन्द किया है।"

"आपने रुखसाना के लिए किसी और को पसन्द कर रखा है। लेकिन यह कब हुआ ?"

"इसी तकरीब के मौके पर।"

"अच्छा !" वह मुस्कराईं—"और इसी तकरीब के मौके पर मुझे भी एक रिश्ता मिला है।"

"किसने रिश्ता माँगा है ?" डिप्टी साहिब ने चाहत जाहिर करते हुए पूछा।

"राबिया ने।"

"राबिया ! कौन राबिया ? और किसके लिए उसने रिश्ता माँगा है ?"

"आपके दोस्त कस्बा करीमगंज के ताल्लुकेदार की बेटी ! उसी ने अपने भाई जलील के लिए हमारी बेटी का रिश्ता···!"

"अरे वाह !" वह यकबारगी बोल पड़े।

"यानि यह कि दोनों तरफ से एक ही बात हुई है।"

"क्या मतलब ?"

"मैं भी तो उस जलील की बात कर रहा हूँ। खुदा कसम बेगम वह लड़का मुझे बेहद पसन्द है।"

"तो बस फिर क्या···।" ज़ाकिरा बीबी खुश होकर बोलीं—"कर लूँ हाँ ?"

"न हाँ कीजिए और न ना।" उन्होंने राय दी—"बस, गोल-मोल बात करके टाल दीजिए।"

"लेकिन यह क्यों ?"

"मैं ज़रा लड़के के बारे में और छानबीनकर लूं। चाल-चलन भी तो देखना ज़रूरी है। और फिर मैं चाहता हूँ कि यह बात ताल्लुकेदार साहिब खुद निकालें। उनकी बेटी की और बात है और उनकी बात

और होगी।"

"यह बिल्कुल ठीक है।" जाकिरा बीबी बोलीं—"मैं राबिया को ऐसा जवाब दे दूंगी कि जो न इकरार ही हो बिल्कुल और न इन्कार ही हो। फिर हम इत्मीनान से इस रिश्ते पर खूब अच्छी तरह से सोच-विचार कर लेंगे।"

और फिर यह बात इसी जगह खत्म हो गई। इस तकरीब के साल ही भर के अन्दर डिप्टी साहिब का इन्तकाल हो गया। और जाकिरा बीवी शौहर के गम में बोल गईं।

लेकिन इस वाकया के बाद से, जब कि ताहिर ने अपनी शादी के बारे में अपनी अम्मी से खुद कहा था, वह ताहिर की शादी के बारे में सोचने लगीं।

उनका खयाल यह था कि ताहिर और रुखसाना की शादी एक ही वक्त में हो जाय तो अच्छा है। न जाने शादी के बाद ताहिर का रवैया क्या हो। वह ताहिर से बेहद मुहब्बत इसलिए करती थीं कि वह ताहिर की माँ थी। लेकिन ताहिर की तरफ से निश्चिन्त वह बिल्कुल नहीं थीं। उन्हें ताहिर पर भरोसा बहुत कम रह गया था।

लिहाजा वह ताहिर के रिश्ते के लिए सोचने लगीं और साथ ही साथ अपनी बेटी के रिश्ते के बारे में भी। वह जल्दी से जल्दी बेटी की जिम्मेदारियों से छुटकारा पा लेना चाहती थीं।

और यह उनकी खुशकिस्मती ही तो थी जबकि वह अपनी बेटी के रिश्ते के लिए परेशान थीं, एक बार विल्कुल उम्मीद के विपरीत राबिया उनके यहां फिर आ गई।

वह उसे इस तरह अचानक अपनी हवेली में देख कर खिल उठीं। उनके दिल को ढारस हुई कि अब कोई बात ज़रूर बन जाएगी। वह यह समझ गई थीं कि राबिया ज़रूर अपने भाई के रिश्ते के लिए आई है।

"अरे! आओ-आओ, बेटी।"

उन्होंने राबिया को पलकों पर उठाया और अपनी आँखों में जगह दी।

"कहो, खैर तो है? बगैर खबर किए रास्ता भूल गई थी।"

"नहीं चाची जान!" वह उनसे लिपटती हुई बोली—"रास्ता

ही तो हम नहीं भूले। तभी तो आए हैं। अब्बा जी भी बाहर मरदाने में बैठे हैं।"

"अच्छा-अच्छा। बड़ी खुशी हुई।"

उन्होंने मुगलानी को आवाज़ दी। उन्होंने मुगलानी बी से कहा—

"बाहर जाकर खादिम हुसैन से कहो कि ताल्लुकेदार साहिब तशरीफ लाए हैं। उनकी देख-भाल करे। और तुम फौरन शर्बत लेकर जाओ।"

और फिर उनके नयन भर आए—

"काश कि डिप्टी साहिब जिन्दा होते, बटी।" एक सर्द आह उनके होंठों से फिसल गई—"फिर वे खातिर-तवाजा करते अपने दोस्त की।"

"कोई बात नहीं चचीजान।" राबिया गड़बड़ा गई—"सब्र कीजिए। और फिर हम कहाँ कोई गैर हैं।"

और फिर कुछ देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद राबिया ने बात निकाली—

"अब्बा जी ने खास तौर पर आपके यहाँ आने के लिए मुझे मेरी ससुराल से बुलवाया है।"

"अच्छा।"

"हाँ, चची जान! यूं समझ लीजिए कि अब्बाजान जलील का रिश्ता माँगने आए हैं आपके दर पर।"

ज़ाकिरा कुछ सोचने लगी कि राबिया झट से बोल पड़ी—

"देखिए चची जान, मैं यह तै कर चुकी हूँ कि जलील की शादी रुखसाना से ही होगी। मेरा भाई बड़ा लायक और शरीफ है। अगर कुछ ऊँच-नीच हो तो आप मुझे चोटी से पकड़ लीजिएगा।" वह ज़ोर देकर बोली—"मैं हर तरह का जिम्मा लेती हूँ।"

ज़ाकिरा बीबी सोचने लगीं—इन्तजार तो मैं खुद भी इस रिश्ते का कर रही थी, लेकिन क्या पता कि जलील किस प्रकार का लड़का है। वे होते तो देख-भाल कर लेते। मैं बेचारी पर्दानशीन औरत! वह उलझ गई। मैं क्या कर सकती हूँ भला और अभी वह यह सब सोच रही थीं कि राबिया बोली—

"आप कोई तरद्दुद न कीजिए चचीजान। मेरे भाई का चाल

चलन आईने की तरह साफ है। बेहद नेक और प्यारा लड़का है जलील, हमारी जात-पात भी ऊँची है। रुखसाना बहिन, अल्लाह ने चाहा तो ज़िन्दगी भर सुख और चैन से रहेगी।"

ज़ाकिरा बीबी सोचने लगीं—काश! यह ताहिर ही किसी काम का होता। और जलील के बारे में पुच्छ-गिच्छ करके कोई राय दे सकता। बड़ा भाई है, वह शादी करता अपनी बहिन की! मुझे बता सकता जलील के बारे में।

वह यही सोच रही थीं कि राबिया फिर बोली—

"सोच क्या रही हैं आप—?"

"सोच यह रही हूँ कि मैं क्या फैसला कर दूं, बेटी!"

"मुझ पर यकीन कीजिए आप, चची जान। जलील मेरा भाई सैंकड़ों में से एक है और बाखुदा आपकी या रुखसाना बहिन की दुश्मन मैं हर्गिज नहीं हूँ।"

ज़ाकिरा बीबी ने दिल मज़बूत करके कह दिया—

"अच्छा! यह रिश्ता मुझे मंजूर है, बेटी।"

और यह कहते-कहते उनकी आवाज़ भर्रा गई। उनकी आँखों से आँसू टपकने लगे। राबिया ने उन्हें बे-अख्तयार होकर लिपटा लिया—

"ग़म न कीजिए, चची जान! लड़कियाँ होती ही हैं ब्याहे जाने के लिए और फिर उसे भी अब अपना ही घर समझिए। समझ लीजिए कि आपकी बेटी आप ही के घर में है। जलील को आप ताहिर भाई से कम न समझिए। वह बड़ा भला है। हमेशा आपका बेटा बनकर रहेगा।"

और फिर यह रिश्ता तै हो गया। राबिया बोली—

"मैं यह खुशखबरी अब्बा जी को सुना दूं।" और यह कहकर वह उठी। मुगलानी बी आगे-आगे दौड़ी—

"मैं मर्दाना बैठक में पर्दा करा देती हूँ। हो सकता है, वहाँ कोई और बैठा हो।"

मर्दाना बैठक से, जो नौकर थे, वे हटा दिए गए। राबिया अपने बाप के पास आ गई। वह आते ही बोली—

"मुबारक हो, अब्बाजान। चची बेगम ने रिश्ता मंजूर फरमा लिया है।"

और यह खुशखबरी सुनकर ताल्लुकेदार साहिब यकबारगी मख-मल के मोढे से उठकर खड़े हो गए। वह बहुत ज्यादा खुश दिखाई दे रहे थे। वे बेअख्तयार कह उठे—

"यह सब तुम्हारी कोशिशों का नतीजा है, बेटी! और यह हमारी मुहतरिमा भाभी साहिबा की मेहरबानी है। मेरी दिली आरज पूरी हो गई।"

वह बड़े रंज और अफसोस के साथ बोले—

"काश! इस खुशी के मौके पर हमारे दोस्त भाई अकरामअली साहिब जिन्दा होते? ब-खुदा, उन्हें भी इस रिश्ते से बहुत खुशी होती।'

"तो फिर मिठाई खिलवाइये, अब्बाजान।" राबिया ने अपने बाप से कहा।

"ज़रूर बेटी, ज़रूर।"

"मैं रतन नगर का सारा हिसा लूंगी नेग में।"

"रतन नगर में जो मेरा दो आने का हिस्सा है, वह सब का सब मैं तुम्हें नेग में दे दूंगा—बस न।"

"मैं चची बेगम से शादी की तारीख माँगूं?"

"बेशक, बेटी।"

और फिर वह भागी हुई अन्दर आई। आते ही वह ज़ाकिरा बेगम से बोली—

"शादी की तारीख तै कर दीजिए चचीजान।"

"अच्छा बेटी। शादी की तारीख भी तै हो जायगी। अब इतनी जल्दी भी क्या है। रिश्ता तो मैंने मान ही लिया है।" ज़ाकिरा बीबी उस समय बहुत उदास-सी हो रही थीं। रुंधे हुए गले के साथ कहने लगीं—"एक हफ्ते के बाद तारीख भी तै हो जायगी।"

"तो मैं मंगनी की अँगूठी रुखसाना बहिन की उँगली में डाल दूं?"

"अब ऐसी भी क्या भागड़ मची है, बेटी! डिप्टी साहिब माना कि नहीं हैं, फिर भी मैं जिन्दा हूँ अभी। रुखसाना का बड़ा भाई मौजूद है। इस सादगी से तो डिप्टी साहिब नज़ला-जुकाम दूर हो जाने पर भी खुशी नहीं मनाया करते थे। तुम तो जानती हो, बेटी, मैं उनकी रूह को शर्मिन्दा नहीं होने दूंगी। मंगनी की रस्म जरूर अदा होगी। लेकिन डिप्टी साहिब की शान के मुताबिक!"

Srinagar

'तो फिर क्या—" राबिया ने पूछा—"कब मंगनी की रस्म आप अदा करेंगी, चची जान ?"

ज़ाकिरा बीबी उँगलियों पर हिसाब लगा कर बोलीं—

"आज रज्जब की चार। बारह रज्जब की सुबह, उस दिन मंगनी की रस्म से हम मुक्त हो जायंगे।"

"बहुत अच्छा, चचीजान। बहुत खूब !" राबिया खुश होकर बोली—"मैं अभी जाकर अब्बाजान से कहे देती हूँ।"

और यह कहकर वह फिर मर्दाना बैठक की तरफ लपकी। मुगलानी बी पर्दा कराने के लिए आगे-आगे दौड़ी। वह पर्दा कराने के लिए अपना गरारा और दुपट्टा सम्हालती हुई राबिया के आगे-आगे भागी जा रही थी।

"गफ़ूरुल रहीम !" ज़ाकिरा बीबी के लबों से एक सर्द आह के साथ यह नाम बाहर आया—"सब-कुछ ठीक ही हो, मेरे अल्लाह ! मैं बेवा हूँ। मेरी बच्ची रुखसाना यतीम है। और यह उसके भविष्य का सवाल है। खुदा करे, सब ठीक ही हो, मेरे मौला !" वह बड़ी उदास थी।

"मैं नातजुर्बाकार हूँ। मुझे कुछ नहीं मालूम। और अपना बेटा, हालांकि जवान है, लेकिन बेफ़िक्र और नालायक है बिल्कुल। उसे बहिन क्या, किसी से भी कोई दिलचस्पी या लगाव नहीं है।"

इतने में राबिया अपने बाप के पास से वापिस आ गई। आते ही वह बोली—

"अब्बाजान कहते हैं कि ठीक है, चचीजान। उन्हें आपकी हर तजवीज़ से पूरा-पूरा इत्तफ़ाक है।

"अच्छा बेटी !"

ज़ाकिरा बीबी ने 'अच्छा बेटी' कुछ इस तरह कहा, जैसे कि उनके हलक में कोई चीज़ फँस गई हो। वह अभी तक गुम-सुम दशा में थीं। उस वक्त उसे डिप्टी साहिब बड़ी बुरी तरह याद आ रहे थे। वह अपने आपको इन्तहाई बेबस और हकीर महसूस कर रही थीं। उसे ऐसा महसूस हो रहा था, जैसा कि वह इन्तहाई लाचार हो, लावारिस हो और बे-आसरा हो।

उसके दिल से धुआं उठ रहा था कि राबिया ने सकूत को तोड़ते

हुए कहा—

"तो फिर इजाजत है, चचीजान !"

और वह यकबारगी जसे ख्वाब से बेदार हो गईं। गड़बड़ाते हुए बोलीं—

"अब ऐसी जल्दी भी क्या है, बेटी ! हम तो तुम लोगों की कोई खातिर-तवाज़ा भी नहीं कर सके। अभी ठहरो !"

"लेकिन !"

"नही बेटी !"

उन्होंने मुगलानी बी को हुक्म दिया—

"ताल्लुकेदार साहिब के लिए नाश्ता लेकर जाओ !"

और वह जल्दी-जल्दी खुद भी भाग-दौड़ करने लगीं।

ज़ाकिरा बेगम ताहिर का इन्तज़ार कर रही थीं। वह अपने दोस्तों के साथ दो दिन से शिकार पर गया हुआ था। जब वह दूसरे ही दिन वापिस आ गया तो ज़ाकिरा बेगम ने उससे बात की—

"तुम्हें अपनी अफ़रोज़ खाला याद हैं, ताहिर !"

"क्यूं, क्या बात है, अम्मी ?" वह बोला—"याद क्यों नहीं हैं, अफ़रोज़ खाला।"

"मैं उनकी बेटी अनवरी से तुम्हारा रिश्ता करने की बात सोच रही हूँ।"

"अरे वाह !" वह यकबारगी खुश हो गया—"तो हमारी अम्मी को इस खाकसार का खयाल आ ही गया। गोया कि मज़ार-मुबारक पर हमारी माँगी हुई दुआ कबूल हो गई।"

उसने अपनी माँ को लिपटा लिया—

"उनकी साहिबज़ादी अनवरी पर तो यों समझो कि मैं—"

ज़ाकिरा बेगम ने बड़ी तर्शरूई से उसकी बात काट दी। वह उसका जुमला समझकर उसे पूरा होने देना नहीं चाहती थीं।

"बहुत ज्यादा बक-बक मत करो, ताहिर !" वह जैसे कि खुद झेंप गई हों। चन्द लम्हे रुककर बोलीं—

"तो मैं कल ही इलाहाबाद जा रही हूँ। अफ़रोज से रिश्ता पक्का करके आऊँगी। अनवरी, उनकी बेटी मुझे भी पसन्द है।" उन्होंने ताहिर को बताया—

"इस महीने की बारह तारीख को रुखसाना की मँगनी है, ताल्लुकेदार साहिब के बेटे जलील के साथ। मैंने हाँ कर ली है।"

"यह तो और भी अच्छा हुआ। बहुत अच्छा किया आपने जो रिश्ता तै कर दिया। जलील बड़ा शरीफ और नेक लड़का है। खूबसूरत भी बहुत है और फिर ताल्लुकेदार साहिब का इकलौता बेटा भी है— बिल्कुल मेरी तरह।"

और यह सुनते ही ज़ाकिरा बीबी के सीने से जैसे कि एक बहुत बड़ा पत्थर हट गया हो। जैसे कि शदीद गर्मी और घुटन के बाद खुशगवार हवा के झोंके चल पड़े हों यकबारगी। जैसे कि डूबते को यकदम से किनारा मिल गया हो। यकबारगी खुश होकर बोलीं—

"तो सचमुच ठीक किया मैंने यह। जलील अच्छा लड़का है न, ताहिर ! तुम्हें भी पसन्द है वह। नेक, शरीफ और पाकबाज़ है न जलील !"

"हाँ-हाँ अम्मी ! खुदा की कसम, वह लाखों में एक है। मैं तो खुद भी रुखसाना के लिए कभी-कभी जलील के बारे में सोचा करता था।" और फिर वह यकबारगी बोला—"लेकिन यह बात हुई कैसे ? जलील का रिश्ता रुखसाना के लिए यह अचानक आ कैसे गया ?"

"तुम्हारे अब्बाज़ान की ज़िन्दगी में ही यह बात उन्हीं लोगों की तरफ से एक दफा उठी थी। तुम्हारे अब्बाजान को भी जलील पसन्द आया था। वह रुखसाना की कामयाबी के सिलसिले वाले ज़शन में आया था न, डिप्टी साहिब ने उसे देखा था और पसन्द कर लिया था और फिर वह उसी तरफ से आए हुए पयाम पर खुश भी बहुत हुए थे।"

ताहिर ने पूछा—"तो फिर उसी समय अब्बाजी के सामने यह

रिश्ता तै नहीं हुआ था क्या ?"

"नहीं ।" ज़ाकिरा बीबी ने बताया—"तुम्हारे अब्बाजान मरहूम ने कहा था कि मैं लड़के के चाल-चलन के बारे में ज़रा मालूम करलूं, आप इस तरह बात कीजिए कि एकदम से न इंकारी हो और न इकरार ।"

वह एक सर्द आह भरकर बोलीं—

"और फिर उसके बाद वह मुझ गम, नसीब को अकेली छोड़कर अल्लाह के प्यारे हो गए ।"

"वाकई !" ताहिर ने न जाने दिल से या सचमुच अफ़सोस जाहिर करते हुए कहा—"बेचारे अब्बाजी हम लोगों की कोई भी खुशी देखने के लिए जिन्दा न रहे । कितने बदनसीब हैं हम लोग !"

और फिर फ़ौरन पूछने लगा—

"लेकिन यह रिश्ते की बात लेकर आया कौन था ?"

"खुद ताल्लुकेदार और उनकी बेटी राबिया ।"

"आपने बहुत अच्छा कियाअम्मीजान, कि हाँ कर ली । मेरी बहिन रुखसाना बहुत खुश रहेगी वहां । जलील बहुत अच्छा लड़का है ।"

"तुमने जलील की अच्छाई की तसदीक करके मेरे दिल पर से बहुत बड़ा बोझ हटा दिया । सच मानो ताहिर, मैं बहुत बेचैन थी कि न जाने यह अच्छा हुआ कि बुरा । खुदा न करे, कल के दिन कोई ऊँच-नीच हो तो—?"

"नहीं अम्मी जान ! जलील बड़ा अच्छा है । आपने बड़ा अच्छा किया कि रिश्ता रद्द नहीं किया । वरना फिर हम रुखसाना के लिए जाने कहाँ-कहाँ नजरें दौड़ाते फिरते ! रिश्ते के लिए मुहताज बैठा रहना भी कष्टकारक होता है न ।"

"यही तो मुसीबत होती है, बेटे ! लड़की वालों के लिए कि मुँह में घुंघनिया डाल कर बैठे रहो । खुद से ज़बान खोली नहीं जा सकती । पयाम खुद से आए तो ठीक, वरना पसन्द होते-होते भी पहल न कर सको ।"

वह उलझ कर बोली—

"हम मुसलमानों के यहाँ का यह दस्तूर कभी-कभी तो मुझे बहुत खलने लगता है । हमारे यहाँ दोतरफा तलाश ही नहीं हो सकती ।"

"हाँ, यह तो है, अम्मी जान !" ताहिर ने कहा और फिर उसने बड़ी बेताबी से सवाल किया—

"तो आप इलाहाबाद कब जायँगी, अम्मी ?"

"कल ही। सोच रही हूँ कि वहाँ भी जाकर बात पक्की कर आऊँ। तो तुम दोनों के फर्ज़ से एक साथ ही मुझे छुट्टी मिल जाय।"

"मैं भी आपके साथ चलूँ, अम्मी जान ?"

"मैं तो अपने साथ एक नौकर और मुगलानी बी को ले जाना चाहती थी, लेकिन तुम चलो तो और भी अच्छा है। इसलिए कि हम वहाँ से शादी के लिए कुछ सामान-वामान भी खरीद लेंगे। आखिर को दुहरी-दुहरी शादियाँ हैं।"

"हाँ अम्मी जान ! ठीक ही रहेगा !"

और फिर दूसरे ही दिन ज़ाकिरा बीबी ताहिर, एक मुलाज़िम और मुगलानी बी के साथ इलाहाबाद के लिए रवाना हो गईं। चलते-चलते भी उन्होंने हवेली के मुलाज़िमों और नौकरानियों को बहुत-सी हिदायतें दी थीं।

और अपनी बेटी रुखसाना से उन्होंने कहा था—

"देखो बेटी, मैं आज ही रात तक वापिस आ जाऊँगी। या फिर हो सकता है कि मैं कल शाम तक इलाहाबाद से लौटूं। तो हवेली के अन्दर किसी भी ऐसी-वैसी औरत को न आने देना। मर्दाने की तरफ भूल कर भी न जाना। और हवेली की छत-वत पर भी न निकलना। बहुत एहतियात से रहना, बेटी। लड़की जात हो। ज़माना बहुत बुरा है। और अब तुम अल्लाह रक्खे, जवान हो। अल्लाह न करे, कोई ऊँच-नीच हो जाय। मारने वाले का हाथ तो पकड़ा जा सकता है, कहने वाले की ज़बान कोई नहीं रोक सकता। तुम एक बहुत ही ऊँचे और शरीफ खानदान की बेटी हो।"

और फिर उस वक्त, जबकि वह अपनी फ़िटन पर सवार होकर जा रही थीं, एक बार और वापिस आकर उन्होने रुखसाना से पूछा था—

"तुम मेरी बातें समझ गई हो न, बेटी ?"

और रुखसाना ने आहिस्ता से कहा था—

"जी हाँ, अम्मी !"

फ़िटन के तेज़ रफ्तार घोड़ों ने अहमदपुर से इलाहाबाद का

सफर कोई डेढ़ घण्टे में बड़े आराम से तै कर लिया । अहमदपुर इलाहाबाद से बीस मील उत्तर-पूरब को था ।

फ़िटन जब अफ़रोज़ बेगम के घर के दरवाजे पर जाकर रुकी तो दो-एक बच्चे बाहर आकर देखने लगे । जब अन्दर यह इत्तिला भिजवाई गई कि अहमदपुर से सवारियाँ आई हैं तो अफ़रोज़ बेगम का ख़ुशी के मारे बुरा हाल हो गया । वह भागती हुई दरवाज़े तक आ गई ।

इधर से ज़ाकिरा बेगम बुर्का सम्हालती हुई फ़िटन से उतरीं और देहलीज़ में वे दोनों एक दूसरे से इस तरह गले मिलीं कि गिरते-गिरते बचीं । मुगलानी बी ने दोनों को सम्हाला ।

फौरन से पेश्तर बाहर वाला कमरा खुलवा दिया गया । ताहिर और उनका मुलाज़िम हनीफ अन्दर आ गए । ताहिर रखे हुए मोढ़े पर बैठ गया और हनीफ़ ताहिर के पाँव दबाने लगा । वह उसी जगह फ़र्श पर उकड़ूँ बैठ गया था ।

हनीफ़ आका के पाँव क्यों न दबाता । आखिर को वह गुलाम था बेचारा और ताहिर उसका आका था । हालाँकि ताहिर न तो साईकल पर सवार होकर आया था और न घोड़े पर और न वह पैदल चलकर आया था कि थक गया होता । लेकिन यह सरमायेदाराना और जागीरदाराना निजाम की देन थी । ये असूल थे बुर्जुआ समाज के । एक कम दर्जा के गरीब आदमी के लिए इससे छुटकारा कैसे मुमकिन था ।

लिहाज़ा हनीफ़ ताहिर के पाँव दबाता रहा और वह उस तरह बग़ैर किसी अहसास के उससे पाँव दबवाता रहा । थोड़ी-सी देर में अन्दर से एक मुलाजिमा साबुन और तौलिया और ताम्बे के बड़े से लोटे में हाथ-मुँह धोने के लिए पानी लेकर आ गई ।

ताहिर कमरे के अन्दर ही कोने में रखी हुई चौकी पर उकड़ूँ बैठ कर मुंह धोने लगा । वह मुलाज़िमा ताहिर के हाथ पर पानी लोटे से डालती रही और हनीफ़ अपने दोनों हाथों में तश्त लिए झुका खड़ा रहा ।

थोड़ी ही-सी देर में अन्दर से सैनी में नाश्ता लग कर आ गया । वही मुलाज़िमा नाश्ता लेकर हाज़िर हुई थी । तख्त पर दस्तरख्वान बिछा दिया गया । हनीफ़ पंखा लेकर खड़ा हो गया । मुलाज़िमा ने सैनी से चीज़ें उठा-उठा कर दस्तरख्वान पर सजा दीं । उसने आहिस्ता

से कहा—

"बेगम साहिबा ने फरमाया है, आप नाश्ता कर लीजिए। अनवरी के अब्बा जी कचहरी चले गए हैं। उन्हें नौकर भेजकर इत्तिला करा दी जायगी। वकील साहब से छुट्टी लेकर वह आ जायँगे।"

"अच्छा।"

ताहिर ने कहा और वह तख्त पर बैठकर नाश्ता करने लगा। हनीफ़ गर्मी और मक्खियों के न होने के बावजूद पंखा झलता रहा। नाश्ते में जलेबी, अण्डे का फागीना, हलुवा और बाजार के पराण्ठे थे।

नाश्ते के बाद मुलाज़िमा ने ताहिर से आकर कहा—

"हुजूर को अन्दर बुला रही हैं।"

उसने हनीफ की तरफ़ एक छोटी-सी सैनी बढ़ाई—

"यह तुम्हारा नाश्ता है।"

सैनी में बासी रोटियाँ थीं, बासी दाल थी और चटनी थी। हनीफ़ सैनी लेकर नाश्ता करने लगा।

ताहिर मुलाज़िमा के साथ अन्दर जा चुका था।

"तसलीम खाला जान!"

"जीते रहो मियाँ, जुग-जुग जियो, सलामत रहो।" खाला की तरफ से उसे दुआएँ मिलीं! वह बोलीं—

"माफ करना मियाँ, तुम्हें फौरन अन्दर इसलिए नहीं बुलाया गया कि कुछ पर्दानशीन औरतें आ गई थीं।"

और फिर उन्होंने मुलाज़िमा से पूछा—

"नौकर को नाश्ता दे आई?"

"जी!"

"और कोचवान को भी?"

"नहीं तो बेगम साहिबा।"

"पागल है क्या!" वह गर्जी "क्या वह आदमी नहीं है बेचारा?"

"अभी देकर आती हूँ, बेगम साहिबा!"

"जल्दी ले जा नाश्ता।"

वह फिर ताहिर की तरफ मुखातिब हुईं—

"अरे! तुम खड़े क्यों हो, मियाँ! बैठो-बैठो।"

और ताहिर, जोकि अभी तक खड़ा था, उसी जगह पलंग पर बैठ

गया। अफ़रोज़ बेगम चीखीं—

"अरे बाहर से मोढ़ा लाने को कहा था !"

"तो क्या हुआ !" ताहिर बोला—"पलंग क्या बुरा है ? बैठ गया हूँ, खाला जान !"

"तुम अफ़रोज़, ताहिर को क्या ग़ैर समझती हो ! आखिर तकल्लुफ की क्या ज़रूरत है ? बैठ तो गया है।"

"नहीं-नहीं।" अफ़रोज़ बेगम बोलीं—"फिर भी—"

ज़ाकिरा बेगम की बात का जवाब देते हुए ताहिर से बोलीं—

"माफ करना मियाँ, हम तुम्हारे जैसे बड़े आदमी तो हैं नहीं। और फिर कहाँ तुम्हारी हवेली और कहाँ यह निगोड़ा किराए का मकान।" उन्होंने हल्केपन में कहा।

"और फिर तुम लोगों के आने की इत्तिला भी तो हमें नहीं थी। हालाँकि अल्लाह जानता है कि इस तरह अचानक आ जाने से हमें कितनी खुशी हुई है। यह हमारा दिल ही जानता है।"

"कैसी बातें करती हो, अफ़रोज़ !" ज़ाकिरा बीबी ने कहा—"अपनों में भी कोई तकल्लुफ करता है। और फिर यह अमीर-गरीब, छोटा-बड़ा, और हवेली की बातें···। कहीं तुम पागल तो नहीं हो गई हो।"

"अगर हम लोग आपको ग़ैर समझते तो बग़ैर इत्तिला आ ही क्यों जाते।"

ताहिर ने कहा। इतने में मुलाज़िमा सरकण्डे का मोढ़ा ले आई। ताहिर को इसरार करके उस पर बिठा दिया गया। अफ़रोज़ बेगम बोलीं —

"तुम्हारे खालूजान अब आते ही होंगे, मियाँ। नौकर को मैंने भिजवा दिया है।"

"कोई बात नहीं खालाजान !" ताहिर बोला—"तकल्लुफ तो कोई है नहीं।"

वह बातें तो अपनी ख़ाला से कर रहा था, लेकिन उसकी बेताब नज़रें बार-बार इधर-उधर उठकर चोरी-चोरी किसी और की तलाश कर रही थीं। उसका दिल अनवरी को देखने के लिए बेताब था।

और अनवरी उसे कहीं नज़र नहीं आ रही थी। और वह उसे

नज़र भी कैसी आ सकती थी। अब कोई पहले जैसी बात तो रही न थी। पहले वे खालाज़ाद बहिन-भाई ज़रूर थे, लेकिन अब उनका रिश्ता दूसरा हो रहा था। अनवरी की माँ ने ताहिर से उसका पर्दा करा दिया था। उनके रिश्ते की बात बहुत पहले से ही तो चल रही थी।

ताहिर थोड़ी देर तक अपनी खालाजान से इधर-उधर की बात करता रहा। और फिर उसके खालू साहिबा आ गए। रस्मी बातचीत के बाद उठकर वह उनके साथ बाहर आ गया।

और जब ताहिर बाहर के कमरे में चला गया, तो ज़ाकिरा बीबी ने अफ़रोज़ से बातचीत शुरू की। वह बोलीं—

"मैं क्यों आई हूँ यहाँ, तुम जानती हो, अफ़रोज़ ?"

"कोई खास बात है, आपा !"

"हाँ।"

"फरमाइये।"

"तुमने एक दफा मुझसे अनवरी के बारे में बात की थी न।"

अफ़रोज़ का चेहरा खिल गया। उसकी आँखें चमकने लगीं। वह बड़ी बेताबी से बोली—

"एक दफा तो क्या आपा, यह बात तो मैं आपसे कई दफा कह चुकी हूँ। ताहिर मियाँ मुझे बहुत पसन्द हैं। मैं तो अपनी बेटी के कई पयाम रद्द कर चुकी हूँ। महज़ इस खयालसे कि—"

"मैं आज इसलिए आई हूँ"—ज़ाकिरा बीबी ने उनकी बात काटी। वह झट से बोल उठी—

"इसलिए तो नहीं कि अनवरी के पयाम रद्द न करूँ ?"

"पागल हो गई हो क्या ?" ज़ाकिरा बीबी बड़े प्यार से बोलीं—"मैं अपना वायदा और तुम्हारा अरमान पूरा करने आई हूँ।"

"क्या ?" खुशी की इन्तिहा से अफ़रोज़ बेगम का हार्ट फेल होते-होते बचा—"सच !"

"हाँ, अफ़रोज़ !" ज़ाकिरा बीबी ने कहा।

"अब मैं ताहिर का ब्याह जल्द कर देना चाहती हूँ।"

"मुबारक हो, आपा !" अफ़रोज़ अपनी खुशी को समेटते हुए बोली—"मेरी तरफ से तो पहले भी इसरार था और अब भी इकरार है। बल्कि यह तो मेरा सबसे बड़ा अरमान है, जो आप पूरा कररही

हैं ।"

"तो फिर यह रिश्ता तुम पक्का ही समझो, अफ़रोज़ । मैं इसीलिए आई हूँ । तुम शादी की तैयारियाँ शुरू कर दो । मैं अपनी बेटी अनवरी को अगले ही महीने ब्याह कर ले जाना जाहती हूँ ।"

"आपने मेरे दिल की सबसे बड़ी आरज़ू पूरी की है, आपा । मेरी बेटी अनवरी अपनी सारी ज़िन्दगी आपकी लौंडी बनकर रहेगी। कभी वह न अपनी आँख उठाएगी आपके सामने और न कभी अपनी जबान ही खोलेगी ।"

"मुझे मालूम है बहिन । और तभी मैं उसे अपनी बहू बनाने आई हूँ ।" ज़ाकिरा बीबी ने कहा—"मुझे इससे इन्हीं बातों की उम्मीद है ।"

और फिर उसी वक्त ज़ाकिरा बीबी ने अनवरी की उँगली में मंगनी की अंगूठी पहना दी । मंगनी की मिठाई, जो कि वह साथ लेकर आई थीं, पूरे मुहल्ले में बाँट दी गई ।

और फिर वह दुहरी-दुहरी शादियों की खरीदो-फरोखत के लिए अपने बेटे को साथ लेकर और अपनी फिटन पर बैठकर रवाना हो गईं । चलते वक्त अफरोज़ ने कहा था—

"आपा ! दोपहर का खाना यहीं खाएँगी आप । मैं इन्तज़ाम करके रखूँगी ।"

"नहीं भई !" ज़ाकिरा बीबी ने कहा था—"खाना-वाना है अपने पास । और फिर खरीदो-फरोखत में न जाने कितना वक्त लगे । तुम खाने-वाने की कोई फिक्र न करो । शाम से पहले ही मैं अहमदपुर लौट जाना चाहती हूँ । वहाँ मेरी बेटी रुखसाना अकेली है ।"

"लेकिन···"

"नहीं बीबी, तुम यह सब छोड़ो ।"

"फिर शादी की तारीख ?"

"वह फिर तै हो जायगी ।"

"वह कब तक ?"

"मैं अहमदपुर जाकर तै करूँगी । तुम्हें इसकी इत्तला भिजवा दी जायगी ।"

"अच्छा ।" अफ़रोज़ ने कहा—"क्यों न मैं एक दिन के लिए

अहमदपुर खुद आ जाऊँ ?"

"ज़रूर आइये, ज़रूर। तुम्हारा घर है।"

"कब तक आ जाऊँ ?"

"जब चाहो।"

फिर भी ?"

"अरे हाँ। एक हफ्ते बाद रुखसाना की मँगनी भी तो है," जाकिरा बीबी सोचकर बोलीं—"तुम्हें इत्तिला करवा दूँगी, आ जाना।"

"लेकिन मँगनी की धूमधाम में···।"

वह बात काटकर बोलीं—

"तुम कोई मँगनी में ही तो शिरकत के लिए आओगी नहीं। एक दिन रुक जाना। तारीख-वारीख सब तै हो जायगी। फिर वापिस आ जाना।"

"अच्छा।"

और फिर शादी का बहुत-सा सामान खरीदकर कोई शाम के पाँच बजे के करीब अहमदपुर के लिए इलाहाबाद से रवाना हो गईं।

चार

रुखसाना की मँगनी की रस्म अदा हो चुकी थी।

उसकी और उसके भाई ताहिर की शादी की तारीखें भी मुकर्रर हो चुकी थीं। बकरीद की पहली तारीख ताहिर की शादी की थी और फिर उसके पाँच दिन बाद, यानि छः बकरीद को रुखसाना की शादी की तारीख थी। और यह इसलिए था कि रुखसाना अपने भाई की ख़ुशियों में शरीक हो सके। अपनी नई-नवेली भाभी को इस घर में देख सके। और फिर उसके बाद वह अपने नए घर और अपनी नई ज़िन्दगी की बहारों में खो जाय।

ताहिर की शादी में अभी पन्द्रह दिन बाकी थे कि एक दिन वह अपनी माँ से बोला—

"अम्मी, एक बात कहूँ, अगर आप बुरा न मानें और इसके कोई और मतलब न लें तो।"

"कहो बेटे! क्या बात है? मैं भला तुम्हारी बातों का कोई मतलब क्यों लेने लगी? भला माँ भी कभी अपने बेटों की बातों का कोई और मतलब लेती है, जो मैं लूँगी? जो कुछ तुम्हें कहना है, शौक से कहो।"

"वह बात दरअसल यह है कि अब जागीर के कामों में मुझे बड़ी दुशवारी होने लगी है। आजकल के काश्तकार बड़े सरकश हो गए हैं। जो खेत जिस काश्तकार के पास है, वह किसी-न-किसी बहाने से उस पर कब्जा जमाना चाहता है। कोई लगान नहीं पहुँचाता तो कोई आमों और अमरूदों के बागों पर कब्ज़ा कर लेना चाहता है। मैं बड़ी

मुसीबत में फँसकर रह गया हूँ, अम्मी।"

"फिर !" ज़ाकिरा बीबी ने चिन्ता प्रगट की—"इसका हल क्या है ?"

"यही कि ऐसे तमाम बदमाशों से मुकद्दमाबाज़ी की जाय।"

"तो मुकद्दमा करो तुम। तुम्हें रोक किस बात की है ?"

"सबसे बड़ी रोक यह है अम्मी कि जागीर आप के नाम है और आप इन बदमाशों के लिए अदालत-कचहरी तो करने से रहीं। मैं कोई कदम कैसे उठा सकता हूँ।"

"तो तुम अपने बाप के बेटे नहीं हो क्या ? दुनिया जानती है कि डिप्टी साहिब के बेटे तुम हो और बाप के बाद जायदाद का वारिस बेटा होता है।"

"लेकिन जब तक माँ ज़िन्दा हो, बेटा कुछ नहीं कर सकता।" ताहिर ने बताया।—"शौहर के बाद बीवी ही—"

ज़ाकिरा बीबी बात काट कर बोलीं—

"तो मैं सब कुछ तुम्हारे नाम किए देती हूँ।" वह बड़े प्यार और फराख-दिली के साथ बोलीं—"आखिर को तुम ही तो मालिक हो। फिर मेरा क्या ? मैं आज मरी और कल दूसरा दिन। मुझे तो तुम दो रोटी दे देना और बस, एक कोने-खुतरे में पड़ी अल्लाह-अल्लाह करती रहूँगी।"

"आप कैसी बातें करती हैं, अम्मीजान !" ताहिर अपनी माँ की गोद में लोट गया—"आपके दुश्मन पड़े रहें कोने खुतरे में। आप तो हमेशा, खुदा ने चाहा तो हम लोगों के दिलों और दिमागों पर राज करेंगी राज ! खुदा करे, आपका साया ताकयामत हमारे सर पर कायम रहे।"

ताहिर को यह उम्मीद नहीं थी कि उसकी माँ इतनी आसानी के साथ सारी जागीर उसके नाम करने पर तैयार हो जायँगी। लिहाजा वह खुशी के जामे में फूला नहीं समा रहा था। बोला—

"जागीर मेरे नाम हो गई तो मैं इन सब सरकशों को, जोकि जागीर के मालिक बन जाना चाहते हैं, एक मिनट में ठीक कर दूँगा। अभी तो ये सब यह समझ रहे हैं न कि जागीर मेरे नाम नहीं है। मैं उनका क्या कर सकता हूँ।"

"लेकिन इस पर भी तो तुम ही सब-कुछ हो। तुम उन लोगों के खिलाफ कोई कार्यवाही क्यों नहीं कर सकते हो, बेटे ?"

"तुम नहीं समझतीं माँ मेरी" वह बड़े लाड़ के साथ बोला—"अब कायदा कानून बदल गया है।"

"तो फिर मैं सब-कुछ तुम्हारे नाम किए देती हूँ।"

"हाँ अम्मीजान। यह सब-कुछ फौरन ही मेरे नाम कर दीजिए। मैं सबको ठीक कर दूँ। नहीं तो जागीर में बड़ी गड़बड़ मच जायगी।"

"लेकिन इस जागीर में एक तिहाई तुम्हारी बहिन का भी तो है, बेटे।"

"वह मैं कहाँ हड़प किए जा रहा हूँ, अम्मी। मैं रुखसाना का हिस्सा अलग कर दूँगा। तुम उसका यह हिस्सा उसके दहेज में दे देना।"

"हाँ-हाँ, बेटे।" ज़ाकिरा बीबी को जैसे याद आ गया—"यह भी तो करना है मुझे। यह ठीक है। उसकी जायदाद मैं उसके दहेज में दे दूँगी।"

"तो फिर सारा मामला जल्द से जल्द तै हो जाना चाहिए, अम्मीजान ! रुखसाना की शादी में अब देर ही कितनी है।"

और फिर इन पन्द्रह दिन में ही सारी कार्यवाही पूरी हो गई। ज़ाकिरा बीबी ने कुल जागीर अपने बेटे ताहिर के नाम कर दी। वह अपनी चाल में कामयाब होकर मुतमयीन हो गया।

अब यह जागीर उसके नाम थी। वही इसका स्याह और सफेद मालिक था। उसने बड़ी होशियारी से अपनी माँ का नाम कानूनी तौर पर इस जागीर से कटवा दिया था। ज़ाकिरा बीबी का अब इस जागीर से कोई वास्ता नहीं रह गया था। वह अब मुकम्मल तौर पर उनके बेटे के कब्ज़ा-कुदरत में चली गई थी।

अनवरी ब्याह कर उस हवेली में आ गई थी वह दुल्हिन बन कर डोले से उतरी, तो ज़ाकिरा बीबी की खुशी का कोई ठिकाना न था। ज़ाकिरा बीबी ने मुँह दिखाई में अपनी बहू को सारे जेवरात दे दिये।

"यह लो बेटी !" उन्होंने अपने सारे जेवरात का पिटारा बहू के सामने खोल कर रख दिया—"यह मेरी तरफ से तुम्हारी मुँह दिखाई है।"

Accession Number...
Class No........

बहू ने सलाम करके वह सारे ज़ेवरात ले लिए और ज़ाकिरा बेगम को ऐसा महसूस हुआ, जैसे कि उनके सिर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो।

और फिर पाँच दिन के बाद उनकी लाडली बेटी रुखसाना की रुखसती का वक्त भी आ गया। जिस वक्त उनकी बेटी रुखसाना अपनी हवेली से विदा होकर अपनी ससुराल जा रही थी, तो उनका कलेजा फटा जा रहा था।

उन्होंने अपनी बेटी को अपने कलेजे से लगाकर हिचकियों के दरम्यान कहा—

"बेटी ! अब तुम अपने घर जा रही हो। जो तुम्हारा सही मायनों में अपना घर है, बेटी। उसी घर को तुम अपना घर समझना बेटी। इस बात का हमेशा ख्याल रखना कि शौहर की रज़ाजोई और उसकी खुशी ही तुम्हारी खुशियों का मदार है। शौहर की खुशी में ही तुम्हारा ईमान होना चाहिए बेटी। आज से हम तुम्हारे लिए अपने होते हुए भी गैर हैं बेटी। और वे जोकि अब तक तुम्हारे लिए गैर थे तुम्हारे अपने हैं। इसी में जन्नत है तुम्हारी और यही वह जज्बा है, जो तुम्हारी आखरत को सुधारने वाला है। ससुर की सेवा तुम्हारा फर्ज़ है और वही तुम्हारा बाप है। यह याद रखना बेटी कि शरीफ लड़कियाँ जिस घर में दुल्हिन बन कर जाती हैं, वहाँ से फिर उनका जनाज़ा ही निकलता है। वे कभी किसी हाल में भी वहाँ से बाहर कदम नहीं निकालतीं। हमेशा मीठी ज़बान से पेश आना और ससुराल वालों की कड़वी बातों को भी अमृत के घूंट समझ कर पी जाना बेटी, इसी में तुम्हारी बेहतरी और तुम्हारी इज़्ज़त है। शौहर या ससुराल वालों से लड़-झगड़ कर या रूठ कर इस घर में कभी न आना और न इस घर के दरवाजे तुम्हारे लिए कभी खुलेंगे ही, बेटी। यह बात तुम खूब अच्छी तरह से ज़हन-नशीन कर लो।"

वह फूट-फूटकर रोने लगीं। उनकी आवाज़ उनके गले में रुँध कर रह गई। वह बेटी की जुदाई पर पछाड़ें खाने लगीं। लेकिन जल्दी ही उन्होंने खुद पर काबू पा लिया। और बेटी को फिर समझाने लगीं—

"तुम एक बड़े बाप की बेटी हो, तुम्हारा बाप अपने वक्त का

 [redacted]

बहुत बड़ा आदमी था। लेकिन अपने बड़े बाप की बड़ाई में इतरा कर अपने ससुराल वालों को छोटा कभी न समझना। मैंने तुम्हें दिल खोल कर दहेज दिया है। ऐसा दहेज जो बहुत कम लड़कियों को मिलता है बेटी। लेकिन अपने इस दहेज पर गरूर कभी न करना और न इसे अपनी मलकियत समझना। तुम से ज्यादा इस पर तुम्हारे शौहर का हक है। तुम यही समझना, बेटी। और अपने दहेज की बड़ाई का ख्याल भी कभी तुम अपने मन में न लाना। तुम्हारा सब-कुछ तुम्हारे शौहर का है। तुम्हारी जान तक उसकी है और तुम्हारा माल उसके कदमों की खाक के बराबर भी नहीं है।"

वह अपनी बेटी को भींच कर बोलीं—

"कभी तुम अपने शौहर के खिलाफ सोचना भी नहीं। अपने शौहर के सिवा किसी गैर मर्द का खयाल भी अपने दिल में न लाना। कभी किसी दूसरे मर्द की तारीफ अपने शौहर के सामने इस अन्दाज में न करना कि उसे अपनी सुबकी मालूम हो। चाहे वह शरीफ, मुस्तहक शख्स तुम्हारा भाई ही क्यों न हो। चाहे तुम्हारा देवर हो या कोई और हो। और बेटी अपना ईमान कभी न छोड़ना। इस्लाम का हर फर्ज़ पूरा करना और कुरान पाक को हमेशा अपने दरम्यान समझना। इसमें तुम्हारी और हम दुनियाँ के सारे मुसलमानों की नजात है, बेटी। कुरान पाक का फरमान है। फरमान ही हमारा सबसे बड़ा नसब उलऐन है।"

उन्होंने अपनी बेटी को एक दफा फिर लिपटाया। उन्होंने उसकी पेशानी एक बार फिर चूमी और अपने हाथों से उसे डोले में सवार करा दिया।

और फिर वह हिचकियों के दरम्यान अपने समधी, ताल्लुकेदार साहिब से आँखें चार न करते हुए बोलीं—

"यह मेरी उमर भर की कमाई है भाई साहिब। यह नादान बच्ची है मेरी। बे-बाप की बच्ची है गरीब। अगर इससे कोई गलती हो भी जाय तो दरगुजरफरमा दीजिएगा। माफ कर दीजिएगा इसे। आपका हम पर अहसान होगा भाई साहिब! और मैं यह आपका अहसान मर कर भी न भूलूंगी।"

और उस पर ताल्लुकेदार साहिब ने, रुखसाना के ससुर साहिब ने

Library Sri Pratap College Srinagar

गद्गद् स्वरों में कहा—

"आप अपना दिल न छोटा कीजिए बहिन ! रुखसाना आपकी ही नहीं बल्कि मेरी भी बेटी है । मैं उसको अपनी पुतलियों में जगह दूंगा । हम उसे अपने सर का ताज बना लेंगे ।"

और फिर रुखसाना अपने मां-बाप की हवेली छोड़कर अपने शौहर के घर जाने लगी । डोला उठा और पुरदर्द आवाज़ में बड़े शोर के साथ सहेलियाँ यह नगमा उगलने लगीं—

"काहे को ब्याही विदेस, ओ सखि बावल मोरे काहे को ब्याही विदेस !

हम तो हैं बाबल तोरे आँगन की चिड़ियाँ
जिधर उड़ाओ उड़ जायँ रे···!"

रोते हुए ज़ाकिरा बेगम की हिचकियाँ बँध गईं और वे बेहोश हो गईं । जिस वक्त रुखसाना का डोला अहमदपुर की हदों को फलाँगने लगा तो उसके कानों में खुद-बखुद ये दिल-सोज़ आवाज़ें गूंजने लगीं—

"डोले का पर्दा हटाकर जो देखा
न बावल, न बावल का देस
ओ लक्खी बाबल मोरे !
काहे को ब्याही परदेस ?"

रुखसाना का दिल उसके काबू से बाहर हो गया और वह बेहोश होकर अपने साथ जाने वाली मुगलानी बी की गोद में गिर पड़ी । मुगलानी बी ने घबरा-घबरा कर उसे पंखा झलना शुरू कर दिया ।

रुखसाना अपनी ससुराल पहुँच गई । उसके मायके अहमदपुर का आफताब, जो कि उसकी जुदाई के गम में पहले ही कजला गया था कस्बा करीमगंज, उसकी ससुराल में आकर बिल्कुल ही डूब गया । और अब सारे जहान पर तारीकी छा गई । रुखसाना को ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे उसका दिल, दूर, किसी अन्धे कुएँ में जाकर डूब गया हो ।

अनवरी, ज़ाकिरा बेगम की बहू की हाथ बरताई की रस्म अदा होने वाली थी और ज़ाकिरा बेगम यह सोच रही थीं कि वह अपनी बहू को इस मौके पर क्या इनाम दें कि इतने में ताहिर उनके कमरे में आ गया। आते ही बोला—

"आप अपनी बहू को उसकी हाथ बरताई पर क्या इनाम देंगी, अम्मी ?" वह इठलाते हुए बोला—"वह इस घर में पहली दफा बावर्चीखाने में जा रही है। पहली दफा वह खाने और बर्तन को हाथ लगाएगी।"

और फिर वह खुद ही बोला—

"मामूली इनाम से काम न चलेगा, अम्मी ! इस मौके पर तो वह आपसे कोई बहुत ऊँचा इनाम लेगी।"

"मैं खुद ही सोच रही हूँ, बेटे !" ज़ाकिरा बीबी ने कहा—"क्या दूँ उसे। अपनी जागीर तो सारी की सारी मैं तुझे दे चुकी हूँ। अपने तमाम ज़ेवरात मैं उसे मुँह दिखाई के तौर पर पहले ही दे चुकी हूँ।"

"एक बहुत बड़ी चीज़ अभी बाकी है आपके पास, अम्मी !"

"क्या ?"

"बता दूँ ?"

"बताओ।"

"मगर मैं क्यों बताऊँ ?" ताहिर इठलाते हुए बोला—"आप खुद ही सोचिए न"

"मेरी सोच को तो जैसे घुन लग गया है, बेटे ! मेरा मतलब है कि सिवा गमों के मेरे पास अब कुछ नहीं रह गया।"

"काहे का गम है आपको, अम्मी ? खुदा न करे, आपको गम हो कोई। किस बात का गम है आपको ?"

"बेवगी का गम कुछ कम है, बेटा ! और फिर बेटी की जुदाई, क्या तू कोई मामूली बात समझता है मेरे लिए।"

"और मैं जो हूँ यहाँ और यह जो आपकी बहू जो यहाँ आ गई है। क्या हम लोग कोई चीज नहीं हैं आपके लिए ?"

"क्यों नहीं, बेटे !" वह बड़े चाव के साथ बोलीं—"अल्लाह रक्खे तुम दोनों को। तुम दोनों तो मेरी आँखें हो।"

उन्होंने बड़े जज़्बाती अन्दाज़ में कहा—

"तुम ही दोनों से तो इस खानदान का नाम चलेगा।"

"फिर इनाम !"

"दूंगी।"

"क्या ?"

"तुम ही बताओ; बेटे, मैं तुम्हारी दुल्हिन को क्या दूं ?"

"बता दूं फिर ?"

"हां !"

"हबीबगंज !" ताहिर कमाल चालाकी से बोला—"वह गाँव, जो अब्बाजान ने आपको इनाम में दिया था। वह तो अब भी ज्यों का त्यों आपका है।"

"तौबा है !" वह अपनी पेशानी पर हाथ मार कर बोलीं—"मैं भी कितनी भुलक्कड़ हूं। हबीबगंज मेरे जहन में ही न था।"

वह बड़े प्यार से बोलीं—

"अरे ! यह कौन-सी बड़ी बात है ! घी कहां गया, खिचड़ी में। है तो मेरे पास बहू को देने के लिए। अपनी रईस दुल्हिन को इनाम में मैं हबीबगंज दे दूंगी।"

ताहिर इतना खुश हुआ कि उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने अपनी मां को लिपटा लिया।

'आप कितनी अच्छी अम्मी हैं हमारी !"

मुगलानी बी ने अत्यन्त राज़दारी के तौर पर अपनी मालकिन जाकिरा बीबी से बात शुरू की—

"एक बात कहने की इज़ाजत चाहूँगी मैं आपसे, बेगम हुज़ूर !"

"कहो, मुगलानी बी !"

"लेकिन शर्त यह कि आप बुरा न मानेंगी।"

"मैंने आज तक तुम्हारी किसी बात का बुरा माना है मुगलानी बी !"

"फिर भी।"

"नहीं, मैं बुरा न मानूंगी।"

"न आप मेरी नियत पर शक करेंगी।"

"हर्गिज नहीं। खुदा न करे कि मैं तुम्हारी नियत पर शक करूं।"

"आप हबीबगंज बहू बेगम को इनाम में नहीं देंगी।" मुगलानी

बी कतई फैसले के तौर पर बोली—

"हबीबगंज मैं आपको हरगिज़ न देने दूंगी।"

"यह क्या कह रही हो, तुम मुगलानी!" वह हैरतज़दा हो गईं।

"यही, जो मैं कह रही हूँ।"

"तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आ रही।"

"यह इसलिए बेगम हुज़ूर कि आप ज़रूरत से ज्यादा नेक तबियत, शरीफ और सीधी हैं"

"कहना क्या चाहती हो तुम?"

"छोटे सरकार की नियत में फ़तूर है। वह आपको कौड़ी-कौड़ी से मुहताज कर देना चाहते हैं। वह आपको अपना दस्ते-निगर बना देना चाहते हैं। और आप उनकी चालों को, उनकी फितरत को समझ नहीं पा रहीं। वह यह चाहते हैं कि ''।"

"मुगलानी!"

"मैं सच अर्ज़ कर रही हूँ, बेगम हुज़ूर! आप यह अपना आखिरी सहारा छोड़ कर सख्त घाटे में रहेंगी। इसके बाद आपके पास कुछ न रह जायगा। और आप बाद में बहुत पछताएँगी।"

"मुगलानी बी।" ज़ाकिरा बीबी के तेवरों पर खफ़ीफ़-सा बल आ गया—"तुम मुझे मेरे बेटे के खिलाफ भड़का रही हो!"

"खुदा न करे बेगम हुज़ूर!" मुगलानी ने आजिज़ी से कहा—"काफिर का मुँह हो मेरा। लेकिन चूँकि मैंने जवानी से लेकर अब तक आपका ही नमक खाया है, लिहाज़ा मैं आपको अपने सामने परेशान नहीं देखना चाहती।"

"लेकिन वह मेरा बेटा है, मुगलानी बी! और फिर मेरा है ही कौन, जो मुझे फिक्र हो। अकेली जान है रूखी-सूखी मिल जायगी, खाकर गुज़ारा कर लूंगी।"

"यह कह देना आसान है बेगम हुज़ूर! लेकिन उस हालत में गुज़ारा आपके लिए मुश्किल हो जाएगा। वे हाथ जो सदा देते रहे हों, जब किसी के सामने फैलाने पड़ें तो इन्सान मर जाने की सोचने लगता है। और मौत वक्त से पहले कभी नहीं आती, बेगम हुज़ूर।"

"तो क्या, तुम्हारा खयाल यह है कि ताहिर मुझे दो वक्त इज्जत की रोटी भी न देगा?"

"अल्लाह न करे, आपको ऐसे मनहूस वक्त का मुंह देखना पड़े, लेकिन यह हो सकता है, बेगम हुज़ूर !"

जाकिरा बीबी का चेहरा उतर गया। वह गुमसुम हो गई। मुगलानी बी ने फिर समझाने की कोशिश की—

"इतना भी न सोचा आपने, बेगम हुज़ूर, कि पूरी जागीर अपने नाम लिखवाने की क्या ज़रूरत थी ?"

"वह जागीर का निज़ाम बिगड़ रहा था। काश्तकार तंग करने लगे थे। समझते थे कि मैं पर्दानशीन औरत होकर…!"

"नहीं, बेगम हुज़ूर ! यह बात भी भला हो सकती है कभी !"

"फिर !" वह बेताबी से बोलीं।

"छोटे सरकार इस तरह कहकर जागीर अपने नाम करवा लेना चाहते थे, वरना कौन बेटा बाप के बाद जायदाद की देख-भाल नहीं करता। कौन ऐसे बेटे हैं जो माँ से यह कहा करते हैं कि जायदाद हमारे नाम लिख दो। जायदाद तो होती ही है लड़के की, फिर इस लिखा-पढ़ी की ज़रूरत क्या होती है ? मकसद क्या इससे ?"

"लेकिन मेरा कौन है, मुगलानी बी ! यह सब लेकर मैं करूँगी भी क्या ?"

"अब मैं आपको किस तरह समझाऊँ बेगम हुज़ूर !" मुगलानी ने कहा—"अज़ज़ुल रहमान कारिन्दा भी यही कह रहा था कि बेगम हुज़ूर ने सख्त गलती की है।"

"वे सब पागल हैं।" जाकिरा बीबी ने उलझकर कहा—"हबीबगंज को लेकर क्या मैं चाटूँगी। आज मरी, कल किस्सा खत्म ! चन्द रोज़ा ज़िन्दगी के लिए जवान-जहान बेटे का दिल कौन बुरा करे।"

और फिर वे कदरे सख्ती से बोलीं—

"तुम ऐसी बातें निकालकर मुझे और ज़्यादा परेशान करने की कोशिश फिर कभी न करना, मुगलानी बी ! मैं इस किस्म की बातें सुनना भी नहीं चाहती।"

और फिर मुगलानी बी बेचारी अपना-सा मुँह लेकर रह गई। दूसरे ही दिन बहू के बावर्चीखाने में कदम रखते ही जाकिरा बेगम ने हबीबगंज अपनी बहू को इनाम में बख्श दिया।

मुगलानी बी अपना दिल पकड़कर रह गई।

"दुल्हिन !"

ज़ाकिरा बेगम ने एक दफ़ा बहू से कहा—

'तुम यह भारी-भारी जोड़े पहनकर बावर्चीख़ाने न आया करो, बेटी ! खुदा न करे, दुपट्टे या गरारे के पायचों में अगर आग लग गई तो ! और फिर इन भारी-भारी जोड़ों को इस तरह खराब भी तो नहीं करना चाहिए।"

अनवरी ने अपनी सास को कहर भरी नज़रों से देखा। वह ख़ामोश हो गई। लेकिन वह उसी लम्हा बावर्चीख़ाने से चली गई। अपने कमरे में जाकर मसहरी पर औंध गई और बिसूरने लगी।

ज़ाकिरा बीवी समझीं कि वह अपना लिबास बदलने चली गई है। उन्होंने उसकी कहर में डूबी हुई नज़रों को नहीं देखा था। वह बावर्चीख़ाने में मामा को चन्द हिदायतें देकर अपने कमरे में आकर लेट गईं।

उस वक़्त उन्हें अपनी बेटी रुख़साना बहुत बुरी तरह याद आ रही थी। उसकी शादी को पूरे आठ महीने हो चुके थे। और वह इस तमाम अर्सा में चौथी के बाद सिर्फ़ दो दफ़ा आई थी और वह खुद उसे देखने उसके ससुराल एक दफ़ा भी नहीं गई थीं। वह लड़की के ससुराल में जाना अपनी और अपनी लड़की दोनों की सुबकी समझती थीं। जमाने का दस्तूर ही यही था।

वह अपने कमरे में चुपचाप लेटी थीं कि यकबारगी वह ताहिर की कड़कती आवाज़ पर चौंक उठीं। ताहिर कहीं बाहर गया था, आ गया था और यह आवाज़ उसके कमरे से आ रही थी।

वह यकबारगी गड़बड़ाकर उठ बैठीं।

"या इलाही खैर !" वह सोचने लगीं—"यह ताहिर आखिर बिगड़ किस पर रहा है। कहीं वह दुल्हिन पर तो गुस्सा नहीं कर रहा। अगर ऐसा है, तो बहुत बुरी बात है। किसी की लड़की को अपने घर लाकर ऐसा सलूक उससे नहीं करना चाहिए। और फिर बहू को इस घर में ब्याहकर आए हुए दिन ही कितने हुए हैं। जुम्मा-जुम्मा आठ दिन की ही तो बात है। अभी उसे ब्याहकर आए हुए आठ ही माह तो हुए हैं।"

और यह सोचकर वह अपनी मसहरी पर से उठीं। वह अपने कमरे से बाहर आ गईं। ताहिर की आवाज़ कमरे से फिर आई—

"तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हो गया है क्या ?"

वह अपनी बीवी को डांट रहा था—

"अजीब औरत हो तुम !"

वह सोचने लगीं—

"ताहिर का दिमाग़ ख़राब हो गया है क्या ?" वह ताहिर के कमरे की तरफ आईं। उन्होंने यकदम अन्दर न जाकर बाहर से ही आवाज़ दी—

"ताहिर !"

और उधर से ताहिर की आवाज़ आई—

"आ जाइये न, अम्मी !"

वह अन्दर आ गईं। उन्होंने देखा कि अनवरी मसहरी पर चादर लपेटे औंधे मुँह पड़ी है। ताहिर गुस्से में भरा मसहरी के पास खड़ा है। उन्होंने बड़े प्यार से पूछा—

"क्या हुआ ? क्या बात है, बेटे ! यह तुम रईस दुल्हिन पर खफा क्यों हो रहे हो ?" वह बड़ी सादगी से बोलीं—

"क्या किया है हमारी बहू बेगम ने ! बेचारी ! गुस्सा न किया करो इस पर। बात क्या हुई है आखिर ?"

"उन्हीं से पूछ लीजिए !" ताहिर बिलबिलाकर बोला—

मैं तो समझता हूँ कि आपकी इन बहू साहिबा का दिमाग़ थोड़ा-सा ख़राब है।"

"ख़ुदा न करे। दिमाग़ ख़राब हो बहू बेगम के दुश्मनों का।"

"दिमाग़ तो है ही ख़राब !"

"बात भी बताएगा या नहीं। मुफ्त में हमारी बेटी पर गुस्सा किये जा रहा है।"

"बात क्या बताऊँ—ख़ाक !" वह आजिज़ आने वाले अन्दाज़ में बोला—"यह देखिए !"

और यह कहकर उसने अनवरी के ऊपर की चादर खींचकर एक तरफ फेंक दी।

"ये देखिए ! यह कपड़े ज़ेब-तन फ़रमा रखे हैं आपकी बहू

बेगम साहिबा ने !"

जाकिरा बीबी ने देखा, अनवरी अपनी मुलाज़िमा करीमन के मैले-कुचैले कपड़े पहने मसहरी पर औंधे मुंह पड़ी थी और रो रही थी। उसे इस हाल में देखकर खुद जाकिरा बीबी भी बौखला गईं।

अभी उनके मुंह से मारे हैरत और ताज्जुब के एक लफ्ज भी न निकला था कि ताहिर इन्तिहाई नफ़रत और बेजारी से बोला—

"अब आप ही देखिए ! यह पागल नहीं तो और क्या है। कपड़े किसके पहन रखे हैं ? अपनी मुलाज़िमा के और वह भी उसके उतरे हुए गन्दे कपड़े जो धोबी के यहां जाने वाले हैं।"

"अजीब बात है।" जाकिरा बीबी बड़बड़ाई। उन्होंने करीब जाकर अपनी औंधी पड़ी हुई बहू को आहिस्ता से झझोड़ा—

"रईस दुल्हिन ! रईस दुल्हिन ! यह आखिर क्या हो गया है तुम्हें। यह क्या ? यह आखिर कपड़े किस किस्म के पहन रखे हैं तुमने ?"

"यही मैं इनसे इतनी देर से पूछ रहा हूँ।" ताहिर नफ़रत से नाक चढ़ाकर बोला—

"और यह है कि जैसे सांप सूंघ गया हो इन्हें।"

"क्या बात है दुल्हिन !" जाकिरा बीबी ने उसे उठाकर सीधा बिठा दिया—"कुछ बोलो तो सही !"

"बोलूँ क्या खाक !" उसने झुंझलाकर कहा—"हमारी अम्मीजान ने तो ससुराल में जाकर न बोलने की हमसे कसम ली थी और यह भूल गई थीं वह कि ससुराल में मुझे ऐसों से साबका पड़ने वाला है, जो चोर से कहे चोरी करो और शाह से कहे कि होशियार रहो।"

और यह कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगी।

"यह बात क्या हुई आखिर ?" ताहिर भिन्च आकर कहने लगा—"इस बात से और नौकरानी के उतरे गन्दे कपड़ पहनने से आखिर सम्बन्ध क्या है ?"

"यह बात आप अपनी अम्मीजान साहिबा से पूछिए कि इस बात और नौकरानी के मैले कपड़े पहनने से क्या निस्बत है।"

"मुझसे पूछने की इसमें क्या बात है।" जाकिरा बीबी वाक़ई हैरान थीं—"मैं वाक़ई तुम्हारा मतलब नहीं समझी, दुल्हिन !"

वह यकबारगी ताहिर की तरफ़ घूमी—

"इन्होंने ही मुझे हुक्म दिया था कि मैं भारी-भारी जोड़े पहन कर कपड़ों का सत्यानाश न करूँ।"

"ऐ अल्लाह! मेरी तौबा!" ज़ाकिरा बीबी ने अपनी पेशानी पर जोर से हाथ मारा—

"तो इसका मतलब यह हुआ कि तुम यह कपड़ पहन लो, बेटी।"

उन्होंने ताहिर से कहा—

"यह शादी के भारी जोड़ों के साथ बावर्चीखाने में जाती थी, मैं मुसलसल देख रही थी। आज मैंने कहीं कह दिया कि बेटी, ये भारी जोड़े पहन कर तुम बावर्चीखाने में न आया करो। खुदा न करे, कपड़े में आग लग जाय तो! और फिर इस तरह ये कपड़े भी तो खराब होते हैं।"

उन्होंने अपनी बहू को हैरत से देखा—

"तुम तो बच्ची, पत्ते में दाल-भात और नाक-कान वाली बात कर रही हो!"

ताहिर ने अपनी बीबी को कुछ कहने के बजाए माँ से कहा—

"आप भी इस किस्म की रोक-टोक न किया कीजिए, अम्मी! कपड़े आखिर होते किसलिए हैं?"

ताहिर के मुँह से यह सुनकर ज़ाकिरा बीबी यकदम सन्नाटे में आ गईं। एक लफ्ज भी उनके मुँह से न निकल सका। और वह चुपचाप अपना-सा मुँह लेकर कमरे से बाहर चली गईं।

ताहिर अपनी बेगम को पुचकारने लगा।

ताहिर की शादी को एक साल पूरा हो चुका था।

पूरे एक साल बाद उसके यहाँ एक बच्ची पैदा हुई—रज़िया। उसका नाम रजिया ताहिर के ससुर साहिब ने रखा था।

ज़ाकिरा बीबी ने बच्ची की इस पैदायश पर बड़ी धूम-धाम की। जाहिर कि उन्हें बेहद खुशी हुई थी। उन्होंने इसकी खबर अपनी बेटी रुख़साना के पास भी भिजवा दी थी। छुट्टी पर रुखसाना अपनी भतीजी के लिए बड़े अरमानों के साथ कुर्ता-टोपी लेकर आई।

उसके साथ उसका शौहर जलील भी आया। रुखसती के बाद रुखसाना तीसरी बार अपने मायके आई थी। ज़ाकिरा बीबी बहुत खुश थीं। वह अपनी बेटी और दामाद की दिल खोलकर सेवा कर रही थीं कि एक दिन अनवरी ने अपने शौहर ताहिर से कहा—

"घर लुटाने वाले चोंचले अल्लाह जानता है कि मुझे एक आंख नहीं भाते।"

"घर लुटाने वाले चोंचले!"

"अब तो अल्लाह रक्खे आप बाप बन गए हैं।" अनवरी तुनक कर बोली—"अब भी अक्ल न आएगी तो कब आएगी? वह तो अपनी बेटी और दामाद की खातिर-तवाज़ा में हातिम की कब्र पर लात मार रही हैं, और फिर क्यों न लात मारें वह! उनका कुछ हो तो दिल दुखे उनका। वह तो हलवाई की दुकान और दादा जी का फातिहा वाली बात पर कमर कसे हैं। और यहाँ अपना दीवाला निकला जा रहा है।"

"तुम आखिर कहना क्या चाहती हो?"

"जैसे कि आप समझ ही नहीं रहे।"

"समझना ही तो चाहता हूँ।"

वह चीं-ब-जबीं होकर बोली—

"आपकी अम्मी साहिबा का यह ढंग मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है।"

"अम्मीजान का ढंग! क्या बकती हो तुम?"

"मैं बकती नहीं हूँ। दूर की सोचती हूँ।" अनवरी बोली—"जो आप नहीं सोचते। भला इन फ़िज़ूलखर्चियों से यह घर कितने दिन चलेगा? यह अण्डा, परांठा, हलुवा—और वह भी पिस्ते और बादाम का हलुवा, यह मुर्ग मुसल्लम, यह तीतर, यह बटेर, यह भुनी रानें, ये कोफ्ते-कबाब, शीरमाल, बिरियानी, मग़ज़, फिरनी, शामी कबाब—ये सब आखिर हैं क्या? ये बालाई के लड्डू, आखिर कब तक हम गैरों को भराते रहेंगे?"

"कहीं तुम्हारा दिमाग़ तो नहीं चल गया ?" ताहिर ने बीवी को झिड़का—"तुम मेरी बहिन और बहनोई को ग़ैर कह रही हो। वे चार दिन के लिए आते हैं बेचारे और अभी से तुम्हारे सीने पर सांप लोटने लगा !"

वह तुनक कर बोला—

"तुम क्या जानो कि बड़े लोग अपनों पर क्या, ग़ैरों पर भी कितना खर्च करते हैं ! वह तो फिर भी मेरी बहिन है। मेरा बहनोई है। ये जिन-जिन चीज़ों के तुमने नाम गिनवाए हैं, ये खाने तुम्हारे लिए नियामत होंगे, हमारे लिए इनकी कोई अहमियत इसलिए नहीं कि हम ये रोज़ाना खाते रहते हैं। यह कोई तुम्हारा मायका तो है नहीं कि चटनी-रोटी पक जाया करे। यह जागीरदार का घराना है, जागीरदार का ! समझीं ! हम बचपन से ही ये चीज़ें खाते-पीते चले आ रहे हैं।"

आशा के विपरीत अपने शौहर के मुख से यह सब सुनकर अनवरी का मुँह फक हो गया। लेकिन अपना पहला तीर निशाने पर न लगता देखकर उसने हिम्मत न हारी। उसने अपनी तरकश का एक दूसरा तीर छोड़ा—

"तो मैं कोई दुश्मन तो हूँ नहीं, आपके बहिन-बहनोई की। मैं तो एक बात कह रही थी। दूरन्देशी कोई बुरी चीज़ तो है नहीं। आज अल्लाह ने हमें एक बेटी दी है, कल एक से दो और दो से तीन-चार और छः बच्चे हमारे यहाँ हो सकते हैं। फिर उनकी देखभाल, उनकी तालीम-तरबीयत, उनका सारा खर्च, उनका पढ़ना-लिखना, फिर सबकी शादी, उनका ब्याह···और फिर···!"

"यह सब तुम ठीक कहती हो—" ताहिर ने कहा—"लेकिन दरिया से अगर कोई एक कतरा ले-ले, तो दरिया सूख नहीं जाता। दो दिन के लिए अगर बहिन-बहनोई आ गए तो हमारी इमारत फ़क़ीरी में न बदल जायगी।"

"लेकिन यह भी तो सोचिए कि क़तरा-क़तरा दरिया होता है, रेत-रेत करके रेगिस्तान बनते हैं और···।"

"अच्छा-अच्छा !" ताहिर ने प्रसंग खत्म करना चाहा—"ख़याल रखा जायगा। तुम फ़िक्र न करो।"

"मेरी जूती से।" वह अपने तरकश का दूसरा तीर भी व्यर्थ होता देख चिढ़ गई। खिलखिला कर बोली—

"मैं आइन्दा से एक लफ्ज़ भी न बोलूंगी।"

"बड़ा अहसान करोगी मेरे ऊपर।"

यह कह कर ताहिर अपनी बेगम के कमरे से बाहर आ गया।

"भाई मियाँ!" उसे देख कर उसकी बहिन रुख़साना ने पूछा—"भाभी से क्या-क्या बातें हो रही थीं?"

"कुछ खास नहीं।" ताहिर गड़बड़ा कर बोला—"यूँ ही!"

सोचने लगा—उसकी बहिन ने कहीं उन दोनों की बातें सुन तो नहीं लीं। और अभी वह इस खयाल से उलझ ही रहा था कि रुख़-साना झट से बोल पड़ी—

"मैं कब से आपका इन्तज़ार कर रही हूँ, भाई मियाँ! मैं समझी कि आप कहीं बाहर गए हैं।"

और रुख़साना से यह सुनकर उसे इत्मीनान हुआ। शुक्र है कि रुख़साना ने अपने भाई की बकवास नहीं सुनी। वह बोला—

"क्या बात है, रुख़साना, तुम मेरा इन्तज़ार क्यों कर रही थी?"

"कितने दिनों के बाद तो हम आए हैं, भाई मियाँ! जी चाहता है कि बस आपसे बातें किए जायें। जी नहीं चाहता कि आप पल-भर के लिए भी हमारे सामने से हटें। हमारा क्या है, भाई मियाँ! आज आए हैं, कल चले जायेंगे। हम आपको कित्ता-कित्ता याद करते हैं वहाँ।"

बहिन के मुँह से ये बातें सुनकर ताहिर का दिल भर आया। बोला—

"हम तुम्हें कहाँ कम याद करते हैं, रुख़साना। अम्मीजान से पूछो न कि हम तुम्हें कितना याद करते हैं!"

"बेर का मौसम है, भाई मियाँ!" रुख़साना बड़े अरमान से बोली—"इन्तज़ाम करा दीजिए, तो हम घड़ी दो घड़ी के लिए अपने बेर के बागों में जाकर बेर खा आएँ अपनी सब सहेलियों को लेकर।" वह सजल हो उठी—"हम नाईन को बुलवाकर अपनी सहेलियों को जमा करा लेंगे। रधिया, गधनिया, ननकी, हसीना, सलमा, हनीफ़ा और शबरातन! ये सब हमें वहाँ याद आती हैं।"

ताहिर बोला—

"अच्छा-अच्छा !" ताहिर ने बड़ी मुहब्बत से कहा—"हम यह इन्तजाम अभी किए देते हैं।" वह मुस्कराया—"और ?"

"और कुछ नहीं, भाई मियाँ !" वह मुस्कराई—

"अलबत्ता हमारा दूध धुलाई का नेग अभी नहीं दिया आपने।"

"मैं तो उसी दिन पूछ रहा था कि तुम क्या लोगी, नेग में ! लेकिन तुमने खुद ही कहा था कि तुम फिर बताओगी। लिहाज़ा अब तुम बता दो कि नेग में क्या लोगी ?"

"नेग में मुझे आपका प्यार चाहिए, भाई मियाँ ! आपकी मुहब्बत जो मेरे बाद में भी कायम रहे। आप तो बस मुझे अपना प्यार दे दीजिए, भाई मियाँ।"

वह जजबात में डूबकर बोली—

"इसके सिवाए एक बहिन को और क्या चाहिए अपने भाई से कि वह उससे और उसके बाद उसके सम्बन्धियों से हमेशा मुहब्बत करता रहे।"

उसकी आँखें आँसुओं से भर गईं। उसके साथ-साथ ज़ाकिरा बीबी, मुगलानी बी और ताहिर की आँखें भी नमनाक हो गईं। जलील की आँखों में भी आँसू आ गए। ताहिर भर्राई आवाज़ में बोला—

"यह मेरा वायदा रहा रुखसाना, कि मेरी मुहब्बत तुझसे और तेरे शौहर के साथ-साथ तेरे बच्चों से भी कभी दूर न होगी। मैं अपनी सारी जिन्दगी दिल के साथ तुमसे प्यार करता रहूँगा।"

"बस, मेरे भैया !" रुखसाना बेअख्तयार ताहिर से लिपट गई—"इससे ज्यादा मुझे कुछ न चाहिए। सब कुछ तो मिल गया मुझे। भाई के प्यार और उसकी मुहब्बत से बड़ी कोई दौलत एक बहिन के लिए नहीं होती।"

मुहब्बत और प्यार के पवित्र आँसू उसकी आँखों से बह रहे थे। और वह अपने भाई की कमर से बेअख्तयार लिपटी हुई थी। वह बड़ी शिद्दत से भींचे हुए थी अपने भाई को।

ज़ाकिरा बीबी का दिल शिद्दत के साथ उनके पहलू में तड़प उठा। उनके जिगर से एक हूक उठी और बेअख्तयार उन्होंने अपनी बेटी को लिपटा लिया।

"अल्लाह करे कि तू सदा हँसती और मुस्कराती रहे, मेरी बेटी ? बस, अब अपने आँसुओं को तुम रोक लो बेटो ! नहीं तो मेरा दिल इन आँसुओं में डूब जायगा ।"

रुख़साना अपने आँसुओं को अपने आँचल से जज़्ब करते हुए बोली—

"यह खुशी के आँसू हैं, अम्मीजान, गम के नहीं । यह वह नेग है, जो मुझे भाई मियाँ की तरफ़ से अता हुई है ।"

जलील, रुख़साना का शौहर, जो कि उसी जगह मौजूद था, बे-अख्तयार बोल पड़ा—

"रुख़साना के ये आँसू वाकई बड़े कीमती हैं । बहिन-भाई की पाकीजा मुहब्बत के ये दो रोशन चिराग हैं, जो मेरे दिल में भी आज पहली बार रोशन हुए हैं । इनकी रोशनी में मैंने आज पहली बार अपने सोए हुए जज़्बात को आँखें मलकर उठते हुए देखा है ।"

वह रुख़साना से मुखातिब होकर बोला—

"आपने मुझे वह नूर अता किया है, जिससे अब तक मेरी आँखें अन्धी थीं ।"

उसने एतराफ़ किया—

'शायद मैं भी अपनी बहिन को अब तक वह मुहब्बत नहीं दे सका, जिसकी मुस्तहक है मेरी राबिया आपा !"

उसने रुख़साना से कहा—

"मुझे आज मालूम हुआ कि आप अपने भाई मियाँ से कितनी मुहब्बत करती हैं ।"

"हर बहिन अपने भाई से मुहब्बत करती है ।" रुख़साना ने कहा—"यह मेरा ईमान है ।"

"लेकिन मैं भी किसी का भाई हूँ ।" जलील बोला—"और इस-लिए मैं यह बात दावे के साथ कहता हूँ कि एक भाई अपनी बहिन से उस जैसी मुहब्बत नहीं करता ।"

"नहीं । यह बात इसलिए सही नहीं है, जलील, कि मैं कसम खुदा की रुख़साना से उतनी मुहब्बत करता हूँ, जितनी कि वह मुझसे करती है । मैं अल्लाह को गवाह करके कहता हूँ कि मैं उससे और उसके बच्चों से इसी शिद्दत के साथ सारी उम्र मुहब्बत करता

रहूँगा।"

"आप वाकई काबिल-क़द्र हैं, भाई मियाँ।" जलील बोला—"आपकी मुहब्बत और प्यार की कसम खाई जा सकती है।"

रुखसाना बोली—

"देखिए न, रानी कर्मवती ने हुमायूँ को राखी भेजी थी और वह अपनी उस अनदेखी बहिन की खातिर सारे सयासी ऊँच-नीच को नज़र अन्दाज़ करके अपने ही एक हम-मज़हब बादशाह से लड़ने चला गया। महज बहिन और उसकी इज़्ज़त के बचाव की खातिर।"

"बेशक !" जलील ने कहा—"हम अगर सीखना चाहें तो अपने पुराने इतिहास से बहुत कुछ सीख सकते हैं।"

और फिर वह दिन भी आ गया, जिस दिन रुखसाना अपने शौहर के साथ अपने घर जा रही थी। वह जाने की तैयारियाँ कर रही थी और ताहिर से उसकी बीबी अनवरी झगड़ा कर रही थी—

"मैं कहती हूँ, अब आपको कुछ औरदेने-दिलाने की क्या ज़रूरत है ?"

"पागल हो गई हो क्या तुम ?"

"इसमें पागलपन की आखिर बात ही कौन-सी है !" अनवरी झुँझला कर बोली—"नेग ले तो चुकी है वह अपना।"

"क्या—क्या दिया है मैंने उसे ?"

"भाई की मुहब्बत उसे दे नहीं चुके आप नेग में ?"

"तुम कहीं खब्ती तो नहीं हो ?"

"लो और सुनो। अब मैं इन्हें खब्ती दिखाई दे रही हूँ।"

"खब्ती नहीं तो और क्या हो ? नेग में वह भाई की मुहब्बत ले चुकी है—अरे वाह ! यह क्या बात पैदा की है।"

"तो फिर आप अपना सारा घर लुटा दीजिए—मुझे क्या है।" वह जुलबुला कर बोली—"पूरी जागीर क्यों नहीं लिख देते नेग में ! बड़ा मज़ा आयेगा।"

"बकवास मत करो।"

"लो, यह भी बकवास है।" वह मुस्करा दी—"सारी दुनिया में नाम न होगा आपका, भाई ने बहिन को नेग में पूरी जागीर लिख दी।"

"अच्छा, अब मजाक खत्म करो। वह जा रही है। यह बताओ कि क्या दूँ उसे ?"

"जो जी चाहे आपका।"

"फिर भी ?"

"अगर आप अपनी दौलत के दुश्मन ही बने बैठे हैं, तो दे दीजिए पाँच रुपये।"

"पाँच रुपये !"

"कम हैं क्या ? नए-नए चाँदी के पाँच रुपये ठनाठन करते हुए दे दीजिए। बहिन की गोदी भर जायगी। उसका आँचल ढेर-सी चाँदी के बोझ से नीचे लटक जायगा।"

"या तो तुम वाकई पागल हो, या फिर मुझे पागल बनाने पर तुली हो।"

"तो फिर दस रुपये दे दीजिए। निकालूँ चमचमाते हुए चाँदी के दस रुपये ?"

"बकवास बन्द करो।"

वह चिढ़ गई—"तो पूरा खज़ाना दे दीजिए—मेरा क्या।" उसने मुँह बिगाड़ा—"मैं कौन होती हूँ रोकने या टोकने वाली।"

"तो सौ रुपया निकालो जल्दी से।"

"बाप रे बाप ! पूरे सौ रुपए ! बहिन दब न जायगी इतने बड़े बोझ के नीचे।"

"बको मत और सौ रुपये का नोट निकालो।"

उसने शौहर को कहर बुझी नजरों से घूरा और ट्रंक में से सौ रुपये का एक मैला-कुचैला और पुराना नोट निकाल कर ले आई—

"यह लीजिए।"

सौ का नोट देख ताहिर को बेसाख्ता हँसी आ गई। बोला—

"नेक बख्त ! कोई नया-सा नोट तो दे देतीं !"

"तो क्या यह नोट सौ रुपये से कम में भुनेगा ?"

"इतना रद्दी नोट है कि देते शर्म आएगी।"

"अजीब आदमी हैं ईमान से आप भी।" वह बोली—"कुछ तो मेरी तसल्ली के लिए भी रहने देते !"

और यह कहकर उसने बड़ी बेजारी से सौ रुपये का एक नया नोट

ट्रंक से निकालकर उसे दे दिया—

"लीजिए ! दे दीजिए जाकर अपनी चहेती बहिन को।"

रुखसाना सिर्फ एक हफ्ता अपने भाई के यहाँ रही थी और अब वह वापिस अपनी ससुराल जा रही थी। जाकिरा बीबी की आँखों में आँसू उमड़-उमड़कर आ रहे थे और बरस रहे थे। रुखसाना की भी यही हालत थी। अलबत्ता ताहिर के चेहरे पर मलाल की शिकन भी न थी और अनवरी दिल-ही-दिल में बड़बड़ा रही थी।

"हुँः ! टेसूए बहाए जा रहे हैं। छिः ! मानो बेटी यहीं खेमा-डेरा डालने आई थी जन्म भर के लिए।"

रुखसाना एक दफा फिर मायके आकर ससुराल रवाना हो गई।

पांच

पाँच साल और बीत गए थे।

पाँच साल के बाद रुखसाना के यहाँ पहली बच्ची पैदा हुई थी। बड़ी प्यारी-प्यारी बच्ची थी वह। उसका नाम उसके दादा मियाँ ने सईदा रखा। सईदा के पैदा होने पर ताल्लुकेदार साहिब की खुशी का ठिकाना नहीं था। उन्होंने उस मासूम बच्ची की पैदायश पर दिल खोलकर जशन मनाया।

दूर-नजदीक के सारे रिश्तेदार, अज़ीज़ और दोस्त जमा किए गए। सईदा की आमद के सिलसिले में ताल्लुकेदार साहिब ने पूरे तीन दिन तक जशन मनाने का प्रोग्राम बनाया था।

वह अपनी समधिन ज़ाकिरा बीबी को इस खुशी के मौके पर दावत देने आए थे—

"मुबारक भाभी साहिबा ! आपकी बेटी और हमारी बहू ने हमें एक चाँद-सी बच्ची का मुखड़ा दिखाया है। बड़ी मुरादों और अरमानों के बाद यह बच्ची पैदा हुई है। खुदा के फज़लो-करम से जच्चा और बच्चा दोनों तन्दुरुस्त और बखैरियत हैं।"

ज़ाकिरा बीबी की आँखों में खुशी के आँसू छलक आए। वह बे-अख्तयार होकर बोलीं—

"आपको भी मुबारक हो, भाई साहिब !" और उनका गला भर आया।

"मैं आपको यह खुशखबरी सुनाने के लिए देखिए, खुद हाजिर हुआ हूँ। और यह इसलिए कि आपको और ताहिर मियाँ को, उनकी

बेगम और बच्चों को छठी के दिन आना है। सईदा की यह छठी हम लोग बड़ी धूमधाम के साथ मना रहे हैं।"

"हम जरूर आएँगे, भाई साहिब !" ज़ाकिरा बीबी ने कहा—"यह तो हमारी अपनी खुशी है। इसके लिए आपको खुद आने की जरूरत भी क्या थी। आप एक जरा-सी इत्तिला ही करा देते, हम सर के बल भागे-भागे आते ! बल्कि मुझे तो आपसे यह शिकायत है कि इसकी खबर बहुत पहले से आपने हमें क्यों न दी ? मेरी बच्ची रुखसाना की यह पहलोठी की औलाद थी। रुखसाना की ज़चगी उसके मायके में होनी चाहिए थी।"

"इसके लिए मैं आपसे माफी चाहता हूँ, भाभी साहिबा ! वह बात दरअसल यह हुई कि मुझे तो इसकी इत्तिला ही नहीं थी। न वह बेगम ने किसी को कानो-कान खबर होने दी और न जलील मियाँ ने ही मुझे कोई इशारा दिया। और फिर आपको तो इल्म ही है कि मैं ज्यादातर मर्दाने में ही रहता हूँ। अकेला दुकेला आदमी जो ठहरा। बस वहीं हवेली के मर्दाने हिस्से में पड़ा रहता हूँ।"

"यहाँ भी तो वह चुड़ैल रुखसाना कोई साल भर से नहीं आई। आप लोगों की मुहब्बत और ससुराल का घर उसे ऐसा भा गया है, कि वह तो जैसे भूल ही गई है, हम सबको।

"यह बात नहीं है, भाभी साहिबा ? बल्कि वह इतनी नेक, शरीफ और खुशबख्त लड़की है कि हवेली का सारा प्रबन्ध उसने सम्हाल रखा है। जागीर के कामों में भी बड़ा अच्छा दखल रखती है। दिन-रात वह बस अपनी ही धुन में रहती है। उस गरीब को तो यह भी नहीं मालूम होता कि कब सुबह हुई और कब शाम हो गई। भूलती वह किसी को नहीं है। हाँ, वह अपनी मसरूफियात में खुद को जरूर भुला बैठी है। मैं तो कहता हूँ कि आपने घर का फरिश्तए-रहमत उठाकर मेरे घर भेज दिया। आपकी शिक्षा वाकई एक मिसाल है दुनिया के लिए! मेरा घर जन्नत बन गया है आपकी इस सुशिक्षित बेटी की वजह से।"

अपनी बेटी की यह बड़ाई व तारीफ सुनकर ज़ाकिरा बेगम का सिर फख्र से ऊँचा हो गया। फख्र से उनकी नज़रें ऊँची हो गईं और वह बहुत गम्भीरता से बोलीं—

"यह सब आपकी ज़र्रानवाजी है, बाई साहिब !" और फिर वह फौरन ही बोल पड़ी—"हम सब कल आपके दौलतखाने पर सिर और आँखों के बल हाजिर हो रहे हैं।"

और फिर बड़ी शानो-शौकत के साथ दिन का खाना खाकर ताल्लुकेदार साहिब करीमगंज के लिए रवाना हो गए। उनके जाने के बाद ही ताहिर और अनवरी में खुसर-पुसर होने लगी—

"अब एक और मुसीबत खड़ी हो गई।" अनवरी बोली—"मुफ्त का खर्च और बढ़ा। बहिन के यहाँ औलाद हुई है। अब जाइए और बहाइए रुपया पानी की तरह। मायके वालों के जोड़े दीजिए। बच्ची के लिए कुर्त्ता-टोपी, झूला और खिलौने ले जाइये। अम्मीजान तो इस मौके पर दिल खोलकर रुपया लुटाना चाहेंगी। आखिर को उनकी बेटी के पूरे छः साल के बाद औलाद हुई है।"

"हाँ, यह तो तुम ठीक कह रही हो !" ताहिर मरे हुए अन्दाज में बोला—'अब वह पहले जैसी हालत जागीर की भी नहीं रही है। काश्तकार ससुरे लगान देते नहीं हैं। सरकश हो गए हैं। आए दिन के मुकद्दमात का खर्च है। फिर कारिन्दे अलग पहले से ज्यादा लूटने लगे हैं। जब देखो पटवारी साहिब मुँह फैलाए खड़े हैं। आज उसके घर यह है तो कल वह है। अगर न दो तो जो खेत चाहो, जिसके नाम चढ़ा दें। फिर तहसीलदार साहिब के नखरे सहो। मुँह माँगी रकम उन्हें ले जाकर पूजो और···।"

अनवरी बात काटकर बोली—

"और अपना भी खर्चा कौन-सा कम है। माशा अल्लाह दो-दो बच्चे हैं। रज़िया की पढ़ाई है, नजमा का खर्च अलग है। रजिया की उस्तानी साहिबा हैं और फिर अभी और न जाने हमारे कितने होंगे ? दाया है, खेलाती है। नहलाने वाली है और फिर हमारी अम्मीजान साहिबा के खर्च कौन से कम हैं। हाथ उनका खुला हुआ है, हरेक को देती हैं। उनकी नौकरानियाँ उसी तरह चली आ रही है और फिर यह सबसे बड़ी मुसीबत उनका दायाँ हाथ मुगलानी बी है। हज़ारों नखरे और काम कुछ नहीं। सिवाए इसके कि अम्मीजान साहिबा की मुसाहिबी करती रहें और हमारी तरफ से उनके कान भरें। जिसमें खाएँ, उसी में छेद करें और गुण वह अपनी माल-

Library Sri Pratap College,
Srinagar.

किन के गाएं। रोज का पान-तम्बाकू का उनका खर्चा अलग है। महज अम्मीजान साहिबा के ही पानदार का खर्च इतना है कि खुदा की पनाह ? फिर रोज़-रोज़की दावतें, मुर्ग मुसल्लम, बिरियानी और शाही टुकड़े। मैं तो कहती हूँ कि इस घर का दिवाला बहुत जल्द निकलने वाला है।"

"तुम वाकई यह सब ठीक कह रही हो।"

"मैं सब कुछ ठीक कह कब नहीं रही थी !" अनवरी मुंह बिगाड़ कर बेज़ारी से बोली—' लेकिन मेरी आप कभी सुनते, जब न !"

"सच है।" ताहिर तशवीश भरे लहजे में बोला—"तुम ठीक कहती हो।"

वह अपना सिर खुलजाने लगा। सिर खुजलाते हुए बोला—

"लेकिन करूँ भी तो क्या करूँ ? कुछ समझ में नहीं आता !"

"मेरी मानिए तो सब ठीक हो जाता अभी तक।"

"क्या मानूं तुम्हारी ?"

"जो मैं कहूँ।"

मुझे मालूम है तुम क्या कहोगी।"

"क्या मालूम है आपको ?"

' वही जो तुम कहोगी।"

"क्या कहूँगी मैं ?"

"यही कि मैं बहिन की खुशी से अपना दामन साफ बचा जाऊँ।"

' बिल्कुल ठीक ! इसके सिवा और क्या है ?"

"बेवक़ूफ़ हो तुम।"

"मैं बेवक़ूफ़ हूँ ?"

"और नहीं तो क्या ?"

"वह कैसे ?"

"वह ऐसे कि तुम जो कह रही हो, वह होना नामुमकिन-सी बात है।"

अनवरी चिढ़ गई और झुंझलाकर बोली—

"तो फिर वह कीजिए, जो मुमकिन बात हो।"

"यही तो सोच रहा हूँ।"

"सोचिए।"

"तुम बड़-बड़ ज़रा कम किया करो।"

"तो मैं गोया कि तुम्हारे नजदीक सिर्फ़ बड़-बड़ ही करती रहती हूँ।"

"और नहीं तो क्या ?"

"तो झख मारिए आप।"

"देखो बेगम !" ताहिर बेज़ारी से बोला—"तुम बहुत ज्यादा बदतमीजी मत किया करो।"

"मैं आज से बोलूँगी भी नहीं। मेरी जूती से।"

"हाँ मत बोलना तुम !"

"तो फिरआप मुझसे सलाह-मशविरा करने भी न बैठ जाइयेगा।

"सलाह लेता ही कौन मसख़रा है तुमसे।"

"मसख़रे-वसख़रे की बात तो मैं जानती नहीं हूँ, लेकिन सलाह आप मुझसे जरूर लेते हैं।"

"तो झख मारता हूँ।" ताहिर ने लफ्ज़ झख पर ज़ोर दे कहा।

और वह कमरे से बाहर चला गया।

वह सीधा मर्दाना में आया। कुछ देर तक वहाँ बैठक मोढ़े पर बैठा रहा और फिर अन्दर आया। अन्दर आया ही था कि ज़ाकिरा बीवी से उसका सामना हो गया।

वह उसे देखते ही बोलीं—

"अरे ! तुम आख़िर चले कहाँ गये थे ? मैं कब से तुम्हाराइन्त-जार कर रही हूँ, बेटे !"

"फरमाइए !" वह बेज़ारी से बोला।

"किसी से लड़कर आ रहे हो क्या ?"

"आप अपनी बात कहिए पहले।"

बेटे की इस बदतमीजी पर ज़ाकिरा बीबी का दिल बुझ गया। लेकिन क्या कर सकती थी। अपना कलेजा मसोस कर रह गई। बुझे दिल के साथ बोलीं—

"कुछ नहीं।"

"नहीं-नहीं, आप फ़रमाइये, अम्मीजान !"

ताहिरा ने अपनी बदतमीजी का अहसास किया। वह नर्मी से बोला—

"फ़रमाइये !"

नहीं ! शायद तुम्हारा जी खराब है इस वक़्त !" वे बुझे हुए दिल के साथ बोलीं—फिर बात करूँगी।"

"नहीं, मुझे कुछ नहीं हुआ। आप फ़रमाइये।"

"मैं कहने जा रही थी कि तुम्हारी बहिन रुखसाना के यहाँ अल्लाह रक्खे, चांद सी एक बच्ची हुई है।"

"यह तो मैं सुन चुका हूँ, अम्मी।" वह बोला—"बड़ी खुशी हुई है मुझे।"

ज़ाकिरा बीबी कोई बच्ची तो थीं नहीं बेटे का लहजा और उसके तौर देख रही थीं। लेकिन मजबूर थीं बेचारी। बोलीं—

"कल हम सब वहाँ चल रहे हैं।" वे जैसे कि भीख माँगने लगी हों—"इस मौके पर हमें कुछ करना है, बेटे।"

"क्या करना चाहती हैं आप ?"

"वही, जो ज़माने का दस्तूर है, बेटे।" वे घिघयाने वाले अन्दाज़ में बोलीं—"रुखसाना के लिए, उसकी बच्ची और उसकी ससुराल वालों के लिए जोड़ा बनवाना पड़ेगा। मिठाई…।"

ताहिर बात काटकर बोला—

"ज़माना अब वह नहीं रहा, अम्मीजान। आखिर इतना बहुत-सा करने की हमें क्या ज़रूरत है ? ज्यादा-से-ज्यादा बच्ची के लिए कुर्ता टोपी का इन्तजाम कर दीजिए।"

"तुम पागल हो गए हो क्या, ताहिर !" वे जुलबुला कर बोलीं—"इतना गया-गुजरा तो तुम मुझे समझो मत कि मैं दुनिया के सामने बिल्कुल ही नंगी हो जाऊँ। आखिर को रुखसाना तुम्हारी सगी बहिन है। वह क्या सोचेगी बेचारी ! और अपने ससुराल वालों के सामने वह अपना सिर ऊँचा कर सकेगी ? उन लोगों से उसकी आँखें चार हो सकेंगी ? उसके ससुराल वाले उसके मुँह पर थू-थू करेंगे।"

"फिर ?" ताहिर उस आन्दाज़ में बोला, जैसे कि वह मरा जा रहा हो। "जो हुक्म दीजिए, वह करूँ।"

"बता तो रही हूँ कि रुखसाना के ससुराल वालों के लिए जोड़ा।

ताहिर ने फिर बात काट दी—

आप तो यह बताइये कि कितने रुपये खर्च होंगे।"

"तुम बात कर रहे हो, या काट रहे हो !" ज़ाकिरा बीबी ने अपने बेटे को गज़बनाक नज़रों से देखा। उन्हें अपने पर तरस नहीं, बल्कि गुस्सा आ गया था। वे तर्शरुई से बोलीं—

"तुम मुझे अभी इतना गया-गुज़रा न समझो, ताहिर ! हाथी लाख घट कर भी सवा लाख का होता है।"

वह बेज़ारी से बोलीं—

"तुम तो दफ़ा हो जाओ मेरे सामने से ! मैं सब कर लूंगी। तुम्हें तकलीफ़ की जरूरत नहीं।"

ताहिर लाख बदतमीज था, खुदगर्ज़ और कमीना था, बहुत बुरा था वह, उसकी बीवी हर वक्त माँ की तरफ से उसके कान भरती रहती थी, और वह जोरू का ज़र खरीद गुलाम भी था, लेकिन फिर भी अभी उसमें इतनी जुर्रत पैदा न हो सकी थी कि वह अपनी माँ के गुस्से का सामना कर सके। उस माँ का गुस्सा, कि जिसने मलकाओं की तरह हकूमत की थी, जिनकी आन-बान और शान देखने के काबिल थी। लिहाजा वह भीगी बिल्ली बनकर बेचारगी के साथ बोला—

"आप तो जरा-जरा सी बात पर बिगड़ जाती हैं, अम्मीजान ! मेरा तो दरअसल मकसद था कि···।"

वह गड़बड़ा गया। अपनी बदतमीज़ी का जवाब उसे न मिल सका। कोई बात बनाए न बन सकी। बदहवास होकर बोला—

"दरअसल रात से मेरी तबियत खराब है, अम्मीजान ! दर्द से मेरा सर फटा जा रहा है। कोई बात समझ में नहीं आती।"

ज़ाकिरा उसे गौर से देख रही थी। जैसे कि वे सब कुछ समझ रही हो। उसने फिर कहा—

"हुक्म दीजिए. अम्मीज़ान !"

और फिर खुद ही बोला—

"मैं अभी इलाहाबाद चला जाता हूँ। शाम तक वापिस आ जाऊँगा। फ़रमाइये, क्या-क्या ले आऊँ ?"

"कितना खर्च होगा, मालूम है ?" ज़ाकिरा बीबी बेज़ारी के साथ बोलीं, जैसे कि वे कह रही हों कि खर्च सुनकर दम न निकल जाये।

ताहिर बोला—

"खर्च की बात जाने दीजिए, अम्मी ! गुस्सा थूक दीजिए। मैं माफी चाहता हूँ।"

"कम से कम एक हज़ार का खर्च है।" ज़ाकिरा बीबी बोली—"हो सकेगा तुमसे इतना खर्च ?"

"क्यों नहीं।" ताहिर हकलाते हुए बोला—"आखिर को रुख़-साना मेरी बहिन है।"

और यह कहकर वह सीधा अपने कमरे में गया। जाते ही बीबी से कहने लगा—

"जरा बारह सौ रुपये तो निकालो।"

"क्या कहा ?" अनवरी पर जैसे कि बिजली गिर पड़ी—"बारह सौ !"

सुना नहीं क्या ?"

"मैंने तो सुन लिया है, लेकिन आपने अभी कुछ नहीं समझा।"

"बकवास मत करो !" वह भन्नाए हुए आवाज़ में बोला—"बारह सौ रुपया दो।"

और फ़िर उसके बाद अनवरी एक लफ़्ज़ न बोल सकी। चुपचाप सौ-सौ के बारह नोट उसने शौहर की तरफ बढ़ा दिए—

"यह लीजिए !"

उसने रुपये लिए और कमरे से बाहर आ गया। उसने आकर अपनी माँ से कहा—

"यह लीजिए ! ये बारह सौ रुपये हैं, अम्मीजान। अब फ़र-माइये।"

उसने रुपये अपनी माँ की तरफ़ बड़ा दिये। फिर बोला—

'हमें कल रुख़साना के ससुराल जाना है। इतनी जल्दी तो जोड़े बन नहीं सकते। मेरा ख़याल है कि जोड़ों के लिए रुपये दे दें।"

"जैसा आप मुनासिब समझें, अम्मीजान !"

"हाँ, बस! यही ठीक है ज़ाकिरा बीबी बोलीं—"बच्ची के लिए अलबत्ता, कुर्त्ता-टोपी तैयार किये लेती हूँ।"

"ठीक है।" वह इतनी आहिस्ता से बोला, जैसे कि वह सो रहा हो।

और फिर वह वापिस अपने कमरे में आ गया। आते ही उसने अनवरी से कहा—

"तैयारी कर लेना। कल हम लोग करीमगंज चलेंगे।"

"यह आखिर मुसीबत क्या पड़ी है। करीरगंज जाने की?"

वह बड़े ठहरे हुए अन्दाज़ में बोला—

"तुम मुझे न तो ज़्यादा परेशान करो और न मेरा दिमाग तुम ख़राब करो—समझीं।"

"वरना तुम मेरा क्या करोगे?"

"पागल हो गई है क्या यह औरत?"

"पागल बनाओगे, तो पागल तो हो ही जाना पड़ेगा।"

"अच्छा, बको मत!"

'मेरा जी अच्छा नहीं। मैं करीमगंज-फरीमगंज कभी न जाऊँगी।" अनवरी ने ज़िच आ जाने वाले अन्दाज़ में कहा—"मेरी बच्ची रज़िया की तबियत भी ख़राब है। पाँच साल की इस नन्ही-सी जान को मुसीबतों में ले जाकर मुझे नहीं फँसाना और फिर नज्मा का जी भी अच्छा नहीं है। तीन साल की बच्ची है बेचारी। अगर उसे हवा लग गई तो?"

बको मत! वहाँ जाना ही पड़ेगा।" वह कतई फैसले के तौर पर बोला—"और रुख़साना की बच्ची के लिए कुर्त्ता-टोपी भी ले जाना है।"

"और ये बारह सौ, जो अभी पूजे हैं मैंने!"

"वह अम्मीजान के लिए थे।" ताहिर बोला—"हमें अपनी तरफ से भी कुछ करना पड़ेगा। आख़िर को रुख़साना मेरी बहिन है और मैं उसका भाई हूँ।"

"काश कि न आपके कोई बहिन होती और न आप किसी के भाई होते!" अनवरी चिल्लाकर बोली—"यह बहिन भाई खूब होते हैं!"

अनवरी की इस बात पर ताहिर को हँसी आ गई। वह जुल-बुला कर बोला—

"हँस-हँस कर मेरी जान जलाने में कितना मज़ा आ रहा है आप को? काश, कि मैं मर जाऊँ!"

"मर जायेगी तो क्या होगा ?"

"तुम दूसरी शादी कर लोगे।"

"फिर यही बेहतर है कि तुम मरो-वरो मत। वरना मुफ्त में मुझे दूसरी जोरू तलाश करनी पड़ेगी।"

"कभी तो जनाब फ़रमाते हैं कि अगर खुदा न खास्ता मैं मर गई तो जनाब रो-रो कर मर जायेंगे। और अब दूसरी शादी के ख्वाब देख रहे हैं।" वह तल्ख होकर बोली—"लेकिन मैं यह बता दूं अच्छी तरह आप को कि मैं इतनी आसानी से मरने वाली नहीं हूँ। मैं हर्गिज न मरूँगी।"

"तो मैं कब कहता हूं कि तुम मरो! दुश्मन मरें तुम्हारे।"

"और अगर मैं मर गई तो ?"

"तो मैं ज़हर खालूंगा।"

"अभी तो दूसरी शादी कर रहे थे।"

"वह मज़ाक था।"

"और क्या पता कि यह भी मज़ाक हो।"

और इस पर वे दोनों मुस्करा दिए। ताहिर ने अनवरी को दबोच लेना चाहा और वह एक तरफ़ को हटते हुए बोली—

"उधर देखो!"

ताहिर ने घबराकर पीछे की तरफ देखा—

उनकी मासूम तीन साल की बच्ची नजमा उन दोनों को बड़े ग़ौर से देख रही थी।

दूसरे दिन सबके सब रुखसाना के ससुराल पहुँच गए। रुखसाना की बच्ची सईदा वाकई चाँद का टुकड़ा थी। उस चाँद के टुकड़े की छटी ताल्लुकेदार साहिब ने इतनी धूमधाम से मनाई कि लोग अश-अश कर उठे। ताल्लुकेदार साहिब बड़ी मिन्नतों और मुरादों के

बाद पैदा हुई इस बच्ची की खुशी इस ढंग से की कि लोग देखते के देखते रह गए।

बाजा-गाजा, खाना-वाना, नाच-रंग, इनामात और बख्शीशें, तीन दिन तक लगातार आतिशबाजी छूटती रही। गरीबों और मुहताजों की झोलियाँ भरी जाती रहीं। ताल्लुकेदार साहिब ने फसल का सारा लगान अपनी पोती की पैदायश की खुशी में काश्तकारों को माफ़ कर दिया। और वह माफी किसी एक गाँव के लिए नहीं थी, बल्कि पूरे ताल्लुका के लिए थी।

तहसीलदार साहिब ने अपने सारे अज़ीज़ों को जोड़े दिए—भारी-भारी जोड़े। बच्ची की नानी और ममानी को तो ताल्लुकेदार साहिब ने इतना भारी जोड़ा दिया कि देखने वाली निगाहें चौंधिया कर रह गईं। अनवरी को भारी जोड़े के साथ ही साथ तालुकेदार साहिब ने सोने का जड़ाऊ हार और हाथ के कंगन भी दिए। उसकी बच्चियों के लिए जोड़ों के साथ-साथ सोने के कई-कई जेवरात भी दिए।

और ज़ाकिरा बीबी के लाख इन्कार पर भी मिन्नत करके, हाथ-पाँव जोड़ कर खुशामद करके ये चीजें उन्होंने दीं। और ज़ाकिरा बीबी को मजबूर होकर लेना पड़ा।

अनवरी, सईदा की इस धूमधाम पर दिल ही दिल में जली जा रही थी। लेकिन इतना बहुत कुछ हासिल कर के वह खुश भी थी। वह सोच रही थी, कि उसके खर्च किए हुए रुपये इस बहाने से उसे वापिस मिल गए। बल्कि ये चीज़ें तो उसके खर्च किए हुए रुपयों से कहीं ज्यादा कीमती थीं और यही चीज़ उसके लिए सकून की वजहथी।

"आज मैं सचमुच बहुत खुश हूँ, बेटी !" ज़ाकिरा बीबी ने रुखसाना को प्यार भरी नज़रों से देखते हुए कहा—

"काश ! तेरी यह खुशी देखने के लिए तेरे अब्बाजान जिन्दा होते बेटी !" और यह कहते-कहते उनकी आवाज़ भर्रा गई। उनकी आँखों से गम छलकने लगा। उस वक्त उन्हें अपने मरहूम शौहर डिप्टी साहिब बहुत बुरी रह याद आ रहे थे।'

"गम न कीजिए बेगम हुजूर !" मुगलानी बी ने उन्हें तसल्ली दी—"खुदा डिप्टी साहिब की पाक रूह को सकून अता फ़रमाए। आपके रोने से उनकी रूह बेचैन हो जायगी। और फिर देखिए न कि

Library Sri Pratap College,
Srinagar.

बेटी रुखसाना बीबी की आँखें भी इस बहुत बड़ी खुशी के मौके पर बरस पड़ी हैं ?"

उन्होंने बेअख्तयार रुखसाना की बलाएँ ले डालीं—

"मेरी शाहजादी बेटी ! खुदा के लिए अपने इन आँसुओं को रोक लो ! मेरा दिल फटा जा रहा है ।"

"मुझे भी अब्बाजान कई दिनों से मुसलसल याद आ रहे हैं ।" वह हिचकियों के दरम्यान बोली—'काश ! कि वे इतनी जल्दी हमसे जुदा न होते !"

ज़ाकिरा बीबी और मुगलानी बी दोनों मिलकर रुखसाना को समझाने, बहलाने, फुसलाने और चुप कराने लगीं । और उधर जलील ने रुखसाना से कहा—

"देखो भई, अगर तुमने अपने आप को न सम्हाला, तो मैं भी अपनी अम्मी को याद करके रो पड़ूँगा । मैं बहुत देर से अपने आप को सम्हाल रहा हूँ ।"

और यह कहते-कहते वह रो पड़ा । उसकी बहिन राबिया ने उसका सर अपनी गोद में भर लिया—

"मेरा बरीन ! मेरा भैया ? खुदा के लिए···।"

रुखसाना ने शौहर की तरफ प्यार भरी नज़रों से देखा । उसने जबरन मुस्कराने की कोशिश की । वह आहिस्ता से बोली—

"देखिए ! इधर देखिए, अब मैं नहीं रो रही हूँ ।"

राबिया ने अपने भाई से कहा—

"नेग में तो मैं पूरा एक गाँव तुमसे ले चुकी हूँ, जलील, अब अगर तुम चुप न हुए और इस तरह रोते रहे तो मैं तुम्हें चुप कराने के बदले में तुम्हारी पूरी जागीर लिखवा लूँगी—हाँ, समझ लो ।"

"देखा तुमने !" अनवरी से ताहिर से कानाफूसी की—"जलील ने अपनी बहिन को नेग में पूरा गाँव दिया है और तुम, एक सौ रुपल्ली में भी मरी जा रही थीं ।"

"तो तुमने अपनी पूरी जागीर लिख दी होती बहिन को ।" अनवरी बोली—"मैं तो कह रही थी ।"

"कह क्या रही थीं, जल रही थीं तुम तो ।" वह उसी तरह बड़बड़ाया ।

"अच्छा-अच्छा !" अनवरी चिढ़ गई—"क्या यहाँ भी झगड़ना चाहते हो ?" वह अपनी जबान दबा कर बोली। उसने ताहिर को घूरा—"मैं कहे देती हूँ—हाँ।"

और ताहिर ने झट से कानों को हाथ लगाया। अनवरी दाँतों के नीचे जबान दबाकर मुस्करा दी।

एक बहुत बड़ा इन्कलाब आया।

ज़िन्दगी के पाँच साल और गुजर गए थे। फिर एक अनजाने हादसे के तौर पर वह हो गया, जो कि न होना चाहिए था।

रुखसाना ! शरीफ, नेक तबियत और हर दिल अजीज़ शखसियत की मालिक रुखसाना—अल्लाह को प्यारी हो गई। उसके यहाँ पूरे पाँच साल बाद दूसरा बच्चा पैदा होने वाला था। ज़ाकिरा बीबी भी उस मौके पर अपनी बेटी के पास थीं। उसने एक मुर्दा बेटे को जन्म दिया और सिर्फ पाँच मिनट के बाद वह खुद भी मर गई। बेशुमार खुशियाँ गमों के अथाह सागर में डूब कर रह गई। वह बेचारी अपने उस दूसरे बच्चे की पैदायश पर शहीद हो गई थीं।

करीमगंज से लेकर अहमदपुर तक एक कुहराम मच गया। ताल्लुकेदार साहिब को दिल के दौरे पड़ने लगे। उनके पूरे ताल्लुका में सफे-मातम बिछ गई। हर चारों तरफ से आँसुओं के समुद्र बह गए।

ज़ाकिरा बीबी की दुनिया लुट गई। रोते-रोते और पछाड़े खाते-खाते उनका बुरा हाल हो गया। जलील, रुखसाना के शोहर का दिमाग पागल हो गया। मासूम सईदा का यह हाल था कि वह माँ का नाम ले-लेकर रोती थी। और बेहोश हो जाती थी।

वह माँ का जनाज़ा नहीं उठाने दे रही थी। वह बुरी तरह अपनी मुर्दा माँ से लिपटी हुई थी और अपनी जान दे रही थी। सब लोग परेशान थे। उसे जनाज़े पर से हटाना चाहते थे और वह दुहाइयाँ दे-

देकर, चीख-चीख कर और पछाड़ें खा-खाकर आसमान और ज़मीन एक किए हुए थी।

उसकी हालत देख कर दरो-दीवार का कलेजा भी फटने लगा था। वह दहाड़ें मार रही थी—

"अम्मी ! हमाली अम्मी···हमाली अम्मी को का हवा ! अम्मी को चादल काहे को उरहा दी है···हमाली अम्मी हम से बोलती क्यों नहीं ?"

और फिर वह अम्मी-अम्मी कह कर माँ को झंझोड़ने लगती और पछाड़ें खाने लगती। उसे जबरदस्ती उठाकर वहाँ से दूर कर दिया गया। चीखते-चीखते, चिल्लाते-चिल्लाते उसका गला फट गया। उसके हलक से खून की धारा बह निकली। सब लोग घबरा गए। वह अपनी उसी हालत में गोद से तड़पने-मचलने और बैठा करने लगी।

"नहीं-नहीं, हमाली अम्मी को न ले जाओ। हम अपनी अम्मी को कहीं नहीं जाने देंगे···कहाँ ले जा रहे हो हमाली अम्मी को हम भी अपनी अम्मी के साथ जायेंगे···हम अम्मी के साथ जायेंगे !"

वह एक बार चीखी—

'अम्मी ! हमाली अम्मी मुझे" और जोर से उछल-कूद कर जगह फ़र्श पर गिर कर बेहोश हो गई।

ज़ाकिरा बीबी ने बेपर्दगी की परवाह न करते हुए लपक कर उसे अपनी गोद में उठा लिया।

रात के सवा ग्यारह बजे थे। रुख़साना को दफ़न हुए पूरे सवा पाँच घण्टे हो चुके थे और वह बच्ची सईदा अभी तक अपनी नानी की गोद में बेसुध पड़ी थी। वह दो घण्टे तक बेहोश रही थी। बड़ी कोशिश के बाद हकीम साहिब उसे होश में लाए थे। होश में आने के बाद वह बिल्कुल गुमसुम हो गई थी—बिल्कुल खामोश और चुप।

और अभी तक वह नीम बेहोशी की हालत में ज़ाकिरा बीबी की गोद में पड़ी हुई थी। सारा घर बेहिस-बेहरकत, गुमसुम और उदास, बग़ैर कुछ खाए-पीए उसके गिर्द बैठा था।

"लाइये, बेगम हज़ूर !" मुग़लानी बी अपने होंठ चबाते हुए बोलीं—"आप थक गई होंगी। बिटिया हज़ूर को मैं अपनी गोद में ले लूं।"

ज़ाकिरा बीबी की जबान न खुल सकी। उन्होंने सिर्फ गर्दन हिलाई। अपनी निराशा में डूबी वीरान आँखों से मुग़लानी बी की तरफ देखा उन्होंने। सर को हिला कर बच्ची को उसकी गोदी में देने से इन्कार कर दिया।

और फिर इस तरह बैठे-बैठे उन्हें सुबह के चार बज गए। सईदा उसी तरह उनकी गोद में बेहिस-बहरकत पड़ी रही और उसी तरह बेहिस व बेहरकत उसे अपनी गोद में लिए बैठी रहीं।

और फिर सुबह के पाँच बज गए।

"अब मुझे दे दीजिए, बेगम हजूर!"

ज़ाकिरा बीबी ने फिर इन्कारी में गर्दन हिलाई।

"अब दे दीजिए, बेगम हजूर?"

सुबह के सात बज गए थे। दिन निकल आया था। धूप हर दरो-दीवार पर फैली हुई थी। लेकिन उन्होंने फिर इन्कार कर दिया। जैसे कि उन्हें सकता हो गया हो।

और फिर सुबह के साढ़े सात बज गए थे। सईदा ने उनकी गोद में अपनी आँखें खोल दीं। उसने उसी तरह उनके घुटनों पर लेटे-लेटे उनके चेहरे को ग़ौर से देखा। वह कुछ देर तक उनका चेहरा एक-टक देखती रही। उस के होंठ, थोड़े से खुले। वह आहिस्ता से बोली—

"हमाली अम्मी कहाँ हैं?"

"आ जायँगी तुम्हारी अम्मी, बेटी!" ज़ाकिरा बीबी बहुत ही बेचारगी से बोलीं—"आ जायँगी।"

"कहाँ गई हैं?" वह उसी तरह उन्हें एकटक देखते हुए उसी तरह अत्याधिक धीमी आवाज़ में बोली—

"अल्लाह-अल्लाह करने गई हैं, बेटी!"

"नमाज़ पढ़ने?" सईदा ने पूछा—

ज़ाकिरा बीबी के होंठ थरथराने लगे। लेकिन उन्होंने इन्तहाई अजीयतनाक कोशिश के बाद अपने आपको सम्हाला। बावजूद इन्त-हाई कोशिश के आवाज़ उनके हलक को पार न कर सकी। जवाब के लिए तसदीक में उन्होंने अपना सिर हिला दिया।

"हम भी अम्मी के पास जायँगे। वह कद्रे ज़ोर से इन्तहाई कर्ब

के आलम में बोली और उन्होंने यकबारगी बेताब होकर उसे अपनी छाती से लगा लिया। वह उसे उसी तरह अपने कलेजे से भींचे हुए थीं कि वह फिर बोली—

"नानी अम्मा मुझे अम्मी के पास पहुँचा दो।"

"उन्होंने उसे ज़ोर से भींच लिया। आँसू धार की शक्ल में उनकी आँखों से बहने लगे। उनके बेकरार आँसू सईदा की फ़राक के पिछले हिस्से को भिगो रहे थे।

ज़ाकिरा बीबी के बाल, जोकि इस उम्र के बाद भी कहीं-कहीं से सफ़ेद थे, आधे से ज़्यादा सफ़ेद हो गए थे। उनका पूरा सिर खिचड़ी हो गया था।

और उस अज़ीम हादसे के पूरे एक माह बाद ताल्लुकेदार साहिब का भी इन्तकाल हो गया। उन्हें काले नाग ने डस लिया था। रात को वे अँधेरे में पेशाब के लिए उठे थे कि इस हादसे का शिकार हो गए।

बेचारे जलील के होशो-हवास पर यह दूसरी बिजली गिरी। और वह बिलकुल ही निढाल हो गया। गम का इतना बड़ा बोझ उस पर पड़ा कि वह पिस कर रह गया।

एक माह के अन्दर एक के बाद दूसरी इन दो मौतों ने उसकी दिमागी हालत खराब कर दी। अब उसका इस जहान में कोई न रह गया था।

एक दफ़ा उसकी हवेली पर पुर्सा देने वालों की भीड़ फिर लग गई। यह दूसरी मर्तबा था कि वह तड़प रहा था और उसकी बहन राबिया और उसके बहनोई सर फ़राज़ उसे सम्भाल रहे थे।

ज़ाकिरा बीबी, जोकि अपनी बच्ची के मरने के बाद से अब तक रही थीं, फिर हसरत से हर एक का मुँह ताक रही थीं। उन्हें एक बार फिर अपनी पूरी ताकत से जलील को समझाना पड़ा।

सईदा, जोकि अभी तक अपनी माँ को नहीं भूली थी, अब फिर से अपने दादा मियाँ को पूछने लगी हरेक से। उसे फिर से यही बताया गया कि उसके दादा मियाँ भी उसकी अम्मी की तरह हज करने गए हैं और साल भर के बाद वापिस आएँगे।

"एक साल किसे कहते हैं, नानी अम्मा ?" मासूम सईदा अपनी

नानी अम्मा से पूछ रही थी—"हमाली अम्मा कब आएँगी ?" वह विसूरने लगी और उसकी नानी अम्मा उसे पुचकारने लगी। लेकिन वह फूट-फूटकर रोने लगी—

"अम्मी हमको बहुत याद आती हैं।"

वह बेकरार होकर रो रही थी। वह बेताब होकर रो रही थी। वह इस अन्दाज़ में रो रही थी कि देखने वालों के दिल फट जायें। वह अपना सीना सहलाने लगी। उसने बड़ी घबराहट के अन्दाज़ में कहा—

"नानी अम्मा ! हमाली अम्मा को कहो, वह अब चली आवें। हज न कलें। नानी अम्मा, हमारे यहाँ बड़े ज़ोर की आग लग रही है।"

वह अपना सीना ज़ोर-ज़ोर से रगड़ने लगी। वह घूंसे लगाने लगी अपने कलेजे पर—

"यहाँ बड़े जोर की तकलीफ़ हो रही है, नानी अम्मा !"

वह ज़ोर से चीखकर रोई—

"अम्मी !"

उसने अपनी पूरी कुव्वत से अपनी माँ को आवाज़ दी—

"हम रो रहे हैं तुम्हारे लिए, अम्मी ! आ जाइये अब ! अब तो दादा मियाँ भी हमें छोड़कर चले गए हैं।" वह बेअख्तयार अपने बाप से लिपट गई—

"हमें अभी अम्मी के पास पहुँचा दीजिए, अब्बा जी। हम अम्मी के पास जायेंगे।"

और फिर इन्हीं दुःख तकलीफ़ों में दो साल और गुज़र गए। सईदा अब सात साल की थी। वह अपनी नानी अम्मा के पास अहमदपुर में रहती थी। रफ्ता-रफ्ता वह अपनी माँ को भूलने लगी थी। वह अपनी नानी अम्मा को बहुत चाहती थी। बहुत प्यार करती थी वह ज़ाकिरा बीबी को। और ज़ाकिरा बीबी अपनी नवासी—इस बे-माँ की बच्ची से बेतहाशा मुहब्बत करती थीं। उन्होंने उसे सगी माँ का-सा प्यार दिया था। वह हर वक्त उसे अपने कलेजे से लगा कर रखती थीं।

उनका उस बच्ची के साथ यह प्यार, उनकी यह मुहब्बत अनवरी के दिल में काँटे की तरह खटकती थी। वह हरदम जला करती थी

इस बात से कि जाकिरा बीबी अपनी नातिन को इस तरह क्यों चाहती हैं।

सईदा के बाप कभी-कभी उसे देखने के लिए आ जाते थे।

"क्यों जी ?" अनवरी ने एक दिन ताहिर को आड़े हाथों लिया—

"यह आपकी अम्मीजान आखिर अपनी नातिन को इस क़दर चाहती क्यों हैं ?"

"अजीब सवाल करती हो तुम भी !" ताहिर बोला—"इसलिए कि वह उनकी नातिन है।"

"और ये रज़िया, नज्मा और मासूम अकबर क्या उनके नहीं हैं ?" अनवरी के एक बेटा भी पैदा हो चुका था।

"हैं क्यों नहीं।"

"फिर वे हमारे बच्चों को क्यों नहीं चाहतीं ?"

"कौन कहता है कि नहीं चाहतीं ?"

"मैं कहती हूँ।" वह जैसे कि खम ठोक कर बोली—"वे बिल्कुल नहीं चाहतीं हमारे बच्चों को।"

"यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?"

"वह ऐसे मालूम हुआ है मुझ कि मैं देखती जो रहती हूँ।"

"क्या देखा है तुमने ?"

"वे सईदा को हमेशा इन बच्चों पर तरजीह देती हैं।"

"सईदा बे-माँ की बच्ची है। उसकी माँ मर गई है बेचारी की।"

"तो क्या चाहते हो कि मैं भी मर जाऊँ ?"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि मैं मर जाऊँगी तो आपकी अम्मीजान हमारे बच्चों को भी चाहने लगेंगी।"

"तो गोया आप इसलिए मर जाना चाहती हैं कि आपके मर जाने के बाद अम्मीजान आपके बच्चों को भी चाहने लगें ?"

"जी हाँ।"

"तो फिर बिस्मिल्लाह !"

"क्या ? ' वह तड़प कर बोली—"यानि कि मैं मर जाऊँ ?"

"अभी आप ही फ़रमा रही थीं।"

"देखिये साहब !" वह अपने शौहर को कहरभरी नजरों से घूर कर कहने लगी—"मैं आप से साफ़-साफ़ कहे देती हूँ।"

"क्या ?"

"यही कि उनकी यह नाइन्साफ़ी अब मैं हर्गिज बर्दाश्त करने को तैयार नहीं हूँ।"

वह और अधिक आगे बढ़ी—

"या तो अब सईदा इस हवेली में रहेगी, या मेरे बच्चे रहेंगे। यह समझ लीजिए आप अब अच्छी तरह।"

"सईदा ने क्या बिगाड़ा है आपका।"

"वह यहाँ रहेगी तो मेरे बच्चे नज़र अन्दाज़ किए जाते रहेंगे और मैं अपने बच्चों को हीनता-ग्रन्थी का शिकार कम से कम नहीं होने देना चाहती।"

"आखिर बात क्या हुई आज ?"

"यह आपकी ढोड्ढी मुग़लानी बी जो है न, उन्होंने अपनी चहेती सईदा के लिए एक गुड़िया बड़ी-सी बनाई थी। मेरी नजमा ने वह गुड़िया कहीं उठा ली। आपकी अम्मीजान साहिबा को गुस्सा आ गया। लगीं उसे सलवातें सुनाने। गुड़िया ही नहीं उसके हाथ से छीनी, बल्कि उसे कोसा-काटा भी। और फिर जब इस पर भी उनका कलेजा ठण्डा न हुआ तो उन्होंने नजमा को जी भर कर पीटा भी—और धक्का मार कर उसे सहन में गिरा दिया।"

"अच्छा !" ताहिर के नथुने फड़कने लगे—"यह हुआ है ?"

वह गुस्से से उठकर खड़ा हो गया।

"मैं अभी जाकर अम्मीजान के होश-हवास ठिकाने किए देता हूँ। आखिर उन्होंने मुझे और मेरे बच्चों को समझ क्या रखा है ? अब वाक़ई सईदा नाशुदनी इस हवेली में नहीं रहने पायेगी।"

और अभी वह गुस्से में भरा हुआ अपने कमरे से निकलने ही वाला था कि उसकी बड़ी बेटी रज़िया बोली—

"नहीं अब्बाजान यह सब झूठ है। दादी बीबी ने नजमा को न मारा है, न डाँटा है। नजमा ने सईदा की गुड़िया उसके हाथ से छीन कर उसे मारा था, इस पर दादी बीबी ने उसे बड़े प्यार से समझाया था कि देखो बेटी, इसे मारा न करो। यह भी तुम्हारी बहिन है और

तुम से छोटी है। देखो, कैसे रो रही है बेचारी! यह गुड़िया तुम इसे दे दो। मैं तुम्हें भी कल एक गुड़िया बना दूंगी।"

उसने फिर कहा—

"और इस पर नग़मा बड़ी बदतमीज़ी से वह गुड़िया दादी बीबी के मुँह पर मार कर चली आई थी। दादी बीबी ने उसकी इस बदतमीज़ी पर बस घूरा था—ज़रा-सा और यह कहा था कि तुम बड़ी बदतमीज़ हो गई हो।"

अनवरी ने जुलबुला कर रज़िया की पीठ पर दोहत्थड़ जमाने शुरू कर दिए। वह दाँत पीस कर बोली—

"कमबख़्त! अपनी औलाद होकर साँप बनती जा रही है मेरे लिए।"

और फिर वह ताहिर की ओर ख़ुशमगीं नज़रों से देखकर बोली—

"यह मुर्दार बड़ी झूठी है। झूठ बोल रही है सरासर। बड़ी आई अपनी दादी की सगी!"

"यह झूठ बोल रही है?"

"हाँ!" अनवरी कमाल ढिठाई से बोली—"मैं इस मुर्दार के मुँह में कल ही अंगारे रखूंगी।"

वह बड़बड़ाई—

"झूठ-मूठ की आग लगाती है।"

"और सचमुच की आग तुम लगाने चली थीं!"

ताहिर ने अफ़सोस से डूबी हुई नज़रों से अनवरी को देखा और चुपचाप उठकर बाहर चला गया।

उसके जाते ही अनवरी रज़िया को पीटने लगी—

"कमबख़्त! ख़ुदा तुझे ग़ारत करे। मेरी राहों में काँटे बोने चली है।"

ज़ाकिरा बीबी अपने कमरे में इन्तहाई से ज़्यादा उदास और ग़मग़ीन अपनी मसहरी पर लेटी हुई थीं। उस वक़्त उन्हें अपनी बेटी

रुख़साना बेहद याद आ रही थी। उन्हें डिप्टी साहिब याद आ रहे थे। उन्हें अपनी पिछली जिन्दगी और पिछली खुशियाँ याद आ रही थीं। उनका दिल अपने ग़मों में डूबा जा रहा था कि इतने में सईदा भागी हुई आई। वह हवेली के लान में अपनी आया के साथ खेल रही थी।

"नानी अम्मा ! नानी अम्मा ! हमारे अब्बा जी आए हैं।"

वह आकर बेतहाशा ज़ाकिरा बीबी से लिपट गई।

ज़ाकिरा बीबी उठकर बैठ गई। उन्होंने अपना दिल-दिमाग़ काबू में करने की कोशिश की। उन्होंने मुग़लानी बी को आवाज़ दी और जब वह आ गई तो उन्होंने कहा—

"देखना मुग़लानी बी, जलील मियाँ आए हैं !"

और अभी वह मुग़लानी बी को बाहर भेज ही रही थीं कि राबिया यकबारगी आकर उनसे लिपट गई। वे दोनों एक-दूसरे से लिपटी हुई थीं। दोनों की आँखें ग़मगीन थीं। दोनों की आँखों में आँसू थे कि राबिया ने कहा—

"जलील मियाँ भी आए हैं।"

'हाँ, मुझे सईदा ने आकर बताया है, बेटी।"

वे यकदम मुग़लानी बी से बोलीं—

"यह जलील मियाँ आख़िर मर्दाने में बाहर क्यों रुक गए ? उन्हें तुम अन्दर बुला लाओ, मुग़लानी बी।"

मुग़लानी बी बाहर की तरफ लपकीं। राबिया ने सईदा को अपनी गोद में उठा लिया। वह उसे दीवानावार प्यार करने लगी। उसने सईदा को खूब जोर से भींचते हुए ज़ाकिरा बीबी से कहा—

"जलील बाहर ताहिर भाई के पास रुक गया है, चचीजान !"

और फिर कुछ देर बाद जलील और ताहिर अन्दर आ गए—

"तसलीम अर्ज, अम्मीजान" जलील ने बड़े अदब से हाथ उठाकर ज़ाकिरा बीबी को सलाम किया।

"जुग-जुग जियो बेटे ! खुश रहो ! शाद और आबाद रहो।"

और यह कहते-कहते उनकी आवाज़ ज़रा भर्रा गई। जलील और ज़ाकिरा बीबी दोनों की आँखें भर आईं। जलील ने सईदा को इन्तहाई प्यार के साथ अपनी गोद में भर लिया।

"तुम हमें कभी याद करती हो, बेटी !"

"हाँ, अब्बूजान !" वह अपने बाप को गौर से देखते बोली—"हम आपको रोज़ याद करते हैं।"

उसने अपने बाप को बताया—

"अब हम पढ़ते भी हैं, अब्बूजान ! उस्तानी साहिबा हमें रोज़ उर्दू और फारसी पढ़ाने आती हैं।"

"शाबाश !" जलील ने उसे ज़ोर से लिपटा लिया।

और फिर वे सब इत्मीनान से बैठकर इधर-उधर की बातें करने लगे। दोपहर के खाने के बाद जलील ने बड़ी दबी ज़बान से ज़ाकिरा बीबी से कहा—

"अगर आपकी इजाज़त हो तो अम्मीजान, मैं अपनी दूसरी शादी···?"

और यह कहते-कहते वह रुक गया। उसकी आवाज़ कंपकंपा गई। उसकी नज़रें नीची थीं। उसकी पेशानी पसीने से डूबी हुई थी।

ज़ाकिरा बीबी, जोकि उसकी हालत को गौर से देख रही थीं, यकदम से बोलीं—

"हाँ-हाँ, मियाँ ! तुम ज़रूर अपनी दूसरी शादी कर लो ! भला इसमें हिचकिचाने की क्या बात है ? मैं तो खुद सोच रही थी कि तुम से खुद इस बारे में बातचीत करूँ। यह तुम्हारी शराफ़त है कि तुम मुझसे पूछ रहे हो !"

वह आहिस्ता से रुक-रुककर बोला—

"वह बात दरअसल यह है, अम्मीजान !" वह गला साफ़ करने लगा—"इतना बड़ा घर मेरे अकेले के बस का नहीं है।"

"हाँ-हाँ, मियाँ ! तुम ज़रूर दूसरी दुल्हिन ले आओ ! और फिर अभी तुम्हारी उम्र भी क्या है ?"

उन्होंने फिर पूछा—

"कोई लड़की देखी है क्या ?"

"हाँ अम्मीजान !" राबिया बोली—"वह शबीर हुसैन साहिब हैं न, वह, जो राधानगर में रहते हैं ! छोटे-मोटे ज़मींदार हैं बेचारे। वह कई लड़कियाँ जिनके हैं, उन्हीं की बड़ी बेटी साइरा के साथ—।"

"अच्छा-अच्छा !" ज़ाकिरा बीबी खुद को सम्हालते हुए बोलीं,

"तुम जरूर अपनी शादी कर लो मियाँ ! मुझे खुशी होगी !"

"आपको आना पड़ेगा, अम्मीजान !"

वह अपना दिल मजबूत करके बोलीं—

"क्यों न आऊँगी बेटे ! जरूर आऊँगी।"

और फिर अगले ही महीने जलील का दूसरा ब्याह हो गया। उनकी नई बीवी और सईदा की नई माँ साइरा बेगम, जोकि राधा नगर गाँव के एक मामूली दर्जे के ज़मींदार की बेटी थी, इस इतनी बड़ी हवेली में, इतने बड़े ताल्लुकेदार की बीबी बनकर आ गई। इतनी बड़ी हवेली, नौकर-चाकर, रुपया-पैसा, साजो-सामान, जेवर-कपड़े, उसकी नज़रें चुंधिया गईं। उसका दिमाग अर्श पर उड़ने लगा। गरूर और तमकनत से उसकी गर्दन अकड़ गई।

शादी के दूसरे दिन ज़ाकिरा बीबी जब वहाँ से चलने के लिए आमादा हुईं, तो जलील ने उनसे कहा—

"अगर आपको कोई एतराज न हो तो मैं सईदा को अपने पास रख लूं।"

उसने वज़ाहत की—

"पहले तो घर अकेला था। सईदा की देख-भाल मुश्किल थी। लेकिन अब तो उसकी नई माँ आ गई है। अगर आप—।"

"अगर आप सईदा को अपने पास रखना चाहते हो बेटे, तो मैं रोकने वाली कौन ? मुझे क्या एतराज हो सकता है, मियाँ ! तुम उसके बाप हो और वह तुम्हारी बेटी और फिर मेरा क्या ? बुढ़ापा है। आज मरी कि कल ! सईदा अगर रहना चाहे तो जरूर रख लो !"

वे अपने पर जबर करते हुए बोलीं। उनका दिल कोई चुटकियों से मसलने लगा। उनके कलेजे पर घूंसे पड़ने लगे। लेकिन वे बोल कैसे सकती थीं ? बाप फिर भी बाप होता है और नानी फिर भी नानी।

लेकिन उन्हें ऐसा लगने लगा, जैसे कि उनका सब कुछ छीन लिया जा रहा हो। उन्होंने अपनी डबडबाई हुई आँखें सईदा की तरफ उठाईं। वह अपने होंठ काटते हुए बोलीं—

"बेटी, अब तुम अपने अब्बूजान के पास रहो। अब तो तुम्हारी नई अम्मीजान भी आ गई हैं। वह तुम्हें बहुत प्यार से अपने पास

रखेंगी। तुम्हारे अब्बूजान तुम्हें बहुत-सी गुड़ियाँ, मिठाई और खिलौने लाकर दिया करेंगे।"

"नहीं !" सईदा बोली—"मैं तो आपके ही पास रहूँगी, नानी अम्मा !" और यह कहते-कहते उसकी आँखों में मोटे-मोटे आँसू तैरने लगे—

"मैं यहाँ न रहूँगी।"

"हम तुम्हें बड़े प्यार से रखेंगे, बेटी।" जलील ने सईदा को बड़े प्यार से गोद में भर, पुचकारते हुए कहा।

"हम आपके पास आ जाया करेंगे।" वह बड़ी मासूमियत से बोली—'लेकिन हम रहेंगे अपनी नानी अम्मा के पास ही।"

"तुम्हारी मर्ज़ी, भई !" जलील ने कहा—"तुम वहीं रहो। हम तो तुम्हारी खुशी से खुश हैं।" उसने प्यार से सईदा के सिर पर अपना हाथ फेरा—"लेकिन तुम हमारे पास भी आकर रहा करना, भई !" उसने सईदा से पूछा—"आकर रहा करोगी न, हमारे पास बेटी ?"

सईदा ने स्वीकृति में अपना सिर हिला दिया।

"मेरी बेटी !" जलील ने सईदा को बड़ी शिद्दत के साथ भींच लिया।

साइरा को ताल्लुकेदार साहिब की हवेली में ब्याह कर आए सिर्फ़ छः ही महीने हुए थे। लेकिन इस इतने अर्से में ही उसने उस हवेली और जलील पर अपना अच्छा-खासा असर जमा लिया था।

उसमें और मृतक रुख़साना के मिज़ाज में ज़मीन-आसमान का फ़र्क था। रुखसाना ने यह कभी गवारा न किया था कि उसकी ससुराल का कोई फर्द यहाँ बार-बार आता रहे। या वह खुद जल्दी-जल्दी अपनी ससुराल से अपने मायके जाती रहे। लेकिन साइरा ! इसके

बिल्कुल उलट थी। इस छः महीना में ही वह पन्द्रह-बीस दफ़ा अपने मायके जा चुकी थी और इससे भी ज्यादा मर्तबा उसके माँ-बाप, उसकी बहनें और भाई यहाँ आ चुके थे और यहाँ आकर दिनों और हफ्तों रह चुके थे। उसका भाई अरशद तो गोया पक्का यहीं रहने लगा था।

वह अपने मायके वालों को खूब दिल खोलकर नवाज़ती भी रहती थी। वह अक्सर अपने घर वालों की मदद भी करती थी। और इस मामले में वह जलील को बोलने का मौका ही न देती थी।

अलबत्ता वह सईदा का ज़िक्र कभी न करती। बल्कि उसकी यह कोशिश होती कि अगर सईदा का ज़िक्र आए भी तो वह उसे जिस तरह भी हो आगे न बढ़ने दे और कोई दूसरी इधर-उधर की बात निकालकर उसे गोल कर जाय।

वह नहीं चाहती थी कि जलील सईदा का ज़िक्र करे। वह जलील के दिल-दिमाग से सईदा का खयाल तक निकालकर बाहर कर देना चाहती थी।

एक दिन जलील ने बात निकाली—

"सईदा तो अब मुझे बहुत याद आने लगी है। मेरा जी···!"

वह बात काट कर बोली—

"अरे हाँ! यह तो फ़रमाइये कि उस खरगोश के जोड़े का क्या रहा, जो आप मेरे लिए मँगवाने वाले थे?"

"मैंने आदमी से कह रखा है कि विलायती खरगोश का एक जोड़ा वह कहीं से तलाश करके ला दे।"

"लेकिन मुझे तो वे चितले-चितले रंग के खरगोश अच्छे लगते हैं। वही सुर्ख-सुर्ख, सफेद-सफेद। या काले-सफेद। या फिर भूरे रंग के।"

वह जलील को बोलने का मौका न देकर बोले जा रही थी—

"यह विलायती खरगोश आखिर क्यों कहलाते हैं? क्या वे विलायत से आते हैं? यह विलायत क्या चीज़ है?"

"विलायती खरगोश—"

और वह झट बात काट कर बोली—

"अच्छा, यह तो बताइये, यह इलाहाबाद गाड़ी कितने बजे जाती

है ?"

वह यह नहीं चाहती थी कि जलील बोलने का मौका अपने हाथ में लेकरफिर घूम-फिर कर सईदा की तरफ आ जाये। लिहाज़ा उसने एक नया सवाल फिर खड़ा कर दिया—

"कभी हमें कलकत्ता घुमा लाइये न। ऐ अल्लाह ! हमारा कित्ता-कित्ता जी चाहता है कलकत्ता देखने का। कलकत्ता बड़ा शहर है न— बहुत बड़ा।"

"कलकत्ता—"

उसने जलील की बात फिर उचक ली—

"वे हमारे अब्बा हैं न, अब्बा, कसम अल्लाह की, वे आपकी बहुत तारीफ करते हैं। कह रहे थे कि हमारे···!" वह शर्मा गई।

"वे आपका नाम लेकर कह रहे थे कि मियाँ—जैसा लड़का इस पूरे जिले में तो मिलेगा नहीं।"

उसने जलील का ज़हन बहुत दूर ले जाने की सोची—

"सुना है कि आप कनकौवा बड़ा अच्छा लड़ाते हैं। ऐ अल्लाह, कभी हमें भी दिखाइये न कि आप कनकौवा कैसा लड़ाते हैं। और बटेरें तो मैंने देखी ही नहीं। मैं जब से ब्याह कर यहाँ आई हूँ— हमारे अब्बाजी बड़ा अच्छा बटेर लड़ाते हैं।"

उसने अपनी बात जारी रखी—

"वह एक बटेर था हमारे अब्बा जी के पास। मुआ नाम भूल रही हूँ···क्या हो गया है मेरे दिमाग को !"

उसने अपने भाई अरशद को मुखातिब किया—

"क्या नाम था अरशद मियाँ, उस बटेर का ?"

"दिलावर बेग।"

"हाँ—हाँ, दिलावर बेग ! मैं क्या अर्ज करूँ आपसे कि कैसा बटेर था वह भी ! कम-अज-कम, खुदा झूठ न बुलाए, तो कम-से-कम एक हज़ार मुहर्कों में उसने हिस्सा लिया होगा। लेकिन अल्लाह रक्खे उसकी शान को कि एक पाली भी न हारने पाया। हर जंग शान के साथ जीती और अब्बाजी का नाम रोशन कर दिया। और मालूम है आपको कि कितना पक्के किस्म का दीनदार था, पंच वक्त-नमाज़ के वक्त अपना सिर पिंजरे के भीतर झुका कर बैठ जाता था

और उस वक्त तक अपना सिर न उठाता, जब तक कि मस्जिद के सारे नमाज़ी रुखसत न हो जाते। अज़ान की आवाज़ कान में पड़ी तो यकदम से टोएँ-टोएँ करने लगता।

वह बोली—

'एक दफा तो अब्बा जी ने उसे तीतर के साथ लड़ा दिया था। बिल्कुल इकबाल के उस शेर पर अमल करते हुए कि—'कंजरक फरोमापको शाही से लड़ा दो' और फिर आप जानते हैं कि क्या हुआ था?"

वह ताली बजा कर बोली—

"हमारे दिलावर बेग ने तीतर को भगा दिया था। वह उसके परों में छिप जाता था। और फिर उचक कर वह उसकी पीठ पर सवार हो जाता था। और चोंचे मार कर उसका सिर जख्मी करने लगता था। आखिर मार खा-खाकर जब तीतर तंग आ गया तो भाग खड़ा हुआ। हमारे दिलावर बेग ने उसे दूर तक खदेड़ दिया था।"

"तो कहाँ गया वह आपका दिलावर बेग?" जलील मुस्कराया।

"शहीद हो गया बेचारा!" साइरा बड़े दुःख के साथ बोली।

जलील यकबारगी बोल पड़ा—

"वह कैसे?"

"वह ऐसे कि उसे एक दिन हमारी मुर्दार बिल्ली खा गई।"

"अरे!"

"हाँ!" वह विकल आमेज़ अन्दाज़ में बोली—"इस गम में मैंने दिन भर खाना भी नहीं खाया था।"

"और तुम्हारे अब्बा जी ने?" जलील मुस्कराया—"उन्होंने कितने दिन खाना नहीं खाया?"

"दो दिन तक।"

"मैंने सोचा कि उन्होंने दिलावर बेग की शहादत पर कम से कम एक साल तक खाना नहीं खाया होगा!"

उसने जलील को शिकायत भरी नज़रों से देखा—

"आप मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं?" उसने अपना मुँह फुला लिया। वह शौहर से खफा हो गई। बड़बड़ाई—

"ब-खुदा, हम आपको इतना बेरहम नहीं समझते थे।"

"बेरहम !"

"और नहीं तो क्या ? हमारा दिलावर बेग शहीद हो गया और आपकी आँख से एक आंसू भी न टपका !"

"अगर तुम यकीन करो कि मेरा दिल अन्दर ही अन्दर दिलावर मरहूम की मौत पर आठ-आठ आँसू रो रहा है।"

"आप मज़ाक कर रहे हैं।"

"नहीं भई।"

"नहीं भई क्या ?" वह बिसूरने लगी—"कसम अल्लाह पाक की, आपने मेरा मज़ाक उड़ाया है।"

और यह कह कर वह उठी और अपने कमरे में अपनी मसहरी पर औंधे मुँह जाकर गिर पड़ी। जलील उसके बाद उसके कमरे में आया। वह उसे मनाने लगा—

"मेरी सर्रो ! मेरी नन्हीं-मुन्नी बेगम !"

"चलिए ! हटिए !

वह ठहर कर फिर बोली—

"हम कलम अल्लाह की अब आप से अपने घर की कोई बात न करेंगे।"

"नहीं-नहीं ! मेरी सर्रो !"

वह उसे बच्चों की तरह मना और फुसला रहा था।

छः

जलील, जोकि अब पूरी तरह से अपनी बीबी की गिरफ्त में था और जो अब सोचता भी अपनी बीबी के दिमाग से था, अब अपनी बेटी सईदा की तरफ से बिल्कुल गाफिल हो गया था। वह अब सईदा को कभी भूल कर भी याद नहीं करता था। अपनी मृतक बीबी रुखसाना की तरह वह सईदा को भी भूल चुका था। जैसे कि उसकी बीबी रुखसाना की तरह उसकी बेटी सईदा भी मर चुकी हो।

उसके घर, उसकी दौलत, उसकी सोच और उसकी समझ पर अब मुकम्मल तौर पर साइरा का कब्ज़ा था। साइरा ने जैसे कि उसके ऊपर टोना कर दिया था।

उसकी शादी को अब सवा साल हो चुका था। एक दिन साइरा की माँ ने, जो उसके घर में थी, साइरा को एक सलाह दी—

"बेटी, तुम अक्लमन्दी से काम लेकर अपनी सौतेली बेटी सईदा को यहाँ बुलवा लो। बुलवा कर उसे अपने पास रखो।"

साइरा ने हैरानकुन नज़रों से अपनी माँ को देखा। वह सोचने लगी थी कि आखिर उसकी माँ उसे किस किस्म का मशविरा दे रही है। यानि यह कि वह उस मुसीबत को जान-बूझ कर अपने गले से लगा ले, जिसे कितनी तरकीबों से तो उसने अपने शौहर के दिल-दिमाग से निकाला है। वह सवालिया अन्दाज़ से अपनी माँ को तक ही रही थी कि उसकी माँ, जोकि ज़माने की छटी हुई औरत थी, बोली—

"तुम खुद से अपनी सौतेली बेटी को ज़िद्द करके बुलवाओगी और उसे अपने पास रखने को कहोगी, तो तुम्हारे दुल्हा को तुम्हारी नेक-नियती और शराफत का अहसास होगा। उसे यह खयाल होगा कि तुम

सौतेली माँ होकर भी उसकी बच्ची से कितनी मुहब्बत करती हो और फिर जब वह यहाँ आ जायगी तो तुम उससे शौहर के सामने तो इन्तहाई प्यार और मुहब्बत से पेश आना और अन्दरून में तुम उसे इतना मजबूर कर देना कि वह खुद ही यहाँ से चली जाने को कहे। फिर जब वह यहाँ से आकर एक दफा चली जायगी, तो फिर तुम्हारे बीच से यह काँटा हमेशा के लिए निकल जायगा। यह बात ही खत्म हो जायगी सदा के लिए। वरना हो सकता है कि वह यहाँ आए और उसका खतरा हमेशा के लिए तुम्हें बना रहे। आखिर को वह तुम्हारे दुल्हा की पहलौठी की बेटी है।"

उसने अपनी बेटी को समझाया—

"तुम तो ऐसी चाल चलो, बेटी, कि नेकनामी बनी रहे और उस कमबख्त सईदा का पत्ता हमेशा के लिए कट जायगा। तुम हमेशा यह कह सको कि मैंने तो उसे कलेजे लगाना चाहा था, लेकिन···।'

"मैं समझ गई, माँ!" साइरा खुश होकर बोली—"तुमने वाकई मुझे बड़ी अच्छी तरकीब बताई है। मैंने उनके दिल से सईदा का खयाल निकाल कर यह समझा था कि यह बात खत्म हो गई, लेकिन यह सच है कि वह उनकी बेटी है। कभी न कभी उन्हें उसका खयाल आ ही सकता था। आज न सही तो कल और कल न सही तो परसों।"

और फिर उस दिन उसने अपने शौहर से बात निकाली—

"यह आखिर हमारी बेटी कब तक हम से दूर रहेगी?"

जलील यकबारगी चौंका—

"हमारी बेटी!"

"हाँ-हाँ, सईदा! क्या वह हमारी बेटी नहीं है? मेरा तो दिल हरदम उसके लिए तड़पता रहता है।"

जलील की आँखें से खुशी चमकने लगीं—

"क्या तुम उसे वाकई अपने पास बुलाकर रखना चाहती हो?"

"क्यों नहीं! क्या वह कोई गैर है। क्या आप समझते हैं कि आपके खून से मुझे मुहब्बत नहीं है?"

"बड़ी अच्छी हो तुम!" जलील खुशी से पागल हो गया—"मुफ्त में दुनिया सौतेली माओं को बदनाम किया करती है। काश! कि सारी दुनिया की सौतेली माएँ तुमसे आकर सबक सीखें।"

"मैं तो कब से सईदा के लिए तड़प रही हूँ। लेकिन चूँकि वह वहाँ अपनी नानी अम्मा के पास है, लिहाजा मुझे जबान खोलने की हिम्मत नहीं हो रही थी।"

साइरा ने मुकम्मल तौर पर अदाकारी के जौहर दिखाए। वह आँखों में आँसू भर कर बोली—

"आखिर को वह आपकी पहली बेगम की औलाद है। काश; कि बेचारी रुखसाना बहिन इस तरह अचानक न मर जातीं। उन पर मुझे हमेशा तरस आता है। खुदा उन्हें रहमत करे। सुना करते थे कि बड़ी शरीफ़ और खुदातरस थीं बेचारी!"

"इस वक्त तो तुम उनसे भी बाजी ले गई हो, मेरी सर्रो!" जलील ने बड़े प्यार से साइरा की ठोडी ऊपर उठाई "ब-खुदा, तुमने मुझे खरीद लिया है। तुम बड़ी नेक, खुदा तरस और प्यारी बीवी हो हमारी। खुदा तुम्हें इस खुदातर्सी का उज्र जरूर देगा।"

"आप तो इसी वक्त अहमदपुर सिधारिये और मेरी बेटी को लाकर दीजिए मुझे।"

"मैं अभी जाता हूँ। बखुदा हवा के घोड़े पर सवार होकर जाता हूँ।"

"आज ही मेरी बेटी को लेकर वापिस आइएगा।"

जलील अहमदनगर जाने की तैयारियां करने लगा।

और वहाँ अहमदपुर में अब हालत पहले से भी ज्यादा खराब हो गए थे। अनवरी अब खुल्लम-खुल्ला सईदा के वहाँ रहने पर एतराज करने लगी थी। आये दिन वह कोई न कोई बहाना रख कर, सईदा को दरम्यान में रख कर फ़िसाद बरपा करती और सारे घर को अपने सर पर उठा लेती। उसने बहुत काफी हद तक ताहिर को भी अपनी माँ तथा भाँजी से बदज़न कर दिया था।

ज़ाकिरा बीबी अब वाकई अपनी नातिन सईदा के बारे में सोचने लगी थीं। उसका यहाँ रखना उनके लिए भी अब मुश्किल होता जा रहा था। वे अपनी मासूम बच्ची के लिए यहाँ का माहौल अब ज़हर समझने लगी थीं। इतने में जलील आ गया। जलील, सईदा का बाप, जो उसे अपने साथ ले जाने के लिए आया तो उन्हें ऐसा लगा, जैसे कि उन्हें अपने दिल की मुराद मिल गई हो। जैसे कि खुदा ने उनकी

सुन ली हो।

जलील की इस ख्वाहिश पर कि वह सईदा को अपने साथ ले जायेगा, उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि जलील कोई फ़रिश्तए-रहमत है, जो ऐन मौके पर सईदा और उनकी दोनों की मुश्किल आसान करने के लिए खुदा की तरफ से भेजा गया हो। उन्होंने बड़ी खुशी तथा फ़राखदिली के साथ कहा—

"जरूर मियां ! बेटी बाप के पास न रहेगी, तो किसके पास रहेगी ! मेरी सईदा कितनी खुशनसीब है कि उसे बाप का महान साया नसीब हो रहा है। खुदा इसे हमेशा खुश रखे और तुम्हारी मुहब्बत और शफकत में परवान चढ़ना नसीब करे।"

और यह कहते-कहते उनकी आवाज़ भर्रा गई। सईदा की जुदाई के खयाल से उनका दिल उनके सीने में तड़पने लगा। उन्हें ऐसा लगने लगा, जैसे कि उनके दिल पर कोई छुरी से कचोके लगा रहा हो।

उन्होंने सईदा को प्यार से लिपटाते हुए कहा—

"बेटी···चांदनी मेरी, तुम्हारे अब्बाजी तुम्हें लेने आए हैं। तुम खुशी-खुशी उनके साथ जाओ। बाप से बड़ी और सच्ची मुहब्बत किसी के पास नहीं होती, बेटी !"

उन्होंने बेअख्तयार होकर सईदा को लिपटा लिया—

"जब जी घबराए, तो कुछ दिन के वास्ते फिर यहां आ जाना। जब तक मैं जिन्दा हूँ, यह सिलसिला तो लगा ही रहेगा, मेरी चांद।"

और सईदा जो कि खुद भी अपनी मामी की झिड़कियों से और उनके बच्चों के रोज़-रोज़ की मार-पीट से आज़िज़ आ गई थी, अपने बाप के साथ जाने पर बखुशी राजी हो गई। वह इन्तहाई मासूमियत के साथ बोली—

"अच्छा, नानी अम्मा ! हम अपने अब्बूजान के साथ चले जाते हैं। लेकिन आप भी वहां आइयेगा।"

"हां-हां बेटी।" ज़ाकिरा बीबी ने उसे और भींच लिया—"मैं भी आऊँगी और तुम भी आना।"

और फिर जबकि सईदा के जाने का वक्त आ रहा था, उन्होंने सईदा की अदम मौजूदगी में जलील से कहा—

"देखो मियां, इसे किसी किस्म की तकलीफ न हो। सौतेली मां

के साथ बहुत कम ऐसा होता है कि बुरा न हो। खयाल रखना कि साइरा बेगम इस पर जब्र न करें, जो कि सोतेली माओं का खासा होता है।"

"नहीं, अम्मीजान।" जलील दिल के वसूक के साथ बोला—"बखुदा खुद साइरा ने मुझे सईदा को लाने के लिए इसरार करके भेजा है। वह तो इसके लिए सगी माँ की तरह पुर इजतराब है। मुझे दिल से एतबार है कि सईदा को प्यार के सिवाए एक हल्की-सी झिड़की भी कभी न देगी।"

उसने कहा—

"और अगर कुछ गड़बड़ी हुई भी तो मैं मर नहीं गया हूँ अभी।" जलील ने ज़ाकिरा बीबी को यकीन दिलाया—"आपको और मेरी सईदा को इतनी-सी भी तकलीफ न होगी। इसका जिम्मा आप मुझ से ले लीजिए।"

"हाँ मियाँ!" ज़ाकिरा बीबी की तरह मुगलानी बी भी आबदीदा होकर कहने लगी—"सईदा हम सबकी यों समझिए कि जिन्दगी है, सरकार!"

"फ़िक्र न करो, मुगलानी बी, यह मेरा खून है।"

और फिर जब सईदा अपने बाप के साथ जाने के लिए तैयार हो गई, तो बेअख्तयार होकर ज़ाकिरा बीबी ने उसे पागलों की तरह भींच लिया। वह और सईदा दोनों फूट-फूटकर रोने लगीं। मुगलानी बी भी इस तरह रोने लगी, कि उनकी सगी बेटी ब्याह कर ससुराल जा रही हो।

अनवरी मुंह बिगाड़ कर बोली—

"खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि यह बला हमारे घर से दूर जा रही है?" उसने नाक सिकोड़ी—"रोया जा रहा है, जैसे कि उसका बाप उसे कुर्बान करने के लिए ले जा रहा हो।"

वह अपनी मामी के पास आई। बड़ी मासूमियत से बोली—

"हम जा रहे हैं, ममानीजान!"

अनवरी ने उसे यों ही दूर-दूर से कलेजे से लगाते हुए कहा—

"जा तो रही हो, लेकिन गुण-ढंग से वहाँ रहना। सौतेली माँ के पास जा रही हो। ऐसी माओं के पास रहने वाली लड़कियों को लोहे

के चने चबाने पड़ते हैं। खयाल रखना।"

सईदा का दिल बुझ गया। उसके कलेजे पर उसकी मामी ने इस वक्त भी बड़े ज़ोर का घूंसा मारा था। वह ताहिर के पास आकर बोली—

"मामू साहब !" उसकी आवाज़ लरज रही थी—"हम अब्बूजान के साथ जा रहे हैं, मामू साहब !"

उसकी आँखों में मोटे-मोटे आंसू तैर गए। ताहिर ने उसके सिर पर हाथ रख दिया—

"जाओ बेटी !"

और वह सब को आदाब करती हुई जलील के साथ रवाना हो गई। दूर तक उसकी नानी अम्मा की याद उसका दामन थामे चली आ रही थी। और उसे ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे कि उसकी माँ एकबारगी मर गई हो।

सईदा को देखते ही साइरा ने उसे इस अन्दाज़ में लिपटा लिया, जैसे कि वह बरसों से उसके लिए बेचैन व बेकरार रही हो। उसने इस अन्दाज़ से सईदा को लिपटाया कि जलील की आंखों में सच्ची मुसर्रतों के दीप झिलमिला गए। उसका दिल खुशी और इत्मीनान से नाच उठा।

वह बेअख्तयार बोला—

"यकीन मानो साइरा, मरने वाली की रूह मुस्करा-मुस्कराकर तुम्हें देख रही होगी और खुदा से अर्श का पाया पकड़ कर कह रही होगी—खुदाया ! तू मेरी मासूम बच्ची को सहारा देने वाली इस नेक खातून की झोली में मेरी सारी नेकियां डाल दे। इसने मेरी रूह को बड़ा सकून अता किया है। इसने गले से लगाया है मेरी बे माँ की मासूम बच्ची को।"

सईदा भी अपनी सौतेली माँ का अपनत्व देखकर खिल उठी। वह सोचने लगी—

"मेरी ममानी कितनी बुरी है। कह रही थी कि सौतेली माएँ बहुत बुरी होती हैं। झूठी ज़माने भर की !"

और फिर आठ-दस दिन के अन्दर-ही-अन्दर साइरा ने अपने ऐन प्रोग्राम के तहत अपनी कार्यवाहियां शुरू कर दीं। उसने एक रात, जब

कि जलील रात का खाना खाकर अभी लेटा ही था, उसने कहा। यह उसके बने-बनाए प्रोग्राम का पहला वार था—

"एक बात कहूँ !"

"फरमाइये !"

"बुरा न मानिएगा !" उसने पेशबन्दी शुरू की—"डर लगता है, मुझे।"

"नहीं-नहीं, ऐसी क्या बात है ?" वह प्यार से बोला—"कहो !"

"यह तुम्हारी बेटी सईदा बड़ी खुदराय है।"

"क्या बात हुई ?"

"आज ही की बात नहीं है।" वह बोली—"यह तो उसके आने के दूसरे ही दिन शुरू हो गया था। जिक्र तो मैं अब कर रही हूँ आपसे।"

"क्या हुआ ?"

"यह हर काम और हर बात में अपनी मर्जी चलाती है। कहो कपड़े बदलो, तो कहेगी—नहीं बदलती। कहो—मुँह हाथ धो डालो, तो इन्कार कर देगी। नहाने को कहती हूँ तो मुँह फुला लेती है। पढ़ाने बिठाती हूँ तो मुँह बिचकाकर भाग जाती है। अगर कहो कि हम तुम्हारे अब्बूजान से शिकायत कर देंगे, तो कहती है कि मेरी जूती से। डरता कौन है अब्बूजान-टब्बूजान से।"

जलील यकबारगी उठकर बैठ गया—

"हाँयँ !"

वह हैरत और ताज्जुब से बोला।

वह अदाकारी करते हुए बोली—

"हाँ ! लेकिन अभी आप उससे कहिएगा कुछ नहीं। मैं उसे समझा-बुझा और मना-फुसलाकर ठीक कर लूंगी।"

"हाँ, यह तो ठीक है। यह तो तुम्हारी शराफत, तुम्हारी मुहब्बत और नेकनियती है।"

वह तशवीश भरे अन्दाज में बोला—

"लेकिन यह सईदा को हो क्या गया है ? किस किस्म की है यह लड़की !"

"यह उसकी नानी अम्मा का बेजा लाड़-प्यार है। यह गलत शिक्षा है उनकी, जो हमारी बेटी खराब हो गई।"

"यही बात है।" जलील ने ताईद की—"इसके मायने तो यह हुए कि हमारी खुशदामन साहिबा ने हमारी बेटी को कहीं का नहीं रखा।"

साइरा ने शौहर की ताईद में कहा—

"बिल्कुल यही बात है। मुझे तो अल्लाह जानता है कि बेटी सईदा की तरफ से फिक्र लग गया है।"

उसने शौहर को यकीन दिलाया—

'लेकिन आप फिक्र बिल्कुल न कीजिए। कसम अल्लाह की, मैं उसे बिल्कुल ठीक कर दूंगी।"

"ठीक क्या करना है।" जलील ने इजाज़त दी—"अगर वह इस तरह नहीं सुधरती तो तुम उसकी खबर लो। बेंत पकड़ लो हाथ में। कोई हमें बेजा प्यार करके उसे खराब करना तो है नहीं।"

"नहीं-नहीं।" साइरा जैसे कि दुहाइयाँ देने लगी—"खुदा न करे कि मैं उसके लिए हाथ में छड़ी पकड़ लूं। मार खाएँ उसके दुश्मन। मैं तो उसे यों ही समझा-बुझा कर, बहला-फुसला कर ठीक कर लूंगी।"

"कहो तो मैं इस वक्त या कल सुबह उससे पूछूं?"

"नहीं-नहीं, आपको मेरी कसम, अगर आपने एक लफ्ज़ भी उससे पूछा। या इस किस्म की बात भी निकाली। आप तो उसकी इस बात से बिल्कुल अनजान बने रहिए। जैसे कि आपको कुछ मालूम ही नहीं है। वह तो मैं आपसे इस बात का जिक्र भी नहीं करना चाहती थी, लेकिन आपकी औलाद है। मेरा दिल न माना और मैंने आपसे इस बात का जिक्र कर दिया। आप तो अपने किसी रवैये से इसका इज़हार तक न कीजिएगा कि आपको मालूम हो चुका है। या यह कि आप उससे खफ़ा हैं।"

जलील अपनी बीबी के इस फरेब, उसकी इस सरासर झूठ, उसकी इस एक्टिङ्ग पर कुर्बान हो गया। सोचने लगा कि उसकी बीबी कितनी समझदार और शरीफ है। यह नहीं चाहती कि मैं सईदा को एक लफ्ज़ भी कहूँ और खुद उसकी इन बेहूदगियों और बदतमीजियों के बावजूद उसकी इसलाह समझदारी और खूबी के साथ प्यार से करना चाहती है। वह दिलो जान के साथ अपनी बेगम पर मज़ीद ईमान ले आया। बड़े प्यार से बोला—

"सर्रो ! खुदा की कसम, तुमने मुझे खरीद लिया है अपने इस तर्ज़अमल से।"

"खुदा न करे कि मैं आपको ख़रीदने की बात करूँ। यह तो मेरा फर्ज़ है। क्या आप यह समझते हैं कि मैं सईदा को अपनी बेटी नहीं समझती। वह तो मेरे जिगर का टुकड़ा है। यह और बात है कि मैंने उसे अपनी कोख से जन्म नहीं दिया। लेकिन प्यार मैं उससे उसी अन्दाज़ में करती हूँ कि वह मेरी कोख से ही पैदा हुई है। आपका ही तो खून है न सईदा किसी और का तो नहीं।"

उसने अपनी बात फिर दुहराई—

"लेकिन आप सईदा से कुछ न पूछिएगा और न उसकी तरफ से आप अपना दिल बुरा कीजिएगा। बच्ची है। अभी अपना अच्छा-बुरा वह क्या समझे। मैं उसे सम्हाल लूंगी।"

"नहीं !" जलील बोला—"मैं सईदा से कुछ नहीं पूछूंगा।"

दो दिन और गुज़र गए। सईदा को साइरा ने खूब ज़ोर से भींच कर प्यार करते हुए कहा—

"तुम मेरी बेटी हो न !"

"हाँ बीबी।" सईदा मासूमियत से बोली—"हम आपकी बेटी हैं।"

वह अपनी सौतेली माँ को बीबी कहा करती थी। उसको यही सिखाया गया था कहने के लिए।

"जो मैं कहूँगी, वह करोगी ?" एक दफ़ा और प्यार करते हुए साइरा ने पूछा।

"जी।" उसने स्वीकृति में सिर हिलाया—"आप जो भी कहेंगी करूँगी।"

"तो फिर तुम एक काम करना। आज जब तुम्हारे अब्बूजान खाना खाने बैठें, तो उनकी प्लेट में राख डाल देना।"

सईदा ने बड़ी हैरत से पूछा—

"यह क्यों, बीबी ?"

"यह इसलिए बेटी।" उसने सईदा का मुंह चूम लिया—"कि तुम्हारे अब्बूजान का जी खराब है। हकीम साहब ने उन्हें मुर्गा खाने से मना किया है। और वे हैं कि सुनते ही नहीं हैं। तुम राख डाल

दोगी, तो वे फिर न खायेंगे और इस तरह हकीम साहब का कहना हो जायगा और वह, तुम्हारे अब्बूजान की तबियत भी ठीक हो जायगी।"

"लेकिन इतनी बड़ी बदतमीज़ी पर अब्बूजान हमसे खफा हो जायेंगे। मारेंगे हमें। समझेंगे कि मैं पागल हो गई हूँ।"

"नहीं-नहीं, वे मारेंगे कैसे? हम बचा लेंगे तुम्हें। हम कह देंगे कि अभी नासमझ बच्ची है बेचारी। वे फिर तुमसे नाराज़ भी न होंगे।"

उसने सईदा को खूब अच्छी तरह से समझा-बुझा दिया। जब जलील खाना खाने बैठा तो सईदा ने महज़ अपने अब्बूजान के परहेज़ के खयाल से उनकी प्लेट में राख डाल दी।

"अरे! यह क्या बदतमीज़ी!"

जलील गुस्से से आग-बबूला होकर खड़ा हो गया। उसने कहर भरी नज़रों से सईदा को घूरा। उसकी आँखों से शोले निकलने लगे। वह ज़ोर से गर्ज उठा—

"बड़ी बदमाश लड़की हो तुम! कमीनी कहीं की। यह क्या हरकत? कहीं तेरा दिमाग तो खराब नहीं है?"

उसने एक जोरदार तमाचा सईदा के गाल पर मारना चाहा। अभी उसका हाथ उठा ही था कि साइरा ने उसका हाथ पकड़ लिया। वह मुलामियत से बोली—

"बच्ची है अभी। अब ऐसा भी क्या कि उस पर आपका हाथ उठने लगे।"

"लेकिन यह उसकी हरकत क्या थी?" जलील के नथुने फड़क रहे थे—"मैं इस खबीस लड़की को एक सैकिंड के लिए भी अपने घर रखने को तैयार नहीं हूँ।"

"क्या बेकार की बातें कर रहे हैं? आपको मेरी कसम। बच्ची है, हो गई उससे हिमाकत।"

"लेकिन मैं कहता हूँ कि यह बदतमीज़ी की हद है।"

"यह मासूमियत है।" साइरा बोली—"बच्चे तो शरारत करते ही हैं।

"लेकिन।"

"आपको मेरी कसम । आपको मेरा मुर्दा दीखे जो आप हमारी बेटी को अब कुछ कहें ।"

उसने सईदा से प्यार से कहा—

"जाओ बेटी तुम बावर्चीखाने में जाओ । मैं अभी आती हूँ ।"

जलील दस्तरख्वान पर फिर नहीं बैठा । वह गुस्से से भरा हुआ अपने बाहर के कमरे में चला गया ।

साइरा ने मुस्करा कर अपनी माँ की तरफ देखा ।

अपनी इस इतनी बड़ी कामयाबी पर दोनों माँ-बेटियाँ मुस्करा रही थीं ।

साइरा अपनी इन्हीं हरकतों में दिन-रात लग गई ।

वक्त गुजरता गया । यहाँ तक कि एक साल गुजर गया ।

सईदा अब नौ साल की हो गई थी ।

साइरा ने अपनी इन्हीं हिकमत अमलियों से इतना कर दिया था कि जलील को अपनी बेटी सईदा की सूरत तक से नफरत हो गई थी । इस एक साल के अर्से में कम से कम दो सौ छोटी-छोटी बातें वह सईदा की तरफ से लगाती रही थी । इस अन्दाज़ में कि सईदा और जलील को कभी सीधी बातचीत का मौका ही उसने न दिया । कहीं उससे उसका सारा बना-बनाया खेल बिगड़ न जाय । वह तो यही करती रही कि उसे कसमें दे-देकर इस बात से रोकती और मना करती रही कि वह अपनी बेटी से सीधे कोई बात न पूछे, कोई बात न करे उससे और न किसी की उससे बाजपुर्स करे ।

वह सईदा को पुचकार-पुचकार कर और प्यार कर-करके उसे अपने बाप से बुरा बनाती रही और वह जलील पर और सईदा दोनों पर यह असर डालती रही कि वह इन्सान नहीं, बल्कि फरिश्ता है ।

जलील सोचता रहा । वह यही समझा कि उसकी बीबी साइरा

Lal ...

जैसी नेक और शरीफ औरत इस रूए-जमीन पर कोई और नहीं हो सकती। वह यही समझता रहा कि साइरा सईदा से सगी माँ से भी ज्यादा प्यार करती है। उसे चाहती है। वह एक ऐसी चाहने वाली माँ है सईदा की, जो अपने हद से ज्यादा लाड़ और प्यार से बच्चों को बिगाड़ दिया करती हैं।

वह अपनी तरफ से हर गलत और झूठ बात सईदा के बारे में जलील से कहती और फिर वह उसे इस बात पर मजबूर कर देती कि वह उस मामले में सईदा से न पूछे।

और यह उसका एक ऐसा नया हर्बा था, यह उसकी एक नई और अनोखी चाल थी। एक ऐसा अनोखा तरीका था उसकी माँ का बताया हुआ कि वह हद से ज्यादा दुश्मन होते हुए भी सईदा की दुश्मन नहीं समझी जा रही थी। हर जगह यही मशहूर था कि यह सईदा की सौतेली माँ सगी माँ से भी ज्यादा उसे चाहती है। जलील की नजरों में अपनी बीबी की कीमत, उसकी मुहब्बत और उसकी रवादारी बहुत ज्यादा बढ़ गई थी। वह दिलो-जान के साथ उसकी पूजा करने लगा था। हालांकि शायद अगर उसे हकीकते-हाल से पूरी तरह आगाही हो जाती तो वह साइरा जैसी कमीनी, ज़लील और खतरनाक औरत को अपने घर से निकाल देता या वह उसका खून कर डालता। लेकिन वह तो उसकी पूजा कर रहा था। साइरा की यह नई और अनोखी चाल सौ फीसदी कामयाब थी।

उसने आज तक सईदा को एक जरा-सा घूरा तक नहीं था। बल्कि वह उसे हमेशा कलेजे से लगा कर रखती थी, पुचकारती थी और प्यार करती थी और इस अपने पुचकार और प्यार में वह उसके लिए एक ऐसा जहर घोल रही थी जो उसकी सारी जिन्दगी को जहरीला कर दे। नासूर बन जाए उसकी ज़िन्दगी में।

"भई, अब तो मैं भी बखुदा, इस खुदसर लड़की से तंग आ गई हूं।" उसने अपने शौहर से कहा—"अब तो आप उसे उसकी अपनी नानी अम्मा के पास ही भेजिए।"

"क्या हुआ ?" जलील ने, जोकि पहले ही से सईदा से तंग आ चुका था पूछा—"क्या किया उसने अब कि अब आप भी वही चाह रही हैं, जो मैं बहुत दिनों से चाहता चला आ रहा हूं।"

वह ताने के स्वर में बोला—

"आप तो बड़ी हमदर्द थीं उसकी !"

"मैं उसकी हमदर्द तो अब भी हूँ। वह चली जायगी तो मुझे उसकी याद चैन न लेने देगी।"

वह रुआँसी होकर बोली—

"लेकिन अब उसका यहाँ रहना खतरनाक है।"

"हुआ क्या ?"

"कुछ नहीं। आप तो उसे अब उसकी नानी माँ के पास भजवा दीजिए।"

"फिर भी।"

"मुझे बताते शर्म आती है।"

"क्या ?"

"अब क्या कहूँ आपसे !" वह जैसे कुनीन की गोली निगलते हुए बोली—"आप मेरे उस नामुराद चचाजाद भाई को तो जानते ही हैं। वही कमबख़्त रजा, अभी चौदह साल का भी पूरा नहीं है। मगर हरकतें उसकी ऐसी हैं कि खुदा की पनाह। कल ही मैंने उसे जूते लगाकर यहाँ से निकाला है। मैंने कह दिया है अम्मा से कि अगर अब वह इस घर में आया तो मुझसे बुरा कोई न होगा। कमबख़्त ज़लील ! आवारा ! कल जो हमारी हवेली के पिछवाड़े मेरी नज़र गई तो क्या देखती हूँ कि वह सईदा के बालों में फूल लगा रहा है। मैंने सुना वह कह रहा है—"

वह बोलते-बोलते रुक गई। जलील, जोकि यह सब दास्तान सुनते-सुनते पागल हो गया था, बोला—

"क्या कह रहा था वह ?" वह ज़ोर से गर्जा—"मैं उसका खून कर दूंगा।"

"कोई खास बात नहीं।" वह बात की अहमियत को कम करते हुए बोली—"वह सईदा से कह रहा था कि मैं तुमसे ब्याह करूँगा।"

जलील आग-बबूला हो गया—

"और यह नामुराद सईदा क्या बक रही थी ?"

"कोई ऐसी-वैसी बात उस बेचारी ने नहीं कही। बेकार का गुस्सा उस मासूम पर न कीजिए। वह तो सिर्फ इतना बोली थी कि

मैं भी तुमसे ब्याह करूँगी। वह बच्चा है अभी, क्या जाने इन बातों को। बच्चों की बातें। लेकिन अब मैं नहीं चाहती कि सईदा यहाँ रहे। वहाँ नानी के पास रहेगी, तो वे उसे सम्हाले रखेंगी। वे फिर भी नानी हैं और मैं लाख सब कुछ होते हुए भी फिर भी सौतेली माँ हूँ। यह मुआ सौतेले का लफ्ज़ जो मेरे नाम के साथ लगकर रह गया है, क्या करूँ मैं इस नामुराद सौतेले का ?"

और यह कहते-कहते वह रोने लगी। बड़ी हसरत से बोली—

"काश ! मैं उसकी सौतेली माँ न होती। हालाँकि यह मेरा अल्लाह जानता है कि मैं उसे प्यार बिल्कुल सगी माँ की तरह करती हूँ।"

"अरे-अरे !" उसके इस तरह बेकरार होकर रोने से जलील का दिल बेचैन हो गया। उसने आगे बढ़कर उसका सिर अपनी गोद में भर लिया। वह इन्तहाई मुहब्बत से अपने हाथ से उसके बहते हुए आँसुओं को रोकते हुए बोला—

"खुदा की कसम बेगम मेरी, तुम इसका गम न करो कि वह नालायक बे कहे की बदनसीब लड़की यहाँ से चली जायगी। उसे यहाँ से चले ही जाना चाहिए। उसकी नानी अम्मा ने उसे बिगाड़ा है, अब वही उसकी बदतमीजियों को भुगत भी लेंगी। खुदा की कसम, अल्लाह जानता है कि तुमने उसे कितनी अज़ीम मुहब्बत दी है। वही बदबख्त उसके योग्य न साबित हो सकी तो इसमें तुम्हारा क्या कसूर है। उसे कल ही उसकी नानी के पास ले जाकर छोड़ आता हूँ। मैं समझ लूँगा आज से कि वह मर गई है और तुम भी उसके लिए यही समझ लेना। उसी में हम सब की बेहतरी है।"

वह हिकारत से बोला—

"और शायद इसी में उसकी भी बेहतरी हो।"

"किस दिल से मैं सईदा को अपने से जुदा करूँगी !" साइरा ने अदाकारी की हद कर दी। एक लम्बी सर्द आह भर कर बोली—

"हाय मेरे अल्लाह !"

वह फिर से बिसूरने लगी—

"मेरा दिल तो अभी से, इस तसव्वर से ही फटा जा रहा है कि मेरी बच्ची मुझसे जुदा हो जायगी। उसे अपने से अलग करके मैं ज़िंदा

कैसे रह सकूंगी ?"

जलील ने उसे फिर तसल्ली दी। वह उसे देर तक पुचकारता रहा और समझाता रहा। आखिर में वह एक सर्द आह भर कर बोली—

"अच्छा ! तो कल आप उसे ले जाकर उसकी नानी अम्मा के पास छोड़ आएँ। लेकिन एक बात का वायदा आपको मुझ से करना होगा।"

जलील झट से बोल पड़ा—

"मैं दोबारा उसे यहाँ हर्गिज न बुलवाऊँगा। खुदा की कसम नहीं। तुम यह बात फिर मुझ से कभी न कहना कि मैं उसे बुलवा लूं।"

साइरा यह बात कहने नहीं जा रही थी। लेकिन जब उसने जलील के मुँह से सुना तो उसके दिल की और कई कलियाँ एक साथ खिल उठीं। एक सर्द आह भरते हुए बोली—

"अच्छा ! न बुलाइयेगा उसे दुबारा फिर कभी। अगर आपकी यही मर्ज़ी है तो मैं आपकी मर्ज़ी के आगे जबान न हिलाऊँगी। लेकिन एक दरख्वास्त मैं ज़रूर आपसे करूँगी।"

वह खुशामद से बोली—

"और आपको मेरी वह इल्तजा माननी ही पड़ेगी। आपको मेरे सर की कसम है। खुदा-रसूल का वास्ता आपको। मेरा मुर्दा देखें आप, जो मेरी यह बात आप न मानें।"

"क्या है वह बात ?"

"आप मेरी बेटी सईदा से यह बात न कहिएगा। उस पर आप यह बात हर्गिज ज़ाहिर न करेंगे कि आप उससे खफा हैं। या यह कि उसकी सारी बातें आपको मालूम हो चुकी हैं। आप मेरी कही हुई किसी बात का उससे जिक्र नहीं करेंगे। इशारे से भी नहीं। और न इसमें कि कोई बात उसकी नानी अम्मा से कीजिएगा। उसकी एक ज़रा-सी बुराई भी वहाँ न कीजिगा आप। उसे इस तरह से वहाँ लेकर जाइएगा आप कि जैसे आपको किसी बात का इल्म ही नहीं है। आप उसे बड़े प्यार से यहाँ से लेकर जायँगे। और वहाँ उसे इसी प्यार के साथ ही छोड़ कर भी आना होगा।"

और यही वह बात थी, जिसे साइरा उस समय कहने जा रही

थी। जिसे अपनी गलतफहमी से जलील यह समझ बैठा था कि वह सईदा को दुबारा बुला लेने की बात करने जा रही है।

जलील कुछ सोच कर बोला—

"मैं सईदा पर कोई बात जाहिर नहीं करूँगा। यह ठीक है और यह मुमकिन भी है। मैं दिल पर पत्थर रख कर उससे हँस-बोल भी लूंगा। लेकिन यह कैसे मुमकिन है कि मैं उसकी नानी अम्मा को कुछ न बताऊँ? वे पूछेंगी नहीं कि सईदा को क्यों वापिस भेजा जा रहा है। फिर मैं क्या जवाब दूंगा?"

"कह दीजिएगा कि मैं उसकी सौतेली माँ की वजह से उसे यहाँ लेकर आया हूँ।" वह बोली—"मैं अपने ऊपर दूसरों का इल्जाम ले लेने को तैयार हूँ, लेकिन मैं यह नहीं चाहती कि सईदा को ये सब बातें मालूम हों। या यह कि मेरी बेटी की बुराई किसी और को पता चले। मैं तो सईदा की नानी अम्मा तक से यह बात छुपाना चाहती हूँ कि मेरी बेटी में कोई ऐब या बुराई है। फिर दुनिया तो एक तरफ है।"

'लेकिन इस तरह तुम्हारी बदनामी जो होगी।"

"मेरी बदनामी होने दीजिए। सौतेली माँ तो जग में होती ही बदनाम है। इससे मेरी कोई बदनामी न होगी।"—

वह अफसुर्दगी से बोली—

"सौतेली माँ की इच्छाओं पर अलबत्ता दुनिया कभी एतबार न करेगी। चाहे कुछ हो, लिहाजा क्या जरूरत है कि आप मेरी अच्छाइयों का ढोल पीट कर, जिसे कि कोई यकीन भी न करे, मेरी बेटी को बदनाम कर दें। उसकी कोई कमजोरी मैं दुनिया के सामने ब-खुदा नहीं रखना चाहती। और मैं यह किसी कीमत पर न चाहूँगी कि सईदा को यह मालूम हो जाय कि उसकी नालायकियों की खबर मैं आप तक पहुँचाती रही हूँ। वह क्या सोचेगी मेरे बारे में। वह मेरे बारे में बुरा सोचे, इससे ज्यादा मेरी बदकिस्मती क्या होगी। उसे यह कभी न मालूम होने दीजिएगा कि उसकी बातें मैं आपको बताती रही हूँ।"

"फिर मैं उसकी नानी से क्या कहूँगा?"

"यही कि सौतेली माँ की वजह से मैं सईदा को अपने पास नहीं रख सकता।"

"तुम जैसी फरिश्ता को मुफ्त में बदनाम करूँगा।"

"हाँ।" वह बोली—"यही मेरी ख्वाहिश आप समझ लीजिए। इससे मेरा कुछ न बिगड़ेगा और मासूम सईदा का बहुत बिड़ग जायगा और मैं उसका एक ज़रा-सा भी बिगाड़ना नहीं चाहती।"

"वाकई तुम फरिश्ता हो!" जलील ने सचमुच साइरा के सामने अपना सिर झुका दिया। "दुनिया की सारी अज़ीम औरतों की अज-मत तुम पर खत्म है। ब-खुदा!"

दूसरे दिन सुबह ही जलील जब सईदा को अपने साथ उसकी नानी अम्मा के यहाँ ले जाने की तैयारियाँ करने लगा तो सईदा हैरान रह गई। जहाँ एक तरफ उसे अपनी नानी अम्मा के पास जाने की दिल ही दिल में बेअन्दाजा खुशी हो रही थी, वहाँ उसे साइरा, अपनी बीबी को छोड़ने का मलाल भी हो रहा था। इसलिए कि उसकी जान-कारी में उसकी सौतेली माँ ने उससे कोई बुरा सलूक नहीं किया था। बल्कि वह तो उसे हरदम पुचकारती, प्यार करती, खिलाती-पिलाती, पहनाती ओढ़ाती और बनाती-संवारती रहती। उसने आज कभी न तो उसे घुड़का था और न एक ज़रा-सी आँख दिखाई थी। न मारा था, न झिड़का था कभी। वह तो बस, हरदम उसे प्यार करती रहती थी। उसे मीठी-मीठी कहानियाँ सुनाया जरती थी। मिठाइयाँ लड्डू, बताशे, सिवैयाँ और चिरौंजी दाने मंगा-मंगा कर देती थी और उसे हरदम लिपटाए रहती थी। वह तो उसके अब्बू-जान से लड़ने लग जाती थी अगर वह कभी ज़रा-सा भी उसे डाँटते थे तो। उन्होंने तो लाड और प्यार में उसे पढ़ाया तक नहीं था। वह उसे कभी भी पढ़ने को नहीं कहती थीं।

और जब वह जाने के लिए बिल्कुल तैयार हो गई, तो साइरा उससे लिपट कर रोने लगी। वह फूट-फूट कर रो रही थी। वह इस अन्दाज़ में रो रही थी, जैसे कि वह अपना दम दे देगी।

जलील उसे समझाने लगा। उसे तसल्ली और दिलासे देने लगा। उसकी माँ भी उसे समझाने लगी। उसकी बहिनें और उसका भाई भी उसे समझाने लग पड़ा।

मासूम सईदा ने, जोकि अपनी बीबी की जुदाई के गम में, खुद बेकरार होकर रो रही थी, अपना रोना काबू में करके उसे समझाया—

Library Sri ... Srinagar

"आप न रोइये, बीबी ! हम अल्लाह ने चाहा तो फिर आ जायेंगे जल्दी ही से। अब हमारा कोई वहाँ जी थोड़े ही लगेगा। आप हमसे कित्ता-कित्ता प्यार करती हैं। हम ये सब अपनी नानी अम्मा से बताएँगे। आप बड़ी अच्छी हैं, बीबी ! न रोइये आप !"

वह बड़ी शिद्दत के साथ अपनी सौतेली माँ, अपनी बीबी से लिपट गई। साइरा ने भी उसे भींच लिया। वे देर तक दोनों एक-दूसरे से लिपटी रहीं।

"अब चलो, बेटी !" जलील ने उसे अलग हटाते हुए अपनी बीबी से कहा—"अब जाने भी दो। छोड़ो उसे ! बहुत देर हो रही है। ठण्डे-ठण्डे हम अहमदपुर पहुँच जायँगे तो अच्छा है।"

"जाओ बेटी ! खुदा निगाहबान !"

साइरा ने उसे रथ पर अपने हाथों से सवार करा दिया।

"बीबी!" सईदा ने बिसूरते हुए अपना हाथ उठाया—"सलाम!"

रथ रवाना हो गया। सईदा रथ से लगी अपनी माँ को दूर तक देखती रही। दूर तक—बहुत दूर तक, जहाँ तक कि वह नज़र आ सकीं। और फिर उसने रथ का पर्दा गिरा दिया। अब वह पर्दा जो करने लगी थी।

हवेली के फाटक से साइरा हटी। वह हवेली के अन्दर आ गई। वह अपने कमरे में जाकर मसहरी पर गिर गई।

उसकी माँ कमरे में आ गई थी। वह यकबारगी जोश में उठी और अपनी माँ से बेतहाशा लिपट गई। उसने अपनी माँ को अपनी पूरी शक्ति से भींचते हुए कहा—

"वाह, माँ ! वाह ! अल्लाह जानता है कि कितनी बढ़िया तरकीब तुमने मुझे बताई थी।"

उसने माँ की पेशानी चूम ली—

"मान गई आपको मैं। साँप भी मर गया हमेशा-हमेशा के लिए और अपनी पारसाई भी बरकरार रही।"

"लेकिन बेटा, पूरे एक साल तक तुमने भी तो कमाल किया है। मुझे तो खुद हैरत होती थी कि तुम ऐसा अच्छा कमाल दिखा कैसे रही हो ?" वह हैरत से बोली—"यहाँ तक कि तुम झूठ-मूठ के आँसू भी बहा लेती थीं।"

"यह सब आपकी शिक्षा का कमाल है, अम्मा !" वह एक बार फिर अपनी माँ से लिपट गई—

"आखिर मैं बेटी किसकी हूँ !"

वे दोनों ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगीं। वे दोनों कहकहे मार कर हँस रही थीं।

सईदा अपनी नानी अम्मा से लिपटी रो रही थी—

"मैं अल्लाह जानता है कि तुम्हें आज महीना भर से बहुत याद कर रही थी, बेटी ! अच्छा हुआ कि तुम आकर मेरे कलेजे से लग गईं।"

"आप तो वहाँ एक दफा भी नहीं आईं, नानी अम्मा !" सईदा नानी अम्मा से शिकायत करने लगी—

"हम न जाने क्यों, रोज़ आपकी राह देखते थे !"

ज़ाकिरा बीबी ने कहा—

"बेटी ! वह तुम्हारे बाप का घर है। और बेटी की ससुराल में बेटी वाले नहीं जाया करते। इसीलिए मैं नहीं आई।"

और फिर थोड़ी देर बाद, जब सईदा वहाँ नहीं थी, ज़ाकिरा बीबी ने जलील से पूछ ही लिया—

"यह अचानक तुम सईदा को लेकर आ कैसे गए, मियाँ ?"

जवाब में जलील का दिल चाहा कि वह सईदा की सारी बेहूदगियाँ और बदतमीजियाँ उगल दे, लेकिन फिर उसे अपनी बीबी साइरा की दिलाई हुई कसम याद आ गई। वह जजबज होते हुए बोला—

"क्या बताऊँ, अम्मीजान ! आप तो जानती ही हैं कि सौतेली माएँ कैसी होती हैं।"

वह जैसे कि दुःख के साथ बोला—

"सईदा अब वहाँ नहीं रह सकती।"

"अरे!" जाकिरा बीबी को ऐसा लगा, जैसे कि उनके ऊपर बिजली गिर गई हो—"फिर?" वह अपना कलेजा मसोस कर बोलीं—"फिर क्या होगा।"

"कुछ नहीं।" जलील ने बड़े इत्मीनान के साथ कहा—"आप इसे अपने ही पास रखिये। मैं इसका हर माह का खर्च भिजवा दिया करूँगा।"

"खर्च की बात नहीं, मियाँ! खुदा न करे कि मैं अपनी बच्ची के लिए तुम्हारे भिजवाए हुए खर्च का मुँह देखूं, लेकिन—"

वह चन्द लम्हे रुक कर बोलीं—

"मेरा क्या भरोसा! ग़म की मारी बुढ़िया हूँ। आज मरूँ कि कल। फिर क्या होगा उसका?"

"खुदा न करे कि आप को कुछ हो—" जलील बोला—"और फिर अल्लाह मालिक है। वह जो करेगा, बेहतर ही होगा।"

मुग़लानी बी बड़े दुःख के साथ बोल पड़ीं—

"हमारी यह शहजादी बिटिया भी बड़े दुःखों की शहजादी है, बेचारी!"

और फिर वह बोलीं—

"आप कोई फिक्र न करें, जलील मियाँ! अल्लाह मालिक है। वह ही सब करने वाला है। वह जो करेगा, बेहतर ही करेगा।"

"हाँ।" जलील ने कहा—"खुदा करे कि वह बेहतर ही करे।"

अनवरी ने बड़े झुंझलाते हुए अन्दाज़ से अपनी बेटी रज़िया से मुखातिब होकर कहा—

"देख लिया तुमने, वह मनहूस फिर यहाँ आकर मर गई।"

"हाँ, अम्मी!" रज़िया बुरा-सा मुंह बनाकर बोली—"मरती भी तो नहीं है यह कमबख्त।"

"वह क्या मरेगी ख़ुदा की ख्वार! मुसीबत ज़माने भर की।" अनवरी ने झुंझलाकर कहा—"आने दो अपने अब्बा को। कहती हूँ कि इन तीनों भटियारिनों को यहाँ से गारत करो। वरना मैं, अल्लाह जानता है, कि यहाँ न रहूँगी।"

चलते वक्त मासूम सईदा ने अपने बाप से कहा—

"हमारा सलाम कहिएगा, अब्बूजान, हमारी बीबी से। और कह दीजिए कि सईदा यह कह रही थी कि वह आपको बहुत याद करेगी।" उसने आँखों में आँसू भर कर अपने बाप से कहा—

"अब्बूजान, हमारी बीबी से कहिएगा कि वे हमें जल्दी से बुला लें।"

"अच्छा।"

जलील ने कहा और वह अपनी बेटी सईदा को पुचकार या प्यार किए बग़ैर ही वहाँ से रुखसत हो गया।

सईदा ने यकबारगी नानी से लिपट कर कहा—

"नानी अम्मा! हमारी बीबी हमें बहुत चाहती थीं।"

"हाँ, बेटी!"

ज़ाकिरा बीबी के दिल से धुआँ उठने लगा। वह सोचने लगीं कि इस मासूम को क्या मालूम कि वह कितनी बड़ी जहर की पुड़िया है। कितनी बड़ी दुश्मन है वह इस मासूम की।

उन्होंने सईदा को ज़ोर से लिपटा लिया। उनके मुँह से निकला—

"काश! तुम्हारी माँ तुम्हें छोड़कर न मर जातीं, बेटी!"

सात

अनवरी की लाडली बेटी नज़मा ने सईदा से कहा—

"तुम हमारे बाप का खाती हो।"

"नहीं।" सईदा ने जवाब दिया—"हम मामू साहब का क्यों खाने लगे। हम सब अपनी-अपनी किस्मत का खाते हैं।"

"चल-चल, बड़ी आई अपनी किस्मत का खाने वाली! हमारे टुकड़ों पर तो पलती है और कहती है कि हम मामू साहब का दिया नहीं खाते!"

"अच्छा, खाते हैं फिर? वे हमारे भी तो मामू साहब हैं!"

"बड़े आए वे तुम्हारे मामू साहब। वे हमारे अब्बा हैं।"

"और हमारे मामू साहब हैं।"

"वह तेरे कोई नहीं हैं।"

"हैं क्यों नहीं। चलो, नानी अम्मा से पूछ लो।"

"चल-चल, बड़ी आई नानी अम्मा वाली!" नज़मा ने कमाल ढिठाई से कहा—"वह तो डायन है, डायन!"

"अरे!" सईदा को गुस्सा आ गया—"खबरदार, जो हमारी नानी अम्मा को डायन कहा। हम तुम्हारा मुंह नोच लेंगे।"

"अच्छा।" और यह कहकर उसने अपनी दादी को और बुरा-भला कहा—"वह भी हमारे टुकड़ों पर पलती है। भिखारिन कहीं की—डायन।"

सईदा ने तैश में आकर नज़मा के मुंह पर एक घूंसा मारा। उससे अपनी नानी अम्मा की तौहीन नहीं बर्दाश्त हो सकी थी। वह चीख कर बोली—

"खबरदार, जो हमारी नानी अम्मा को बुरा-भला कहा।" उसने नजमा को एक और चाँटा लगाया।

नजमा चीख-चीख कर रोने लगी।

उसका रोना सुनकर अनवरी चील की तरह झपट कर आई।

"क्या हुआ ?"

"इसने मुझे मारा।"

"नजमा बहन ने हमारी नानी अम्मा को डायन कहा था।"

"बड़ी आई नानी अम्मा की सगी।" अनवरी ने सईदा को बेतहाशा पीटना शुरू कर दिया—"वह डायन नहीं तो और क्या है ?"

वह उसे बेतहाशा पीट रही थी कि सईदा के रोने की और शोरगुल की आवाज सुनकर मुगलानी बी आ गईं। आते ही उन्होंने झपट कर सईदा को अनवरी की पकड़ से छुड़ाया—

"यह क्या करती हैं आप, बहू बेगम ! कोई इतनी सी बच्ची को इस तरह मारता है ! गजब खुदा का। आपने उसका मुंह लहू-लुहान कर दिया।"

और इतने में ज़ाकिरा बेगम, जो कि गुसलखाने में थीं, वहीं से चीखीं—

"यह आखिर क्या हो रहा है ?"

"हो रहा है तुम्हारा सिर।"

अनवरी ने यह कहकर सईदा को फिरा पीटना चाहा। मुगलानी बी आड़े आ गईं। उन्होंने सईदा को अपने पीछे कर रखा था। अनवरी मुगलानी बी से जूझ गई।

"खबरदार, जो तू आड़े आई। दो टके की मामा। बड़ी आई इस कमीनी की तरफदार बनकर।"

अनवरी ने सईदा को मुगलानी बी की तरफ से खींच लेने की कोशिश की। मुगलानी बी ने सईदा को उनके हवाले न करते हुए कहा—

"होश में आओ, बहू बेगम ! इतना जुल्म न करो कि आसमान काँप उठे। तुम यह न समझो कि यह बच्ची लावारिस है।"

"मेरे आड़े आती है, कमीनी। अपनी औकात भूल रही है।"

अनवरी ने मुगलानी बी के मुँह पर एक तमाँचा मारा। फिर दूसरा और फिर तीसरा। जब उसने मुगलानी बी को मारने के लिए

फिर हाथ उठाया तो मुगलानी बी ने उसका हाथ पकड़ लिया। वह बड़े ठहरे हुए अन्दाज़ में बोलीं—

"होश में आओ, बहू बेगम! इतना आगे न बढ़ो कि तुम्हारी अपनी बेइज्ज़ती हो जाय।"

"मेरी बेइज्ज़ती!"

अनवरी कमीनी और रज़ील औरतों की तरह उससे लिपट गई। मुगलानी बी के हाथ में उसने काट लिया। मुगलानी बी ने इतने ज़ोर का धक्का उसे दिया कि वह चारों खाने चित्त वहीं गिर पड़ी। अब बात मुगलानी बी के बर्दाश्त से बाहर हो चुकी थी, वह तेज़ होकर बोलीं—

"यह मत भूलो कि अपनी इज्ज़त हमेशा अपने हाथ में होती है, बहू बेगम! अगर मैंने इसी डेवढ़ी पर अपनी उम्र गुजारी है तो इसका यह मतलब नहीं है कि मैं कोई गई गुजरी या कमजात हूँ। आज भी मेरा बेटा सैंकड़ों से अच्छा है। रूखी-सूखी खाने की कमी न मेरे है और न उसके।"

वह बड़े मलाल के साथ बोलीं—

"आज मुझे वह दिन देखना पड़ा है इस हवेली में, जो मेरे खाबो-खयाल में भी न था। यहाँ हमेशा मेरी इज्ज़त हुई है। छोटे सरकार मेरी गोद में मूत करके इतने बड़े हुए हैं। बड़े सरकार ने कभी मुझे आप से तुम नहीं कहा।"

वह रो पड़ीं। आँसू उनकी आँखों से बह रहे थे कि इतने में ज़ाकिरा बीबी अधनहाई गुसलखाने से बाहर आ गईं।

"क्या हुआ? यह सब क्या हो रहा है?"

रज़िया, नजमा और अकबर तीनों दहाड़ें मार-मारकर रो रहे थे। सईदा रो रही थी और अनवरी उसी तरह मकर किये पड़ी थी। उन्होंने अनवरी को उठाया—

"यह क्या बहू बेगम! कोई बड़ों के साथ ऐसा बर्ताव करता है। मुगलानी बी कोई तुम्हारी गई-गुजरी मुलाजिमा तो है नहीं कि तुम उनके साथ ऐसा सलूक करो। मैं सब सुन रही थी गुसलखाने से।"

वह मुगलानी बी से मुखातिब हुईं—

"माफ करना, मुगलानी बी। उनकी तरफ से मैं तुमसे माफी

माँगती हूँ।"

उन्होंने मुगलानी बी के गालों को देखा। अनवरी की पाँचों उँगलियाँ उनके गालों पर उभरी थीं। अनवरी के दाँत मुगलानी बी की कलाई म गड़ चुके थे। कलाई से खून बह रहा था।

"यह सब क्या किया तुमने ?"

'मुझसे पूछ रही हैं आप ?" अनवरी पूरी ताकत से चीख कर बोली—"इससे पूछिए कि इसने क्या किया है।"

"बहुत बदतमीज हो तुम, दुल्हिन !" ज़ाकिरा बीबी ने दुःख के साथ कहा—"तुमसे बात करना या तुम्हें समझाना गू में ईंट डालने के बराबर है।"

वे मुगलानी बी से मुखातिब हुईं—

"आओ मुगलानी बी।"

वह मुगलानी बी और सईदा को लेकर वहाँ से हट आईं। अनवरी अपने कमरे में चली गई और बीन कर-करके रोने लगी। नौकरानी के साथ मिलकर ज़ाकिरा बीबी ने सईदा और मुगलानी बी की देखभाल शुरू कर दी।

और अभी वे सईदा को कुल्ली करा ही रही थीं और मुलाजिमा मुगलानी बी की कलाई पर पट्टी बांध रही थी कि ताहिर आ गया। उसने यह सब नज़ारा देखा—

"क्या हुआ ?"

"यह सब-कुछ तो तफ़सील से तुम्हारी बेगम साहिबा नमक-मिर्च लगाकर तुम्हें बताएँगी। लेकिन अगर तुमने पूछा है तो इतना सुन लो कि तुम्हारी बेटी नजमा ने मुझे डायन और भिखारिन कहा था और यह कहा था कि मैं तुम्हारे टुकड़ों पर पल रही हूँ। इस पर सईदा ने उसके मुँह पर एक तमाचा दे मारा था। तुम्हारी बेगम ने सईदा को मार-मार कर उसका कचूमर निकाल दिया। मुगलानी बी छुड़ाने गईं तो उन्हें दो सौ गालियाँ देकर तुम्हारी बेगम ने इनके गालों पर तमाचे मारे और कलाई पर काट लिया।"

ज़ाकिरा बीबी ने अपने बेटे ताहिर को वह सब दिखाया। वह बोलीं—

"अब तुम जाकर अपनी बेगम को समझाओ। वह अपने कमरे

में बीन कर रही है।"

"अच्छा !" ताहिर ने ताने से कहा—"मुझे आज मालूम हुआ कि मेरी बीबी अनवरी पागल भी है।"

और यह कहकर वह अनवरी के कमरे में पहुँचा। फिर थोड़ी देर बाद आकर उसने मुगलानी बी को डाँटना शुरू किया—

"देखो जी, तुम कोई लाट साहिबा नहीं हो कि जो जी में आए वह करो। न तुम कोई मुन्सिफ हो कि सईदा और उसकी मामी का फैसला करने खड़ी हो जाओ। तुम इसी वक्त निकलो, इस हवेली से ! तुम जैसी गुस्ताख और जबान दराज औरत की जरूरत यहाँ बिल्कुल नहीं है।"

और फिर वह अपनी माँ से बोला—

"आपकी यह नवासी सारे फिसाद की जड़ है। इसका गुजारा जब बाप के घर नहीं हुआ तो यहाँ क्या होगा ? अगर यह यहाँ सलीके से रह सकती है तो ठीक, वरना इसे यतीमखाने भिजवा दीजिए। मुफ्त की इल्लत पालने की ताकत मुझमें नहीं है। मैं इसकी बेहूदगियों को अब एक सैकिंड भी बर्दाश्त करने को तैयार नहीं। यह आप अच्छी तरह समझ लें।"

इतने में अनवरी भी आ गई। आते ही बोली—

"इस बुढ़िया डायन मुगलानी की बच्ची को तुम इसी वक्त मेरी आँखों से दूर कर दो। वरना मुझसे बुरा कोई न होगा। इसने मेरी बड़ी तौहीन की है।"

"तुम फिक्र न करो, दुल्हिन बेगम !" मुगलानी बी बोलीं—"अब इस हवेली में मेरा रहना भी गाली है। मैं खुद वहाँ रहना न चाहूँगी, जहाँ आपका साया भी पड़े।

"चुप !" ताहिर मुगलानी बी की तरफ लपका—"जबानदराज।"

जाकिरा बीबी बीच में आ गईं—

"खबरदार, ताहिर।"

ताहिर उसी जगह ठिठक कर खड़ा हो गया। वे मुगलानी बी से बोलीं—

"वाकई अब ऐसी जगह जहाँ, इज्जतों का नीलाम हो रहा हो, तुम्हारा रहना ठीक नहीं है, मुगलानी बी ! तुम मेरी फिक्र छोड़कर

यहाँ से चली जाओ ।"

यह कहते-कहते उनकी आवाज़ भर्रा गई । उनकी आँखों से आँसुओं का सैलाब उमड़ पड़ा ।

"एक तुम्हारा सहारा था, सो वह भी लूट लिया गया । अल्लाह मालिक है ।" उनके जिगर से एक हूक उठी—"काश ! मैंने तुम्हारा उस दिन का कहना मान लिया होता !"

और फिर मुगलानी बी, उस हवेली से, जहाँ कि उन्होंने अपनी जिन्दगी के तीस साल गुजारे थे, जाने लगीं । वह ज़ाकिरा बीबी के कदमों से लिपट गईं । ज़ाकिरा बीबी ने उन्हें लिपटा लिया—

"जाते-जाते दुआ देती जाओ, मुगलानी बी !" उनकी आवाज़ लरज गई थी—"कि मेरा भी इस हवेली से जनाज़ा जल्द निकले ।"

वे फूट-फूट कर रोने लगीं । मुगलानी बी ने हिचकियों के दरम्यान कहा—"खुदा न करे, बेगम हुजूर ! इस मासूम बच्ची के लिए खुदा आपको जिन्दा रखे । यह तो सोचिए कि आपके बाद इसका क्या होगा !"

"इसी की तो शर्म है, बीबी ! वरना ज़हर खाकर अपनी इस ज़लील जिन्दगी का मैं खात्मा न कर देती !"

"दिल छोटा न कीजिए, बेगम हुजूर ! मैं आप से दूर जरूर हो रही हूँ, लेकिन मुझे आप अपने करीब हमेशा समझिएगा । लौण्डी हूँ आपकी । हमेशा लौण्डी ही समझ कर याद कर लिया कीजिएगा ।" और यह कह कर वह ज़ाकिरा बीबी के कदमों पर लोट गईं—

"अल्लाह गवाह है, बेगम हुजूर ! मैं आपसे दूर रहकर मर जाऊँगी शायद ! मेरा दिल फटा जा रहा है ।"

"मुगलानी बी !" ज़ाकिरा बीबी ने उन्हें फिर उठाया—"मुझे और ज्यादा बेमौत न मारो । रहम करो मुझ बदनसीब पर । तरस खाओ मेरे ऊपर और ऐसी बातें न करो । काश कि मैं बदनसीब, नसीबों जली बेवा न हुई होती ।"

वह बुलबुला कर बोलीं—

"काश ! मेरी कोख से इस जैसे नालायक इन्सान ने जन्म न लिया होता ! इसके बदले में काश, मेरी कोख से साँप पैदा हुआ होता !"

और फिर मुगलानी बी इस हवेली से हमेशा-हमेशा के लिए चली गईं। ज़ाकिरा बीबी को ऐसा लगा, जैसे कि उनका दिल कोई नोचकर अपने साथ ले गया हो।

और फिर, उनकी और सईदा की जिन्दगी इस घर में अज़ाब बन गई। अब इस घर में अनवरी और उसके बच्चे सईदा के साथ खुल्लम-खुल्ला ज्यादतियाँ करते और वह अपना कलेजा मसोस कर रह जाती। यह तमाशा इस घर में रोज़ का था। मामाएँ और नौकर-चाकर तक अनवरी की शै पाकर सईदा और ज़ाकिरा बीबी के साथ बदतमीजियाँ करते थे। और वह अपना वक्त देख कर तरह दे जाया करती थीं।

एक दिन खाने के वक्त दस्तरख्वान पर अनवरी ने बदतमीजी की। उसने सईदा के मुंह पर एक तमाचा मार दिया—

"लाख दफा मना किया कि इतना बहुत-सा सालन न लिया करो।"

उसने सईदा की प्लेट उठा कर दूर फेंक दी—

"यह सब हराम में नहीं आता।"

ज़ाकिरा बीबी यकबारगी सईदा को लेकर दस्तरख्वान से उठ गईं। वे झुंझला कर बोलीं—

"आज से तुम्हारा खान-पीना हम दोनों को हराम है दुल्हिन !"

ताहिर उसी तरह गुम-सुम बैठा, यह सब देखता और सुनता रहा। उसी वक्त से ज़ाकिरा बेगम ने अपना और सईदा का खाना अलग कर दिया।

इस वाकया को भी एक साल हो गया।

अब उनका ताल्लुक उस खानदान से बराए नाम था। वे दिन भर अगल-थलग अपने कमरे में पड़ी रहती थीं।

अब उनके पास खर्च की तंगी होने लगी थी। जायदाद तो वह सब बेटे के नाम लिख चुकी थीं। जेवरात दुल्हिन को उन्होंने उसकी मुंह दिखाई पर दे दिए थे और अपनी हिमाकत से उन्होंने हबीबगंज भी बहू को दे दिया था।

कुछ बचा-खुचा उनके पास रखा था; उससे वह अपना और सईदा का खर्च पूरा कर रही थीं। उसी में वे सईदा को पढ़ा भी रही थीं।

सईदा माशाअल्लाह बड़ी ज़हीन लड़की थी। वह जल्दी-जल्दी पढ़ रही थी। कुरानशरीफ खत्म करके अब वह उर्दू और फारसी पढ़ रही थी। एक उस्तानी उसे पढ़ाने आती। ज़ाकिरा बीबी उस्तानी को पन्द्रह रुपये महीना तनख्वाह भी देती थीं। एक नौकरानी भी उनके पास थी। और आमदनी कुछ भी नहीं थी। बचा-खुचा सरमाया ही आहिस्ता-आहिस्ता खत्म हो रहा था।

कहने को तो जलील कह गया था कि वह सईदा का हर माह का खर्चा भेज दिया करेगा, लेकिन उसने अब तक ईद-बकरईद पर भी अपनी बच्ची के लिए कुछ न भेजा था और ज़ाकिरा बीबी उसके लिए लिखना नहीं चाहती थीं।

और फिर एक दिन वह भी आया कि ज़ाकिरा बीबी का चूल्हा ठण्डा हो गया। वे बेहद चिन्तित और परेशान बैठी थीं कि सईदा उनके पास आकर कहने लगी—

"नानी अम्मा ! एक बात कहूँ ?"

"कहो बेटी !"

"यह लीजिए !" उसने अपनी सोने की बालियाँ उनकी ओर बढ़ा दीं।

"क्या करूँ इनका ?" ज़ाकिरा बीबी ने हैरान होकर उसे देखा।

"इन्हें उस्तानी बीबी से बिकवा कर पैसे मंगवा लीजिए।"

"मेरी बच्ची !"

उन्होंने सईदा को ज़ोर से लिपटा लिया। ज़िन्दगी में पहली मर्तबा ज़ाकिरा बीबी को अपनी बेबसी का अहसास हुआ। लेकिन वे बड़े हौसले के साथ इस गम को पीती हुई बोलीं—

"पगली ! कहीं बेटी की चीज़ भी कोई बेचता है !"

"तो क्या हुआ, नानी अम्मा !" सईदा मासूमियत से बोली—"यह आप ही ने तो हमें बनवाकर दी थीं। बिकवा दीजिए। जब पैसे अल्लाह हमें देगा, तो फिर बनवा दीजिएगा।"

लेकिन ज़ाकिरा बीबी ने सईदा की इन बालियों को नहीं बेचा। और उस वक्त उनके घर में पहला फाका हुआ। वे दिल ही दिल सोचने लगीं—

"अच्छा हुआ कि उन्होंने दो दिन पहले ही मामा को छुड़ा दिया।

नहीं तो उसके सामने बड़ी सुबकी होती।"

उन्होंने अपने अल्लाह का शुक्र अदा किया—

"शुक्र है, मेरे अल्लाह! तूने मेरी आबरू रख ली।"

और फिर उस रात नानी और नवासी दोनों ही बिना कुछ खाए-पिए ही सो गईं।

सुबह को सईदा ने अपनी नानी अम्मा से पूछा—

"नानी अम्मा, मैं अब्बूजान को एक खत लिखूँ?"

"क्या लिखोगी बेटी! खुदा न करे, क्या यह लिखोगी कि हमारे घर में खाने को कुछ नहीं है। तुमने रात से कुछ नहीं खाया।"

"नहीं-नहीं, नानी अम्मा।" वह बोली—"अल्लाह न करे कि हम यह लिखें, हम तो ये लिखेंगे उन्हें कि आप आखिर हमें भूल क्यों गए हैं? हम बेटी हैं आपकी! वह हमारा हर माह का खर्च क्या हुआ?"

"नहीं बेटी!' उन्होंने सईदा को समझाया—"भूलने वालों को जब खुद से याद न आए तो उन्हें याद नहीं दिलाना चाहिए।"

उन्होंने सईदा को लिपटा लिया—

"और फिर पहले भी तो तुमने उनको दो-चार खत लिखे थे। जवाब दिया उन्होंने?"

"अच्छा, नानी अम्मा! इस दफ़ा मैं बीबी को खत लिखती हूँ। वह तो मुझे बहुत चाहती थीं।"

"बेटी!" ज़ाकिरा बीबी ने सईदा को समझाया—"यह सब उसी का तो किया-धरा है। अगर वह ऐसी न होती तो तुम्हारे अब्बू-जान तुम्हें कभी भी न भूलते।"

"लेकिन वह तो अब्बूजान से ज्यादा हमें प्यार करती थीं।"

"तुम नादान बच्ची हो। तुम्हें क्या मालूम बेटी, कि इसमें भी

उनकी कितनी बड़ी चाल रही होगी ?"

उन्होंने सईदा को बताया—

"तुम्हारे अब्बूजान मुझे कह रहे थे कि वे तुम्हें इसीलिए यहाँ छोड़ने आए हैं कि तुम्हारी सौतेली माँ तुम्हें अपने साथ नहीं रख सकती थी।"

"अजीब बात है।" सईदा बड़ी बेचारगी से बोली—"फिर वे मुझे इतना प्यार क्यों करती हैं ?"

"होगी उसकी कोई मसलहत।" जाकिरा बीबी ने कहा—"और इसमें भी उसकी कोई बहुत बड़ी चाल रही होगी कि जाहिर में वह तुम्हें चाहे और परोक्ष में तुम्हारी राहों में काँटे बिछा दे।"

"अच्छा !"

"हाँ बेटी ! यह दुनिया बड़ी ज़ालिम है।"

सईदा अपनी नानी अम्मा का मुँह ताकने लगी। वह उनका मुँह ताक रही थी कि ज़ाकिरा बीबी का चेहरा खिल उठा। वे बेतहाशा उठकर खड़ी हो गईं।

"क्या बात है नानी अम्मा।"

"अभी बताती हूँ।"

यह कह कर वे अपना बड़ा सन्दूक जाकर खोलने लगीं। वे बड़े इजतराब के आलम में उसकी चीज़ें इधर-उधर उलट-पलट रही थीं। उन्होंने सन्दूक के सारे कपड़े और न जाने क्या-क्या एक तरफ ढेर कर दिया। सईदा बड़े गौर से यह सब देख रही थी। आखिर में सन्दूक की तह में उन्हें सुर्ख रंग की थैली नजर आ गई। उनका चेहरा खिल उठा।

"इसमें क्या है नानी माँ।" सईदा ने बड़े चाव से पूछा।

"अभी बताती हूँ बेटी !"

उन्होंने थैली का डोरा खोला। मारे खुशी के उनकी आँखें चमकने लगीं। उन्होंने वह थैली रखे हुए कपड़ों पर झाड़ी। सौ-सौ के और दस-दस के उसमें से बहुत से नोट निकल कर कपड़ों पर बिखर गए।

"शुक्र है मेरे अल्लाह !" जाकिरा बीबी की आँखों से आँसू टपाटप उन नोटों पर गिरने लगे। सईदा बेअख्तियार अपनी नानी अम्मा

से लिपट गई। बोली—

"रात हमने अल्लाह मियाँ से रो-रोकर दुआ माँगी थी नानी अम्मा !"

"क्या दुआ माँगी थी, बेटी !"

"हमने दुआ माँगी थी—अल्लाह मियाँ ! हमारी नानी अम्मा को कहीं से बहुत से रुपए दे दीजिए।"

"तो यह तुम्हारी ही दुआओं का नतीजा है, न जाने कब के ये रखे हुए रुपये मुझे एकदम याद आ गये। पहले से याद होते, तो न जाने कब के खत्म भी हो चुके होते।"

ज़ाकिरा बीबी ने उन रुपयों को गिना। पूरे साढ़े पांच हज़ार थे।

"बहुत बड़ा कारसाज है तू मेरे अल्लाह !" उनके मुँह से निकला।

वे यकबारगी सईदा से कहने लगीं—

"देखो बेटी, तुम किसी से भी इन रुपयों का ज़िक्र न करना।"

"नहीं नानी अम्मा !" सईदा बोली—"हम किसी से ज़िक्र न करेंगे।"

एक वक्त के फाका के बाद सईदा की नानी अम्मा का चूल्हा फिर से रोशन हो उठा।

साल भर और बीत गया।

सईदा के बाप का कोई खत उसके पास न आया। उसकी खबर किसी ने भी न ली सिवाए मुगलानी बी के जो कभी-कभी आ जाया करती थीं।

"मेरे अल्लाह !"

यकबारगी ज़ाकिरा बीबी के मुँह से निकला और वे चौंक पड़ीं—

"ला इलाह इल्लल्लाह।"

मोज़्ज़न ने सुबह की अज़ान खत्म की। उनके खयालात का सिलसिला टूट गया। दुआ के लिए उन्होंने अपने हाथ ऊपर उठाए। अज़ान की इस दुआ के बाद उन्होंने एक नज़र अपनी बच्ची सईदा पर डाली। वह अभी तक गफलत की नींद सो रही थी। वे नमाज़ पढ़ने के लिए उठ गईं। उन्होंने नमाज़ के बाद इन्तहाई खुलूस के साथ अपने रब से दुआ की—

"ऐ मेरे अल्लाह पाक ! तू अपने हबीब पाक के सदके में मेरी सईदा को अच्छा कर दे। रहम फरमा उस बे-माँ-बाप की बच्ची पर। कोई रास्ता हम लोगों के लिए ऐसा पैदा कर दे मेरे अल्लाह, कि बगैर किसी का अहसान लिए हम अपना आप पूरा कर सकें। हम पर रहम फरमा, मेरे करीम !"

उनकी आँखें बरसने लगीं—

"सईदा का बुखार अभी तक हल्का नहीं हुआ। वह उसी तरह गफलत में पड़ी है।"

वे नमाज़ और दुआ खत्म करके मुसल्ले पर से उठीं। उन्होंने सईदा को फूंका। उसकी पेशानी पर उन्होंने अपना प्यार भरा हाथ रखा। वे यकबारगी खुश हो गईं। सईदा का बुखार उतर चुका था।

उनके हाथ रखने पर सईदा की आँख खुल गई। उसने पट से अपनी आँखें खोल दीं। उसने बड़े प्यार से कहा—

"नानी अम्मा !"

"जी बेटी।" वह इन्तहाई प्यार से बोलीं।

"अब हमारी तबियत अच्छी है नानी अम्मा !"

"अल्लाह का शुक्र है बेटी !" वे प्यार से सईदा को लिपटा कर बोलीं—"अल्लाह करे, तुम हमेशा अच्छी रहो।"

"हमें भूख लगी है नानी अम्मा !"

"अच्छा बेटी ! हम तुम्हारा हाथ-मुँह धुलाए देते हैं। फिर तुम नाश्ता करना।"

"हमारा बदन दुख रहा है नानी अम्मा" वह एक हल्की-सी कराह के साथ करवट बदलते हुए बोली।

"मारा जो है इस बेरहमी से उस खुदा की ख्वार ने।" उन्होंने झल्लाकर बद्दुआ दी—"खुदा समझे इस ताहिर नामुराद को। मज-लूम पर जुल्म किया है उसने। खुदा उसे कभी माफ न करेगा।"

"मामू साहिब बहुत बुरे हो गए हैं, नानी अम्मा।"

"वह बदनसीब बुरा था कब नहीं !"

"हमने उनका बिगाड़ा क्या है, नानी अम्मा।"

"यही बेटी कि हमने उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ा।"

"एक बात मैं कहती हूँ, नानी अम्मा, मैं मामू साहिब से, ममानी

जान से और रज़िया, नजमा, अकबर से अब कभी बात नहीं करूँगी।"

"बिल्कुल ठीक है, बेटी।" ज़ाकिरा बीबी ने ताईद की—"ऐसे कमीने और बेरहमों से बात न करना ही शराफ़त है। मैं खुद उनसे कोई बात न करूँगी।"

"मैं मामू साहिब और ममानी जान से अब दबूँगी भी नहीं।" वह नफ़रत से कह रही थी—"हम उनका कोई दिया खाते हैं क्या? लिहाज करने और दबने की भी एक हद होती है।" उसे अपने मामू साहिब से अब दिल से नफरत पैदा हो गई थी। उसके मासूम दिल में इन सबके खिलाफ बगावत की आग भड़क उठी थी। वह बेजारी से बोली—"अब मुझें मामू साहब कभी हाथ लगा कर तो देखें!"

"हिम्मत है अब उस मुए, नामुराद की! मैं अब की दफ़ा उसका खून न पी जाऊँ तो फिर कहना बेटी!"

"अरे!" सईदा एक बारगी अरे कहकर उठने लगी।

ज़ाकिरा बीबी घबरा गईं। बोलीं—

"क्या हुआ, बेटी?"

"सुबह की नमाज़ मैंने नहीं पढ़ी नानी अम्मा!" वह उठ गई—"बाप रे बाप!"

"अब नमाज़ का वक्त नहीं है, बेटी।" ज़ाकिरा बीबी ने उसे रोका—"तुम लेटी रहो। मैं तुम्हारा मुंह-हाथ धोने के लिये पानी गर्म कर दूं। फिर उठना।"

"आपने नमाज़ पढ़ ली?"

"हाँ, बेटी!"

"फिर आपने हमें क्यों न जगाया?"

"तुम्हारी तबियत जो खराब थी, बच्ची!" वे सईदा को प्यार करते हुए बोलीं—"कोई बात नहीं। तुम कजा पढ़ लेना।"

"नमाज़ तो फर्ज़ है, नानी अम्मा!" वह बड़े रंज के साथ कहने लगी—"ऐ अल्लाह! हमारी नमाज़ कज़ा हो गई।"

"अल्लाह मियाँ तुम्हें माफ कर देंगे, बेटी! रंज न करो। तुम बीमार थी न!"

"आप ही ने तो हमें बताया था, नानी अम्मा कि नमाज़ किसी हालत में भी माफ नहीं है।"

"हां-हां ! वह ठीक है। लेकिन—"

"नहीं—नानी अम्मा हमें बड़ा रंज हो रहा है।" वह दिल से बोली—"अल्लाह मियां हमें माफ कर देना। हम नामुराद सो गए थे।"

मासूम सईदा की इस लगन को देखकर ज़ाकिरा बीबी का जी बहुत खुश हुआ। उन्होंने सईदा को बेअख्तयार अपने कलेजे से भींच लिया। और फिर वे मामा के आने का इन्तजार किए बगैर ही उठकर मुंह-हाथ धोने के लिए पानी गर्म करने लगीं सईदा के लिए।

दिन के दस बजे का वक्त था। सईदा अभी हवेली की छत पर गई ही थी कि रज़िया उसके पीछे-पीछे ऊपर आई। वह इन्तहाई घृणा तथा बेज़ारी से उसकी तरफ जलते अन्दाज़ से देखकर बोली—

"तुम फिर आ गईं छत पर ?"

"हाँ आ गईं फिर ! तुम्हें क्या ?" सईदा ने रज़िया को उसी अन्दाज़ में जवाब दिया।

"कल इसी बात पर तुम्हें हमारी अम्मी ने मारा था न !"

"अब मार कर देखें !" सईदा बोली—"हम अपनी नानी अम्मा से पूछ कर ऊपर आये हैं।"

"हूँ, नानी अम्मा !" रज़िया ने मुंह चिढ़ाया—"तुम्हारी नानी अम्मा की सुनता ही कौन है इस घर में।"

"कोई सुने या न सुने हम तो सुनते हैं अपनी नानी अम्मा की हर बात !"

"तो यह छत कोई तुम्हारी नानी अम्मा के बाप की है ?"

"तो तुम्हारी अम्मा के बाप की भी नहीं है।" सईदा ने जो कि अब इन लोगों से न दबने का फैसला कर चुकी थी तुर्की-ब-तुर्की जवाब दिया।

"तो तुम्हारे बाप की भी नहीं है।" रज़िया हिकारत से बोली—"हाँ, अलबत्ता हमारे बाप की है यह छत !"

"हुआ करे।" सईदा बोली—"आप हम से बक-बक मत कीजिये।"

"मैं बक-बक कर रही हूँ ?"

"हम आपसे बात करना नहीं चाहते।" सईदा ने कहा और अपना मुँह दूसरी तरफ फेर लिया।

रज़िया गुस्से में भरी तनतनाई हुई नीचे उतर गई। वह जाते ही अपनी अम्मा से बोली—

"वह सईदा है न अम्मी सईदा, उसका दिमाग तो अब पहले से भी कहीं ज्यादा खराब हो गया है।"

"क्या हुआ?"

"फिर कोठे पर चढ़ी है। मैंने कहा कि अम्मी खफा होंगी तो कहने लगी कि मैं तुम्हारी अम्मी को जूती पर मारती हूँ।"

"अच्छा।"

"हाँ अम्मी।" रज़िया ने उस पर इलज़ाम तराशा—"वह अपको और अब्बा जी दोनों को गालियाँ देने लगी। कह रही थी कि छत तुम्हारे बाप की नहीं है।"

अनवरी ने लपककर रज़िया का गरेबान फाड़ डाला। रज़िया अपनी माँ की इस हरकत पर सहम गई। अनवरी बोली—

"यह इसलिए बेटी कि तुम अपने अब्बा जी से कहना कि सईदा ने मुझे मारा और मेरी कमीज़ फाड़ डाली। यह तुम उन्हें दिखाना।"

वह उठते हुए फिर बोली—

"बस, अब वे आने ही वाले होंगे।"

"अब्बा जी बाहर मर्दाने में बैठे हैं।" नज़मा ने बताया—"वे कहीं गए थोड़े ही हैं।"

"अच्छा!" रज़िया ने नथुने फुलाते हुए कहा—"मैं उन्हें अभी बुलवाती हूँ।"

"जाकर बाहर से मियाँ को तो बुला लाओ!"

उसने मुलाजिमा को हुक्म दिया। और फिर वह छत की तरफ लपकी। इतने में सईदा छत पर से नीचे आ रही थी। अनवरी उस जगह खड़ी हो गई। जब सईदा नीचे उतर कर आ गई, तो उसने उसे खा जाने वाली नजरों से देखा—

"तुम कहाँ गई थीं?"

"छत पर।"

"क्यों?"

"मेरा जी चाहा था।"

सईदा के इस बरजस्ता जवाब पर वह हैरान रह गई। उसने

तेज़ होकर कहा—

"मैं पूछ रही हूँ तुम ऊपर क्यों गईं थीं ?"

"हमने अपनी नानी अम्मा से पूछ लिया था।"

"तुम्हें ऊपर जाने की इजाज़त देने वाली तुम्हारी नानी अम्मा कौन होती हैं ?"

सईदा को बड़े ज़ोर का गुस्सा आ गया। बोली—

"और आप कौन होती हैं हमें मना करने वाली ?"

"अच्छा !" अनवरी ने अभी मारने के लिए थप्पड़ उठाया ही था कि ज़ाकिरा बीबी आ गईं। वे चीख कर बोलीं—

"खबरदार, अगर तुमने मेरी बेटी पर हाथ उठाया।"

अनवरी यकबारगी रुक गई। वे करीब आकर बोलीं—

"लावारिस क्या तुमने इस बच्ची को समझ रखा है ? अब अगर एक उंगली भी किसी ने उस पर उछाली, तो मुझसे बुरा कोई न होगा।"

"यह कोठे पर क्यों गई थी ?"

'मुझसे पूछ कर गई थी, तुम्हें क्या ?"

'नाक कटवायेगी एक दिन खानदान की तो मालूम होगा।"

"चुप रहो बदतमीज़।" ज़ाकिरा बीबी ने अनवरी को डाँटा—"अब अगर ऐसी-वैसी बात मुंह से निकाली तुमने तो मुझ से बुरा कोई न होगा।"

"अच्छा—!" अनवरी बोली—"मेरी बला से ! लेकिन इसने रज़िया को मारा क्यों, उसका गरेबान इसने क्यों फाड़ा ?"

"यह सब झूठ है !" सईदा ने कहा—"मैंने न तो रज़िया बहिन को मारा है, और न उनका गरेबान ही फाड़ा है।"

"फिर यह गरेबान कैसे फट गया उसका ?"

"मैं पागल हूँ, या मेरे सिर पर सींग हैं ?"

"पागलों के सिर पर सींग नहीं होते दुल्हिन !"

ज़ाकिरा बीबी ने नफ़रत से अनवरी को देखते हुए जवाब दिया। वे सईदा से मुख़ातिब हुईं—

"आओ, बेटी !"

और इतने में ताहिर आ गया।

"फिर हंगामा खड़ा हो गया घर में !" वह आते ही बरस पड़ा—"यह सब आख़िर क्या हो रहा है ?"

"वही पुराना रोना ! यह फिर कोठे पर गई थी। रज़िया ने मना किया तो इसने मुझे और आपको गालियाँ दीं। बाप-दादा करने लगी। रज़िया को मारा भी और उसका गरेबान फाड़ डाला। यह देखिये !"

अनवरी ने ताहिर को रज़िया का फटा हुआ गरेबान दिखाया।

"मुझे भी इतनी देर से बराबर तड़ातड़ जवाब दे रही है।"

'क्यों री चुड़ैल !" ताहिर सईदा की तरफ़ बढ़ा—"कल की मार भूल गई ?"

"कल की मार यह तो क्या, मैं भी क़यामत तक न भूलूंगी। खुद खुदा भी न भूलेगा। लेकिन कल की मार अब कभी न दुहराई जायगी।"

ज़ाकिरा बीबी ने ताहिर की तरफ़ हिक़ारत से देखते हुए कहा—

'तुम इस बच्ची को खिला-पीला नहीं रहे। न इसका खर्च उठा रहे हो कि वह तुम्हारी जा-बेजा मार सहती रहे।"

"मैं इसे जान से मार डालूंगा।"

"उँगली छुआ कर तो देखो !" ज़ाकिरा बीबी गर्जी—"तुम्हारी और अपनी जान एक न कर दूं तो ! कोई रोज़-रोज़ का मज़ाक समझ रखा है क्या ? कल नहीं बोली, खून का घूंट पीकर रह गई हूँ, तो क्या आज भी इस बेज़बान को इस तरह पीटते देख लूंगी ? हाथ तुम्हारे न तोड़ दूंगी !"

"अम्मी जान !" ताहिर गला फाड़ कर चिल्लाया—"मैं कहता हूँ मुझ से बुरा कोई न होगा !"

"नई बात तुम कौन-सी बता रहे हो ?"

"आख़िर आप चाहती क्या हैं ?"

"तुम क्या चाहते हो ?"

"मैं इस नाबकार सईदा को इस घर में नहीं रखना चाहता !"

"वह तो रहेगी !" ज़ाकिरा बीबी ने जवाब दिया—"जब तक मैं रहूँगी, वह भी रहेगी।"

"तो आप भी न रहिये, इस घर में।"

अनवरी बरबस बोली। उसने सोचा, शायद उसका शोहर यह जवाब सुनकर खामोश रह जायगा। लिहाजा वह बीच में बोल पड़ी—

"आप बड़े शौक से जा सकती हैं।"

"यह तुम कह रही हो?"

"यह मैं भी कह रहा हूँ।" ताहिर ने अनवरी से ताईद की—"मैं अब मजबूर हूँ, यह कहने पर कि आप भी यहां से तशरीफ़ ले जाइये। यह रोज-रोज की बक-बक मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं।"

ज़ाकिरा बीबी ने अपने बेटे ताहिर को बड़े गौर से देखा। बावजूद इन्तहाई जब्त के उनकी आंखें भर आईं। वे खून के घूंट पी रही थीं कि अनवरी बोली—

"अब तो बात साफ़ हो गई न! तशरीफ़ ले जाइये आप!"

"मुझे क्या मालूम था कि यह इतना ज़लील निकलेगा, जिसे अपना खून पिलाकर मैंने पाला है।" वे अनवरी से बोलीं—"मुझे तुमसे नहीं इस कमीने से शिकायत है। काश, यह पैदा होते ही मर जाता!"

"तुम्हारे मुंह में खाक!" अनवरी इन्तहाई बदतमीज़ी के साथ बोली—"उनके दुश्मन मरते। या वे जो उनका बुरा चाहते थे!"

"ज़लील, दो टके की छोकरी!" ज़ाकिरा बीबी जलबुला गई—"खुदा करे की तेरी ज़बान में कीड़े पड़ें। तेरा किया-धरा आगे आए तेरे! अहसान फ़रामोश ज़माने भर की!"

"बस-बस!" ताहिर ने झुंझलाते हुए जवाब दिया। वह अपनी बेगम की तरफ़ से बोला—

"बहुत ज़बान अब तुम न चलाओ, बड़ी बी! वरना मुझसे बुरा कोई न होगा।"

यह एक नालायक़ बेटा अपनी मां से कह रहा था। उस मां को, जिसने उसे पैदा किया था और जिसने अपनी सारी जायदाद उसके नाम लिख दी थी। जिसने अपना सब कुछ उसके ऊपर कुर्बान कर दिया था।

"कमीना कहीं का!" ज़ाकिरा बीबी अपने दांत पीसने लगीं—"आज से मेरा-तेरा हर रिश्ता खत्म हो गया। क़सम मौला की मैं

तेरा दूध कभी न बख़्शूँगी। मैं अब यहाँ न रहूँगी। ख़ुदा की ज़मीन बहुत बड़ी है। मैं वियाबानों और जंगलों में रह लूँगी, लेकिन यहाँ नहीं रहूँगी।"

"हाँ-हाँ न रहो !" अनवरी बोली—"तुम्हें रोकता कौन है ? हवेली हमारी खाली करो !"

ज़ाकिरा बीबी कुछ सोचकर बोलीं—

"लेकिन तू मुझे इस हवेली से निकालने वाली कौन है ?"

उन्होंने ताहिर से कहा—

"यह शायद तू भूल गया है, अहसान फ़रामोश, कि यह कोठी तेरी नहीं बल्कि मेरी है। मैंने जागीर तेरे नाम लिखवा दी है। हबीबगंज मैंने तेरी बातों में आकर तेरी इस कमीनी औरत को बख़्श दिया है। अपना सारा जेवर मैंने इसे दे डाला है, लेकिन यह कोठी मैंने किसी को नहीं दी।"

वे ज़ोर देकर बोलीं—

"मैं पहले तो लिहाज़ कर रही थी, लेकिन अब मैं कह रही हूँ कि यह कोठी मेरी मलकियत है। तुम सब निकल जाओ इस कोठी से। यह हवेली मेरी है। अब इस हवेली से मैं नहीं निकलूँगी, बल्कि तुम लोग निकलोगे।"

ज़ाकिरा बीबी के मुँह से यह सब कुछ सुन कर अनवरी का मुँह फ़क हो गया, वह सोचने लगी कि यह तो उल्टी आँतें गले पड़ीं। ताहिर अलबत्ता निराश नहीं था। वह इन्तहाई मसख़रेपन की नज़रों से अपनी माँ को देख रहा था। एक ज़ोर का कहकहा लगा कर बोला—

"ग़लतफ़हमी है आपको। जागीर के साथ-साथ यह हवेली भी मेरे नाम हो चुकी है। कहिये काग़ज़ात लाकर आपको दिखा दूँ ?"

और यह कह कर वह अपनी माँ के जवाब का इन्तज़ार किए बग़ैर कमरे की तरफ़ लपका और थोड़ी-सी देर में काग़ज़ात लेकर वापिस आ गया। उसने वे काग़ज़ात अपनी माँ की तरफ़ फेंक दिए।

"उर्दू में यह है दस्तावेज़।" वह व्यंग्य से मुस्कराया—"पढ़ लीजिए। जागीर ही नहीं, बल्कि कोठी भी मेरे नाम लिखी हुई है।"

"लेकिन—"

वह हँसा। उसने अपनी माँ का शक दूर कर दिया—

"मैंने जागीर के साथ-साथ कोठी भी इसमें लिखवा दी थी। दस्तखत करते समय आपने दस्तावेज़ पढ़ी नहीं थी।"

अनवरी का चेहरा यकबारगी चमक उठा। वह बेअख्तयार मुस्कराए जा रही थी। बोली—

"बड़ी अक़्लमन्दी से आपने काम लिया था। बड़ी दूर की सोची थी आपने।"

ताहिर मुस्कराया—

"इसी दिन के लिए।"

"हाँ, ठीक है।" ज़ाकिरा बेगम एक सर्द आह के साथ बोलीं—"इसने दूर की बात सोच ली थी, लेकिन मैंने इस दिन के लिए कुछ नहीं सोचा था। वरना कम-अज़-कम मैं दस्तावेज़ पढ़ ज़रूर लेती। या फिर इस दस्तावेज़ की नौबत ही न आती।"

ताहिर ने आगे बढ़कर वह जगह दिखाई जिस जगह पर हवेली की बात लिखी हुई थी—

"यह देखिए, हवेली भी लिखी हुई है।"

और यह कह कर वह पीछे हट गया।

ज़ाकिरा बेगम ने दस्तावेज़ ग़ौर से देख कर ताहिर की तरफ़ देखा—

"वाक़ई, तुम बहुत अक़्लमन्द हो।"

दस्तावेज़ अभी तक उनके हाथ में थी। अनवरी ने चुपके से ताहिर से कहा—

"काग़ज़ात इनके हाथ में क्यों दे दिए? न दें या फाड़ डालें तो?"

"मैं खुदा न करे, तुम लोगों जैसी ज़लील हो जाऊं।" और यह कह कर काग़ज़ात उन्होंने अनवरी के मुंह पर फेंक दिए—

"इसे भर लो अपने कलेजे में!"

ताहिर ने मुस्कराकर अनवरी से कहा—

"ये काग़ज़ात अगर ये फाड़ भी डालें तो क्या होता है! इसकी नकल तो अदालत में मौजूद है।"

वह मुस्कराया—

"तुम भी क्या समझती हो, बेगम, तुम्हारा दूल्हा कच्ची गोलियाँ खेले हुए है ?"

"मैं इसी वक़्त तुम्हारी हवेली खाली किए दे रही हूँ।" ज़ाकिरा बेगम ने ताहिर से कहा। फिर वे सईदा से मुखातिब हुईं—

"आओ बेटी, हम अपना सामान समेट लें।"

"लेकिन हम जायँगे कहाँ, नानी अम्मा ?" सईदा, जो कि ग़मों में डूबी हुई थी, सहमकर बोली।

"अल्लाह बहुत बड़ा है, बेटी !" उन्होंने सईदा को तसल्ली दी —"इन्सान को हर वक़्त अपने रब का भरोसा रखना चाहिए, बेटी ! यह मुआ बन्दा क्या चीज़ है !"

वे दोनों वहाँ से अपने कमरे में आईं। ज़ाकिरा बेगम अपना सामान समेटने लगीं। सईदा भी उस काम में उनकी मदद कर रही थी। उन्होंने अपनी मुलाज़िमा से कहा—

"बाहर जाकर किसी मुलाज़िम से कहो कि वह तहसील जा कर हमारे लिए गाड़ी ले आए।"

"बहुत अच्छा, बेगम हुजूर !"

मुलाज़िमा गाड़ी लेने चली गई। सईदा ने फिर सवाल किया—

"सोच लिया, नानी अम्मा, कि हम कहाँ जायँगे ?"

"सोच रही हूँ, बेटी !" वे अपने आँसू पौंछते हुए बोलीं।

"हम मुग़लानी बी के यहाँ चले जायँ तो—?"

सईदा ने राय दी। ज़ाकिरा बेगम यकबारगी बोल पड़ीं—

"अरे हाँ ! शाबाश बेटी ! जीती रहो।" उन्होंने सईदा की पेशानी चूम ली—"उनसे बड़ा हमदर्द मेरा इस जहान में और कौन है, बेटी।"

"हम मुग़लानी बी के पास ही जायँगे।"

"कब तक हम वहाँ रहेंगे, नानी अम्मा ?"

"कुछ दिनों तक। फिर हम अपना बन्दोबस्त कहीं और कर लेंगे।"

"उनके घर का पता आपको मालूम है, नानी अम्मा ?"

"हाँ, बेटी ! वे कानपुर में रहती हैं। मुहल्ला तलाक़ महल में। उनके बेटे का नाम रज़ीउद्दीन है। वह कानपुर में एक मिल में ठेके-

दार है। हम लोग वहीं चलेंगे। फिर वहीं कानपुर में हमें कोई मकान किराए पर मिल ही जायगा !"

और फिर उसी शाम ज़ाकिरा बीबी सईदा और अपनी मुलाजिमा को साथ लेकर कानपुर के लिए रवाना हो गईं। चलते वक़्त उन्होंने हवेली के हर दरो-दीवार को हसरत के साथ देखा था। उनकी आँखें सावन-भादों की तरह बरसी थीं। लेकिन उन्हें तसल्ली देने वाला उनकी सईदा के सिवाए कोई न था। उनके चलते वक़्त ताहिर या कोई और नौकर खड़ा भी नहीं हुआ था आकर।

और वे बड़ी बेबसी के साथ अहमदपुर से हमेशा-हमेशा के लिए जा रही थीं।

रात के नौ बजे जब इक्का मुग़लानी बी के घर के आगे जाकर रुका तो वह हैरान रह गईं। भला उनके यहाँ इस वक़्त कौन आ सकता है ? उन्होंने सोचा। उधर इक्के वाले ने आवाज़ लगाई—

"सवारियाँ आई हैं।"

तो वह भड़भड़ा कर भागीं और दरवाजे से लगकर देखने लगीं। दो इक्के खड़े थे। एक पर सामान लदा हुआ था और दूसरे पर पर्दा बन्द था। सईदा सबसे पहले बुर्क़ा ओढ़े हुए उतरी और जाते ही मुग़लानी बी से लिपट गई। उसने अन्दर पहुँचकर नकाब उलट दी—

"अरे ! हमारी छोटी शहज़ादी !"

वह हैरत और खुशी से पागल हो गईं। सईदा को बेअख़्तयार लिपटा कर वह बग़ैर बेपर्दगी का ख़याल किए इक्के की तरफ भागीं। ज़ाकिरा बीबी को बड़े आदर से उन्होंने उतारा और उन्हें अन्दर लाकर वह बेअख़्तयार उनके कदमों पर लिपट गईं—

"बेगम हुज़ूर ! खुदा जानता है कि मेरा दिल मारे खुशी के फटा जा रहा है। बहुत बड़ी इज़्ज़त इस लौंडी को आपने बख़्शी है।"

खुशी के आंसू उनकी आँखों से जारो-कतार बह रहे थे। उन्होंने अपने बेटे को आवाज़ दी—

"बेटा रज़ी उद्दीन ! सामान उतरवा लो।"

वह ज़ाकिरा बीबी और सईदा को लेकर अन्दर कमरे में आ गईं। उनके बेटे ने सारा सामान उतरवा कर और इक्के वाले को किराया देकर रवाना कर दिया। वह बाहर वाले कमरे में ही बैठ गया।

ज़ाकिरा बीबी ने मुगलानी बी को अपनी सारी दास्तान सुनाई। वे अपनी दास्तान, दुःख भरी दास्तान सुना रही थीं और मुगलानी बी का रोते-रोते बुरा हाल हो रहा था। साथ ही वे मालकिन को तसल्ली भी देती जा रही थीं।

अन्त में बोलीं—

"मुझे सबसे बड़ी खुशी तो यह हो रही है, बेगम हुज़ूर, कि आपने अपनी इस लौंडी को अपना समझा। बड़ी इज़्ज़त आपने मुझे बख्शी। फ़ख्र और गरूर से आपने अपनी इस कनीज का सर ऊँचा कर दिया। गुलामी का मौका देकर आपने मेरी और मेरे बच्चों की आकबत सुधार दी।"

वह रुँधे हुए स्वर में कह रही थीं—

"अब आप कोई फिक्र न कीजिए, बेगम हुज़ूर। यहाँ जो कुछ है, वह सब आप ही की जूतियों का सदका है। वह सब आप की ही बख्शीश है। अगर आप अपनी जवानी में ही बेवा हो जाने वाली इस नाचीज कनीज को पनाह न देतीं, तो न जाने मेरा और मेरे बेटे रज़ी उद्दीन का क्या होता। यह आपका और बड़े सरकार का अहसान है कि मेरा बेटा परवान चढ़ा। लिख-पढ़ लिया उसने। और आज माशा अल्लाह वह चार पैसे कमा रहा है। वह यहाँ मिल में ठेकेदारी कर रहा है और महीने के चार-पाँच सौ ले आता है।"

उन्होंने ज़ाकिरा बीबी के पाँव पकड़ लिए—

"यह सब आपका है, बेगम हुज़ूर ! हम सब आपके गुलाम हैं। मैं आपकी कनीज हूँ। मेरी बहू आपकी कनीज है। मेरा बेटा और दोनों उसके बच्चे आपके खिदमत गुज़ार हैं। आपको इस गरीबखाने पर अल्लाह ने चाहा तो कभी कोई तकलीफ न होगी। हम सब

अपनी-अपनी खाल उतार कर आपकी जूती बनवा सकते हैं।"

वह बड़ी अकीदत से बोलीं—

"और इस पर हमें फख्र होगा।"

"यह तुम्हारा शरीफ खून है, मुगलानी बी! यह तुम्हारे ईमान की पुख्तगी है। यह इस बात का सबूत है कि तुम फितरतन शरीफ हो। वरना इस जमाने में कौन किसी को याद रखता है। आज तो सगा बेटा अपना नहीं होता!"

उन्होंने मुगलानी बी से फिर कहा—

"लेकिन तुम अब अपने को बार-बार कनीज और मवातरी गुलाम मत कहो। बखुदा मैंने हमेशा तुम्हें अपनी बहन माना है। तुम मेरी बहन हो।"

"यह आपका दिया हुआ मर्तबा है, बेगम हुजूर, जिस पर मैं मरते दम तक फख्र करूंगी। मेरे बच्चे जिस पर हमेशा नाज करेंगे। लेकिन मुझसे यह सआदत न छीनिए कि मैं अपने आपको आपकी कनीज कहूँ। मैं और बेटा दोनों आपके शाही दस्तरख्वान के टुकड़ों पर पले हैं, बेगम हुजूर! हम मां-बेटों की रगों में आप ही का बख्शा हुआ रिज़क खून की शक्ल में दौड़ रहा है। आप ही ने रज़ी उद्दीन को पढ़ाया-लिखाया था और अगर मेरे ये अहसासात न होते, बेगम हुजूर, तो मैं कब की अपने बेटे के साथ आकर रहने लगती। लेकिन आपकी गुलामी और आपकी खिदमत मेरा ईमान है! वह तो मैं निकाल दी गई वहाँ से, वरना उस हवेली की चौखट से मैं नहीं, बल्कि मेरी लाश निकलती। जनाज़ा ही निकलता वहाँ से मेरा।"

"तो मैं कहाँ नहीं निकाल दी गई हूँ वहाँ से?" ज़ाकिरा बीबी ने एक सर्द आह ली—"हम दोनों ही वहाँ से निकाले गए हैं।"

"आप तो वहाँ इंशा अल्लाह फिर जायेंगी।"

"मैं अब वहाँ थूकूं भी नहीं, मुगलानी बी! मुझे इस जलील बेटे के रहमो-करम की बिल्कुल जरूरत नहीं है।"

"खुदा न करे कि आप वहाँ पर किसी के रहमो-करम पर वापिस जायें।" मुगलानी बी ने सईदा को भींचकर कहा—

"मेरी इस शहज़ादी बेटी का हक है उस कोठी पर। यह अपने जायज हक के साथ वहाँ शान के साथ दाखिल होगी उस हवेली में।"

और यह सुनकर ज़ाकिरा बीबी का मुंह खुला का खुला रह गया। वे जैसे कि चीख पड़ीं—

"अरे !" उन्होंने अपनी पेशानी पर हाथ मारा—"मुझ निगोड़ी को यह याद ही नहीं आया कि उस हवेली और उस जागीर पर माँ की तरफ से इसका भी हक है।"

"वह कैसे, नानी अम्मा ?" सईदा ने भोलेपन से पूछा—"मेरा हक कैसे हुआ उस हवेली पर ?"

"बेटी, तुम रुखसाना की बेटी हो। रुखसाना का उस कोठी और जागीर पर एक तिहाई का हक है। रुखसाना की तरफ से यह हक तुम्हें पहुँचता है।"

"अच्छा !" सईदा खुश होकर बोली—"और हमारा वह हक मामू साहिब मारे बैठे हैं।"

"हाँ बेटी।" मुगलानी बी बोलीं।

"कोई बात नहीं।" ज़ाकिरा बीबी ने नफरत से दाँत भींचकर कहा—"अब उस नामुराद को जागीर और हवेली का एक तिहाई हिस्सा देना पड़ेगा। मैं कल ही उसे सईदा की तरफ से मुख्तार बन-कर वकील का नोटिस दिलवाती हूँ। जागीर के एक तिहाई हिस्से का सारा रुपया उसे डिप्टी साहब की वफात के बाद से लेकर आज तक का यकमुश्त चुकाना पड़ेगा।"

"बिल्कुल, बेगम हुज़ूर।" मुगलानी बी बोलीं—"मेरा बेटा कल ही कानपुर के सबसे बड़े वकील के पास मशविरे के लिए जायगा। इस मुकद्दमे पर जितना रुपया खर्च होगा, आपकी यह कनीज और इसका बेटा खर्च करेगा।"

"नहीं, रुपया मेरे पास है।" ज़ाकिरा बीबी ने मुगलानी बी को बताया—"कभी का पस-अन्दाज़ किया हुआ वह रुपया, जो कि मैं भूल गई थी, उस बुरे वक्त में मेरे काम आ गया था, मुगलानी बी। साढ़े पांच हज़ार था। अब उसमें से पौने चार हज़ार बच रहा है।"

और फिर यही सब बातें करते हुए रात के बारह बज गए थे। खाना-वाना खाकर सब सो गए। मुगलानी बी के यहाँ आकर ज़ाकिरा बीबी और सईदा को कल्बी सकून मिला था।

दोनों गहरी नींद सो रही थीं।

आठ

ज़ाकिरा बीबी, मुगलानी बी के बेहद इसरार पर उनके मकान में एक हफ्ता रहीं। और फिर उसके बाद वे उसी मुहल्ले में मुगलानी बी के मकान के नजदीक ही एक दूसरे मकान में रहने चली गई। यह मकान मुगलानी बी के बेटे रज़ी उद्दीन के अहतमाम और इन्तज़ाम से उन्हें मिला था। उसने इस मकान को बना और संवार उनके लिए आरास्ता किया था। सब सामान ठीक से लगाया था और फिर ज़ाकिरा बीबी, सईदा और मुगलानी बी वहाँ आ गई थीं। ज़ाकिरा बीबी की मामा भी, जिसे वह अहमदपुर से साथ लेकर आई थीं, उनके साथ थी।

यह मुगलानी बी का इसरार था कि वह पहले की तरह ही अपनी बेगम हुज़ूर के साथ रहेंगी। और उनकी खिदमत में ही अपनी ज़िन्दगी गुज़ार देंगी। वे अपने बेटे, बहू और पोती-पोते छोड़कर यहाँ आई थीं।

कानपुर के मशहूर वकील का नोटिस ताहिर को भेजा जा चुका था। ज़ाकिरा बेगम की तरफ से सईदा के हिस्से का मुतालबा कर दिया गया था और यह नोटिस हवेली और जागीर दोनों के सिलसिले में था। जागीर की आमदनी का ग्यारह बरस का मुतालबा एक साथ किया गया था। नोटिस का जवाब एक हफ्ते के अन्दर-अन्दर माँगा गया था और सारे रुपये के साथ वरना कानूनी चारा-जोई की धमकी दी गई थी।

जिस वक्त यह नोटिस ताहिर के हाथों में पहुँचा तो उसके हाथों के तोते उड़ गये। वह नोटिस लिए हुए अन्दर आया। उसने आते ही अनवरी से कहा—

"हम अब मर गए ।"

"क्या हुआ ?"

"हमारी अम्मीजान साहिबा की मार्फत हमारी भाँजी साहिबा का नोटिस आया है। हवेली और जागीर के एक तिहाई हिस्से का मुतालबा किया गया है और साथ ही यह मुतालबा है कि उसके हिस्से की तिहाई जायदाद की एक न दो, पूरे ग्यारह साल की आमदनी की पूरी रकम भी एक साथ अदा की जाय ।"

अनवरी का मुँह फक हो गया। जुलबुलाकर यकदम बोली—

'ये हैं आपकी अम्मीजान और भाँजी साहिबा ! सच है, दुनिया का खून सफेद हो गया है ।"

वह बेकरारी से बोली—

"ज़रा पढ़कर सुनाइये तो, क्या लिखा है इसमें ?"

"मैं इसे नहीं पढ़ सकता ।"

"क्यों ?"

और फिर वह खुद ही कुछ सोचकर बोली—

"सच तो है, आपसे कैसे पढ़ा जा सकता है ?" उसने एक सर्द आह खींची—"अपनों ने ऐसा लिखवाया है न, इसलिए ।"

"पागल हो, तुम तो !" ताहिर चिढ़ गया—"मेरा मतलब है कि यह नोटिस वकील का है और अंग्रेजी में लिखा है। मैंने तो पोस्टमैन से पढ़वाकर सुन लिया था। तुम जानती हो कि मैं अंग्रेजी नहीं जानता ।"

"फिर क्या होगा ?" अनवरी बड़ी बेचारगी से बोली ।

"सब कुछ देना पड़ेगा ।" ताहिर उस जगह मोढ़े पर गिर पड़ा—"एक तिहाई जागीर भी और एक तिहाई हवेली भी ।"

"फिर ?"

"फिर क्या ? दीवाला !" ताहिर बोला—"सबसे बड़ी मुसीबत तो ग्यारह साल की आमदनी का मुतालबा है ।"

"भला कुल कितना रुपया होगा ?"

"एक लाख बत्तीस हज़ार रुपये ।"

अनवरी को चक्कर आ गया। ताहिर जोकि अपना सिर पकड़े बैठा था, बोला—

"कुल जागीर चालीस हज़ार रुपये साल की है। खर्च-वर्च निकाल कर तीन हज़ार रुपया महीना समझो। एक तिहाई के हिसाब से साल के बारह हज़ार रुपये हुए बहिन के हिस्से के। ग्यारह साल के एक लाख बत्तीस हज़ार रुपये हो गए।"

'फिर अब !"

"फिर अब क्या ?"

ताहिर जोकि अपनी जान से आजिज़ आता जा रहा था, बोला—

"कह तो रहा हूँ कि ये सब यकदम से उगलना पड़ेगा, और क्या !"

"आप तो साफ-साफ लिख दीजिए कि आप एक धेला भी नहीं दे सकते।" अनवरी ने गोया सलाह दी।

ताहिर चिढ़ गया। बोला—

"क्या फिज़ूल की बकवास कर रही हो तुम !"

"ऐ लो ! और सुनो ! यह गोया मैं इनकी नज़रों में बकवास ही कर रही हूँ।"

"और नहीं तो क्या ?" वह सुनकर बोला—"अदालत-कचहरी भी कोई खाला जी का घर है क्या ?"

"तो फिर आप इसका कुछ जवाब न दीजिए।"

"इससे क्या होगा ?'

"वह सुना नहीं आपने कि एक चुप, हज़ार बला टली।"

"तुम तो मुझे और भी पागल बना दोगी।"

"वह कैसे ?"

"यह सब बकवास करके।" वह उठकर खड़ा हो गया—"तुम इतना भी नहीं समझती हो कि सब कानूनी बातें हैं। अगर जवाब न दूंगा, तो फिर मुझ पर मुकद्दमा दायर कर दिया जायगा। बमये खर्चे के सब देना होगा।"

"तो फिर आप ही जानिए। काहे को बहिन की जायदाद आप अब तक हड़प किए बैठे थे।"

"हाँ, अब तो तुम यह कहोगी ही।"

"और क्या कहूँ ?"

"अच्छा, बको मत !"

वह इन्तहाई चिन्तित और झुंझलाए हुए अन्दाज़ में बाहर चला गया।

ताहिर ने एक बेवकूफी और की। वह रुपया और जायदाद न देने के चक्कर में और फँस गया। उसके वकीलों और सलाहकारों ने महज़ उसे उल्लू बनाकर रुपया खाने के चक्कर में उससे मुकद्दमा लड़वा दिया।

ज़ाकिरा बीबी की सरपरस्ती में सईदा की तरफ से उस पर मुकद्दमा दायर कर दिया गया और इलाहाबाद की अदालत में उसने उस मुकद्दमे की पैरवी शुरू कर दी। सईदा की तरफ से एक वकील अटार्नी बनाकर खड़ा कर दिया गया था और वही इस मुकद्दमे की सारी कार्यवाहियों में हिस्सा लेता था। और ताहिर बहुत ज्यादा खर्च करके हर पेशी पर अपने दर्जनों आदमियों के साथ अहमदपुर से इलाहाबाद आया-जाया करता था।

ताहिर के ससुर का वकील, जिसके यहाँ वह मुंशी था, बड़ा काईयाँ था। यह अपने मुवक्किलों का दीवाला निकलवा देने में मशहूर था और उसके हाथों में ताहिर के ससुर ने ताहिर की गर्दन दबवा रखी थी।

हर पेशी पर खामखाह के लिए वह अपने इलावा चार-छः वकील और खड़े करवा देता। दर्जनों आदमियों का खर्चा अलग पड़ता। और ताहिर का रुपया बगैर किसी मकसद के पानी की तरह बहता। वह वकील कदम-कदम पर ताहिर से बगैर किसी मकसद के रुपया खर्च करवाता रहता और यह बेवकूफ इस लालच में, कि वह मुकद्दमा जीत जायगा, रुपया पानी की तरह ज़ाय करता।

मुकद्दमे की पेशियाँ पड़ती रहीं। और बस, मुकद्दमा चलते-चलते तीन साल हो गए थे और फैसला न आज होता था और न कल।

मरवा डालिए, उस वक्त यह सारी जायदाद आपको मिल जायगी।" वह मुस्करा कर बोला—"अपनी भांजी को अपने प्रोग्राम के मुताबिक मरवा डाला कि नहीं ? अगर हाँ, तो अब जल्दी से अपने बहनोई को भी खत्म करवा दीजिए।"

"मुझे मशविरा गलत दिया था लोगों ने।" ताहिर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं—"इस चक्कर में खाने वाले मेरा हज़ारों रुपया खा गए।"

"खाने वाले तो आपकी पूरी जागीर भी खा सकते हैं। खिलाने की हिम्मत आप में होनी चाहिए।"

"मैं अब मुकद्दमा लड़ना नहीं चाहता।"

"आपके अब लड़ने या न लड़ने से क्या होता है। मुकद्दमा तो आप पर हुआ है। उसका उठा लेना आपके अख्तयार में कब है ?"

"फिर !"

"फिर यह कि अब उसका फैसला जल्दी ही हो जाने वाला है। फिक्र न कीजिए।"

"क्या फैसला होगा ?"

"कहे तो जा रहा हूँ कि आपके खिलाफ़ होगा। अरे, यह तो खुला हुआ मुकद्दमा है, मेरे यार !" यह मुस्कराया—"एक तिहाई जागीर, एक तिहाई कोठी का हिस्सा और सोलह साल के एक लाख बानवे हज़ार रुपये नक़द आपको देने होंगे। कम-से-कम पन्द्रह हज़ार मुकद्दमे का खर्चा आपको और देना होगा। कुल मिलाकर हुए—दो लाख सात हज़ार रुपये और बस, छुट्टी !"

"मैं तो मर गया, वकील साहिब !"

ताहिर के मुंह से बे-अख्तयार निकला और वह उसी जगह चकरा कर गिर गया। मुंशी साहिब उसके मुंह पर पानी के छींटे देने लगे।

नौ

सईदा अब वह पहले जैसी सईदा नहीं रही थी। अब वह सोलह साल की एक खिली कली थी, जिसे देखकर खुद उसकी नानी अम्मा और मुगलानी बी भी भौंचक्का होकर रह जाती थीं। वह बेहद खूबसूरत थी। इतनी कि उसे देखकर अलफ़ लैला की दास्तानों की हसीन परियाँ तस्वीर में रक्स करने लगती थीं। यह अन्दाज़ा लगाने में दुश्वारी होने लगी थी कि सईदा ज़्यादा खूबसूरत है या मई-जून की रातों में आसमान पर चमकने वाला चौदहवीं का चांद ज्यादा खूबसूरत है।

उसे देख कर आँखों में नूर और दिल में शुरूर पैदा होता था। आँखें ऐसी थीं, कि हिरनी की आँखें उसे देख कर शर्मा जायँ। पेशानी ऐसी थी कि मानो रात के चेहरे पर आधा चाँद जगमगा रहा हो। अब्रू, जैसे कि कड़ी कमान, जो तीर बरसाने के लिए पुर इज़्तराब हो। पलकें, मानों कि मासूम तीर, जो जिगर के आर-पार होकर भी लज्जत दें। चेहरा, जैसे कि खुली किताब, एक कुरान, जोकि रहल पर धरा हो। तमतमाए हुए रुख़सार ऐसे, कि काश्मीर के सेब शर्मा जायें।

लम्बा कद, खिले-खिले हाथ-पांव और केश, जैसे कि सावन की मस्त—बेखुद कर देने वाली काली घटा। ग़र्ज़ कि वह सुन्दरता की सजीव प्रतिमा थी, जैसे उसके रूप में कयामत सजीव होकर जवान हुई थी।

और इस पर तुर्रा यह कि नेक नियत, नेक तबियत और पाकबाज़ ऐसी कि फ़रिश्ते उसकी पाकबाज़ी की कस्में खा लें। नमाज़-

रोज़े की शिद्दत से पाबन्द, खुश गुफ्तार, खुश रफ्तार और खुश मिज़ाज, गोया कि ज़ाकिरा बीबी के घर में नूर और बरकत की एक जीती-जागती तस्वीर उतर आई थी ।

इतनी शर्मीली, कि छुई मुई को भी मात कर दे । पर्दे की इतनी शिद्दत के साथ पाबन्द कि खुले आसमान के नीचे सोने में भी उसे झिझक हो । और ज़हीन इतनी कि मिडिल पास करने के बाद मुंशी और अदीब फ़ाजिल सफलता के साथ पास करने के बाद अब अंग्रेजी पढ़ रही थी । उसके लिए ज़ाकिरा बीबी ने एक लेडी टीचर रख दी थी । मुंशी और अदीब फ़ाजिल की तरह वह अंग्रेजी इम्तहान भी प्राइवेट तौर पर देने की सोच रही थी ।

और उसका यह सब खर्च ज़ाकिरा बीबी बड़े शौक के पूरा कर रही थीं । उनका सवा सौ रुपया महीना का खर्च था और इस सवा सौ में उनकी बड़े ठाठ से गुजर हो रही थी । यह उस वक्त की बात थी, जब कि एक रुपये का चौबीस सेर गेहूँ और सोलह छटांक का घी मिला करता था । मकान, जोकि बहुत बड़ा-सा था, सिर्फ बारह रुपये महीने किराया पर उनके पास था । जब वे कानपुर आई थीं, तो साढ़े तीन हज़ार उनके पास नकद थे। जिनमें से तीन हज़ार रुपये मुगलानी बी के बेटे रज़ीउद्दीन के कहने पर एक स्टोर में लगा दिए थे । हर महीना मुस्तकिल तौर पर डेढ़ सौ रुपया उन्हें इस स्टोर से आमदनी थी । अच्छी-खासी उनकी गुजर हो रही थी । मुकद्दमे पर उनका धेला भी अब तक इसलिए खर्च नहीं हुआ था कि हज़ारों किस्म की क़समों और मिन्नतों के बाद यह खर्च रज़ीउद्दीन ने अपने ज़िम्मे ले लिया था। उसने कहा था कि मुकद्दमे के बाद वह सारा हिसाब-किताब बता कर यह रक़म उनसे ले लेगा । वे महज़ मुगलानी बी का दिल न तोड़ने की वजह से इस बात पर राज़ी हो गई थीं ।

यह सब कुछ था । ज़िन्दगी का हर सकून ज़ाकिरा बीबी को मयस्सर था । लेकिन वे कभी-कभी अपनी बेटी सईदा की चुप पर आप ही आप अफ़सुर्दा हो जाती थीं । सईदा अक्सर व बेशतर चुप रहती थी, गुमसुम और उदास । वे सोचतीं, न जाने इसकी क्या वजह है ? वे लाख पूछतीं, सईदा को हर तरह से बहलातीं-फुसलातीं,

लेकिन वह अपनी उदासी का कोई माकूल जवाब न देती। वह इस बात के लिए हामी ही न भरती कि वह उदास है या ग़मगीन है। आखिर एक दिन ज़ाकिरा बीबी ने उससे पूछने की ठान ली—

उन्होंने बड़े प्यार से उसे अपने पास बुलाया—

'यहां आओ, बेटी।"

और जब वह उनके पास आ गई, तो उन्होंने उससे पूछा—

"तुम मुझे कितना प्यार करती हो, बेटी!"

'बहुत ज्यादा, नानी अम्मा!"

"फिर भी?"

'मुझे खुद अन्दाज़ा नहीं है. नानी अम्मा!" उसने बड़े प्यार से नानी अम्मा को देखा—"जैसे कि समुद्र की थाह का अन्दाज़ा नहीं होता।"

"तो फिर मुझे यह बताओ कि तुम आजकल चुपचाप और खोई-खोई-सी क्यों रहती हो?" ज़ाकिरा बीबी ने कहा—"मैं तुम्हें अपनी कसम देती हूँ, बेटी!"

वह गड़बड़ा गई, लेकिन सम्हल कर बोली—

"मैं चुप रहती हूँ, नानी अम्मा, शायद इसलिए कि यह मेरी आदत हो गई है।"

"तुमको अपनी नानी अम्मा के लिए अपनी इस आदत को छोड़ना होगा!" उन्होंने सईदा को भींच लिया।

"अच्छा!" वह इन्तहाई सादगी से बोली—"छोड़ दूँगी यह आदत।"

"मेरी बच्ची!" वे बड़ी चाह के साथ बोलीं—"तेरे इस तरह उदास रहने से मेरी नजरों में दोनों आलम तारीक हो जाते हैं।"

"अच्छा, नानी अम्मा।" सईदा ने अपनी नानी अम्मा के गले में अपनी बाँहें डाल दीं—"अब से आप हमें कभी उदास न देखेंगी।"

"मेरी बच्ची!"

उन्होंने सईदा की चटाचट अनगिनत बलाएं ले डालीं। सईदा के इस वायदे से उनका दिल बाग़-बाग़ हो गया था। वे अपने अन्दर एक खास क़िस्म की तवानाई महसूस करने लगीं। अब वे हँसी-खुशी बावर्ची खाने में बैठी शामी कबाब तल रही थीं और सईदा इन्तहाई

Library ... ...

महबियत की हालत में अपने कमरे में गली की तरफ़ खुलने वाली खिड़की से टिकी सोच रही थी—

"आखिर यह हो क्या गया है उसे ? वाक़ई वह हर वक़्त खोई-खोई और उदास क्यों रहती है ? यह उसकी हालत आखिर होती क्या जा रही है ?" उसने सोचना शुरू किया—

"यह मेरा दिल आखिर चाहता क्या है ? आप-ही-आप मेरा यह जी क्यों चाहता है कि मैं रोने लगूं ? जी है कि उमड़ता आता है, तबियत है कि आप ही आप बौखला जाती है। यह जी क्यों चाहता है मेरा कि मैं अपने कपड़े फाड़ कर घर से निकल जाऊँ। आखिर क्यों ? कोई वजह ? जब बारिश होती है तो मेरा दिल रोने क्यों लगता है ?"

वह बौखला गई। वह डर गई जैसे—

"खुदा न करे, कहीं मेरा दिमाग़ तो ख़राब होने वाला नहीं है ! कहीं ऐसा तो नहीं कि मैं पागल होने जा रही हूँ—अल्लाह न करे !"

उसने दिल से दुआ की—

"अल्लाह मियाँ, तुम हम पर तरस खाओ। रहम करो तुम मेरी इस हालत पर। मेरे दिल को क़रार दो और मुझे तुम बचा लो इस पागलपन से।"

वह सोचने लगी—

"यह मेरा पागलपन नहीं तो और क्या है कि खुशबू से मेरा दिल डूबने लगता है। इतना बेक़रार होता है मेरे पहलू में कमबख्त, जैसे कि तड़प कर दम दे देगा। गाने की आवाज़ मेरे कान में आई कि मेरा दम निकलने लगा। न जाने, दिल क्या चाहने लगता है ? बाजे की आवाज़ कान में पड़ी कि दिल घबराने लगता है। बस, आप ही आप जी रोने को चाहता है। अजीब मुसीबत है, मुझे खुद नहीं मालूम कि मेरा जी क्या चाहता है ?"

वह खुद से शर्मा गई—

"ऐसा क्यों जी चाहता है मेरा कि कोई मुझे अपनी गोदी में भर ले और इतना मसले, इतनी ज़ोर से मुझे दबाए कि मेरी हड्डी-पसलियाँ टूट जायें।"

वह अपने गुलाब जैसे गालों पर हौले-हौले तमाचे लगाने लगी—

"तौबा-तौबा-तौबा, अल्लाह मेरी तौबा है !" वह बड़बड़ाई—"ज़रूर मेरे दिल में शैतान घुस गया है !"

"हाय अल्लाह !"

वह एकबारगी उछल पड़ी। उसे इस बात का भी होश नहीं था कि कमरे की गली की तरफ से उसे कोई देख भी सकता है। वह खिड़की के खुले पट से लगी खड़ी थी और एक नौजवान लड़का उसे इन्तहाई हसरत और मस्ती के आलम में अपने घर की खुली खिड़की से ताक रहा था। दोनों की नज़रें चार हो गई थीं।

उसने घबरा कर खुली हुई खिड़की का पट बड़ी ज़ोर से, फट से करके भेड़ा और एक दम से उसी जगह खिड़की के नीचे दीवार से लग कर बैठ गई।

उसका दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था कि अपने दिल की इस खतरनाक क़िस्म की धड़कन को वह खुद सुन रही थी और वालाई जा रही थी। उसके तमाम जिस्म में बिजलियाँ-सी कौंधी जा रही थीं। पसीने से उसका सारा जिस्म सराबोर हुआ जा रहा था। उसकी रंगों में खून की रवानी बहुत तेज़ हो गई थी। उसका साँस इस अन्दाज़ में फूल रहा था, जैसे कि वह मीलों से भाग कर आ रही थी।

वह उसी जगह, उसी एक हालत में देर तक बैठी रही—और काँपती रही। लरज रही थी वह सारी जान से।

"उस नामहरम ने मुझे खूब जी भर कर देखा है। वह न जाने कब से मुझे इस हालत में देख रहा था।"

उसे खयाल आया, उसका दुपट्टा भी तो ठीक से उसके सिर पर नहीं था। और यह खयाल आते ही वह जल्दी-जल्दी गैर इरादी तौर पर अपना दुपट्टा सम्हालने लगी। वह घबरा-घबरा कर उसी जगह बैठे-बैठे अपना दुपट्टा संवार रही थी और लरज़ रहीथी। उसने सोचा—

"न जाने यह कौन होगा—मुआ ! कैसे मुझे दीदे फाड़-फाड़ कर देख रहा था ! खुदा गारत करे कमबख्त को—बेईमान ज़माने भर का !"

वह अभी उसी जगह, उसी हालत में, अपनेघुटनों में अपना सिर छुपाए सिमटी-सिमटी अपने आपको सम्हाले बैठी थी कि खिड़की का

पट एक ज़रा-सा खुला और एक तह किया हुआ कागज़ का टुकड़ा उसके सिर पर आ गिरा।

वह चौंक पड़ी। उसने अपना सिर थोड़ा-सा घुटनों के अन्दर से निकाला और कागज़ का तह किया हुआ वह पर्चा उसके सिर से सरक कर उसके सामने आकर फ़र्श पर गिर पड़ा।

वह और ज्यादा बदहवास हो गई। कागज़ का मोड़ा हुआ यह हकीर टुकड़ा इसके लिए तोप के गोले से कम नहीं था। ऐसा महसूस हो रहा था कि किसी ने उसके सिर पर पहाड़ उठाकर दे मारा हो। जैसे कि कागज़ का यह टुकड़ा एक जहरीला नाग हो, जो उसके सिर से फिसलकर उसके बिल्कुल करीब सामने आकर गिर पड़ा हो।

वह कागज़ के उस टुकड़े को अपनी सहमी हुई नजरों से बिल्कुल इस अन्दाज़ से देख रही थी, जैसे कि वह स्याह नाग हो और वह अभी अपना फन फैलाकर खड़ा हो जायगा। उसे डस लेगा।

वह उस जगह से खिसक भी नहीं रही थी और न हिल ही रही थी, मुबादा यह नाग उसकी जरा सी हरकत पर उसे लहराकर डस ले। वह उसको उस सहमे-सिमटे अन्दाज़ से ताक रही थी कि उसे ख़याल आया कि इस खतरनाक चीज़ को कोई और न देख ले। उसकी नानी अम्मा देख लें, या मुगलानी बी की नज़र उस पर पड़ जाये। लिहाज़ा उसने हिम्मत करके अपनी कंपकंपाती और लरजती उँगलियों से उस हकीर कागज़ के टुकड़े को उठा लिया।

उसने उस पर्चे को इस अन्दाज़ में इधर-उधर देखा और अपने गरारे के नेफ़े में उड़सा कि उसकी इस हरकत पर दरो-दीवार को भी हँसी आ गई। जैसे कि किसी माहिर चोर ने मौका पाते ही किसी की जेब का गिरा हुआ माल छुपा लिया हो। जैसे कि किसी गिरहकट की अभ्यस्त उँगलियों ने किसी की जेब काटकर अपने नेफ़े में छुपा ली हो।

वह अपने-आपको सम्हालती हुई वहाँ से उठी और अपने काँपते कदमों के साथ गुसलखाने में घुस गई। अन्दर से गुसलखाने की चटखनी उसने चढ़ा ली।

कुछ देर तक वह वहाँ खड़ी अपने होशो-हवास को दुरुस्त करती रही। अपने-आपको काबू में करती रही। और फिर जब उसके दिल

की धड़कनें जरा थमीं, खून की गर्दिश एक हद तक अपने मामूल पर आ गई तो उसने अपने नेफ़े में उड़से हुए कागज़ के उस हकीर टुकड़े को निकाला।

और जैसे ही उसने उस मोढ़े हुए कागज़ को खोलना चाहा, तो उसके सारे जिस्म में फिर बिजलियाँ कौंधने लगीं। जिस्म में खून की रवानी फिर तेज़ हो गई। उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से फिर से धड़कने लगा। उँगलियाँ लरजने लगीं। उसका दिल फिर से डूबने लगा।

वह घबराकर उसी जगह नहाने के पटरे पर उकड़ूं बैठ गई। महज़ अपने-आपको सम्हालने के लिए। इसलिए कि उसके पाँव लर-जने लगे थे। उसे यकदम से यह अहसास हुआ था कि अगर वह बैठ न जायगी, खड़ी रहेगी तो धम से करके गिर पड़ेगी।

लिहाजा वह बैठ गई थी। उसने उस जगह, उसी हालत में बैठे-बैठे कागज़ का वह पुर्जा खोला। उसकी नजरें कागज़ के उस टुकड़े पर झुकीं। लिखा था—

"मुझे न अपना अंजाम मालूम है और न अपने इस पागलपन का, जागते और सोते में मैं सिर्फ ख्वाब देखता हूँ अब। और मेरा वह ख्वाब आप—और सिर्फ आप हैं। दिल आपको किसी लम्हा नहीं भूलता। आपसे जुदा रहकर मैं जी न सकूँगा। बस इतना मैं जानता हूँ। जीने की क्या जरूरत हो सकती है, यह मुझे मालूम नहीं।

लब बन्द, गुम हवास, तखैयुर निगाह में।

तस्वीर बन गया हूँ तेरी जल्वागाह में—(कैफ़ टन्कवी मरहूम)।"

"—कानपुर आज से एक हफ्ता पहले आया था। यह मकान मेरे चाचा का है। यहाँ तालीम की गर्ज़ से आया हूँ और जिस दिन से आया हूँ—आपको रोज़ देखता हूँ मैं।

आज देखा है आपने मुझको—(आदिल रशीद) —'

"—आप ही फ़रमाइये अब क्या होगा? हम क्या कर, हमारी समझ में तो आपकी कसम, जैसे कि पत्थर पड़ गये हैं—सलीम।"

सईदा ने यह खत पढ़ा तो उसके सारे जिस्म में सर्दी की एक लहर समा गई। अब उसे ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे कि खून उसकी रगों में जम गया हो। उसके कानों में एक अजीब किस्म का सन्नाटा-सा समा गया। उसकी आँखों के सामने अन्धेरा-सा छा गया था और

उसकी आँखों के सामने तीरिये नाचने लगे थे। सिर उसका इतनी ज़ोर-ज़ोर से चकराने लगा कि वह चक्कर खाकर गिरने को हो गई। उसे ऐसा महसूस होने लगा, जैसे कि उसके सिर पर पहाड़ टूट पड़ा। जैसे कि वह किसी गहरे और अन्ध कुएँ में दूर तक सिर के बल गिरती चली जा रही हो।

उसने जल्दी-जल्दी से खत को अपने गरारे के नेफ़े में फिर ठूंस लिया। वह कुछ और देर तक उसी जगह बेहिस-व-हरकत खड़ी रही। फिर वह दबे पाँव गुसलखाने से बाहर निकली और नज़रों से अपने-आपको बचाती हुई अपने कमरे में आई और मसहरी पर औंधे मुंह गिर पड़ी।

उसकी नज़र फिर गली की तरफ खुलने वाली उस खिड़की पर पड़ी। वह सन्नाटे में आ गई। वह उठकर दबे पाँव खिड़की के नज़दीक आई। उस खत के उसने बेशुमार टुकड़े किए। उन टुकड़ों को उसने खिड़की की दहलीज़ पर रखकर अपनी फूँक से बाहर की तरफ उड़ा दिया। बड़ी ज़ोर से भड़ से करके उसने खिड़की बन्द कर दी। खिड़की की चटखनी लगाई और कमरे से इस तरह घबराकर बाहर निकली कि इस कमरे में आसेब हों।

और फिर उस रात को वह रात भर चैन की नींद नहीं सो सकी। रात भर वह कुत्ते की नींद सोई। जब उसकी आंख खुली, गैर इरादबी तौर पर उसकी नज़रें गली की तरफ़ खुलने वाली उसी खिड़की पर अटक गई। उसे हर दफ़ा ऐसा महसूस हुआ, जैसे कि वह उस तरफ खिड़की के पास रात की बेतहाशा सर्दी में सिकुड़ा खड़ा हो और कह रहा हो—

"हमारी समझ में तो आपकी कसम, जैसे कि पत्थर पड़ गए हों। आप ही फरमाइये कि अब क्या होगा? हम क्या करेंगे?"

सईदा के जहन में बार-बार वह मंजर घूम जाता था—वह उसका बदहवासों की तरह देखना—उसकी नज़रों का चार होना और उसका घबराकर 'हाय अल्लाह' कहकर खिड़की भड़ से करके बन्द कर देना।

उसके दिल ने कई बार उसे झंझोड़कर जगाया था। वह उसे बार-बार याद दिला रहा था—

"बड़ी बेरहम है तू ! कम्बख्त, कितना खूबसूरत—मासूम-सा लड़का है वह ! कितना भोला, कितना सीधा-सा और कितना आज़ुर्दह, जैसे कि सचमुच उसकी ज़िन्दगी में मेरी वजह से ज़हर घुल गया हो। किस हसरत से वह तेरी तरफ़ ताक रहा था। बिल्कुल इसी अन्दाज में वह देख रहा था, जैसे कि एक अकीदतमंद पुजारी अपनी देवी को देखता है। जैसे कि मोमिन खानए-काबा को देखता है। जैसे कि चकोर चाँद को ताकता है और परवाना दीवानावार शमा पर निसार हो जाता है।"

वह अपने दिल की इस पुकार पर एकबारगी चौंक पड़ी—

"बेचारा !"

बेसाख्ता उसकी ज़बान से निकला। घबराकर उसने अपने तकिए में अपना मुँह छुपा लिया। वह फूट-फूटकर, सुबक-सुबक कर घुटे-घुटे अन्दाज़ में रो रही थी।

सईदा ने चार दिन तक गली में खुलने वाली उस खिड़की का दरवाजा नहीं खोला। खिड़की का दरवाजा उसी तरह बन्द रहा। लेकिन उसके खयालात खिड़की के उस पार गली के उस सामने वाले मकान के बाहर वाले ड्राइंग रूम में उलझे रहे जहाँ कि वह लड़का बैठा हुआ उसे दिखाई देता था।

दिन-रात के चौबीस घण्टों में वह एक लम्हा के लिए भी अपने खयालात को उस लड़के के तसव्वर से आज़ाद न करा सकी। वह सोते में भी उसी के ख्वाब देखती थी। उसी के ख्वाब जिसने उसे लिखा था—

"आपको रोज़ देखता हूँ मैं,
आज देखा है आपने मुझको।"

वह सोचती, यह उसकी उस बदहवासी का नतीजा है कि वह

लड़का उसे देखता रहा। वह ज़रूर आलम-बेखयाली में उस खिड़की से लगी खड़ी रही होगी। खिड़की का दरवाजा खुला रहा होगा और वह उसे खूब जी भरकर देखा किया होगा।

उसे अपने-आप पर गुस्सा आने लगता। वह सोचा करती, वह आख़िर इतनी बदहवास क्यों हो गई थी कि दूसरों को अपने को दिखाती फिरे!

और इस मोड़ पर आकर उसे इस लड़के सलीम का कोई कसूर नज़र न आता। वह सोचती, मुफ्त में उसने उस गरीब को कोस डाला। खुदा उसे क्यों गारत करे बेचारे को! बेईमान क्यों होने लगा वह! बेकार ही को उसे मैंने 'मुआ' कहा था।

रात के पौने तीन बजे थे। वह अभी तक जाग रही थी। उसके खयालात खिड़की के उस तरफ़ उलझे हुए थे। उसे सलीम की वह पुरकशिश नज़रें याद आ रही थीं जिनसे कि वह घबराकर बदहवास हो गई थी। उसने कुछ इस क़िस्म की कसक अपने दिल में महसूस की, जो अब तक उसकी ज़ात के लिए अनजानी थी। और अचम्भा उसे इस बात का हो रहा था कि उसके दिल की यह कसक नानी अम्मा के लिए नहीं, बल्कि सलीम के लिए थी। सलीम के लिए, जो कि उसके लिए कतई अनजाना था और अजनबी था। जिसके बारे में वह इसके सिवाए और कुछ नहीं जानती थी कि वह एक खूबसूरत सा लड़का है और उसका नाम सलीम है।

जैसे कि उसकी चिट्ठी से यकदम से बेदार हो गई हो। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे कि सलीम उस वक्त भी जबकि रात के तीन बजने वाले हैं, जाग रहा है और उसकी खिड़की के नीचे इस जमा देने वाली सर्द रात में भी खड़ा है। और उसकी एक झलक देखने के लिए उसका इन्तजार कर रहा है। उसकी उस चिट्ठी ने उसे बताया कि वह हर रात इसी तरह रात के ग्यारह बजे से लेकर सुबह के पाँच बजे तक इसी खिड़की के नीचे सारी रात खड़ा रह कर उसका इन्तज़ार करता रहता है।

"बेचारा!"

एक दफ़ा फिर यह लफ्ज गैर इरादवी तौर पर उसके होंठों से फूट पड़ा। और वह एकबारगी अपनी मसहरी पर से अपने ऊपर का

मोटा-सा लिहाफ़ परे फेंक कर उठ गई। वह तीर की तेज़ी के साथ खिड़की के पास आई। उसने आन की आन में खिड़की खोल दी।

"अरे!"

वह जैसे कि पागल हो गई। सलीम वाकई खिड़की के नीचे दीवार से लगा खड़ा था और एकटक खिड़की की तरफ़ ताक रहा था।

"हाय अल्लाह!" उसके हमुँ से बेअख्तयार निकल गया। सलीम सिर्फ कमीज और पाजामे में उस कड़ाके की सर्दी के बावजूद उसकी दीवार से लगा खड़ा था।

घबरा कर अपने दोनों हाथों से उसने अपना मुँह दबा लिया। उसकी नानी अम्मा उसी कमरे में उसकी मसहरी के बराबर वाली मसहरी पर लेटी सो रही थीं। मुबादा उन्होंने उसकी 'हाय अल्लाह' सुन ली हो।

"मुझे यकीन था—" सलीम आहिस्ता से बोला—"आपको मुझ पर रहम जरूर आएगा। तरस खाकर आप मेरे लिए इस खिड़की का पट जरूर खोल देंगी।"

वह एक कदम पीछे हट गई। उसका दिल जैसे कि उसके हलक में आकर फँस गया हो। सलीम का मुरझाया हुआ चेहरा उसने चाँद की रोशनी में देख लिया था।

उसकी रगों में खून की गर्दिश एक बार और तेज़ हो गई। उसका सारा जिस्म उस सर्दी के बावजूद दहक उठा। वह उसी जगह खड़ी रही। खिड़की का पट घबरा कर उसने इस दफ़ा बन्द नहीं किया। उसके दिल से अपनी नानी अम्मा की उस कमरे में मौजूदगी का अहसास जैसे कि मर गया हो।

सलीम दीवार से हट कर खिड़की के सामने आ गया। वह मस्कीनियत से कंपकंपाई हुई आवाज़ में बोला—

"तरस खाकर मेरे इस दिल के टुकड़े को जरूर देख लीजियेगा।"

उसने कागज का तह किया हुआ एक पुर्जा फिर अन्दर फेंक दिया। सईदा ने वह पुर्जा इस बार फौरन उठा लिया। वह खिड़की के नजदीक आ गई।

उसने देखा वह सिर झुकाए चला जा रहा था। उसने गली

पार कर ली। वह अपने मकान के बरामदे में आ गया। वह कमरे में चला गया। वह कमरे की जगमगाती रोशनी में, जोकि तारीकियों से हमकिनार थी, गुम हो चुका था।

सईदा ने खिड़की के पट बन्द कर दिए।

दस

सईदा सलीम के खत को कई दफ़ा पढ़ चुकी थी। वह इस वक्त भी अपनी किताब में उसी का खत रखे थी और किताब पढ़ने के बहाने उसे पढ़ रही थी। सलीम का खत उसके सामने खुला रखा था—

"सईदा,

बड़ा प्यारा नाम है। आपका यह नाम मुझे अपनी चचाज़ाद बहिन तसनीम से मालूम हो चुका है। बहाने-बहाने से मैंने यह नाम उससे पूछ लिया था। आप यह न समझ लीजिएगा कि खुदा न ख्वास्ता मैंने आपका नाम मालूम करके आपको बदनाम कर देने का कोई गलत कदम उठाया है। तसनीम तो बड़ी मासूम-सी बच्ची है। उससे मैंने योंही इधर-उधर की बातों में यह मालूम कर लिया था कि आपका नाम सईदा है। मेरी इस जसारत से न तो किसी को शक हो सकता है और न आपकी, अल्लाह न करे, बदनामी। आपने मेरे खत के पुर्जे उड़ाकर फूंकों के जरिए उसे मेरे हवाले कर दिया था। मुझे इससे हैरत या मायूसी हर्गिज़ नहीं हुई, बल्कि खुशी हुई है। शरीफ लड़कियों की यही फितरत होनी चाहिए। मेरे दिल के टुकड़े आपके हाथों हुए यही सबसे बड़ी खुशी मेरे लिए क्या कम है। अपने दिल के टुकड़े मैंने सम्हाल कर रख छोड़े हैं।

"—मेरा नाम सलीम है यह तो आपको मालूम हो ही चुका होगा। खत के आखिर में वह मेरा ही नाम था। मैं इस वक्त बी० ए० में पढ़ रहा हूँ। मेरे बाप का नाम शेख गुलाम रसूल है। वे जिला रायबरेली में कलैक्टर हैं। वे इसी जिला के बहुत बड़े जागीर-

दार भी हैं। मैं उनका इकलौता बेटा हूँ। माँ हैं, बाप हैं और मैं हूँ और बस। मुझे वालिद साहिब बैरिस्ट्री के लिए विलायत भेजना चाहते हैं। लेकिन अब मुझे यकीन है कि उनकी यह हसरत पूरी न हो सकेगी। हाँ, वे मेरा चेहरा भी अब न देख सकेंगे। उनकी यह भी बड़ी आरजू है।"

"—लेकिन मेरी आरजू ! वह आप हैं और आप मुझे ठुकरा चुकी हैं। वरना पाँच दिन तक रात-रात भर इस तरह मैं तन्हा आपकी खिड़की के नीचे न खड़ा रहता। एक दफा तो दिल का हाल आप पूछने आईं, कोई गिला नहीं है आपसे। शिकवा मुकद्दर से है ! काश कि मैं कानपुर न आता !"

"अब मेरे माँ-बाप मेरे सेहरे के फूल मेरी कब्र पर आकर चढ़ायेंगे। इसका मुझे अपने ईमान की तरह यकीन है।"

"तीन और मुरादें आपको पाने के लिए माँग रखी हैं। अगर मुराद पूरी हो सकी तो ठीक, वरना मौत को गले लगा लेना मुश्किल हर्गिज नहीं है। इस दुनिया में जीना मुश्किल है और मरना आसान है। इस आसानी ही को मैं अपना लूंगा। कोई बात नहीं।"

"—किसको मालूम मेरे ख्वाबों की ताबीर है क्या,
कौन जाने कि मेरे गम की हकीकत क्या है ?" (हिमायतअली)

—सलीम

सलीम का यह खत सईदा ने पढ़ा था, बार-बार पढ़ा था और वह इस खत को जितनी बार पढ़ती थी उलझ-उलझ जाती थी। उसे इस खत के पीछे एक नहीं बल्कि तीन दिल धड़कते हुए दिखाई देते थे। एक दिल खुद सलीम का था, दूसरा उसके बाप का दिल था और तीसरा दिल उसकी माँ का था।

सलीम का दिल कि वह उसे अपनी जिन्दगी का साथी बना ले। बाप का दिल कि वह अपने बेटे को बैरिस्ट्री के लिए विलायत भेजे। और माँ का दिल कि वह अपने इकलौते बेटे का सेहरा देखे। माँ बेचारी अपने बेटे के लिए सेहरे के फूल खिलाना चाहती थी और बेटा अपनी जान के पीछे हाथ धोकर पड़ गया था।

उसे बेहद अफ़सोस हुआ। और जब उसे चौथे दिल का खयाल आया तो वह अपना कलेजा मसोस कर रह गई। यह चौथा दिल

उसका अपना दिल था। जो उसके लाख सम्हाले और समझाने पर भी उसकी अब एक नहीं सुन रहा था। उसे अहसास हुआ कि वह सलीम की मुहब्बत में बिल्कुल ही मजबूर और लाचार होकर रह गई है।

वह अपने होंठ काटने लगी। शर्म से उसका चेहरा गुलनार हो गया। उसकी पेशानी पसीने से भर चुकी थी। उसकी निगाहें खुद-बखुद नीचे झुक गईं। उसने दाँतों से अपने दुपट्टे का कोना दबा लिया। वह यकबारगी चौंक पड़ी। वह दिल ही दिल में बड़बड़ाई—

"—लेकिन अब मेरी वह पहली जैसी हालत क्यों नहीं है? क्यों करार आ गया है मेरी उस हालत को जिसने कि मुझ, मेरी नानी अम्मा को और यहाँ तक कि मुगलानी बी को भी चिन्तित और परेशान कर रखा था।"

वह सोचने लगी—

"क्या सलीम ही मेरी उमड़ती-मचलती और बल खाती हुई बेकरार आरजुओं और तमन्नाओं का वह मर्कज़ है, जिस तक पहुँच जाने के लिए मेरी हालत काबिले-रहम थी? क्या सलीम का वजूद ही मेरी बेताब जिन्दगी के लिए सहारा बनने वाला था?"

वह अपने-आप से शर्मा गई। उसने अपने रंगीन आँचल में अपना मुँह छुपा लिया। शर्म से उसकी गर्दन नीचे झुक गई। वह बड़बड़ाई—

"मेरे अल्लाह! मैं सचमुच कितनी बुरी और कितनी अजीब हो गई हूँ। तौबा-तौबा! कोई खुदा न करे कि मुझ जैसा हो।"

"छी:! मैं भी कोई लड़की हूँ! खुदा मुझे माफ करे।"

आँसू उसकी पलकों तक आ गए थे। बेकरार होकर उसने अपना मुंह अपने दोनों हाथों से ढाँप लिया।

ताहिर ने गुस्से और नफ़रत से घुटी हुई आवाज़ में एक ज़ोर की चीख़ निकाली—

"अब तू, कमीनी और हरामज़ादी औरत मुझे यह सब कुछ बता रही है ! अब, जबकि पानी सिर से गुजर चुका है इस वक्त तेरे इन मनहूस होंठों के टांके खुले हैं जबकि हमारी इज़्ज़त का उस कमीनी लड़की रज़िया के हाथों नीलाम हो चुका है। जबकि वह एक बच्चे की मां बनने वाली है।"

उसने अपनी बीबी अनवरी का गला घोंटना शुरू कर दिया। उसने उसके मुंह पर बेतहाशा तमाचे लगाए। वह उसे दीवानों और पागलों की तरह पीटने लगा। उसके बेटे अकबर और बेटी नजमा ने मां को किसी-न-किसी तरह से मरने से बचा लिया। बड़ी मुश्किलों से उन्होंने मिलकर अपने बाप के हाथों से अपनी मां को छुड़ाया।

ताहिर उसी जगह अपना सिर अपने दोनों हाथों से पकड़कर बैठ गया। वह ज़ारो-कतार रो रहा था। और कहता जा रहा था—

"अच्छी तरबियत की थी उसने अपने बच्चों की। बड़ा अच्छा सबक उसने हरामज़ादी रज़िया को पढ़ाया था। मेरी मासूम भांजी सईदा में तो इसे उसके बचपन ही से कीड़े नज़र आने लगे थे, लेकिन अपनी लाड़ली की आवारगियों की तरफ से इस कमीनी औरत ने अपनी आँखें बन्द करली थीं। सईदा तो बचपन से ही इसकी नज़रों में आवारा होने जा रही थी, यह उस मासूम को हवेली की छत पर भी नहीं जाने देती थी और अपनी बेटी को—?"

वह उठा। वह गुस्से से पागल हुआ जा रहा था। उसने अपने कमरे में जाकर बन्दूक उठा ली—

"मैं अभी गोली मार देता हूँ उस नंग खानदान रज़िया को। मैं उस कुतिया को हराम की मौत मारे डालता हूँ।"

बड़ी मुश्किल से अनवरी, नजमा, अकबर ने उसे उसके इरादों से बाज़ रखा। बन्दूक उसके हाथ से छीन ली गई, लेकिन वह जनूनियों की तरह रज़िया के कमरे में घुस गया और उसे बेतहाशा पीटने लगा। उसने मार-मारकर रज़िया को अधमुआ कर दिया। उसने रज़िया को एक आखिरी ठोकर लगाई—

"बोल कमीनी ! यह किसका गुनाह है, जिसे तू अपने जिस्म में

पाल रही है ?" उसने दाँत पीसे—"मैं अभी उसे जहन्नुम रसीद करूँगा। कसम खुदा की, मैं उसे मार डालूँगा।"

"वह आपका कारिन्दा था न, कारिन्दा, वह वसीमुल्लाह, वह जो आपकी मुलाज़मत छोड़कर कलकत्ता भाग गया है।" अनवरी खून थूकते हुए कराह के साथ बोली—"उसी नामुराद ने इस बदबख्त की पेशानी पर यह कालिख मली है।"

"ओह, वसीमुल्लाह ! वह दो टके का लौंडा। वह आवारा···"

"हाँ !" अनवरी ने अपने शौहर के पाँव पकड़ लिए—"अब उसी को किसी तरह इस बात पर आमादा कीजिए कि वह इस नामुराद से शादी कर ले।"

"खुदाया !" ताहिर चीख पड़ा—"यह मेरे किस गुनाह की सज़ा है !"

वह निराश होकर चीख पड़ा—

"मैं तो चारों तरफ से आफ़त में घिर गया हूँ।" वह ज़ारो-कतार रो रहा था—"मैं बहुत गुनाहगार हूँ, मेरे अल्लाह ! तू मेरे सारे गुनाहों को माफ़ करके मुझ पर रहम कर।"

वह बड़बड़ा रहा था—

"इस नाबकार औरत की बातों में आकर मैंने अपनी माँ का दिल चकनाचूर किया है। मैंने उस फ़रिश्ता-सिफ्त और बेवा माँ की सारी जागीर छीनी है। मैंने इस हवेली से उसे निकाला है। मैंने हर बुराई और हर दुश्मनी उसके लिए जायज़ रखी है। मैंने अपनी मासूम भाँजी का सब्र समेटा है। इस अनवरी हरामज़ादी की हर बात में आकर मैंने कदम-कदम पर ठोकर खाई है। इसी के बाप ने मुझे मुकद्दमे में उलझा कर मेरा हज़ारों का नुकसान कराया है।"

उसने अपने दोनों हाथों से अपना दिल थाम लिया। उसका दिल डूब रहा था। वह अपना दिल पकड़कर बैठ गया। वह उसी जगह गिर पड़ा। वह बेहोश हो चुका था।

ग्यारह

जलील को आज पूरे आठ साल बाद होश आया। उसे अपनी बेगम साइरा की हर बात अपनी बहिन राबिया की जबानी मालूम हो चुकी थी। साइरा बीवी के हाथ का लिखा हुआ ख़त, जोकि उसने अपने आशिक को लिखा था, उसके सामने खुला पड़ा था।

अब उसकी आँखें शोले बरसा रही थीं और वह जल्द से जल्द साइरा के भविष्य का फैसला कर देना चाहता था। साइरा पन्द्रह दिन से अपने मायके गई हुई थी। उसी के साथ उसका सारा ख़ानदान भी, जोकि शादी के बाद से वहीं डटा रहता था, अपने घर राधा नगर गया हुआ था। उसकी हवेली में अब कोई नहीं था कि उसकी बहिन राबिया पूरे पाँच साल के बाद यह सारी तफ़सील और मालूमात लेकर अपनी ससुराल से उसके पास आ गई थी।

राबिया रुख़साना की अचानक मौत के बाद फिर इस तरफ दो-एक मर्तबे को छोड़ कर नहीं आई थी। वह अहमदपुर ज़ाकिरा बीबी के पास भी रुख़साना के पुर्से पर ही गई थी। उसके बाद पे दर पे हालात कुछ तेजी के साथ बदलते रहे कि वह जाकिरा बीबी के पास रंज, अफसोस और शर्म व निदामत की वजह से न जा सकी। उसी की वजह से रुख़साना और जलील का ब्याह हुआ था। जलील की इन हरकतों पर वह इतनी ज्यादा रंजीदा और शर्मसार थी कि वह फिर दुबारा ज़ाकिरा बीबी को अपनी सूरत न दिखा सकी।

राबिया की बड़ी बेटी हमीदा ज़ीनत की गहरी दोस्त थी और यह ज़ीनत साइरा की एक जिगरी सहेली फ़रखन्दा की छोटी बहिन थी। दोनों अलीगढ़ में एक साथ पढ़ती थीं और वहीं गर्ल्स होस्टल

में एक कमरे में रहती थीं।

जीनत ने एक दिन हमीदा से कहा—

"दुनिया भी बड़ी अजीब है, हमीदा!"

"क्या हुआ?" हमीदा ने पूछा।

"सुनोगी तो तुम्हें भी बड़ा दुःख होगा।"

'तो न सुनाओ।' हमीदा ने कहा—"ग़म की कोई दास्तान मैं सुनना न चाहूँगी।"

"फिर भी सुन लो।"

"क्यों?"

"दूसरों की दास्तानों में भी कभी-कभी कुछ सोचने और सीखने को बहुत कुछ मिल जाता है।"

"अच्छा बताओ क्या बात है?"

जीनत ने सुनाना शुरू किया—

"मेरी बड़ी बहिन फ़रखन्दा को तुम जानती ही हो।"

"हाँ-हाँ।" हमीदा बोली—"तुम्हीं ने अक्सर अपनी बड़ी बहिन का जिक्र मुझ से किया है।"

वह जैसे कि परेशान हो गई—

'तो क्या तुम्हारी बहिन फ़रखन्दा को—?"

"खुदा न करे कि उन्हें कुछ हो।" ज़ीनत हमीदा की इस बदहवासी पर मुस्करा दी—"मैं उन्हीं अपनी फ़रखन्दा बहिन के वास्ते से तुम्हें एक दिलचस्प लेकिन इन्तहाई अफ़सोसनाक किस्सा सुनाने लगी हूँ।"

"क्या है वह वाकया?"

जीनत ने बताना शुरू किया—

"फ़रखन्दा बाजी की एक सहेली हैं—साइरा बेगम···।"

हमीदा ने ज़ीनत की बात काटी—

"साइरा बेगम!" उसने पूछा—"तुमने उनका नाम साइरा बेगम बताया?"

जीनत झुंझला गई—

'मत बोलो बीच में। सुनती जाओ। बड़ी इबरतनाक दास्तान है। हाँ, मैंने साइरा बेगम उनका नाम बताया है।"

वह आगे बढ़ी—

"इन साइरा बेगम साहिबा की शादी एक मालदार घराने में हो गई।"

"फिर ?" हमीदा ने फिर बात काटी।

"तुम इतनी बौखलाई क्यों जा रही हो ?" ज़ीनत ने हमीदा को गौर से देखा—"सुनती जाओ।"

उसने अपनी बात फिर शुरू की—

"हाँ, तो उन साइरा बेगम की शादी एक ऐसे शख्स से हुई थी, जिसकी पहली बीवी मर चुकी थी। वह दूसरी बेगम बनकर ससुराल गई थी। उनके शोहर की पहली बीबी से एक बच्ची सात साल की थी। वह भला इसे कैसे गवारा कर सकती थी। उन्होंने अपनी इस सौतेली बच्ची को उसकी नानी के पास से बुलवा लिया।"

"नानी के पास से बुलवा लिया, तो वह उससे मुहब्बत करती थी।"

"कहा कि बीच में न बोला करो। सुनती जाओ।"

"अच्छा ! अब न बोलूंगी। आगे बढ़ो।"

"हाँ, तो उस बच्ची को उस औरत ने बुलवा कर अपने पास रखा। वह उससे बेतहाशा मुहब्बत जताती थी। वह बच्ची के बाप तक से उसके लिए लड़ती थी। वह बच्ची को हर वक्त अपने कलेजे से लगाकर रखती थी।"

"यह तुम बक क्या रही हो, ज़ीनत !" हमीदा जैसे कि उकता गई। "वह इतनी मुहब्बत तो करती थी अपनी सौतेली बेटी से—और तुम···।"

"कह जो दिया कि बीच में मत बोलो।"

"तुम बीच-बीच में बोलने की ही बात जो करती हो।"

"मैं तो बात नहीं करती बीच में बोलने की। तुम ही बदहवास होकर बात काटे जाती हो। पहले पूरी बात सुन लेते हैं, फिर बात काटा करते हैं।" ज़ीनत बोली—"फिर पूछते हैं, जो पूछना हो। फिर मीन-मेख निकाला जाता है।"

"अच्छा !" हमीदा मुस्कराई—"अब मैं बीच में तो क्या, अगर आखिर में भी बोल जाऊँ, तो कहना। तुम शुरू करो। फिर क्या

हुआ ?"

"हुआ तुम्हारा सिर।"

"बस रूठ गईं !"

"हाँ, रूठ गई। फिर !"

"फिर यह कि तुम्हें हमारी कसम, जो आगे न बढ़ो।"

"अच्छा, तो सुनो !"

"सुनाओ।"

"हाँ, तो उस बच्ची से वह साइरा बेगम बेतहाशा मुहब्बत करती थी। जब उस बच्ची का बाप जुलबुला कर उससे बाजपुर्स करना चाहता तो वह अपनी कसमें दे-देकर उसे रोकती रहती थी। अगर···।"

"पगली थी क्या वह औरत ?"

"फिर तुम बीच में···!"

"अच्छा-अच्छा !" हमीदा ने कानों को हाथ लगाया—"तुम आगे कहो, आगे। मामला ज़रा दिलचस्प मालूम हो रहा है।"

"वह औरत दरअसल बड़ी अक्लमन्द और समझदार थी। वह नहीं चाहती थी कि बाप बेटी को डाँटे, उस पर खफा हो और वह बाप को बता दे कि वह जिस बात पर उसे डाँट रहा है, वह तो बात ही मेरे से नहीं हुई। इस तरह वह बाप के दिल में बेटी के लिए मुसलसल नफरत भरती रही और खुद को इन्तहाई चाहने वाली माँ साबित करती रही और शौहर की नजरों में सुर्खरू होती रही। आखिर एक दिन उसके शौहर ने अपनी बेटी को उसकी नानी अम्मा के पास पहुँचा दिया। हमेशा-हमेशा के लिए उसने अपनी बेटी की तरफ से आँखें फेर लीं। और फिर···।"

"हाँ-हाँ और फिर !" हमीदा ने बेअख्तयार सवाल किया।

"और फिर यह हुआ कि उस चालबाज औरत ने शौहर को जी भर कर उल्लू बनाने की ठान ली। वह उसे लगातार उल्लू बनाती रही और अब तक उसे उल्लू बनाती रही है। उसने शौहर का सारा रुपया अपने माँ-बाप के घर पहुँचा देना शुरू कर दिया है। अपने सारे परिवार को वह शौहर के रुपये पर पालने लगी। उसके सारे अज़ीज़ उसके यहाँ भरे रहते हैं। खाते-पीते और ऐश करते हैं और वह···।"

'और वह क्या ?"

"और वह अपने एक पुराने आशिक के साथ ऐश करती है।"

"हाँ यँ !"

"हाँ।" ज़ीनत बोली—"यही तो ज़ुल्म है उस औरत का।' वह राज़दाराना तौर पर बोली—"और अब वह अपने शौहर को ज़हर देने की सोच रही है।"

"अरे !"

'हाँ !" ज़ीनत बोली—"ऐसी औरतें तो करती ही यही हैं। वे अपने रास्ते के काँटें मुस्तकिल तौर पर अपनी राहों से दूर कर देती हैं।"

"उस औरत की कोई औलाद है ?"

"नहीं।"

"और यह तमाम बाते उस औरत ने तुम्हारी बहिन को बतला दीं ?"

"हाँ। वे उसकी राज़दार सहेली जो हैं !" ज़ीनत बोली, "मुझ तो अपनी बहिन पर भी गुस्सा आने लगा। ऐसी औरत से दोस्ती, तौबा—तौबा।" ज़ीनत ने अपने कानों को हाथ लगाते हुए कहा—

"खुदा बचाए ऐसी आवारा और बदजन औरतों के साए से।" उसने हमीदा से कहा—

"उस औरत ने अपने और अपने आशिक के कई खतूत भी मेरी बहिन को दिखाए थे। बहिन ने उनमें से एक खत चुपके से रख लिया। उस खत में उस औरत ने अपने आशिक को अपने शौहर को ज़हर देकर मार डालने की बात लिखी थी और उस खत को पुश्त पर उसके आशिक ने इस अमर की ताईद करते हुए यह लिखा था कि इस नेक काम में तुम अब देर न करो।"

वह बोली—

"और वह खत मैं बहिन से छुपाकर तुम्हें दिखाने के लिए चुरा लाई हूँ।"

और यह कहकर उसने वह खत हमीदा को दिखाया। हमीदा ने वह खत लेकर अपने पास रख लिया।

"तुम क्या करोगी इस खत का ?"

"अचार डालूंगी।" हमीदा ने मुस्करा कर कहा।

"तो डालो अचार !" ज़ीनत मुस्करा दी—"कहीं इस खत को अपने लिए मशाले-राह बनाने का ख़याल तो नहीं ?"

"चुप नालायक ! ख़ुदा न करे।"

हमीदा ने अपनी मजीद तसल्ली के लिए पूछा—

"इस औरत का ब्याह कहाँ हुआ था ?"

"कस्बा करीमगंज है कोई। वहाँ के जागीरदार से इसकी शादी हुई है।"

हमीदा का मुँह फक हो गया। उसने दिल में सोचा, अल्लाह का शुक्र है कि ज़ीनत को यह नहीं मालूम कि वह ये सारी बातें तो मेरी ममानी साहिबा के बारे में कर रही है। वह अपने आपको सम्हाल रही थी, लेकिन उसके औसान खता होते जा रहे थे। फिर उसने वह खत, जो कि साइरा, उसकी ममानी का था, अपने तफसीली ख़त के साथ अपनी माँ राबिया के पास रजिस्ट्री से भिजवा दिया। उसने लिखा था—

"अम्मी ! आप खुदा के लिए जल्दी मामूजान के पास पहुँचिए। ये सब उन्हें बताइये। उनकी जान खतरे में है।"

अपनी बेटी हमीदा का यह तफ़सीली रजिस्ट्री ख़त पाकर राबिया की आँखें खुल गईं और वह बड़ी बदहवासी की हालत में उसी लम्हे अपने भाई जलील के पास कस्बा करीमगंज रवाना हो गई। उसने वहाँ जाकर यह ख़त अपने भाई को दिखाया। मारे शर्म के जलील की गर्दन शर्म से नीचे झुक गई। गुस्से से उसका चेहरा सुर्ख हो गया।

वे बहुत देर तक इस मसले पर बातचीत करते रहे। बहुत देर तक जलील अपनी बेटी सईदा के लिए तड़पता और रोता रहा।

'कमीनी ! जलील औरत !" वह मुट्ठियाँ भींचकर चीखा—"मैं उस आवारा और बदमाश औरत का अगर खून न कर दूँ, तो मेरा नाम भी जलील नहीं।"

"ख़ुदा न करे !" राबिया ने उसे समझाया—"उस बेहया औरत के खून से अपने हाथ रंग कर खुदा न करे कि तुम अपनी बेटी को यतीम बना दो, भैया ! तुम तो इस जलील और मक्कार औरत को तलाक़ देकर उससे अपना दामन छुड़ा लो—बस !"

"बेटी को अपनी ना-दूरअन्देशियों से यतीम तो मैंने अपनी

ज़िन्दगी में ही बना दिया है।" उसकी आँखें बरस पड़ीं—"ख़ुदा मुझे इस इतने बड़े गुनाह पर कभी माफ़ न करेगा। रुख़साना जैसी अज़ीम और शरीफ़ बीबी की रूह मुझे कभी माफ़ न करेगी। मेरी बेटी सईदा मुझे कभी माफ़ न करेगी। उसकी नानी मुझे अब कभी मुँह न लगाएगी। उसकी नवासी पर मैंने कितना बड़ा ज़ुल्म किया है! आज आठ साल से मैंने उसकी कोई ख़बर नहीं ली।"

वह बेअख़्तयार होकर फूट पड़ा। वह ज़ारो-कतार आँसू बहा रहा था। उसकी बड़ी बहिन राबिया उसे समझा रही थी। उसे दिलासे और तसल्लियाँ दे रही थी। और वह रो-रोकर अपनी जान खोए दे रहा था।

आख़िर बहुत रो लेने के बाद उसके जी का बोझ कुछ ज़रा-सा हल्का हुआ। राबिया ने उससे कहा—

"अब तुम इस वक्त मेरे साथ अहमदपुर चलो, जलील! हम दोनों चलकर सईदा और अम्मीजान से माफ़ी माँगें। उन्हें ये सब बातें बताएँगे। उन्हें मैं ज़रूर राज़ी कर लूंगी।

"मैं ख़ुद इतने बरसों उन्हें अपना मुँह न दिखा सकी। न उनकी कोई खैरियत मालूम हुई और न मैंने अम्मीजान को कोई ख़त लिखा। मैं इसी उधेड़ बुन में रही कि ज़ाकिरा बीबी को मुँह क्या दिखाऊँगी। तुम्हारी शादी तो रुख़साना के साथ मैंने ही कराई थी न!"

उसने जलील से कहा—

"तभी तो मैंने कई मर्तबा तुम्हें समझाने की कोशिश की थी, जलील, कि तुम इस तरह अपनी बेटी को न भूलो। वह तुम्हारी फिर भी बेटी है। और उसका···!"

जलील ने अपनी बहिन राबिया की बात काटी—

"क्या बताऊँ, आपा! उस कमीनी औरत साइरा का जादू जो मेरे सिर पर चढ़ा हुआ था। उस मक्कार और फ़ाहिशा औरत ने मेरी आँखों पर और मेरे दिल-दिमाग पर अपनी कमीनगी और अय्यारी के पर्दे जो छोड़ रखे थे।"

उसने दाँत भींच लिए—

"लेकिन अब मैं भी उसे इतनी इबरतनाक सजा दूंगा कि वह भी सारी ज़िन्दगी याद रखेगी। मैं बख़ुदा उसकी नाक-चोटी काटूंगा।"

"तुम ऐसा हर्गिज़ नहीं करोगे, जलील ! मैं ये सब बदनाम होने वाली बातें तुम्हें हर्गिज़ न करने दूंगी ।" राबिया ने उसे फिर समझाने की कोशिश की—"तुम तो उसे सिर्फ तलाक दोगे और बस ! उसके कार्यों की सजा उसे खुदा खुद देगा । तुम ऐसा सब कुछ करके उसके गुनाहों को कम क्यों करो । खुद तुम्हें दीनी और दुनियावी अज़ाब में फँसने की कोई ज़रूरत नहीं ।"

जलील इन्तहाई निराशा से बोला—

"सईदा, मेरी बेटी न जाने कितनी बड़ी हो गई होगी—बेचारी!"

उसकी आँखों से फिर आँसू बहे—

"कितनी मज़लूम है वह और कितना बड़ा जालिम हूँ मैं ।"

उसने अपनी बहिन राबिया से इन्तहाई मासूमियत से सवाल किया—

"वह मुझे माफ़ तो कर देगी न, आपा ?"

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं ! आखिर को वह तुम्हारी बेटी है और तुम उसके बाप हो ।"

वह बड़ी बेचारगी से बोला—

"काश ! वह मुझे माफ कर सके !"

"तुम उसे खर्च तो भेजते रहे हो न ?"

"कहती तो थी वह बदज़ात औरत कि वह उसे हर माह पचास रुपये भिजवा रही है । यह भी कहती थी कि हर ईद और बकरईद पर वह उसे सौ रुपये कपड़ों के लिए भेजती है ।' जलील ने कहा—"मेरा यह फर्ज भी उसने अपने ही जिम्मे ले लिया था ।"

"तुमने कभी मनीआर्डर की रसीद देखी ?"

"नहीं ।" वह बोला—"उस बदबख्त ने मुझ गधे पर अपनी मुहब्बत और वफ़ा का जादू जो चला रखा था ।"

"तो फिर मेरा तो यह ख़याल है कि वह बदकार औरत मासूम सईदा को ये रुपये भी नहीं भिजवाती रही होगी ।"

"मेरा ख़याल भी अब यही हो रहा है ।" जलील ने कहा—"वरना वह महज़ मुझ पर अपना असर दिखाने के लिए वे रसीदें मुझे ज़रूर दिखाती ।"

राबिया ने बड़े दर्द के साथ कहा—

"तुम्हें भी अपनी बेटी की तरफ से इतनी गफ़लत न बरतनी चाहिए थी। आख़िर को वह तुम्हारा खून है। वह तुम्हारी उस वफ़ाशुआर और शरीफ़ बेगम की बेटी है, जिसका जवाब नामुमकिन है। वह सचमुच नेक सूरत, नेक सीरत और फ़रिश्ता थी।"

"इसीलिए तो सोच रहा हूँ कि मैं सईदा को और उसकी नानी को अपनी यह मनहूस सूरत दिखा कैसे सकूंगा। मैंने तो आज आठ बरस से भूल कर उनकी कोई खबर ही नहीं ली।"

"अम्मीजान का दिल बहुत बड़ा है। वेरुख साना जैसी अज़ीम बीबी की माँ हैं। सईदा रुख़साना की बेटी है। वे तुम्हें और साथ-साथ मुझे भी ज़रूर माफ़ कर देंगी।"

"अगर सईदा ने मुझे माफ न किया, तो ब-खुदा में ज़हर खा लूंगा।"

जलील ने बेताबाना कहा। वह फिर फूट-फूट कर रोने लगा। राबिया उसे समझाने और चुप कराने लगी।

बारह

ताहिर ने वसीमुल्लाह का पता चला लिया था। वह कलकत्ता पहुँचा। वह वसीमुल्लाह से जाकर मिला। उसका जी तो यही चाहता था कि वह उस नाबकार का खून कर दे, लेकिन उसने अपनी मजबूरी और मसलहत को पेशे-नजर रख उससे बातचीत की—

"तुमको इस तरह से हमारे यहाँ से भाग नहीं आना चाहिए था।"

वसीमुल्लाह की गर्दन झुकी हुई थी। वह खौफ से थरथर काँप रहा था। ताहिर को गुस्सा आ गया। वह तेज़ आवाज़ में बोला—

"मैं अगर चाहूँ तो इसी वक्त तुम्हारा खून कर दूँ। मैं तुम्हें जेल की हवा खिला सकता हूँ। मैं तुम्हें···!" वह फिर सम्हल गया। उसने खुद पर काबू पाने की कोशिश की। उसकी पोजीशन इन्तहाई नाजुक थी। वह अपने दिल पर फिर जब्र करके नर्मी से बोला—

"लेकिन मैं तुम्हें माफ कर सकता हूँ।"

वसीमुल्लाह ताहिर के कदमों पर गिर पड़ा—

"मैं अपनी गलतियों की माफी चाहता हूँ, हुजूर!"

"मैंने तुम्हें दिल से माफ कर दिया।"

ताहिर ने अपने दिल पर जब्र कर समस्या की बिना पर कहा। उसकी आवाज़ उसके गले में फँस रही थी—

"तुम रजिया से मुहब्बत करते हो, यह मुझे मालूम हो चुका है।"

वसीमुल्लाह लरजते हुए बोला—

"मैं अपनी इस गलती की हुजूर से माफी चाहता हूँ।" उसने हकलाते हुए अपनी बात पूरी की—"आप मुझे जो भी सजा दीजिएगा मैं कबूल कर लूंगा!"

ताहिर का जी चाह रहा था कि वह वसीमुल्लाह को कच्चा निगल ले। लेकिन वह अपनी होने वाली बहुत बड़ी बदनामी के डर से अपने दिल पर जब्र करके बोला—

"मुहब्बत कोई गुनाह नहीं है।" वह अपनी बात को निभाने की कोशिश कर रहा था—"मैं तुम्हारा निकाह रज़िया से कर दूँगा।"

वसीमुल्लाह ने, जिसके ख्वाबो-खयाल में भी यह बात नहीं आ सकती थी, बे-अख्तयार उसने ताहिर के पांव पकड़ लिए। वह गिड़-गिड़ा रहा था।

"मैं अपनी सारी ज़िन्दगी आपका गुलाम रहूँगा।"

ताहिर को ऐसा मालूम हो रहा था, जैसे कि वह जीती-जागती मक्खी निगल रहा हो, लेकिन वह इन्तहाई बेबस और मजबूर था। वह वसीमुल्लाह को अपने साथ लेकर कलकत्ता से अहमदपुर आ गया।

अनवरी ने ताहिर से रोते हुए कहा—

"अब इतना भी क्या जुल्म! फिर भी रज़िया आपकी बेटी है। उसका निकाह आप इस तरह भिखारिनों की तरह क्यों कर देना चाहते हैं?"

"बकवास मत करो तुम हरामजादी औरत!" ताहिर दांत पीस-कर अपनी भिची हुई आवाज़ में बोला—"इसीलिए तो इतना जलील हुआ हूँ कि वह बदकार लड़की मेरी बेटी है। वरना इतना बड़ा गला-ज़त का टोकरा अपने सिर पर मैं कभी न रखता। अब क्या तू यह चाहती है कमीनी कि मैं यह सारी दुनिया को दिखाता फिरूँ, कि आओ, और मेरी रुसवाई का तमाशा अपनी आंखों से देखो! मैं अपनी बेटी अपने दो टके के कारिन्दे से ब्याह रहा हूँ। एक ऐसे इन्सान को मैं अपना दामाद बना रहा हूँ, जिसका कोई मय्यार नहीं। जिसके न माँ और न बाप, जिसकी जात-बात भी मालूम नहीं है। जो महज़ एक

लफंगा-आवारा इन्सान है।"

"लेकिन—"

'बकवास बिल्कुल नहीं।" ताहिर ने अनवरी के गाल पर दो भरपूर तमाचे लगाए—"हरामजादी ! मैं रज़िया को जहन्नुम रसीद करके बखुदा तुझे तलाक दूंगा। मैं नहीं चाहता कि मेरी बेटी नज़मा और बेटा अकबर तुझे माँ भी कहें। मैं तुझ जैसी जलील औरत के साए से भी अपने-आपको और उन बच्चों को बचाना चाहता हूँ।"

उसने अनवरी के मुंह पर एक घूंसा और मारा—

"कीड़े तो तुझे मेरी भांजी, उस मासूम सईदा में ही नज़र आते थे न ! वह मासूम तेरी नज़रों में आवारा हो जाने वाली थी। और अब यह क्या हुआ ? सईदा की तुझे बहुत फिक्र रहती थी और अपनी बेटी की तुझे यहाँ तक फिक्र न हुई कि वह एक हरामी बच्चे की माँ तक बनने वाली हो गई। कमीनी ! ब-खुदा, जी चाहता है कि मैं तुम्हारा गला घोंट दूं। तूने मुझे हर तरह से तबाह और बरबाद किया है। मेरी मां के साथ मुझसे जुल्म करवाया। भांजी के साथ महज़ तेरी बातों में आकर मैंने इन्तहाई बुरा सलूक किया। उसे हमेशा मारता-पीटता रहा। तेरे बाप के उकसाने पर और तुमसे शह पाकर मैं अपनी माँ से मुकद्दमा लड़ने खड़ा हो गया। और तेरे बाप ने मुझे उल्लू बनाकर उस मुकद्दमे में मुझे तबाह कर दिया। अब और क्या चाहती है तू ?"

"बहुत ज्यादा आगे मत बढ़ते जाइये !" आखिर अनवरी गुस्से से पागल होकर बोली—"अगर मैं खामोश रहूँ तो इसके मायने ये नहीं कि मैं ही अकेली कसूरवार हूँ और आप दूध के धुले हुए हैं। आपने हमेशा अपनी माँ के साथ चालाकी से काम लिया है। सारी जागीर मक्कारी से अपने नाम आपने लिखवाई है। हबीबगंज आपने चालाकी से उनसे छीना है। मैंने नहीं कहा था। इस घर से आपने उन्हें निकाला था। आपने तू-तू, मैं-मैं की थी अपनी माँ से और आपने बदकलामी की थी उनसे। माँ को बड़ी बी और बुढ़िया-बुढ़िया आपने कहा था, मैंने नहीं।"

वह और तेज हुई। उसने ताहिर जैसे जलील इन्सान के जिगर पर और तीर चलाए—

"और यह आपकी बेटी जो आवारा हुई है, वह आप ही के कार्यों का नतीजा है। किसी को सज़ा मरने के बाद मिलती है और किसी को उसके किए हुए काले करतूतों की सज़ा इस जहान में ही मिल जाती है। यह सज़ा आपको इसी दुनिया में ही मिल गई है।"

उसने ताहिर को नफरत से देखा—

"क्या आप समझते हैं कि आपकी आवारगियों की मुझको खबर नहीं? जागीर की शरीफ और मासूम लड़कियों की असमत को किसने दागदार बनाया है? किसने इज्जत लूटी है उनकी? कौन है वह, जो मासूम देहात की लड़कियों को जबरन अपनी औलाद बांटता रहा? कौन है वह, जो बेकसों की आहें, सिसकियाँ और बद्दुआएँ वसूल करता रहा? दिली बद्दुआएँ ये किसके लिए थीं और किसके लिए किस-किस की आहें दिल से धुआँ बनकर निकलती थीं, यह कोई मुझसे पूछे!"

उसने ताहिर को झँझोड़कर रख दिया—

"इलाहाबाद और कानपुर की वेश्याओं में दिल खोल-खोलकर इस जागीर का रुपया किसने लुटाया? मैंने या आपने? बेइज्जत और बेहया बनकर इलाहाबाद की उस जल्लोबाई के कोठे से जूते खाकर कौन निकला था, मैं या आप? कौन था वह, जिसे कानपुर की चम्पाबाई ने मुगले-जात गालियाँ दी थीं और कौन था वह, जो शारदाबाई की जूतियाँ चाटा करता था? वह कौन था, जो हसीना तवायफ के आगे कुत्ते की तरह दुम हिलाया करता था—आप या मैं? और कौन था वह—?"

"बन्द करो बकवास! बन्द करो यह सब···!"

ताहिर अपना सिर पकड़ कर उसी जगह बैठ गया। अनवरी चीखी—

"अपनी भांजी को मरवा डालने की नित नई तरकीबें कौन सोचा करता था, मैं या आप?"

"खुदा के लिए बस करो, वरना मैं पागल हो जाऊंगा।"

ताहिर अपना सिर पकड़े-पकड़े चीखा नहीं, बल्कि रो दिया।

"अब तुम मुझे माफ कर दो खुदा के लिए! रहम करो मेरे ऊपर!"

"आपने मुझे पीटते वक्त मुझ पर रहम किया था ?"

अनवरी ने जुलबुलाकर ताहिर को बद्दुआ दी—

"खुदा करे, आपका किया हुआ हर जुर्म, आपकी हर बदकारी इसी दुनिया में आपके सामने आए और मैं उसे अपनी आँखों से देखूँ। खुदा करे कि पूरी जागीर के मजदूर और किसान इसी जन्म में अपनी अपनी क्वाँरी बेटियों का बदला आप का भेजा फाड़ कर आप से लें और मेरा कलेजा ठंडा हो। खुदा करे कि वे सब आपकी बोटी-बोटी कर डालें ! अल्लाह करे कि वे सब मिलकर आपकी इस मनहूस सूरत पर थूकें और मैं मजा लूं। खुदा करे…"

"बस कर अब, कमीनी औरत !"

ताहिर पागलों की तरह उठा और अनवरी को दीवानावार पीटने लगा। अकबर, उसका बेटा, जोकि अब ग्यारह बरस का था आकर उसकी टाँगों से लिपट गया। अपनी माँ की खातिर, उसे बचाने के लिए उसने ताहिर की टाँगों में कई जगह पर काट लिया।

ताहिर ने गुस्से में आकर उसे दूर फेंक दिया। वह बेहोश हो चुका था।

तेरह

ताहिर अपने बहनोई जलील से कह रहा था—

"अम्मीजान सईदा को लेकर पाँच साल से कुछ ऊपर हुआ कि यहाँ से जा चुकी हैं।"

"कहाँ ?" जलील ने घबरा कर पूछा—"कहाँ चली गईं वे ?"

"कानपुर।"

"कानपुर !" जलील ने हैरान होकर सवाल किया—"वहाँ उनका कौन है ?"

"मुझे नहीं मालूम।" ताहिर ने बेदिली से कहा।

"उनका पता आपको मालूम है ?" जलील के सवाल में बेक-रारी थी।

"नहीं।" ताहिर का यह मुख्तसर-सा जवाब था।

"फिर !"

जलील के इस 'फिर' में बड़ी घबराहट और बड़ी बेचैनी थी।

ताहिर ने कहा—

"फिर मैं क्या बताऊँ ?"

"बड़े अजीब इन्सान हैं आप !" जलील चिढ़ गया।

"और अजीब तुम नहीं हो कि बेटी की खबर लेने आज आ रहे हो। पूरे पाँच साल बाद।"

"सच है, भाई साहिब।" जलील ने शर्मिन्दगी और शिकस्त-खुर्दगी के साथ कहा।

और वह अपनी बहिन राबिया के साथ उसी वक्त वहाँ से रवाना हो गया। उसने अपनी बहिन से कहा—

"हम कानपुर चलकर उन्हें तलाश करेंगे।"

"वहाँ उनका पता हमें किस तरह चल सकता है ?"

"कोशिश से क्या नहीं मिलता, आपा।" जलील बोला—"हिम्मत शर्त है।"

"लेकिन !

"मैं वहाँ अपने दोस्त अज़ीमुल्लाह खाँ के यहाँ ठहरूँगा। वे कानपुर के बड़े बा-रसूख आदमी हैं। शहर के कोतवाल भी हैं। वहाँ उनके जरिये से दो-एक दिन में पता चल ही जायगा।"

यह कहते-कहते उसकी आँखों में आँसू तैरने लगे। अब उसे अपनी नज़रों में बगैर सईदा के दुनिया तारीक दिखाई दे रही थी।

सईदा की नज़रों में दुनिया तारीक दिखाई दे रही थी। उसकी आँखों में आँसू थे। सलीम का एक और ख़त उसके सामने था।

सलीम ने उसे लिखा था—

"यह मेरा पाँचवाँ ख़त है। अगर अब आपने ज़बानी मुझसे सिर्फ़ दो बात करने की कोशिश न की, तो बखुदा मैं खुदकशी कर लूँगा। आपने मेरे एक ख़त का जवाब भी मुझे नहीं दिया। लेकिन इसका मुझे ब-खुदा कोई गिला नहीं है। शराफ़त इसी का नाम है कि इस किस्म की ख़तो-किताबत से दूर रहा जाय।"

"—आपसे सिर्फ़ दो बात इसलिए करना चाहता हूँ कि लिखकर तो आप मुझे बताएँगी नहीं कि आपकी नज़रों में मेरी क्या वक़त है ? अगर आप यह लिखकर मुझे बता दें, तो ब-खुदा फिर बात करने के लिए न कहूँगा। मैं यह पूछना चाहता हूँ कि अगर आप मुझे इस काबिल समझती हों तो मैं अपने माँ-बाप से इल्तजा करूँ कि वे मेरे साथ आपके रिश्ते की बातचीत आपकी नानी अम्मा से करें—"

"—बस सिर्फ़ इतनी-सी बात जानने के लिए मैं बेचैन हूँ। रात भर खिड़की के नीचे हस्ब-मासूल खड़ा रहूँगा। खुदा के लिए रात भर सर्दी में ठिठुरने से मुझे बचा लीजिएगा। एक दफ़ा इत्तफ़ाक से खिड़की खुली थी और फिर आज तक यह हसरत ही रह गई कि मेरा दरे-मुकद्दर खुला हो। लेकिन—

दिल में मेरे लगी हुई है आग
आपको क्या गर्ज़ बुझाने की।

यह ख़त भी अपनी बहिन तसनीम ही के हाथ भिजवा रहा हूँ। खिड़की खुलती, तो उसमें फेंक देता। लेकिन—

'ऐ बसा आरज़ू कि ख़ाक शुदा।"

—आपका दीवाना, सलीम।

उसने अपने दिल में यह कतई तौर पर फ़ैसला कर लिया कि वह आज रात खिड़की में खड़ी होकर उससे दो मिनट बात जरूर करेगी। वह दिल-ही-दिल में दुआ करने लगी—

"खुदाया ! तू मेरे इरादों में शक्ति दे ! मैं आज रात उसके लिये खिड़की में दो मिनट के लिए ज़रूर खड़ी होना चाहती हूँ।"

उसे सलीम का ख़याल लगातार आ रहा था। उसने दिल ही में एतराफ़ किया—

"खुदा मेरा गवाह है कि मैं उन्हें चाहने लगी हूँ।"

वह दिल-ही-दिल में बुदबुदाई—

"मैं खुद भी अब उनके सिवाए किसी और की नहीं हो सकती।" वह जैसे कि खुद से शर्मा गई। उसकी चाँद जैसी पेशानी पसीने से तर हो चुकी थी। उसकी नजरें नीचे झुक गईं। वह अपने दिल के इस अनजाने तकाज़े पर परेशान हो गई।

वह अब तक नहीं सोई थी।

वह अब तक जाग रही थी। रात के सवा ग्यारह बज चुके थे। उसकी नानी अम्मा कब की सो चुकी थीं। वह बार-बार हिम्मत कर रही थी कि वह खिड़की पर आ जाय और खिड़की का पट खोलकर उससे दो बात कर ले। लेकिन उसकी हिम्मत बार-बार जवाब दे रही थी। आखिर हिम्मत करके वह अपने बिस्तर से उठी। मसहरी की पट्टी पर पांव लटकाए अपनी नानी अम्मा की तरफ आँखें फाड़-फाड़कर देखती रही। और यह अन्दाज़ा करती रही कि उसकी नानी अम्मा सो रही हैं या जाग रही हैं।

और जब उसे यह अन्दाज़ा हो गया कि उसकी नानी अम्मा बे-खबर पड़ी सो रही हैं तो वह मसहरी पर से उतरी। दबे पांव चलकर खिड़की तक आई। उसने इतना रास्ता तै करने में भी देर लगाई। वह बार-बार अपनी गर्दन मोड़कर यह देख लेती थी कि उसकी नानी अम्मा कहीं जाग तो नहीं रहीं। आख़िर यह अन्दाज़ा लगाते-लगाते वह खिड़की के पास आ गई। उसने बड़ी अहतियात से खिड़की का एक पट खोला। फिर दूसरा भी।

उधर से सलीम के मुंह से निकला—

"अल्लाह ! तेरा शुक्र है।"

सईदा का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। सलीम खिड़की के बिल्कुल करीब आ गया। दोनों ने एक-दूसरे को मलगजी रोशनी में देखा।

सलीम ने सिर्फ इतना पूछा—

"मैं अपने वाल्दैन से कहूँ कि वो मेरी ख़ातिर आपकी नानी अम्मा से रिश्ते की बात करें ?"

"जी।"

कुछ देर के बाद यह मुख्तसर-सा लफ्ज़ उसके मुँह से निकला। उधर सलीम जैसे कि खुशी से पागल हो गया। वह बे-अख्तयार पुकार उठा—

"कसम अल्लाह की, आपने मुझे मरने से बचा लिया। आपका यह अहसान मैं ज़िन्दगी भर न भूलूंगा।"

उसने घबरा कर खिड़की के दोनों पट बन्द कर दिए। उसकी

नानी अम्मा की आँख खुल गई।

"कौन ? क्या हुआ ?" वे घबरा कर अपने बिस्तर से उठ बैठीं।

सईदा के पाँव जैसे नौ-नौ मन के होकर उसी जगह जम गए। वह सारी जान से थर-थर काँप रही थी। ज़ाकिरा बीबी ने पास ही रखी लालटेन की लौ ऊँची कर दी।

"क्या हुआ ?" उन्होंने सईदा की तरफ देखते हुए सवाल किया—"कहाँ गई थीं तुम ?"

बड़ी दिक्कत के साथ वह बोली—

"वह नामुराद बिल्ली आ गई थी। खिड़की से कूदकर बाहर चली गई। मैंने खिड़की भेड़ी थी।"

"कुंडी लगा दो खिड़की को, बेटी।" वे बोलीं—"खिड़की खुली रह गई थी क्या ?"

"हाँ।"

"अरे !" वे कहने लगीं—"अल्लाह न करे, कहीं उस तरफ से कोई मुआ चोर-उचक्का कूदकर आ जाता तो ?"

"हाँ, नानी अम्मा !" वह बोली—"अभी-अभी हम इत्ता-सा सोए थे कि—"

"कुंडी लगाना न भूला कर।"

"जी।"

वह कुंडी लगाकर आई और अपने बिस्तर पर दुबक गई। उसका दिल उसके हलक में आकर अटक गया था।

चौदह

सलीम ने अपनी माँ से कहा—

"आप मेरी ज़िन्दगी चाहती हैं न, अम्मी।"

"अरे ! खुदा न करे, कहीं तुम्हारा दिमाग़ तो नहीं चल गया। यह क्या ऊट-पटाँग किस्म का सवाल तुम मुझ से कर रहे हो ? तुम्हारी ज़िन्दगी ही हमारी ज़िन्दगी है।"

"तो फिर आप मेरी एक बात मानिए।"

"क्या ?"

"मैं राशिदा से शादी हर्गिज़ न करूँगा।"

"अरे !"

"हाँ अम्मी !"

"लेकिन यह क्यों ? वह लड़की तो हम सबको पसन्द है। तुम्हारे अब्बा को तो और भी ज्यादा।"

"शादी अब्बा की नहीं मेरी होगी।"

"क्या बकते हो तुम ! क्या कोई लड़की तुम्हें पसन्द आ गई है ?"

"जी।" उसने शर्माकर गर्दन झुका ली—"है एक।"

"अच्छा !" उसकी माँ मुमताज़ बेगम मुस्कराने लगी—"कौन है वह ?"

"जिसे मैं पसन्द करने लगा हूँ और जिससे मेरा ब्याह न हुआ तो मैं खुदकशी करके मर जाऊंगा।"

"लेकिन वह है कौन ?"

"कोई भी हो।"

"लेकिन कोई भी हो से तो तेरा व्याह हो नहीं सकता।" उसकी मां मुमताज़ बेगम ने कहा—"कम-से-कम जात-वात, खानदान?"

'तो क्या, आप समझती हैं कि आपका बेटा नाली में गिर सकता है?"

और फिर सलीम ने अपनी मां को सब-कुछ बता दिया।

वह बोलीं—

"अच्छा, तुम्हारे लिए हम वही दुल्हिन लायेंगे। तुम्हारे अब्बा को मैं राजी कर लूंगी कि वे अपनी पहले वाली राय बदल दें।"

और फिर उसके दूसरे ही दिन मुमताज़ बेगम अपने शौहर कलैक्टर गुलाम रसूल साहिब के साथ ज़ाकिरा बीबी के यहाँ कानपुर पहुँचीं। ये लोग कलैक्टर साहिब के भाई के यहाँ उतरे थे।

कोई डेढ़ घण्टे के बाद मुमताज़ बेगम ने सलीम के चचा की मुलाजिमा से कहा—

"तुम उस सामने वाले घर में जाकर उस घर की बेगम साहिबा से कहो कि हम उनसे मिलना चाहती हैं।"

"सर-आँखों पर!' ज़ाकिरा बीबी ने जवाब दिया—"उनसे जाकर हमारी तरफ से कहो, हम उनका इन्तज़ार कर रहे हैं।"

और जब मुलाज़िमा चली गई तो ज़ाकिरा बीबी ने मुगलानी बी से पूछा—

"यह कौन साहिबा हैं?"

"यह शाकिर हुसैन साहिब का मकान है, बेगम हुजूर! उनके बड़े भाई शेख गुलाम रसूल साहिब रायबरेली में कलैक्टर हैं और बहुत बड़े जागीरदार भी हैं। उनका बेटा सलीम यहाँ तालीम हासिल करने आया है। अपने चचा के पास रहता है।"

"यह बेगम साहिबा मुझसे क्यों मिलना चाहती होंगी?" ज़ाकिरा बीबी बोलीं—"हमारी तो इस घर तक से बातचीत नहीं है।"

"होगी कोई बात।"

और फिर उसके कोई पन्द्रह-बीस मिनट बाद मुमताज़ बेगम अपने देवर की बेगम के साथ आ गई। साथ में तसनीम भी थी। ज़ाकिरा बीबी ने उनका मुस्कराते मस्तक से स्वागत किया। सईदा ने भी सलाम के लिए अपना हाथ उठाया।

ज़ाकिरा बेगम बोलीं—

"तशरीफ़ लाइये।"

अलेक-सलेक के बाद वे बातें करने लगीं। मुमताज़ बेगम बार-बार सईदा को ताके जा रही थीं। वे दिल-ही-दिल में अपने बेटे की पसन्द और पहुँच पर दाद देने लगीं।

सईदा उन्हें हद से ज़्यादा पसन्द आई थी। उनकी नज़रों से आज तक कोई एक लड़की भी इतनी ज़्यादा खूबसूरत और शानदार नहीं गुजरी थी। वह खुद भी अब सईदा को देखकर उसे अपनी बहू बनाने के लिए बेचैन थीं। वे अपने साथ टोकरा भर फल और मिठाई भी लेकर आई थीं। ज़ाकिरा बेगम ने कहा—

"इन सब चीज़ों की क्या ज़रूरत थी आपको?"

"नहीं! ज़रूरत है।" मुमताज़ बेगम ने कहा।

सबसे आख़िर में, इधर-उधर की बातों के बाद सलीम की माँ ने कहा—

"मैं आपकी ख़िदमत में एक दरख़्वास्त लेकर हाजिर हुई हूँ।"

"फ़रमाइये!" ज़ाकिरा बीवी ने कहा—"हुक्म दीजिए।"

सईदा वहाँ नहीं थी। वह कब की वहाँ से उठकर अपने कमरे में चली गई थी।

मुमताज़ बोली—

"हम अपने बेटे सलीम को आपकी गुलामी में देने की आरज़ू के साथ हाजिर हुए हैं।"

वे कहती गईं—

"सलीम बड़ा नेक और होनहार लड़का है। इतनी बड़ी जागीर का वाहिद मालिक है। उसे बी० ए० के बाद हम विलायत भेज रहे है। शक्लो-सूरत का भी बहुत अच्छा है, मेरा बेटा। नेक मिज़ाज, नेक तबियत और नेक फितरत है। चाल-चलन ऐसा है, जैसे सफेद घुली हुई चादर हो।"

ज़ाकिरा बीबी सोचने लगीं। बोलीं—

"लेकिन आपको हमारे या हमारी बेटी सईदा के बारे में कैसे मालूम हुआ?"

"फूल जब खिलता है, बेगम साहिबा, तो उसकी महक दूर-दूर

पहुँच जाती है।"

"अच्छा!" वे बोलीं—"मैं सोचकर आपको इसका जवाब दूंगी।"

"हम इसका इन्तज़ार करेंगे।" मुमताज़ ने कहा—"हम रुके रहेंगे यहाँ।"

दो-तीन दिन के अन्दर-अन्दर ज़ाकिरा बीबी ने सलीम को बहाने-बहाने से देख लिया। बातें भी इस अर्से में बराबर होती रहीं। उनके घर खुद कलैक्टर साहिब भी आए। बाहर मर्दाने में बैठ पर्दे से ज़ाकिरा बीबी से बातें भी कीं। मुगलानी बी और उनके बेटे रज़ी-उद्दीन ने इस रिश्ते की ताईद की।

और उसके बाद यह रिश्ता तै हो गया। सईदा और सलीम की मंगनी हो गई। मुमताज़ बेगम और कलैक्टर साहिब खुशी-खुशी वापिस चले गए। सलीम की खुशी का ठिकाना न रहा। वह अपनी मुहब्बत में कामयाब हो गया।

वह हराम मौत मरने से बच गया। उसे ऐसा लग रहा था, जैसे कि उसकी जिन्दगी उसे दुबारा वापिस मिल गई हो।

शादी की तारीख़ अब से तीन महीने बाद की तै हो चुकी थी।

ताहिर ने अपनी बेटी का निकाह इन्तहाई सादगी और ख़ामोशी के साथ वसीमुल्लाह से कर दिया था। वसीमुल्लाह रज़िया को ब्याह कर अपने गाँव ले गया। वह रहीमयारखाँ में रहता था। यहाँ उसका एक छोटा-सा कच्चा मकान था। रहीमयारखाँ इलाहाबाद का एक छोटा-सा कस्बा था।

ताहिर का बर्ताव अब अपनी बीबी अनवरी से बहुत बुरा था। वह उससे कतई बातचीत नहीं करता था। उसने रज़िया के निकाह के एक महीना बाद ही अपनी छोटी बेटी नज़मा की शादी भी सादगी के साथ कर दी थी। वह फतहपुर ब्याह कर गई थी। उसका शौहर

फतहपुर तहसील में नायब तहसीलदार था। वह छोटा-मोटा जमींदार भी था।

अपनी दोनों बेटियों की तरफ से फुर्सत पाकर ताहिर ने एक दिन अनवरी से कहा—

"अब तुम भी यहाँ से दफा हो जाओ।"

"कहाँ जाऊँ मैं ?"

अनवरी ने बड़ी बेचारगी से कहा। ताहिर ने तर्श रूई से जवाब दिया—

"क्या तुम्हारा बाप मर गया है ? मायके जाओ अपने, मुझे क्या ? कोई ठिकाना न हो तो जहन्नुम में चली जाओ।"

"लेकिन मेरा कसूर क्या है ?"

"कसूर ही तुम्हारा कुछ नहीं है।" ताहिर बेजारी और नफ़रत से बोला—"तुम्हारा कसूर तो इतना संगीन है कि मुझे चाहिए कि मैं तुम्हें गोली मार दूं।"

"तो मार दो न गोली !" अनवरी ने बिसूर कर कहा—"इस ज़िन्दगी से तो अल्लाह जानता है, मौत सबसे अच्छी है।"

"खुदा करे, तुम्हें वह चीज़ कभी न मिले, जो अच्छी हो।" ताहिर ने जैसे कि दुःख से कहा—

"परसों मुकद्दमे का फैसला हो जायगा। दो लाख सात हज़ार नकद और इस हवेली का एक तिहाई हिस्सा देना होगा। ऐसा लगता है कि इस हवेली का अपना हिस्सा और जागीर का हिस्सा मुझे बेचना पड़ेगा।"

"क्यों ?" अनवरी बोल पड़ी।

"दो लाख सात हज़ार मैं नकद लाऊँगा कहाँ से ?" उसने दोबारा जैसे खुद ही से पूछा।

अनवरी फिर बोल पड़ी—

"मैं अम्मीजान के पाँवों में पड़ जाऊँगी। उनके हाथ जोड़ूंगी मैं, खुशामद करूँगी कि दो लाख सात हज़ार वे यकदम से न लें हमसे।"

"उनके पाँवों में पड़ने से क्या होगा।" ताहिर बेचारगी से बोला—"यह मामला तो सईदा का है। वह हमें क्यों माफ़ करने लगी। हमने उससे सलूक ही कौन-सा अच्छा किया है ?"

"मैं सईदा बेटी के पाँव पकड़ कर उसके पाँव आँसुओं से धो डालूंगी।" अनवरी की आँखों में आँसू आ गए—"मैं उसके कदम उस वक्त तक न छोड़ूंगी, जब तक कि वह मुझे माफ़ न कर देगी।"

वह रो पड़ी—

"हम उसका सारा रुपया अदा कर देंगे, लेकिन थोड़ा-थोड़ा कर के। मैं उसके लिए अपने सारे जेवर बेच दूंगी।"

वह बेअख्तयार ताहिर के कदमों पर गिर पड़ी—

"यह सब-कुछ मेरा कसूर है। आप रसूल के वास्ते मुझे माफ़ कर दीजिए।"

वह सिसकियों से रोने लगी—

"मैं सचमुच बड़ी गुनाहगार हूँ। लेकिन मेरी आँखें खुल चुकी हैं। आप मुझे इन कदमों से लगा रहने दीजिए। अपने से मुझे दूर न कीजिए। मेरा सारा कसूर माफ़ कर दीजिए। मुझे, मुझ बदनसीब को कुदरत की तरफ से बहुत बड़ी सजा मिल चुकी है।"

ताहिर का दिल भर आया। आँसू उसकी आँखों में मचलने लगे। उसने अनवरी को बाजुओं से पकड़ कर ऊपर उठाया। वह अपनी भर्राई हुई आवाज़ में बोला—

"कसूरवार मैं भी कहाँ कम हूँ!"

अनवरी का सिर उसने अपने सीने से लगा लिया—

"तुमने अपनी इन बातों से मुझे बड़ी ढारस बँधाई है।" वह कदरे जोश से बोला—"अब मैं अपने अन्दर एक ख़ास किस्म की शक्ति महसूस करने लगा हूँ। जैसे कि मेरी रगों में नया खून दौड़ने लगा हो।"

अनवरी को उसने जोर से भींच लिया। उन दोनों की आँखें एक बार फिर मुस्करा उठीं।

मुकद्दमे का फैसला सईदा के हक़ में हो गया। अदालत की तरफ़ से हुक्म मिला—

"ताहिर अपनी भांजी सईदा की जागीर का तमाम पहला रुपया, जो कि एक लाख बानवे हज़ार है, फ़ौरन अदा करे। साथ ही मुकद्दमे का पूरा खर्च, जोकि पन्द्रह हज़ार है, अपनी भांजी को दे। जागीर का एक तिहाई हिस्सा भी उसके हवाले कर दे। वरना उसके ऊपर कुर्की वाजिब होगी।"

सबसे आखिर में हुक्मनामे पर अदालत की मुहर और मैजिस्ट्रेट के दस्तखत थे।

जिस वक़्त यह फैसला ज़ाकिरा बीवी और सईदा ने सुना तो खुशी के आंसू उन दोनों की आँखों में एक साथ छलक आए।

"अल्लाह, तेरा लाख लाख शुक्र है।" ज़ाकिरा बीवी के मुँह से निकला—"तूने मुझ बेवा की लाज रख ली।"

उन्होंने सईदा को गले से लगा लिया—

"आज मैं अपनी बच्ची से आँखें चार कर बातें कर सकती हूँ। मेरे दिल का बहुत बड़ा बोझ हल्का हो गया है। मुझे इसके ब्याह के खर्च की बहुत बड़ी फ़िक्र थी।"

"शुक्र है अल्लाह का!" मुग़लानी बी ने अपने दोनों हाथ दुआ के लिए ऊपर उठाए—"अब हमारी रानी बेटी मौला के करम से किसी की मुहताज नहीं है।"

"अल्लाह का शुक्र है।"

सईदा के दिल से यह आवाज़ निकली। और वह अपनी नानी अम्मा से और ज़ोर से लिपट गई।

साइरा अपने शौहर जलील के कदमों से लिपट गई—

'खुदा के लिए रहम कीजिए मुझ पर। माफ़ कर दीजिए इस

लौंडी को। रहम कीजिए !"

क,,मीनी ! जलील औरत ! फ़ाहिशा ! हरामजादी कहीं की !"

जलील ने साइरा को एक ज़ोर की ठोकर लगाई। वह नफ़रत से भिंची हुई आवाज़ में बोला—

"कमीनी औरत ! जलील ! अब जाती क्यों नहीं यहाँ से अपनी मनहूस सूरत लेकर ! जा, अपने उस आशिक़ के पास ! मुझे जहर देने का प्रोग्राम बना रही थी, मेरी बच्ची को मक्कारी की इन्तहा करके मुझसे दूर कर दिया तूने। तूने उसके साथ—"

"माफ़ कर दीजिए !"

"चुप कमीनी औरत ! किस मुँह से तू मुझसे माफ़ी माँग रही है। अगर शरीफ़ न होता तो बखुदा तुझे कुन्द छुरी से ज़िबह कर देता। मेरा सारा घर लूट कर अपने मायके ले जाती रही तू और मेरी बच्ची के वे पचास रुपये महावार भी हज़म करती रही ! ईद-बकरीद के सौ-सौ रुपये भी तू खाती रही और हल्की-सी डकार भी तुझे न आई।"

वह ज़ोर से गर्जा—

"मैं तेरी तहरीर दिखाकर तुझे जेल की हवा खिला सकता हूँ। लेकिन मैं तुझ जैसी औरत के मुँह लगना नहीं चाहता।"

उसने बुलन्द आवाज में कहा—

"मैं तुझे तलाक देता हूँ—तलाक़-तलाक़-तलाक़ ! तुझे मेरी तीन दफ़ा की कही हुई तलाक़ हो।"

उसने एक ज़ोर की ठोकर उसे और मारी—

"यह ले !"

उसने पाँच हज़ार रुपये जेब से निकाल कर उसके मुँह पर मार दिए।

"यह है तेरा महर ! ले इसे और दूर हो जा मेरी नजरों के सामने से ! कमीनी, मुझे तेरी सूरत से भी घृणा आ रही है।"

उसने साइरा को तलाक़ दे दी। उसने उसका महर दे दिया। उसने उसे और उसके मायके वालों को जूते मार-मार कर हवेली से बाहर निकाल दिया।

वह अब उन सबके दफा हो जाने के बाद इन्तहाई पुरसकून

दिखाई दे रहा था कि अचानक वह फिर उदास हो गया। वह एक सर्द आह भरकर इन्तहाई कर्ब के आलम में बोला—

"न जाने मेरी सईदा कहाँ होगी !"

'एक दफ़ा और कोशिश करो, भैया !" राबिया ने सलाह दी—"वह कानपुर में ही होगी। उस दफा तो वे तुम्हारे दोस्त कोतवाल साहिब भी वहाँ न मिले। दौरे पर कहीं बाहर थे। हम लोग इधर-उधर की ठोकरें खाकर आ गये। लेकिन अब वे ज़रूर आ गए होंगे।"

"मैं कल ही तुम्हें लेकर कानपुर चलूंगा, आपा।"

"हाँ, जलील !" राबिया ने कहा—"सईदा को देखने के लिए मेरी आँखें तरस गई हैं।"

"वह यकीनन अम्मीजान के साथ कानपुर में होगी।" जलील ने कहा।

"हैं ही वहाँ !" राबिया बोली।

"हम कल ही चलेंगे।" जलील ने इत्मीनान की एक साँस ली—"इस तरफ़ से तो मेरा दिमाग अब पुरसकून हुआ है।"

वे अभी बातें कर ही रहे थे कि मुलाजिमा ने एक लिफाफा लाकर दिया—

"अरे !" जलील एकबारगी उछल पड़ा।

'क्या बात है ?" राबिया ने पूछा।

"अरे आपा, यह देखो, यह अम्मीजान का ख़त है।"

उसने खत राबिया की तरफ बढ़ाया—

"अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है।"

राबिया ने जोश में आकर वह ख़त अपने हाथ में लिया ही था कि जलील ने झपटकर वह ख़त उसके हाथ से ले लिया—

"ज़रा पढ़ूं तो क्या लिखा है !"

वह खुशी से पागल हुआ जा रहा था। उसने ख़त पढ़ना शुरू किया। राबिया उसके बराबर आकर खड़ी हो गई। वह खुद भी साथ-ही-साथ ख़त पढ़ रही थी। दोनों एक साथ जल्दी-जल्दी यह ख़त पढ़ लेना चाहते थे। लिखा था—

"जलील मियाँ,

Library Sri Pratap College Srinagar

दुआएँ ! जी तो नहीं चाहता था कि तुम्हें ख़त लिखूं । फायदा क्या तुम्हें ख़त लिखकर ! जब तुम अपनी बेटी को बिल्कुल ही भूल गये हो, तो मैं क्यों याद दिलाने की कोशिश करूँ । फिर खयाल आया कि मैं अपनी तरफ से तुम्हें और खास तौर पर दुनिया को शिकायत का मौका क्यों दूं ।

और फिर यह ख़त किसी मक़सद, अर्ज़ या तुमसे तुम्हारी बच्ची की मदद लेने के लिए तो लिख नहीं रही हूँ, फिर फायदा क्या शर्माने से ! खुदा न करे कि मैं तुम्हें कभी यह लिखती कि तुम अपनी बेटी के अखराजात के लिए मुझे कुछ भेजो । खुदा ने मुझे इतना मजबूर कभी नहीं किया । यह उसका लाख-लाख शुक्र है और उसका अह-सान है और अगर मैं इतनी मजबूर भी हो जाती कि अपनी बच्ची का ख़र्च न उठा सकूं, फिर भी मैं तुम्हें न लिखती । इसलिए कि जो शख्स अपने खून को भुला सकता है, वह दुनिया में किसी के लिए कुछ भी नहीं कर सकता । अगर सईदा की माँ सौतेली है, तो तुम तो उसके सौतेले बाप नहीं हो । या कह दो कि वह तुम्हारी बेटी नहीं है ।

बहरहाल, मैं कहाँ जजबात की रौ में बही जा रही हूँ, मियाँ ! छोड़ो इस किस्से को । और यह सुनो कि तुम्हारी बेटी सईदा की शादी हो रही है । शादी की तारीख तै हो चुकी है । अगले महीने की दस तारीख को उसका निकाह है । उसके सेहरे के फूल इसी तारीख को खिलने वाले हैं ।

मैं इसकी इत्तिला भी तुम्हें न देती, लेकिन फिर सोचा कि तुम उसके बाप हो । उसके निकाह के वक़्त तुम्हारा ही नाम पुकारा जायगा और तुम खुदा रखे, जीवित हो । बुरा लगेगा कि बेटी का बाप जिन्दा होते हुए भी मौजूद न हो ।

अगर तुम अपनी बेटी के निकाह के वक़्त मौजूद होना चाहो, तो आ जाओ । यह तुम्हारी अपनी मर्जी पर मुनहसर है । मेरी तरफ से यह कोई अर्ज या दरख्वास्त नहीं है । आओ, या न आओ, जैसा मुनासिब समझो करो ।

और हाँ, इतना जरूर कहे देती हूँ कि मैं या तुम्हारी बेटी सईदा इस बात की हर्गिज-हर्गिज रवादार न होंगी, कि तुम इसके लिए इस

शादी पर कुछ खर्च करो। सोचकर आना ! तुम्हारा एक धेला भी हमें नहीं चाहिए।

हाँ, एक बात तो बताना भूल ही गई। तुम्हारी बेटी सईदा का ब्याह सलीम से हो रहा है। सलीम बड़ा अच्छा लड़का है। नेक, शरीफ और पढ़ा-लिखा। बी० ए० में पढ़ रहा है। उसके बाद बैरिस्टरी के लिए विलायत जायगा। वह रायबरेली के बहुत बड़े जागीरदार शेख गुलाम रसूल साहिब का बेटा है। इकलौता बेटा। शेख साहिब रायबरेली में कलैक्टर भी हैं।"

सबसे आखिर में पता था—

"बेवा, डिप्टी अकराम अली मरहूम, मुहल्ला तलाक महल, मकान नम्बर एक सौ दो, कानपुर।"

खत पढ़कर जलील इतना रोया, इतना रोया कि उसकी हिचकियाँ बँध गईं। राबिया भी खूब जी भरकर रोई। वे दोनों भाई-बहिन रोते रहे और जब बहुत रो लेने से उनके दिलों का बुखार उतर गया, तो जलील भर्राई हुई आवाज़ में बोला—

"अगर मेरी बेटी मुझे जूते भी लगाए, तो भी वह अपनी जगह पर हक बजानिब होगी।"

वह एक कराह के साथ बोला—

'न जाने इस जहान में मुझ जैसे कितने ही नालायक बाप होंगे, जो नई-नवेली दुल्हिन का घूंघट उठाते ही उसके मकरो-फरेब का शिकार होकर अपनी पहली बीबी के बच्चों को भूल जाते होंगे। अगर खुदा न ख्वास्ता सईदा की नानी अम्मा इस काबिल न होतीं कि मेरी बेटी और अपनी नवासी की परवरिश कर सकतीं तो वह न जाने किस हाल में होती ! या अगर वे मर जातीं, खुदा न ख्वास्ता तो यह बच्ची किसी यतीमखाने में पल रही होती।"

वह एक सर्द आह भर कर बोला—

"खुदा हम जैसे बापों को वाकई कभी माफ़ न करेगा !"

ज़ाकिरा बीबी ने जलील को देखते ही उसकी तरफ़ से अपना मुँह फेर लिया।

"मैं तुम्हें कभी माफ नहीं करूँगी।"

उन्होंने उसी तरह मुँह फेरे-फेरे कहा—

"मैंने तो तुम्हें निकाह के वक्त आने की दावत दी थी। तुम तो खत मिलते ही चले आए।"

जलील ज़ाकिरा बीबी के सामने हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। गिड़गिड़ा कर आजिजी से बोला—

"मैं तो इससे पहले भी कानपुर महज आपकी तलाश में आया था। राबिया भी मेरे साथ थी। हम यहाँ से भटक कर नाकाम वापिस चले गए। आपका कोई पता हमें न लग सका था।"

"क्यों आए थे तुम? क्या तुम्हें अपनी मक्कार और जलील बेगम से फ़ुर्सत मिल गई थी?"

"उससे, उस नाबकर औरत से मुझे हमेशा-हमेशा के लिए फ़ुर्सत मिल गई है, अम्मी जान! मेरा उसका हमेशा के लिए साथ छूट गया है।"

"मना लो जाकर उसे।"

"मैंने उसे तलाक दे दिया है।"

ज़ाकिरा बेगम एकबारगी घूम गईं। उन्होंने जलील को गौर से देखा—

"क्यों! तुमने इतनी सआदतमन्द और प्यारी बीबी को तलाक क्यों दे दिया?"

"पहले आप मुझे माफ़ फरमा दीजिए, फिर मैं सारी रूदाद आपको तफसील से सुनाऊँगा। वह इन्तहाई खतरनाक किस्म की चालाक औरत थी।"

वह गिड़गिड़ाने लगा—

"मुझे मेरी बेटी की सूरत दिखा दीजिए, अम्मीजान! मैं उसके कदमों पर अपना सिर रख कर उससे माफ़ी माँगने के लिए तरस रहा हूँ।"

वह रो पड़ा—

"मैं अपने गुनाहोंका कुफारा अदा करना चाहता हूँ, अम्मीजान।"

एक बेटी से अपने बाप की यह बेकरारी, उसकी यह घबराहट सहन न हो सकी। वह कमरे में आई और अपने बाप की कमर से लिपट गई। वह फूट-फूट कर रो रही थी। जलील उसके कदमों पर वाकई झुकने लगा। वह बच्चों की तरह बेकरार होकर रो रहा था। सईदा ने उसे रोक दिया—

"यह क्या करते हैं आप, अब्बूजान! गुनाहगार बनाते हैं मुझे, खुदा के लिए···!"

और फिर वे सब एक साथ एक जगह बैठ गए। सारी बातें, तमाम कैफियत शुरू से आखिर तक दुहराई गईं। आँसुओं के दरम्यान उस आठ साल की एक-एक बात दुहराई गई। और उन सबके दिल का गुब्बार धुल गया।

सईदा बोली—

"वाकई हमारी बीबी बड़ी समझदार और चालाक औरत थीं। मुझसे कहा कि अपने अब्बूजान की प्लेट में राख डाल देना, बेटी! मुझे यह समझाया कि तुम्हारे अब्बूजान को हकीम साहिब ने मुर्गा खाने के लिए मना किया है और वे मान नहीं रहे। तुम प्लेट में राख डाल दोगी तो इस तरह वे मुर्गा नहीं खाएँगे और इस तरह वे परहेज़ कर लेंगे। उनका परहेज हो जायगा और···।"

जलील ने सईदा की बात काटी—

"उसकी बात अब छोड़ो, बेटी! खुदा उसे जहन्नुम रसीद करे। मुझे उस पर अब भी इतना गुस्सा आ रहा है कि मैं उसका खून कर दूँ।"

वह इन्तहाई कर्ब और बेजारी से बोला—

"उसका जिक्र मेरे सामने न करो।" वह होंठ भींचकर बोला—

"कमीनी, जलील, हरामज़ादी औरत! खुदा उसे गारत करे।"

"ऐसी औरतों का हश्र हमेशा बुरा होता है, मियाँ!" मुगलानी बी बोलीं—"तुम देख लेना मियाँ, कि उसकी जिन्दगी में कितने नासूर पड़ते हैं। कब्र तक में उसकी कीड़े न पड़ें तो मुझे फिर कहना।"

अभी ये बातें हो ही रही थीं, दुःख-सुख के किस्से कहे ही जा रहे थे कि मुलाजिमा ने आकर खबर दी—

"रजी मियाँ कह रहे हैं कि वे बेगम हुजूर से कुछ बातें करना चाहते हैं।"

"डेवढ़ी में बुला लो मेरे बेटे को !" जाकिरा बीबी ने कहा।

रजी डेवढ़ी में आकर खड़ा हो गया। जाकिरा बीबी ने इस तरफ खड़े होकर पर्दे से रजी से बातचीत की—

"तुम आ गए, बेटे ! '

"जी, बेगम हुजूर !"

"कहो, बेटे !"

"इन्तहाई खुशी की खबर है, बेगम हुजूर ! सरकारी आदमी आए हैं, सरकार का हुक्मनामा लेकर।"

"क्या बात है ?"

"आप उनके साथ अहमदपुर रवाना हो जाइए। हवेली का हिस्सा वे जाकर आपको दिलाएँगे और साथ ही दो लाख सात हजार रुपये भी। वे अदालत का हुक्म और कुर्कीनामा साथ लेकर आए हैं।"

उसने बताया—

'एक तिहाई जागीर के हिस्से पर सईदा बेगम का नाम तहसील की तरफ से चढ़ चुका है। और काश्तकारों को और पटवारी को इसकी इत्तिला दी जा चुकी है। अहमदपुर की जागीर पर हमारी भाँजी सईदा बीबी का एक तिहाई का हक हो चुका है। अगर ताहिर मियाँ दो लाख सात हजार रुपये न दे सकेंगे, तो···!"

जाकिरा बीबी यकबारगी बोलीं—

"हाँ, तो फिर क्या होगा ?"

"उनकी पूरी हवेली और जागीर सईदा बीबी के नाम कुर्क करवाली जायगी। जागीर का नीलाम हो जायगा।"

"बहुत खूब !" जाकिरा बीबी की आँखें चमक उठीं, "—मेरी बेटी अपने कमीने मामू और हरामजादी ममानी से बात करेगी।"

तकरीबन एक घण्टे के बाद ये सब-के-सब कानपुर से अहमदपुर की तरफ रवाना हो गए। गवर्नमेंट के आदमियों के साथ जाकिरा बीबी, सईदा, मुगलानी बी, उनका बेटा रजी, जलील और राबिया भी थे।

ये सब लोग दिन के तकरीबन दो बजे के करीब मोटर लारी के जरिये अहमदपुर पहुँच गए। साथ में सईदा के वकील शिवचरणलाल भी थे।

वहाँ पहुँचते ही हवेली के लॉन में सरकारी आदमियों का एक पूरा इजलास लग गया। लारी के अड्डे से यहाँ तक सईदा, ज़ाकिरा बीबी, मुगलानी बी और राबिया पालकी पर सवार होकर आई थीं। वे अभी तक पालकी के अन्दर ही बैठी थीं। पालकी हवेली के दालान में रख दी गई थी। ज़ाकिरा बीबी और सईदा ने कब्जा कानूनी तौर पर मिल जाने से पहले हवेली के अन्दर जाने से इन्कार कर दिया था।

ताहिर पालकी के पास उकड़ूँ बैठा गिड़गिड़ा रहा था—

"खुदा के लिए अम्मीजान ! अगर आप अन्दर न चलीं तो मेरी रही-सही इज्जत भी नीलाम हो जायगी।"

"मैं कैसे अन्दर जा सकती हूँ ?"

ज़ाकिरा बीबी ने कहा—

"मुझे कोई अपनी इज्जत का नीलाम इतने आदमियों के बीच में कराना है क्या ? मैं अन्दर कैसे जा सकती हूँ ! कब्जा कानूनी तौर पर मिल जाने के बाद मैं अन्दर कदम रखूँगी।"

वे बड़े फर्ब के साथ बोलीं—

"मुझे वह दिन कभी न भूलेगा, जब मैं लावारिस और भिखारिनों की तरह इस कोठी से धक्के मार कर बाहर निकाल दी गई थी।"

"तरस खाइये, अम्मीजान ! रहम कीजिए मेरे ऊपर ! आखिर को मैं आपका बेटा हूँ।"

"और उस दिन ?—जिस दिन मुझे इस हवेली से कुतिया की तरह दुत्कार कर निकाल दिया गया, जबकि मेरा कोई न था, जब कि सब-कुछ मुझसे छीन लिया गया था, उस दिन क्या मैं तुम्हारी माँ नहीं थी ? या तुम मेरे बेटे न थे ?"

ज़ाकिरा बीबी की आवाज़ भर्रा गई। वे भर्राई आवाज़ में बोलीं—

"अब मैं किसी की माँ नहीं हूँ और न मेरा कोई बेटा है। माँ-बेटे के रिश्ते को मैं हमेशा के लिए अपने दिल में दफ्न करके इस

हवेली से निकली थी ।"

"अम्मीजान ! खुदा के लिए !" ताहिर गिड़गिड़ाए जा रहा था—"आप एक मिनट के लिए तो अन्दर आ जाइए।"

"नहीं, मुझे अब और ज्यादा रुसवा नहीं होना है।"

"तरस खाइये मेरी इस बदहाली और मेरी इस हालत पर, अम्मीजान !"

"उस दिन मेरी बदहाली और खस्ता हालत पर किसने तरस खाया था ?"

"आपके सीने में माँ का दिल है, अम्मीजान !"

"वह दिल, जो मेरे सीने में था और जो माँ का दिल था, उसे जबरन गला घोंटकर मार डाला गया है।"

"मैं आपके पाँवों पड़ता हूँ। माँ बनकर न सही, खुदा तरस बनकर चन्द मिनट के लिए अन्दर आ जाइये। मुझे आपसे चन्द बातें करनी हैं।"

"मुझसे बातें करने से कुछ हासिल न होगा। मेरा क्या है इसमें। मैं तो अपना हक़ अपनी बेवकूफी से खो ही चुकी हूँ। अब तो जो है, वह हक़दारी का है और वह हक वाली सईदा है, मैं नहीं हूँ। दो लाख सात हज़ार रुपये, एक तिहाई जागीर और कोठी का हक मेरा नहीं सईदा का है।"

ताहिर इन्तहाई शशो-पंज के आलम में फँसा गिड़गिड़ा रहा था। उसने इन्तहाई बेकसी के आलम में सईदा को पुकारा—

"तुम ही एक मिनट के लिए अन्दर आ जाओ, बेटी सईदा ! मेरी कुछ अर्ज सुन लो !"

"नानी अम्मा का फरमान और हुक्म मेरे लिए खुदा और रसूल का फरमान और हुक्म है। मैं अगर अपनी नानी अम्मा के होते जबान खोलूं, तो खुदा ताला मेरी जबान में कीड़े डाले। वह सजा दे मेरी जबान को।"

और फिर अन्दर से अनवरी बुर्का सम्हाले आ गई। और आते ही पालकी का पर्दा हटा कर ज़ाकिरा बीबी के कदमों पर पालकी के अन्दर ही उसने अपना सिर रख दिया और फूट-फूटकर रोने लगी—

"खुदा के लिए, अम्मीजान ! आपको रसूल पाक का सदका,

आप को हुसनैन का वास्ता, दो मिनट के लिए अन्दर आकर हमारी चन्द बातें सुन लीजिए और फिर जो चाहे कीजिए। हमारी सिर्फ इतनी इल्तजा है आप से।"

और उसके इस तरह रोने से ज़ाकिरा बीबी का दिल पसीज गया—

"अच्छा!"

उनके मुँह से निकला और वे सब की सब अन्दर आ गईं।

अन्दर आते ही ताहिर और अनवरी दोनों यकबारगी ज़ाकिरा बीबी के क़दमों पर गिर गए। ताहिर और अनवरी ने उनके पाँव इन्तहाई मज़बूती के साथ थाम रखे थे।

"इस भरी महफ़िल में आप मुझ नालायक और बदनसीब की इज्जत का नीलाम न होने दीजिए, अम्मीजान!"

ताहिर ज़ारो-कतार रो रहा था—

"मेरे पास दो लाख सात हज़ार यकमुश्त देने को नहीं हैं। मैं रफ्ता-रफ्ता करके यह कर्ज चुका दूंगा। किश्तें लिखवा कर सरकार के सामने दे देता हूँ। इस वक्त पचास हज़ार नकद ले लीजिए। एक लाख एक महीने बाद दे दूंगा। बकाया रुपया किस्तों में अदा कर दूंगा।"

"एक लाख तुम अगले महीने कैसे दोगे?"

"मैं अपनी जागीर, मेरा मतलब है कि अपने हिस्से की जागीर का कुछ हिस्सा फरोख्त कर दूंगा और यह रकम···।"

ज़ाकिरा बीबी का दिल अन्दर से रो पड़ा। ताहिर की बेकसीसइ पर उन्हें तरस आ गया।

ताहिर कहता रहा—

"इस वक्त अगर आप अपने मुतालबे पर अड़ी रहीं तो यह जागीर नीलाम पर चढ़ जायगी और मेरी इज्जत का नीलाम चढ़ जायगा। बाप दादा की जागीर कौड़ियों के दाम नीलाम होगी। बोलियाँ लगेंगी इस जागीर पर और मैं कुएँ में कूदकर अपनी जान दे दूंगा।"

"क्या कहती हो तुम, बेटी?"

ज़ाकिरा बीबी ने सईदा से पूछा। और वह, जोकि अपनी आँखों में अश्कों का तूफान लिए यह सारा मंजर देख रही थी, यकदम से रो पड़ी। अपने होंठ काटते हुए घुटी हुई आवाज़ में बोली—

"अगर आप नाराज न हों, नानी अम्मा, तो मैं अर्ज करूँगी कि मामूजान अगर मेरी जिन्दगी माँगते हों, तो वह भी मेरी तरफ से दे दीजिए !"

और यह कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगी। आँसुओं का सैलाब उसके काबू से बाहर हो चुका था। वह बेसाख्ता अपने मामू साहिब से लिपट गई—

"मामू साहिब !" वह भर्राई हुई आवाज़ में बोली—"आप हमारे मामू साहिब हैं। आप भाई हैं मेरी अम्मी के। मैं आपके लिए अपनी जिन्दगी लुटा सकती हूँ। यह तो जागीर नामुराद, हवेली और रुपयों की बात है।"

ताहिर ने अपनी भाँजी को बेअख्तयार लिपटा लिया। उसने सईदा का सिर अपनी गोद में भर लिया। अनवरी उसके कदमों पर गिर पड़ी। ताहिर अपने होंठ चबाते हुए बोला—

"तुम सही मायनों में फरिश्ता हो, बेटी ! तुम इन्सान हो और मैं ?—मैं एक जलील कुत्ता हूँ, जानवर हूं। मैं इन्सानियत के नाम पर कलंक का टीका हूँ और तुम ताज हो इन्सानियत के सिर का। तुम शराफत और रहम की पेशानी पर वह चमकता हुआ झूमर हो, जिससे पेशानियों का हुस्न बढ़ता है।"

सईदा अपनी ममानी से लिपट गई। इसलिए कि वह सईदा के सामने खड़ी, दोनों हाथ जोड़े माफी माँग रही थी।

सईदा बेकरार होकर बोली—

"हमें, अल्लाह की कसम, इतना शर्मिन्दा और जलील न कीजिए, ममानी जान !" वह अपनी ममानी से लिपट कर रोने लगी—"मैं आपकी बेटी हूँ। आप माँ हैं मेरी।"

ज़ाकिरा बीबी की आँखें सावन-भादों की तरह बरस रही थीं। वे सब-के-सब उसी जगह खड़े थे। उन सबकी आँखों से आँसुओं की धाराएँ फूट रहीं थीं।

जलील का सीना फ़ख्र की अधिकता से फूल गया था। वह एक कदम आगे बढ़ा। उसने बड़े फ़ख्र और प्यार से अपनी बेटी सईदा के सिर पर हाथ फेरा।

"मुझे इस वक्त इस बात पर फ़ख्र है, बेटी, कि मैं तुम्हारा बाप

हूँ। इस बात पर फ़ख़् है मुझे कि तुम मेरे नाम के साथ वाबस्ता हो। इस बात पर मैं फ़ख़् से फूला नहीं समा रहा हूँ कि तुम्हारी नानी अम्मा मेरी सास हैं। जिनकी तरबियत, तालीम और सरपरस्ती में रहकर तुम मेरी काबिले-सद फ़ख़् बेटी बनी हो। जिनकी तरबियत ने तुम्हें जिन्दा जावेद बना दिया है। मुझे इस खानदान से वाबस्ता होने पर मरते दम तक फ़ख़् रहेगा।"

अनवरी और ताहिर ने मुगलानी बी से भी माफी माँग ली। और मुगलानी बी ने उन दोनों को अपने गले से लगा लिया।

इसके अन्त में ज़ाकिरा बीबी ने सईदा को लिपटा लिया—

"मुझे खुशी है बेटी, कि तूने मेरा सर हमेशा ऊँचा रखा है। मुझे ज़िन्दगी के किसी मोड़ पर भी तुमने जलील नहीं होने दिया। तुमने मेरी सरपरस्ती में गुड़ियाँ भी खेलीं हैं, गुड़ियों के ब्याह भी तुमने रचाए हैं, अपने गुड्डे की बारातें भी तुमने निकाली हैं और अपनी गुड़ियों को उनकी ससुराल रुखसत भी किया है। तुमने शरारतें भी की हैं, जिद्दें भी तुमसे हुई होंगी, लेकिन किसी जगह भी तुमने मेरी तालीम और मेरी तरबियत को रुसवा नहीं होने दिया, बिल्कुल अपनी माँ की तरह।"

उन्होंने सईदा को ज़ोर से लिपटा लिया—

"बेटी! खुदा करे, तुम सदा सुखी रहो! फूलो-फलो और शाद व बामुराद रहो।"

उन्होंने बड़े प्यार से सईदा की पेशानी चूमी—

"मरते वक्त मुझे इसका खेद न होगा बेटी, कि मेरी तरबियत नाकाम या निकम्मी रही है।"

उन सबके चेहरों पर वही कैफ़ियत थी, जो बारिश के बाद यकायक चान्दनी छिटक जाने से हो जाती है।

सरकारी आदमियों को रुखसत कर दिया गया। सईदा ने उनसे कह दिया कि मुझे अपना सब-कुछ मिल चुका है। और वे सबके सब वहाँ से रुखसत हो गए!

सईदा के सेहरे के फूल इस अन्दाज़ से खिले कि सारी फ़िज़ा सुग-

न्धित हो गई। वह दुल्हिन बनी हुई चौदहवीं के चांद को बादलों की ओट में अपना मुंह छिपाने पर मजबूर कर रही थी।

जब वह रुखसत होकर जाने लगी तो एक बार फिर उसकी नानी अम्मा को वही अल्फ़ाज़ दुहराने पड़े, जो कि उन्होंने उसकी माँ और अपनी बेटी के लिए कहे थे। वे सईदा को लिपटाते हुए उसे समझा रही थीं—

"बेटी, तुम अपने घर जा रही हो अब। वह घर, जो कि सही मायनों में तुम्हारा अपना घर है।"

बेटियाँ दुल्हिन बनकर मायके से अपनी ससुराल जाती हैं···

और फिर सदियों पहले का जाना-पहचाना राग एक बार गूंज उठा—

"काहे को ब्याही बिदेस, ओ लक्खी बाबल मोरे !"

ताकों भरी मैंने गुड़ियाँ जो छोड़ीं

छोड़ा सहेलियों का साथ, ओ लक्खी बाबल मोरे !"

ज़ाकिरा बीबी ने अपनी डबडबाई हुई आँखों को आसमान की तरफ उठाया—

"ऐ मेरे अल्लाह पाक ! मैंने बेटी के बाद अपनी नवासी के सेहरे के फूल भी देख लिए। तूने दुनिया में सब कुछ मुझे दिखाया, सब-कुछ तूने मुझे दिया, अब अपने रसूल पाक का रोज़ा भी मुझे दिखा दे। और साथ ही ईमान के साथ इस दुनिया से उठा ले मुझे। मेरे पास तेरी बख्शीशों का कोई शुकर नहीं, है मेरे अल्लाह !"

वे जारो-कतार रो रही थीं। उनकी आँखें सावन-भादों की तरह बरस रही थीं। और ढोलक की धुन पर गाया हुआ यह दर्दनाक विदाई का गीत अपने पूरे अरूज़ पर पहुँच चुका था—

"काहे को ब्याही बिदेस, ओ लक्खी बाबल मोरे !

काहे को ब्याही बिदेस !"

अन्त में यह गीत अपने पूरे अरूज़ पर पहुँच कर खत्म हो गया। ज़ाकिरा बीबी के तमाम आँसू एक साथ खत्म हो गए। वे अब अपनी चौकी पर खड़ी हुई अपने खुदा के हुज़ूर में शुक्राने की नमाज़ पढ़ रही थीं।

उनके रब ने उनके बहुत बड़े फ़र्ज़ से उन्हें मुक्त कर दिया था।

●●●